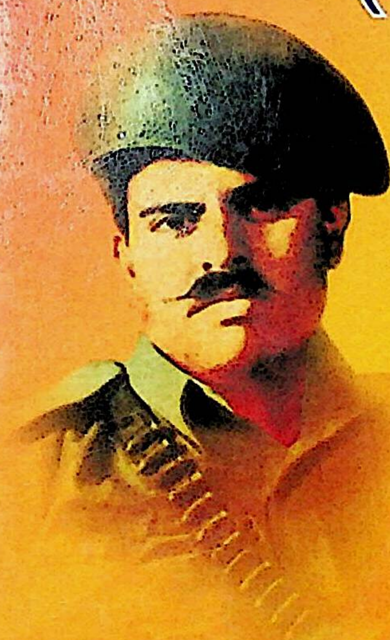
वीर सेनानी - आर्य नेता

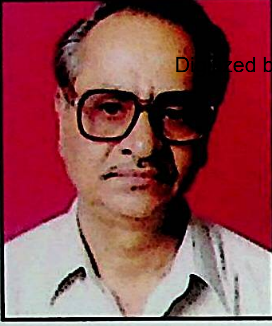
श्री शेषराव वाघमारे

(म. आनन्द मुनि वानप्रस्थ)





लेखक : डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे







लेखक : डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

परिचय :

जन्म : २६ एप्रिल १९४२

स्थान : बस्व - कल्याण, जि. बीदर (कर्नाटक)

शिक्षा : एम्.ए. (हिन्दी) (१९६४) पी.एच-डी. १९६७ अलाहाबाद-विश्वविद्यालय, अलाहाबाद।

शैक्षिक कार्य : प्राध्यापक, प्राचार्य, यशवंतराव चव्हाण महाराष्ट्र-मुक्त विद्यापीठ - नाशिक - संचालक - प्राध्यापक पद पर रहते हुए इ. सन् २००२ में सेवा निवृत्त। उच्च शिक्षा क्षेत्र में कुल ३५ वर्ष कार्यरत।

लेखन कार्य : सामाजिक, अध्यात्मिक, धार्मिक तथा समसामयिक विषयों पर लेखन कार्य।

आर्य जगत की विभिन्न पत्रिकाओं, परोपकारी (अजमेर) वेदवाणी, (रेवली, सोनीपत), जनज्ञान, (नई दिल्ली), आर्य संसार, (कलकत्ता), आर्य जीवन, (हैदराबाद), वैदिक गर्जना, (परली, वै.) आर्य जगत, (नई दिल्ली), आर्य प्रहरी, (भोपाल) हिन्दी स्वतंत्र वार्ता, (हैदराबाद), सार्वदेशिक पत्रिका, (नई दिल्ली) आदि में लेख प्रकाशित।

हिन्दी और मराठी के ऐतिहासिक उपन्यास (शोध-ग्रन्थ) प्रकाशित।

ऋषि मेला - अजमेर, कवि कुलगुरु कालीदास संस्कृत विश्वविद्यालय–नागपुर, वेद प्रचारिणी सभा-नागपुर, अन्तराष्ट्रीय - आर्य महासम्मेलन - मॉरिशस, आदि संस्थाओं द्वारा आयोजित वेद-संगोष्ठियों में शोध आलेख वाचन तथा संस्मारिका, विशेषांकों में लेख प्रस्तुत।

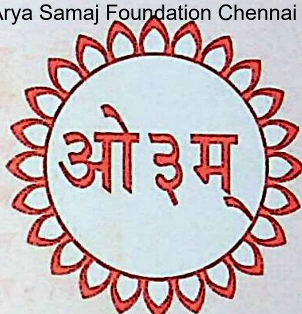
सम्प्रति : आर्यसमाजों के विशेष अवसर पर प्रवचन व्याख्यान, वैदिक सिद्धांतों का प्रचार, अध्ययन और लेखन कार्य















विश्वानि देव सवितर्-दुरितानि परासुव । यद्-भद्रं तन्न-आसुव

ब्रह्म-यज्ञ

देव-यज्ञ

पितृयज्ञ

अतिथि-यज्ञ

बलिवैश्वदेव यज्ञ

ओ३म्







।। ओ३म् ।।

।। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।।

आर्य समाज निलंगा
जि. लातूर (महा) की
ओरसे सस्नेह उपहार
११११०९

वीर सेनानी–आर्यनेता

श्री शेषरावजी वाघमारे

(महात्मा आनन्दमुनि वानप्रस्थ)



लेखक

डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे

(एम.ए., पी.एच.डी.)



प्रकाशक : श्री. शेषरावजी वाघमारे (म. आनन्दमुनि)
स्मृति रौप्य महोत्सव समिति
आर्यसमाज - निलंगा, जि. लातूर (महाराष्ट्र)

ग्रन्थ : वीर सेनानी - आर्य नेता
श्री. शेषरावजी वाघमारे
(म. आनन्दमुनि - वानप्रस्थ)

लेखक : डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे
११, भोसले इलायट
भोसले नगर, शिवाजी नगर
पुणे - ४११ ००७
फोन : ०२०-२५५३४२८८
मो. : ९४२१४४६३८८

मुद्रक : श्रुति आर्ट प्रा. लि., मुंबई

मुख पृष्ठ : श्रुति आर्ट प्रा. लि. मुंबई और विपिन गोजे,
दी फोकल इन्स्टिट्यूट, मुंबई

पुस्तक प्राप्ति स्थान : १) विजय वस्त्र भांडार, शिवाजी चौक,
निलंगा, जि. लातूर, मोबाईल: ९४२३३४९४०९
२) आर्यसमाज, निलंगा, जि. लातूर (महाराष्ट्र)
मोबाईल: ९४२०४३७७५६

प्रथम आवृति - फरवरी - २००९
स्वागत मूल्य

रु. ८०/-

अनुक्रमणिका

समर्पण

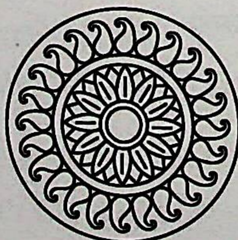
श्री विश्वनाथराव गर्जे (स्वतंत्रता सेनानी),
श्रीमती मंजुलादेवी गर्जे
(मेरे जन्मदाता-माता, पिता, स्नेह वात्सल्य की मूर्ति)

एवम्

श्री डॉ. वामनरावजी येळणूरकर,
श्रीमती सरलादेवी येळणूरकर
(मेरे मार्गदर्शक, आशीर्वाददाता, जीवनधार, आधार स्तम्भ)

इन दिवंगत आत्माओं के लालन-पालन - कृपा स्वरुप
मैं किसी योग्य बन सका।
उनकी पावन स्मृति को अगणित प्रणाम करते हुए
यह अल्प सी लेखन सेवा उन्हें ही समर्पित ।।

डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे
(एम.ए., पीएच.डी)



।। ओ३म् ।।

राष्ट्रीय प्रार्थना

ओम् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामाराष्ट्रे राजन्यः शूरऽइषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामेनिकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो नऽओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम्।।

- यजुः० २२।२२

पं. शेषरावजी वाघमारे (महात्मा आनन्दमुनिजी वानप्रस्थ) मंत्र में वर्णित उपर्युक्त वैदिक राष्ट्र के निर्माण के लिए आजीवन संघर्ष करते रहे।। (नीचे हिन्दी पद्यानुवाद)

ब्रह्मन्! स्वराष्ट्र में हों द्विज ब्रह्म-तेजधारी ।
क्षत्रिय महारथी हों अरिदल-विनाशकारी ।।

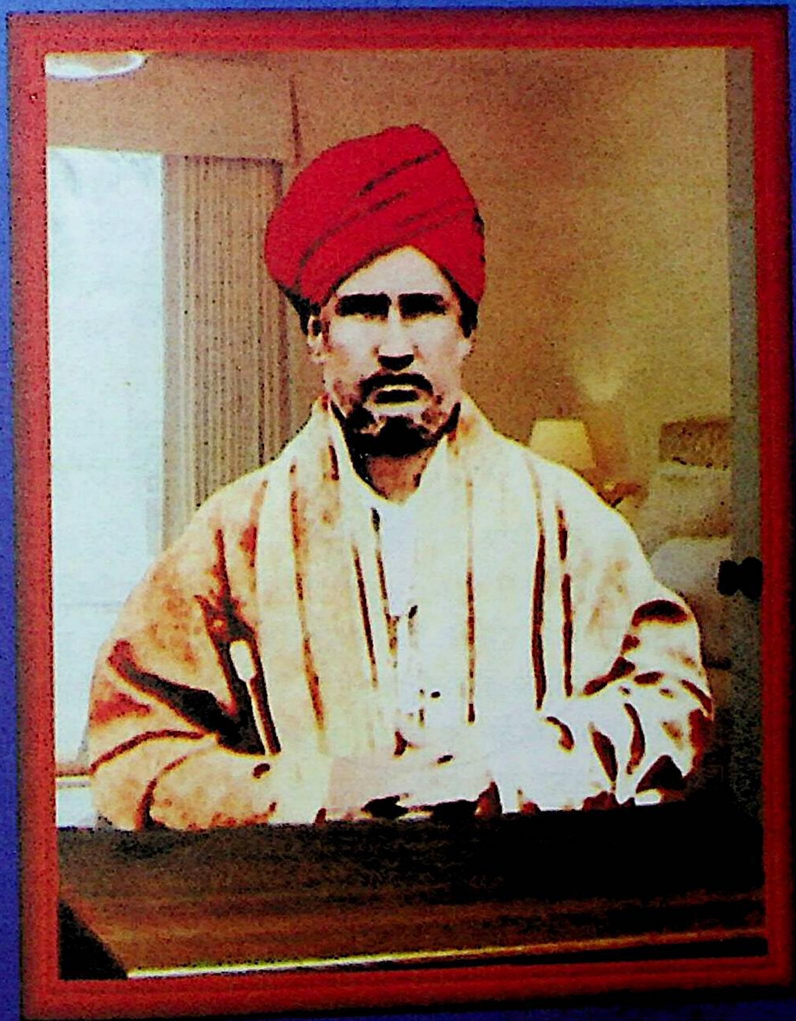
होवें दुधारू गौएँ पशु अश्व आशुवाही ।
आधार राष्ट्र की हों नारी सुभग सदा ही ।।

बलवान् सभ्य योद्धा यजमान-पुत्र होवें ।
इच्छानुसार वर्षें पर्जन्य ताप धोवें ।।

फल-फूल से लदी हों औषध अमोघ सारी ।
हो योगक्षेमकारी स्वाधीनता हमारी ।।



ओ३म्



आर्य समाज के संस्थापक
महर्षि दयानन्द सरस्वती का असली फोटो चित्र

(जन्म : १८२४ - बलिदान : १८८३)

वीर सेनानी - आर्य नेता
श्री शेषरावजी वाघमारे



महर्षि दयानंद के निष्ठावान् अनुयायी; महर्षि के चरणचिह्नों का अनुगमन करते हुए पं. शेषरावंजी वाघमारे ''दक्खन का शेर'' कहलाये। क्रान्तिवीर, जननायक, वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रति असामान्य निष्ठा; प्रखर देशभक्त; वीरता, साहस, धैर्य, विवेक आदि गुणों की खान; हैदराबाद आर्य सत्याग्रह एवं मुक्तिसंग्राम के एक धुरंधर नेता; विधान-सभा सदस्य।

वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा लेकर श्री पू. आनन्दमुनि कहलाये।
महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष;
निलंगा के सर्वोत्तम सपूत।
(जन्म - १९१२, मृत्यु - ४ मार्च १९८४)

।। ओ३म् ।।

श्री शेषरावजी वाघमारे (म. आनन्द मुनि वानप्रस्थ)

स्मृति-रोप्य महोत्सव समिति - आर्यसमाज निलंगा

मनोदय -

वीर सेनानी, आर्य नेता श्री शेषरावजी वाघमारे (म. आनन्द मुनि वानप्रस्थ) का देहावसान हुए पच्चीस वर्ष बीत गये हैं, तथापि उनकी यशोपताका आज भी निलंगा नगर, मराठवाडा, प्रदेश एवं सारे आर्य जगत् में गर्व से फहरा रही है। आर्य समाज, वैदिक धर्म, समाज, राष्ट्र, राष्ट्रभाषा, परिवार आदि के लिए उन्होंने जो अनमोल सेवाएँ दी हैं, उनके कारण सहस्त्रो नहीं, लक्ष नर-नारी आज भी उतनी ही श्रद्धा, प्रेम एवं आदर से उनका स्मरण करते हैं। उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व को नयी पीढी तक पहुँचाने की तीव्र इच्छा उनके स्नेही जनों के मन में थी, किन्तु उसका मार्ग नहीं सूझ रहा था।

४ मार्च १९८४ को निलंगा के इस शीर्षस्थ आर्य नेता का नश्वर शरीर पंचतत्व में विलीन हुआ। इस प्रकार वर्ष २००९ उनके महाप्रयाण का २५ वाँ वर्ष है। इस वर्ष निलंगा आर्यसमाज की कार्यकारिणी के सदस्यों को, स्व. शेषरावजी (म. आनन्द मुनी वानप्रस्थ) के स्नेही जनों को यह आवश्यकता तीब्रता से अनुभव होने लगी कि उनकी कीर्ति को नई पीढी तक पहुँचाया जाय। यह आशंका भी हुई कि कहीं उस महान आर्य नेता, परम पराक्रमी वीर का असाधारण कर्तृत्व विस्मृती के गर्त में न समा जाय। पं. शेषराव जी (म. आनन्द मुनि जी) के सहयोगी तथा पुराने वृद्ध स्वातंत्र्य सैनिक एक-एक करके वार्धक्य या मृत्यु के ग्रास बनते जा रहे है।

एक यथार्थ का अनुभव भी हुआ है। 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम' पर कई ग्रन्थ हिन्दी, मराठी तथा अन्य भाषाओं में लिखे गए हैं। विशिष्ट वर्ग के अधिकांश लेखकोंने आर्य समाज का योगदान तथा श्री शेषरावजी की शौर्यगाथा को विस्मृत कर दिया है। ऐसा लगता है, कहीं जान बूझ कर इन ऐतिहासिक तथ्योंकी उपेक्षा तो नहीं की गयी ? इन त्रुटियों को दूर करने की नितांत आवश्यकता है, ताकि इतिहास की यथार्थ से सब परिचित हो।

इन्ही कारणों से वर्ष २००८ के मार्च मास में निलंगा आर्यसमाज में एक सभा हुई, जिस में यह निश्चय किया गया कि स्व. पंडित शेषराव जी (म. आनन्द मुनि जी वानप्रस्थी) के इस रौप्य महोत्सवी वर्ष में उनकी स्मृति में निम्नलिखित कार्यक्रम किये जाये।

१) स्वर्गीय पं. शेषराव जी वाघमारे (महात्मा आनन्द मुनिजी) की जीवन गाथा को पुस्तक के रूप में आबद्ध किया जाय।

२) उनकी आगामी पुण्यतिथि ४ मार्च २००९ को एक भव्य समारोह मनाया जाय, जिसमें विविध संम्मेलन, भाषण, भजनोपदेश, चर्चा सत्र एवं परिसंवादों का आयोजन किया जाय।

३) २००८-२००९ के संपूर्ण वर्षभर नवयुवकों में आर्य समाज, वैदिक धर्म, देश की ज्योति पुनः प्रज्वलित की जाय। इसके लिए वैदिक संगोष्टी, योगासन शिबिर, वक्तृत्व-स्पर्धा आदि का आयोजन किया जाय।

४) सुयोग्य विद्वानों, कार्यकर्ताओं आदि का सत्कार किया जाय, जिसमें पं. शेषराव जी वाघमारे (म. आनन्द मुनी जी) के नाम से पुरस्कार प्रदान किया जाय।

५) समाचार पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं में पं. शेषराव जी (म. आनन्द मुनी जी) के विषय में वर्षभर समय-समय पर लेखादि प्रकाशित होते रहे। आदि-आदि।

प्रथम निर्णय के अनुसार पं. शेषराव वाघमारे स्मृति रौप्य महोत्सव समारोह समिति, निलंगा ने पं. शेषराव जी (म. आनन्द मुनीजी) की जीवन गाथा (पुस्तक) लिखने का कार्य सुप्रसिद्ध वैदिक लेखक, कार्य कुशल डॉ. चंद्रकांतजी गर्जे को सौंपा। प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार जी एवं अन्य जनों से भी इस महत्वपूर्ण कार्य में सहयोग करने की प्रार्थना की गयी थी।

अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि डॉ. चंद्रकांत जी गर्जे ने इस कठिन कार्य को अत्यन्त सुचारू रूप से पूर्ण किया हैं। अनेक स्थानों का भ्रमण कर,

अनेक व्यक्तियों से भेट कर डॉ. गर्जे ने महत्त्वपूर्ण सामग्री संकलित की है। उन्होंने समग्र सामग्री लेखबद्ध कर, पू. महात्मा आनन्द मुनी जी के अद्वितीय जीवन को चिरकालीन रूप दिया है। उन्होंने पृष्ठों के रिक्त स्थान पर महनीय व्यक्तियों के विचार, काव्य-पक्तियाँ, वैदिक मंत्रों आदि उदृत कर मानों आर्य समाज के प्रचार का सराहनीय कार्य किया है। डॉ. गर्जे जी की इस लेखन सेवा के प्रति समारोह समिती उन्हे धन्यवाद देती है। इस कार्य के लिए संपूर्ण सहकार्य और प्रोत्साहन के लिए समारोह समिति महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभा वाजेगांव, नांदेड के प्रति सदा कृतज्ञ रहेंगी। तथैव मुंबई महानगर के विख्यात प्रेस-संचालक, मुद्रक श्री अजित जी शहा (इस संस्था का नाम श्रुति आर्ट प्रा. लिमिटेड) के प्रति भी समिति आभार व्यक्त करती है। उन्होंने पुस्तक को अत्यंत मनोहारी रूप प्रदान किया है।

धन्यवाद

श्री. शेषराव वाघमारे (म. आनन्द मुनी वानप्रस्थी) स्मृती रौप्य महोत्सव समारोह समिति, आर्यसमाज, निलंगा, जि. लातूर (महाराष्ट्र)

सदस्य :-

१. श्री. बळीरामजी पाटील
२. श्री. ॲड अनंत राव सबनीस
३. श्री. डॉ. आमराव तळीखेडकर
४. श्री. ॲड विजयकुमार शेषराव वाघमारे
५. श्री. गोपिकिशन रा. बाहेती
६. श्री. विजयकुमार वि. कानडे
७. श्री. राम बिलास धूत
८. श्री. विजयकुमार शेटकार
९. श्री. बडोपंत शाहीर
१०. श्री. ओमप्रकाश वाघमारे



लेखक का मनोगत
(स्मरण की आवश्यकता)

कालकुपी में बन्द शेषरावजी की स्मृतियों को जब प्रकाश में लाने का मैं प्रयास करता हूँ, तब स्वयं भी विगत ५० वर्ष पूर्व के काल खंड में पहुँच जाता हूँ। मुझे आज भी अच्छी तरह से स्मरण है तब मैं महाविद्यालयीन पढ़ाई के लिए हैदराबाद १९५८ में पहुँचा था, और सुलतान बाजार के आर्यसमाज में ठहरा था। पं. नरेन्द्रजीने मेरी पुछताछ की थी। उसके दूसरे दिन ही श्री शेषरावजी आर्यसमाज में पधारे थे। उनका ऊँचा-पूरा, भारी-भरकम शरीर, बड़ी-बड़ी मूँछे, तेजभरा चेहरा दूर से ही देखकर, मैं प्रथम सहम सा गया। संभवत: उनसे मेरा पहला ही यह परिचय था। पं.नरेन्द्रजी और उनमें कुछ बातचीत हो रही थी - संभवत: मेरे बारे में ही। शेषरावजी ने अपनी गंभीर आवाज में - मराठी में कहा - 'इधर आओ'। मैं सहमता उनके समीप पहुँचा। 'कल्याणी' से आये हो? 'मैंने 'हाँ' कहा। किस लिये आये हो? 'पढ़ाई के लिए' मेरा दो शब्दों में उत्तर था। मेरी वाणी में सहमने का भाव स्पष्ट रूप से दीख रहा था। उनकी पूछताछ से मुझे लगा कि वे अवश्य ही मेरे पिताजी विश्वनाथराव गर्जे से परिचित होंगे - आखिर मेरे पिताजी सामान्य ही सही, आर्यसमाज के कार्यकर्ता थे। बस इतना ही शेषरावजी का प्रथम दर्शनीय परिचय रहा।

दूसरे ही वर्ष, मुझे अगली पढ़ाई के लिए गुलबर्गा जाना पड़ा। संयोग ऐसा हुआ कि माताजी सरलादेवीने मेरी सारी व्यवस्था प्रा. हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर और श्रीमती सत्यवती के निवास पर ही कर दी थी। मैं उसी महाविद्यालय का विद्यार्थी रहा, जिस महाविद्यालय में. प्रा. रेणापुरकरं संस्कृत के प्राध्यापक थे। शेषरावजी का कभी कभार गुलबर्गा पधारना होता था। उन्हे समीप से देखने तथा दो एक शब्दों में संवाद का अवसर प्राप्त होता रहा।

मेरी पढ़ाई जारी रही। एम.ए., पीएच.डी. की उपाधि मैने प्राप्त की। इस बीच शेषरावजी के कई सम्बान्धी मेरे परिचित हुए। समीपता बढ़ी-बढ़ती ही गयी। यही समीपता रिश्ते में बदल गयी। कभी सोचा भी नहीं था, शेषरावजी का दामाद बनूगाँ - मगर बन गया दामाद। इस रिश्ते के बावजूद मेरा सहमना

कम नहीं हुआ, जो अन्त तक टिका रहा। हां अवश्य मेरे इस सहमने में उनके प्रति एक असीम श्रद्धा का ही भाव रहा। वाघमारे परिवार से घनिष्ठता तो स्थापित हुई - किन्तु मेरे लिए शेषरावजी का परिचय सामान्य स्तर का ही रहा। वे एक आर्य नेता थे, हैदराबाद-मुक्ति संग्राम के सेनानी रहे। सामाजिक समता के उन्नायक थे, विधायक भी रहे - आर्य सिद्धान्तों के एक प्रचारक और काल की ओट में समा गये - मेरे लिए उनका इतना ही परिचय था। शेषरावजी से परिचित होने की बात आयी और चली भी गयी, फिर भी मेरे मानस पटल पर उनके जीवन की भौतिक और कृतित्व विशालता अंकित रही।

निलंगा आर्यसमाजने विगत वर्ष - २००७ के मार्च महीने में शेषरावजी की २४वी पुण्यतिथि समारोह का आयोजन किया था। उनकी पुत्रियाँ, दामाद किसी समय के उनके पुराने साथी, मित्र - श्रद्धा रखने वाले आस पास के व्यक्ति, स्वतंत्रता सेनानी निलंगा पहुँचे थे। किसी कारण वश, मैं निलंगा पहुँच नहीं पाया था। समारोह में, शेषरावजी के कई संस्मरण मान्यवरों ने सुनाए। संस्मरणों से नयी पीढ़ी भी प्रभावित हुई। फिर बात चली - शेषरावजीके अविस्मरणीय इतने संस्मरण योग्य है तो, उन्हे शब्दबद्ध क्यों नहीं किया जाता? कुछ व्यक्ति - एक दूसरे की ओर ताकते रहे - कि कौन इस उतरदायित्व को निभायेगा? तब श्रीमती सविता गर्जे (मेरी धर्मपत्नी) ने घोषणा की कि डॉ. गर्जे पिताजी के संस्मरणों को शब्दबद्ध करेंगे।

श्रीमती सविता गर्जे ने पुणे लौटकर, समारोह का विवरण मुझे सुनाया और कहा ''आपको शेषरावजी की जीवनी लिखनी है। लिखना ही पड़ेगा। आप ही लिख सकते हैं।'' उसके शब्दों में एक गृहमंत्री का आदेश था, उसके पति लिख सकते है, यह आत्मविश्वास था, और था एक पिता के पुत्री का अनुनय। मै असमंजस में पड़ा। क्या मैं पिताजी के संस्मरणों को शब्दबद्ध करने की योग्यता रखता हूँ? उनके विशाल पट को समेट पाने में सफल हो पाऊगाँ? सोचता रहा - सोचता ही रहा। मेरा सोचना मेरे लेखन प्रक्रिया के मार्ग को और भी सहज बनने में सहायक सिद्ध हुआ।

यहाँ एक प्रसंग को दुहराना - असंगत न होगा। आन्ध्र प्रदेश - आर्य प्रतिनिधि सभा ने पं. नरेन्द्रजी की जन्मशताब्दी के अवसर पर एक अन्तर्राष्ट्रीय

महासम्मेलन का आयोजन (जनवरी २००७) किया था। इस अवसर पर पं. नरेन्द्रजी के जीवन के विविध पहलुओं पर लेख आमंत्रित थे। मैंने पं. नरेन्द्रजी के बहु आयाम व्यक्तित्व को लेख द्वारा अभिव्यक्त करने का निश्चय किया। मैंने पं. नरेन्द्रजी की स्वयं की लिखी हुई तथा उनपर लिखी हुई पुस्तकें पढ़ने प्रारंभ कर दीं। आर्य जगत की पत्रिकाएँ पढ़ता गया। हैदराबाद मुक्ति संग्राम में आर्यसमाज और व्यक्तियों के योगदान को जानने का प्रयास किया तो पं. नरेन्द्रजी के जीवन के अनेक पहलुओं से परिचित होता गया। वैसे श्री शेषरावजी के व्यक्तित्व के अनेक पहलु, जिन्हे मैं जानता नहीं था, मेरे सम्मुख उपस्थित हुए।

पूर्व के अनुभव के आधार पर, मेरी अंतरात्मा कह रही थी कि मैं शेषरावजी की समग्र जीवनी को शब्दबद्ध कर सकूँगा। हैदराबाद मुक्ति-संग्राम सम्बंधित हिन्दी तथा मराठी लेखकों के ग्रन्थों को पढ़ना प्रारम्भ किया, पुरानी आर्य पत्रिकाएँ, विशेषांक, स्मृति ग्रंथ ढूँढ लिए। तत्कालीन समाचार पत्रों में भी प्रवेश कर सका। आर्यसमाज की पाठशाला, महाविद्यालय के पुस्तकालय भी छूटे नहीं। हैदराबाद का राज्य-पुस्तकालय (state library), आंध्र प्रदेश विधान सभा का ग्रंथालय, औरंगाबाद के बीबी के मकबरे में स्थित निजामकालीन पुस्तकालय, स्वामी रामानन्द तीर्थ स्मारक - पुस्तकालय, औरंगाबाद, सरस्वती भुवन - ग्रंथालय औरंगाबाद, श्यामलाल हाईस्कूल उदगीर ग्रन्थालय आदि से मेरे लिए आवश्यक सामग्री भी इकट्टा हुई। विश्वविद्यालय में प्रस्तुत M.Phil - Ph-D उपाधि के लिए प्रस्तुत प्रबन्ध भी मेरी दृष्टि से छूटे नहीं। हैदराबाद के भ्रमण में पं. प्रियदत्त शास्त्री से भेट हुई। मैंने सुना था वे भी कभी श्री शेषरावजी का जीवन चरित्र लिखनें में लगे हुए थे। प्रथम भेट में ही उन्होंने कुछ पुरानी पत्रिकाएँ, शेषरावजी के दुर्लभ चित्र तथा निलंगा आर्यसमाज भवन के ध्वंस सम्बन्धी कानूनी कार्यवाही के सारे दस्तावेज - बिना किसी ननुनच के, मुझे सौंप दिये। मुझे तो मानों महत्वपूर्ण खजाना ही प्राप्त हुआ। (पं. प्रिय दत्तजी शास्त्री के सम्बन्ध में विशेष ऋण निर्देशन अन्यत्र प्रकाशित है) शेषरावजी के विभिन्न व्यक्तित्व और कृतित्व से भरा - अनोखा चित्र - मेरे सम्मुख खड़ा हुआ।

शेषरावजी के जीवन से सम्बंधित सामग्री एकत्रित करने के इन प्रयासों के

अतिरिक्त समकालीन व्यक्ति, स्वतंत्रता सेनानियों के साक्षात्कार भी मेरे लिए अत्यधिक महत्व के रहे। इस भ्रमण में मैंने अनुभव किया कि शेषरावजी के समकालीन अधिकांश व्यक्ति काल की ओट में समा गये हैं। मुझे अत्यंत दुख से कहना पड़ रहा है कि हमने शेषरावजी की जीवनी को शब्द बद्ध करने में काफी विलंब किया है। फिर भी कुछ एक उनके साथी, मित्रों से भेट हुई, जिनकी आयु ८० वर्ष से ऊपर है। ऐसे व्यक्तियों से मिलना भी जरुरी था, जो शेषरावजी के समकालीन न होते हुए भी, जिनकी आयु ७०-७५ की है, जिन्होंने उन्हे करीब से देखा है। ऐसे व्यक्तियों के वार्तालाप में, मुझे शेषरावजी को जानने का एक अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

अध्ययन के इस भ्रमण काल में, मेरे सम्मुख अनेक प्रश्न उपस्थित हुए। शेषरावजी का स्मरण क्यों? क्या उनके ऐसे कुछ संस्मरण हैं, जिन्हें शब्दबद्ध किया जा सके? यदि हैं, तो संस्मरण शब्दबद्ध कर करेंगे क्या? पुस्तक को कौन पढ़ेगा, किस के पास समय है? पढ़ने की अभिरुचि भी है? क्या हासिल होगा - पुराना राग आलाप कर? समीप के व्यक्तियोंने मेरे लेखन कार्य पर आपत्ति भी उठायी। क्या मैं तटस्थ रह सकूगाँ? प्रथमतः इन सारे प्रश्नों से मेरा मस्तिष्क चकरा गया। किन्तु फिर भी मैंने अपने आपको संभाला, इन प्रश्नों के उत्तर भी मस्तिष्क में समा गये और मैं अपनी लेखन कार्य की ओर बढ़ा और बढ़ता ही गया।

कई ग्रन्थों, पत्र-पत्रिकाएँ आदि पढ़ने के पश्चात् और कई व्यक्तियों के साक्षात्कार तथा पत्र व्यवहार से शेषरावजी के जीवन की अलग अलग घटनाएँ, जीवन मार्ग पर चलते, अलग-अलग पड़ाव, खिलती हुए पंखुडियों के समान, मेरे सम्मुख उपस्थित हुए। मन ही मन में, उनके समग्र व्यक्तित्व का विशाल स्वरुप एक पुस्तक का रुप-धारण करता गया। प्रसंग, घटनाओं के अनुसार पुस्तक का प्रारूप बनता गया, अध्याय बनते गये - मेरी लेखनी चलती रही - चलती रही और शेषरावजी - शब्दों में आबद्ध होते गये। मेरे शब्दों के साथ शेषरावजी के समकालीन व्यक्ति, नयी पीढ़ी तथा संबंधियों के शब्द संस्मरण भी जुड गये। अन्त में पांडुलिपि तैयार हुई।

अब मैं समर्थ था, प्रश्नों के उत्तर देने के लिए। शेषरावजी का स्मरण क्यों? इतिहास विगतकाल का ऐसा भांडार होता है, जिसमें मूल्य होते हैं, मूल्यों की अवनति भी देखी जा सकती है। क्या किसी महापुरुष की महानता - कालकुपी में ही बंद रहे? ऐसा करना, उस पुरुष विशेष के प्रति अन्याय करना ही होगा, साथ ही इतिहास के एक संस्मरणीय पक्ष को जबरदस्ती से अंधकार की कोठरी में बन्द करने के समान ही होगा। इससे अच्छा है, महापुरुषों के संस्मरणों को नयी पीढ़ी के सम्मुख आने दीजिए। तब नयी पीढ़ी सोचेगी कि क्या अच्छा है, क्या बुरा है, क्या धवल है - क्या अंधकार है। जब नयी पीढ़ी सोचने लगेगी तब अपने जीवन की दिशा क्या हो - वह भी निश्चित करेगी। इतिहास के पृष्ठ उसे सोचने के लिए बाध्य करेगें कि इतिहास उसके दिशा दर्शन में सहायक ही सिद्ध होता है - बाधक नहीं। महापुरुषों के संस्मरण -इतिहास के पन्ने हैं। शेषरावजी ने इतिहास के पृष्ठों पर अपने हस्ताक्षर जरूर किये थे। नयी पीढ़ी भी इनके हस्ताक्षरों को जाने, समझे।

इतिहास स्वंयं यह कहता नहीं कि कोई उसके समीप पहुँचे, जिज्ञासु को चाहिए कि वह इतिहास की गहराई तक पहुँचे, और समझे कि क्या अच्छा है, बुरा क्या है? इतिहास निश्चित रूप से उसे पाठ पढ़ायेगा। घोड़े का मालिक, अपने घोड़े को, पानी से लबालब भरे हौज तक ले जाता है, अब रहा प्रश्न घोडे का, वह पानी पीता है या नहीं? पुस्तक पाठकों के सम्मुख है, पाठक तय करें कि पुस्तक पढ़ें या नहीं?

अब रहा प्रश्न, लेखन कार्य में मेरी तटस्थता का। संसार की अनेक भाषाओं में, ऐसे उदाहरण मिलते हैं कि पुत्रने अपने पिता पर, भाई ने अपने भाई पर, पुत्रने अपनी माँ पर, माँ ने अपने पुत्र पर अनेक जीवनी परक पुस्तकें लिखी हैं, वह भी तटस्थ रह कर। मैं शेषरावजी का दामाद जरूर हूँ, पुत्रवत् हूँ - फिर भी तटस्थ रह सकता हूँ। लेखन प्रक्रिया में तटस्थ जरूर रहा हूँ। मैंने तटस्थता को लांघकर इतिहास के साथ कोई खिलवाड़ नहीं किया है। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के इतिहास मे पहुँचकर उसकी पार्श्वभूमि में, शेषरावजी के संस्मरणों को समटने का मैंने प्रयास किया है। उनकी स्मृतियों की गठड़ी मात्र बनी न रहे, अपितु उनके संघर्ष की स्मृतियाँ अगली पीढ़ी तक पहुँचें और वह भी एक निश्चित् दिशा की ओर अग्रसर हो, यही कामना थी।

मैं यह दावा नहीं करता कि शेषरावजी का समग्र जीवन इस पुस्तक में अंकित है। आन्ध्र प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा - हैदराबाद तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की फाइलें अवलोकनार्थ मुझे प्राप्त नहीं हुई। शेषरावजी इन दो आर्य संस्थाओं से बहुत ही करीब से जुड़े हुए थे। इन संस्थाओं से मेरी लेखन प्रक्रिया संबंधित जानकारी प्राप्त होती, तो अवश्य ही एक अलग सा सम्बल प्राप्त होता।

मेरी लेखन प्रक्रिया में अनेक व्यक्तियों का साथ रहा है। श्री शेषरावजी के मित्र, अभिन्न साथी, स्वतंत्र सेनानी आदि मेरे लेखन कार्य में सहयोग देते रहे। मुझे कई बार निलंगा जाना पड़ा। श्री बळीराम पाटील, श्री अनंतराव सबनीस, ॲडवोकेट, श्री वासूदेव राव पिंपळे, श्री मदनलाल अट्टल, श्री मधुकर देशमुख, श्री विजयकुमार कानडे, शहाजनी औरादंके श्री हिरामण बलीराम डोईजोडे आदि से कई बार वार्तालाप हुआ। हर वार्तालाप में, शेषरावजी अधिक परिचित होते गये। वाघमारे परिवार में - श्रीमती सुमित्राजी, श्रीमती सिन्धूजी तथा बिजयकुमार वाघमारे - ॲडवोकेट ने शेषरावजी से सम्बन्धित कई प्रसंगो को मेरे सम्मुख रखा। श्री अनंतराव सबनीस और उस्मानाबाद के श्री गोविन्दराव मैंदरकर ने निलंगा आर्यसमाज भवन विध्वंस सम्बधित उर्दू के कई दस्तावेजों का हिन्दी में अनुवाद कर, मुझे सहयोग प्रदान किया हैं।

निलंगा के अज्ञात इतिहास को सम्मुख रखने में प्राचार्य प्रकाशजी व्यास (सोनेगाव - जि. हिंगोली), श्री सु.ग. जोशी (लातूर), श्रीमती माया जगदीश पाटील (सोलापुर), प्रा.एन.डी. कदम (तासगांव), बाळराजे उटगे (निलंगा) आदि इतिहासतज्ञो ने समय समय पर मेरा मार्गदर्शन किया है।

मेरे मित्र, डॉ. सूर्यनारायण रणसुभे, प्रा. ओमप्रकाश होळीकर, डॉ. कुशलदेव शास्त्री, मेरी लेखन प्रक्रिया में प्रारम्भ से ही जुड़े रहे, अभिरुचि लेते रहे, समय समय पर सलाह भी देते रहे। डॉ. रमाकान्त शेंडगे, (लातूर) शेषरावजी के चित्रों को एकत्रित करने, उन्हें संगणीकृत स्कॅनिंग कर C.D. बनवा देने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

प्राचार्य वेदकुमारजी वेदालंकार, मेरी अग्रज भाई - मेरी लेखनप्रक्रिया में

प्रारम्भ से ही जुड़े रहे। मेरी लेखन प्रक्रिया की सामग्री - कहाँ कहाँ उपलब्ध हो सकेगी, उन व्यक्तियों से मेरा सम्पर्क करवाते रहे, मेरे साथ स्वयं भी भ्रमण करते रहे। सम्बंधित पुस्तकों की सूचि देकर, उन पुस्तकों को पढ़ने का आग्रह करते रहे। पुस्तक को अधिक सुंदर रूप देने के लिए सुझाव देते रहे। पांडुलिप के सभी पृष्ठों को बडे ध्यान से पढते रहे और सूचनाएँ देते रहे। मित्रों को धन्यवाद दे सकता हूँ, भला उन्हें कैसे दूँ - वे मेरे अग्रज बन्धु और दामाद है - शेषरावजी के।

शेषरावजी के समकालीन तथा उनके प्रति श्रद्धा तरखनेवाले व्यक्तियों, नवयुवकों, सम्बन्धियोने शेषरावजी के कई संस्मरण भेजे, जिनके बगैर मेरा लेखन कार्य अधूरा ही रह जाता।

मेरी अर्धांगिनी सविता गर्जे मेरे लेखनकार्य में अधिक रुचि लेती रही, वह शेषरावजी की पुत्री जो ठहरी। उसका अपने पिता के प्रति भावविभोर होना, मेरे लिए प्रेरणादायक सिद्ध हुआ।

मेरा लेखन कार्य पूर्ण हुआ - पांडुलिपि तैयार हुई। जब छपाई की तैयारी शुरू हुई, तब आर्थिक प्रश्न मेरे सम्मुख उपस्थित हुआ। मै चिन्तित भी हुआ। इस चिन्ता से मेरा १२ वर्ष पूर्व हृदय मंडल का कष्ट फिर से उभर आया। मेरा पुत्र सुशील भी अधिक चिन्तित हुआ। वह मुझे पुणे से मुंबई ले गया। अस्पताल का दौर शुरु हुआ। मेरे अस्वस्थता की जानकारी प्राप्त होने के बाद, डॉ. रणसुभे, प्रा. होळीकर, प्राचार्य वेद्कुमारजी ने मुझे अपने स्वास्थ्य की ओर अधिक सचेत होने की सलाह दी। उन्होंने पुस्तक छपवाने की जिम्मेदारी स्वयं लेने की तैयारी भी दर्शायी और मुझे आश्वस्त किया। मुझे उनसे काफी संबल मिला और मैं निश्चिंत रहा।

मेरे पुत्र तथा श्री शेषरावजी के पौत्र सुशील गर्जे ने कमाल ही कर दिखाया। मुझे किसी प्रकार की भनक न लगने देते हुए, उसने अपने मित्र श्री विपिन गोजे को लिए, मुंबई के अच्छे से अच्छे मुद्रक, प्रकाशकों से सम्पर्क स्थापित किया। (श्री विपिन गोजे, एक समय के आर्यसमाजी क़र्मठ कार्यकर्ता, शेषरावजी के हमसफर - बिचकुंदा निवासी श्री लक्ष्मणराव गोजे के पौत्र हैं) सुशील अच्छी तरह जान सका कि पुस्तक की छपाई का प्रशन ही, मेरी अस्वस्थता का कारण रहा है।

पुस्तक छपवाने की उसकी तत्परताने मेरे स्वास्थ्य को बनाये रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अन्त में, मै आभार व्यक्त करता हूँ - श्री शेषरावजी वाघमारे' (म. आनन्दमुनि वानप्रस्थ) स्मृति रौप्य महोत्सव समिति आर्यसमाज निलंगा के सभी पदाधिकारियों का, जिन्होंने लेखन कार्य की जिम्मेदारी मुझे सौंपी -

पुस्तक के लेखन में मेरे अनेक मित्रों, स्नेहीजनों एवं परिवारीयजनों का सहयोग प्राप्त हुआ है। स्थानाभाव के कारण उन सभी का नामोल्लेख करना सम्भव नही है। तथापि उन सबके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। तथैव जिन जिनसे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रुपेण सहयोग मिला है, उन सब के प्रति आभार प्रकट करता हूँ।

अन्त में अजित शाह, मुद्रक 'श्रृति आर्ट मुद्रणालय मुम्बई और श्री श्रीधर गोविंद शिंदे - संगणकीय टंकक के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होंने अल्प समय में ही मुद्रण कार्य पूर्ण कर एक सुन्दर पुस्तक नयी पीढ़ीतक पहुँचाने में सहयोग प्रदान किया है।

पू. पिताजी - शेषरावजी वाघमारे (महात्मा आनन्द मुनि) को शतः शतः नमन -

दि. २६ जनवरी, २००९
११, भोसले इलायट
भोसले नगर, शिवाजीनगर
पुणे - ४११ ००७

- डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे
लेखक

१ आर्यसमाज की पृष्ठभूमि

१९वी शताब्दी भारत में नवीन चेतना-जागृत करनेवाली शताब्दी रही है। साथ ही उसने देश को नयी दिशा की ओर भी अग्रसर किया है। इस शताब्दी में अनेक समाज सुधारक, बुद्धिजीवी और विश्व-विख्यात वैज्ञानिकों का जन्म हुआ है। ब्रिटिशों की दास्य- शृंखला से बन्धमुक्त होने के लिए (१८५७) स्वतंत्रता संग्राम की चिनगारी भी उसी शताब्दी में सुलग उठी, परंतु यह चिनगारी भडकने के पूर्व ही बुझा दी गयी। तथापि इस संग्राम ने अनेक क्रांतिक्रारियों को जन्म दिया। इसी शताब्दी में आधुनिक साहित्य का सृजन भी प्रारंभ हुआ। इसी काल में सामाजिक विषमता, कुप्रथा, अंधश्रद्धा आदि दोषों के उन्मूलन के लिए अनेक संस्थाओं का जन्म हुआ। बंगाल में नव जागरण के उद्देश्य से श्री राजाराम मोहन राय ने 'ब्रह्मसमाज' की स्थापना की। यही ब्रह्मसमाज एक अलग चेहरा धारण कर 'प्रार्थनासमाज' नाम से महाराष्ट्र में अवतरित हुआ। इस संस्था के प्रमुख थे श्री विष्णु परशुराम शास्त्री, श्री गोविन्द महादेव रानड़े और श्री रामकृष्ण गोपाल भांडारकर। आध्यात्मिक और सामाजिक आन्दोलन को लेकर स्वामी रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद का 'रामकृष्ण मिशन' अस्तित्व में आया। कर्नल अल्काट और मॅडम ब्लैवेट्स्की के प्रयत्नों से संस्थापित 'थियोसिफीकल सोसायटी' एनी बेजेंट के माध्यम से भारत में पहुँची। महाराष्ट्र में जातिप्रथा निर्मूलन-आंदोलन के प्रणेता महात्मा जोतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज'की स्थापना की। उसी काल में मि. ह्यूम ने राष्ट्रीय काँग्रेस की स्थापना की, किन्तु उसकी स्थापना का उद्देश्य अन्य आंदोलनों या संस्थाओं से भिन्न था।

इसी १९वीं शताब्दी के नव जागरण काल में गुजरात के मोरबी राज्य में मच्छुकांटा नदी किनारे बसे हुए टंकारा कस्बे में, ब्राह्मण कुल में इ.स. १८२४ में एक बालक ने जन्म लिया। माता-पिताने इस बालक का नाम मूलशंकर रखा। किशोर वय प्राप्त मूलशंकर के जीवन में एक अद्भूत घटना घटी, जिसने न केवल बालक मूलशंकर की मानसिक दशा में परिवर्तन किया, अपितु वह उसके भावी कार्यक्रम की रूपरेखा भी सुनिश्चित कर सकी। वह घटना थी - शिवरात्रि के पर्व पर शिव की प्रतिमा पर चूहे का हुडदंग मचाना। बालक को यह समझनें में

देर नहीं लगी कि शिवकी प्रतिमा यह सच्चा ईश्वर नहीं है। सच्चे ईश्वर तथा सच्चे धर्म की खोज में इस बालक-मूलशंकर ने गृहत्याग दिया। अनेक साधु सन्यासियों के समीप रह कर, उसने सच्चे ईश्वर के स्वरूप को जानने का प्रयास किया। अन्त में स्वामी विरजानन्द प्रज्ञाचक्षु के सानिध्य में, सच्चे ईश्वर को जाना। ईश्वर की वाणी-वेद, तथा वेदांग-उपांग आदि शास्त्रों का अध्ययन किया। इ.स. १८६७ में व्यक्ति, समाज, राष्ट्र की उन्नति के लिए 'स्वामी दयानन्द सरस्वती' नाम से 'पाखंड खंडिनी पताका' लिए वे हरिद्वार के कुम्भ मेले में पहुँचे। 'पाखंड खंडिनी पताका' केवल पताका न होकर वह उनके नव जागरण कार्यक्रम की घोषणा थी। देशभ्रमण के समय स्वामी दयानन्द को अनुभव हुआ कि वे एक ऐसी संस्था से जुडे रहे जो एक ईश्वर और वेद-विद्या पर श्रद्धा रखती हो। इसी उद्देश्य से उन्होने ब्रह्मसमाज', 'प्रार्थनासमाज' संस्था के प्रमुखों से सम्पर्क स्थापित किया। 'थियोसोफीकल' संस्था स्वयं दयानन्द तक पहुँची थी। यह संस्था चाहती थी कि स्वामी दयानन्द इस संस्था से जुड़े रहें। स्वामी दयानन्द ईश्वर और वैदिक सिद्धान्तों में किसी प्रकार के मिश्रण के हिमायती नहीं थे। ईश्वर और वैदिक सिद्धान्तों के प्रति अटूट विश्वास के कारण स्वामी दयानन्द को इन संस्थाओं से निराशा ही मिली। अत: उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों से युक्त एक अलग थलग संस्था की स्थापना करने का निर्णय लिया। मानवजाति का सर्वांगीण हित, कल्याण और विकास के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मुम्बई (बम्बई) शहर के गिरगांव (काकड़वाडी) में डॉ. मानकजी के बगीचे में उन्होंने १० एप्रिल १८७५ को आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज की स्थापना से राष्ट्र अन्धविश्वासों से भरे रूढ़िवादी धर्म की बैलगाडी से उतरकर एक नये धर्मक्रांति-रथ पर जा चढा। इस प्रकार की संस्था विश्व में प्रथम ही थी। श्री गिरधरलाल दयालाल कोठारी आर्यसमाज के प्रधान तथा पानाचन्द आनन्द जी पारेख मंत्री चुने गये। महर्षि दयानन्द सदस्य के रूप में आर्यसमाज से जुड़े रहे। मानवमात्र के उत्थान के उद्देश्यों को प्रथम २८ सूत्रों में रखा गया, तत्पश्चात वे २८ सूत्र आर्यसमाज के दस नियम (Ten commandments) के नाम से प्रचलित हुए। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है - अर्थात, शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना यह आर्यसमाज का छठा नियम है।

स्वामी दयानन्द ने उत्तर भारत, पंजाब, राजस्थान, मध्य प्रदेश, पुराने मुम्बई (बम्बई) प्रान्त में भ्रमण कर अनेक स्थानों पर आर्यसमाजों की स्थापना की। समाज के अलग अलग स्तर के व्यक्ति आर्यसमाज से सक्रिय रूप से जुड़ते गये। समाज का एक बड़ा बुद्धिजीवी वर्ग आर्यसमाज की ओर आकृष्ट हुआ। स्वामी दयानन्द ने जिन उदात्त-उद्देश्यों से आर्यसमाज की स्थापना की, उन उद्देश्यों की परिपूर्ति में यह बुद्धिजीवी वर्ग भी प्रयास रत रहा। उन्हें अपने प्रयास का फल भी मिला।

स्वामी दयानन्द के उदय के साथ ही, जो भी आर्यसमाज के सम्पर्क में आता, वह स्वयं शक्ति का केन्द्र बन जाता और देश, धर्म पर मिटने के लिए उसमें अमिट चाह जाग जाती थी। क्रान्तिकारी भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद, सुखदेव, राजगुरु, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाख-उल्लाह, लाला लाजपत राय, स्वामी श्रद्धानन्द, पं. हंसराज, पं. लेखराम, श्यामकृष्ण वर्मा जैसे कई महानुभावों के नाम गिनाए जा सकते है। महाराष्ट्र में, महादेव गोविन्द रानडे, ऋषिवर के प्रथम शिष्यों में से एक माने जाते हैं। न्यायमूर्ति रानड़े ने ही ऋषि दयानन्द को जून-जुलाई १८७५ में पुणे बुलवाया था। पुणे में ऋषि दयानन्द के ऐतिहासिक प्रवचन करवाये थे, जो पूना प्रवचन के नाम से ख्याति प्राप्त हैं। ऋषिवर दयानन्द के विचारों से कोल्हापुर के राजर्षि शाहू भी काफी प्रभावित रहे। परिणामस्वरूप उन्होंने कोल्हापुर में आर्यसमाज की स्थापना की और वैदिक तत्वों के आधार पर शिक्षा संस्था की स्थापना भी की। वे स्वयं को हृदय से आर्यसमाजी मानते रहे। समाज के निम्न वर्ग के उत्थान के लिए राजर्षि शाहू अहर्निश प्रयत्नशील रहे। नवसारी, गुजरात राज्य में १४ दिसम्बर १९१८ को संपन्न हुए 'आर्य धर्म परिषद' की अध्यक्षता करते हुए उन्होंने कहा था 'हमारा धर्म आर्य धर्म है'। भावनगर में संपन्न 'भारतीय आर्य धर्म परिषद' (६,७,८ मार्च १९२०) की अध्यक्षता भी उन्होंने की - और ऋषिवर द्वारा स्वीकृत - सच्चे ईश्वर पर अपने विचार व्यक्त किये थे।

इनके व्यक्तियों के अतिरिक्त राष्ट्र के महनीय व्यक्ति श्री गोपालकृष्ण गोखले, वीर सावरकर, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, पं.नेहरू, सुभाषचन्द्र

बोस, महर्षि अरविन्द, कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर आदि महानुभावों ने 'भारत नव जागरण के प्रणेता' के रूप में महर्षि दयानन्द की महत्ता दर्शायी है।

मुम्बई (बम्बई) में आर्यसमाज की स्थापना कर, महर्षि दयानन्द का महाराष्ट्र में भ्रमण, पुणे, सातारा सीमित स्थानों तक ही रहा, वे सुदूर दक्षिण में पहुँच नहीं सके। आर्यसमाज की स्थापना से बहुत पूर्व स्वामी दयानन्द ने दक्षिण के कन्याकुमारी तक का भ्रमण किया था। मा.क्षितीश वेदालंकार ने अपनी पुस्तक 'चयनिका' (चुने हुए लेखोंका संकलन) में 'ऋषि दयानन्द १८५७ लेकर १८७५ तक' शीर्षक लेख में सन् १८५६ से १८६० तक के चार वर्ष के ऋषिवर अज्ञात जीवन के संबंध में प्रकाश डालते हुए कहा है 'तीसरी यात्रा नासिक से प्रारंभ हुई और कन्याकुमारी तथा धनुष्य कोटि में जाकर समाप्त हुई। इस तीसरी यात्रा में कर्नाटक, तमिलनाडू के आधिकांश प्रदेश और उस समय दक्षिण भारत में विद्यमान रियासतों की यात्रा भी शामिल है'' (चयनिका पृ. ३९)

''जिस क्षण देह में दुर्बलता प्रतीत हो,
उसी समय एक विशालकाय व्यक्तित्व को याद करो।

जब तुम्हारे मन में शिथिलता या कायरता का प्रवेश हो,
उसी क्षण जीवन और उत्साह से ओत-प्रोत उस
तेजस्वी देशभक्त का स्मरण करों।

जिस क्षण तुम्हारे हृदय में मोह और विलास का
साम्राज्य प्रवेश हो
उसी क्षण धन को ठोकर मारनेवाले उस
ब्रह्मचारी को याद करो।
अपमान से आहत होकर, जिस क्षण तुम
नजर ऊंची न उठा सको
उसी क्षण, हिमालय के समान अडिग और
उन्नत व्यक्ति के मुख को अपनी कल्पना में उपस्थित करो।

मृत्यु वरण करते हुए डर लगे तो
निर्भयता की मूर्ति का ध्यान करो।

द्वेषभाव से उत्पन्न होकर, जब तुम
अपने विरोधी को क्षमा करने में हिचकिचाहट का अनुभव करे
उसी क्षण, विष पिलाने वाले को आशीर्वाद
देते हुए, राग-द्वेष से विमुक्त सन्यासी को याद करो
वह महान व्यक्ति-ऋषिवर दयानन्द है''

श्री रमणलाल देसाई
– गुजराती उपन्यासकार



२ हैदराबाद रियासत में आर्यसमाज का प्रवेश

भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो भारत के मध्य में निज़ाम की हैदराबाद रियासत बसी हुई थी। मुसलमान रियासत के कारण उत्तर भारत के सामान्य और प्रतिष्ठित मुसलमानों के लिए भी यह रियासत आकर्षण का केन्द्र रही है। साथ ही उत्तर भारत के हिन्दू भी इस रियासत की ओर आकर्षित हुए और वे निज़ाम की रियासत में पहुँचे। इनमें सक्सेना, वर्मा, माथुर, श्रीवास्तव -कायस्थ थे, जिन्होंने निज़ाम रियासत के प्रशासन से जुड़े रहना अधिक पसंद किया। मारवाड़ी भी वणिक (व्यापार) के बहाने इस रियासत में पहुँचे और यहीं के हुए। इनके अतिरिक्त कनौजी ब्राह्मणों का एक विशेष वर्ग भी इस रियासत में आया, जो रियासत के किलों की सुरक्षा में लगा रहा। यह वर्ग मुगलकाल से ही उत्तर भारत में किलों की रखवाली किया करता था। उत्तर भारत से अलग अलग उद्देश्यों को लिए, अलग अलग वर्गो के लोग हैदराबाद रियासत में पहुँचे हों, किन्तु एक वर्ग ऐसा भी था, जो ऋषिवर दयानन्द के वैदिक-सिद्धान्तों से भली भांति परिचित था। इस वर्ग में ऋषिवर दयानन्द के प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष-शिष्यगण, भक्तगण भी थे।

उस समय , समुद्र के तटपर बसा हुआ मुम्बई (बम्बई) शहर राजनीतिक, व्यापार आदि की दृष्टि से असाधारण महत्वपूर्ण था। हैदराबाद रियासत का बहुत बड़ा हिस्सा मुम्बई (बम्बई) प्रान्त की सीमा से जुडा हुआ था। मुम्बई (बम्बई) प्रदेश की सामान्य असामान्य घटनाएँ हैदराबाद रियासत में पहुँच जाया करती थी। समूचे उत्तर भारत में ख्यातिप्राप्त महर्षि दयानन्द की विचारधारा से मुम्बई (बम्बई) का बुद्धिजीवी वर्ग का काफी प्रभावित रहा। मुम्बई (बम्बई) पधारने का निमंत्रण स्वामी दयानन्द को दिया गया। निमंत्रणकर्ताओ में एक नाम है श्री जयकृष्ण जीवनराम व्यास। स्वामी दयानन्द का मुम्बई (बम्बई) शहर में आगमन पांच बार हुआ। आगमन का विवरण इस तरह है -

(१) २० अक्टूबर, १८७४

(२) २० जनवरी १८७५ मुम्बई (बम्बई) की इसी यात्रा में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना हुई। ऋषिवर यहाँ पौने पांच महीने रहे।

(३) अक्टूबर - १८७५

(४) ५ मार्च - १८७६

(५) ३० दिसम्बर - १८८१ (अंतिम बार)

मुम्बई (बम्बई) प्रवास के इस काल में महर्षि दयानन्द के विभिन्न विषयों पर प्रवचन, व्याख्यान और शास्त्रार्थ हुए। इसी काल में स्वामी दयानन्द के कई ग्रन्थ भी प्रकाशित हुए।

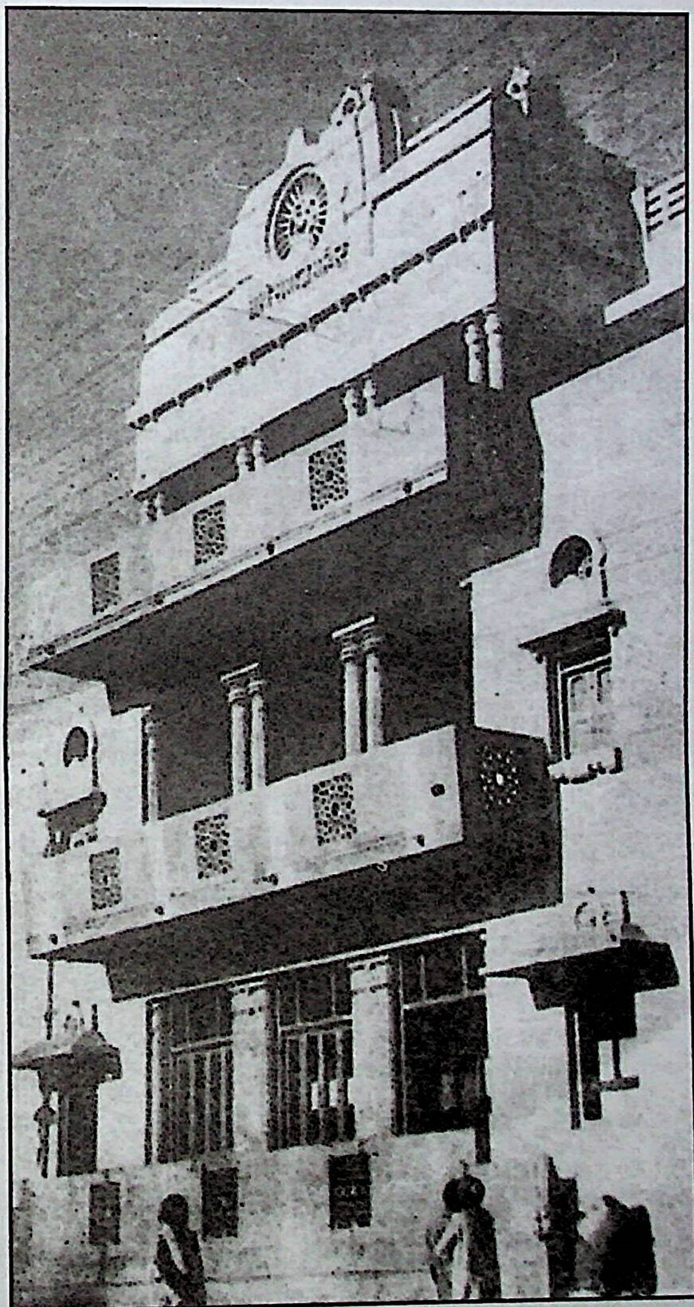
(१) पंच महायज्ञ विधि (२) संस्कार विधि (३) आर्याभिनय (४) वेदान्तिध्वान्त निवारण (५) वेद विरुद्ध मत खंडन (५) शिक्षापत्रीध्वन्त निवारण आदि ग्रन्थ।

अन्त के तीन ग्रंथ सांप्रदायिक खंडन मंडनात्मक हैं।

इस काल तक आते आते, स्वामी दयानन्द न केवल नवजागरण के पुरोधा रहे, अपितु सही अर्थों में वेदों के सच्चे अर्थों को व्यक्त करनेवाले - वेद उध्दारक दूसरे शंकराचार्य ही बन गये। उस समय के समाचार पत्र Times of India, सुबोध-पत्रिका, गुजराती मित्र आदि पत्र-पत्रिकाओंने लेखों, सम्पादकीय के माध्यम से स्वामी दयानन्द के वैचारिक पक्ष को समीक्षात्मक पद्धति से जनसमुदाय तक पहुँचाने में काफी सक्रिय कार्य किया है।

न्यायमूर्ति महादेव रानड़े के निमंत्रण पर स्वामी दयानन्द २० जून १८७५ को पुणे पहुँचे। पुणे में स्वामीजी के व्याख्यानों का संग्रह और सम्पादन मराठी में न्यायमूर्ति रानड़े ने किया था- बाद में 'उपदेश मजंरी' के नाम से आर्य जगत् के सम्मुख आया। श्री जयचन्द्र विद्यालंकार ने अपने ग्रंथ 'राष्ट्रीय इतिहास का अनुशीलन' में कहा है - 'पुणेवाले व्याख्यान मराठी समाचार पत्रों में छपे थे''। कलकत्ता से प्रकाशित 'बंगदर्शन' पत्र ने स्वामी दयानन्द की यात्रा के सम्बंध में लिखा था - ''मुम्बई (बम्बई) और पुणे आदि स्थानों पर कितने ही लोग आर्यसमाज में दीक्षित हुए, अपने अपने स्थानों पर जाकर आर्यसमाज की स्थापना की।''

मुम्बई (बम्बई) प्रान्त से सटी हुई, निज़ाम रियासत में रहनेवाले व्यक्ति भी, स्वामीजी से काफी प्रभावित हुए। बम्बई-पुणे के समाचारपत्रों ने स्वामी दयानन्द



आर्यसमाज, सुलतान बाजार हैदराबाद - हैदराबाद मुक्ति संग्राम में इस भवन की भूमिका असाधारण रही ।

हैदराबाद-निजाम रियासत का प्रथम आर्यसमाज किल्लेधारुर, जिला बीड़ (स्थापना वर्ष १८८०)



आर्यसमाज किल्लेधारुर 'यज्ञवेदी' गौरवमयी परम्परा का द्योतक रहा है। इस यज्ञवेदी से निकली हुई सुगन्ध 'ओम्कार' के नाद के साथ हैदराबाद राज्य (पुराना) मराठवाडा, महाराष्ट्र, अखिल भारत में फैल गयी। आज भी, विगत ५० वर्ष से आर्यसमाज मन्दिर में दैनिक 'यज्ञकर्म' सम्पन्न होता है। विभिन्न अवसरों पर 'महायज्ञ' भी संपन्न होते हैं। विद्वानों, सन्यासियों के प्रवचन, व्याख्यान होते हैं।

श्रावणी वेद सप्ताह के अवसर पर पू. स्वामी संकल्पानन्दजी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न। चित्र में श्री दुष्यन्त प्रमोद कुमार तिवारी, श्रीमती व श्री रत्नप्रकाशजी, श्रीमती व श्री बन्सीधर तिवारी, श्री शेटे व दुबे दम्पत्ति।

चित्र और संकलन: सोमनाथ शंकरप्पा आर्य
पुस्तकाध्यक्ष
आर्यसमाज किल्लेधारुर
जि. बीड़ (महाराष्ट्र)

के विषयों को रियासत के सटे हुए हिस्सों तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

मुम्बई (बम्बई) और किल्ले धारुर की दूरी करीब ४०० कि.मी. तथा पुणें तथा किल्ले धारुर की दूरी करीब २५० कि.मी. की है। किल्ले धारुर के आर्यसमाज का इतिहास कहता है कि वहाँ पर बसे हुए अनेक उत्तर भारतीय व्यक्ति पुणें के प्रवचनों में सम्मिलित हुए थे। स्वामीजी के प्रवचनों से काफी प्रभावित हुए। किल्लें धारुर लौटने के बाद उन्होंने अनुभव किया कि अपने क्षेत्र में वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार हो। इसी उद्देश्य से निज़ाम रियासत में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना इ.स. १८८०में किल्लें धारुर (जि. बीड) में की गयी। यह ज़िला हैंदराबाद रियासत के १६जिलों में से और मराठवाडा के ५ जिलों में से एक था। धारुर आर्यसमाज की स्थापना में अग्रणी व्यक्तियों के नाम इस प्रकार हैं - श्री भगवती प्रसाद, श्री कुंदन प्रसाद, श्री गोकुल प्रसाद, श्री मगनलालजी भाई, श्री रामचन्द्रजी, श्री मणिकप्रसादजी, श्री बाबूराव वैद्य, श्री बन्सीलाल तिवारी।

इसी आर्यसमाज ने १९०७ में धारुर में प्रथम गुरुकुल की स्थापना की, जो १९२५ तक कार्य करता रहा। आर्यसमाज धारुर, तथा गुरुकुलने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार से आसपास के क्षेत्र को काफी प्रभावित किया। तत्पश्चत्, धारुर आर्यसमाज को अनुकूल परिस्थितियाँ प्राप्त नहीं हुई, परिणाम स्वरूप उसका कार्य क्षेत्र धारुर तक ही सीमित रहा।

निज़ाम-रियासत में, हैदराबाद शहर के सुलतान बाज़ार में इ.स. १८९२ में आर्यसमाज की स्थापना हुई। आर्यसमाज स्थापना के प्रेरणा स्त्रोत़ रहे स्वामी दयानन्द के शिष्य प्रज्ञाचक्षु - श्री गिरानन्दजी। इस आर्यसमाज के प्रथम प्रधान श्री कामताप्रसाद मिश्र थे तथा मंत्री रहे श्री लक्ष्मणजी। जिस समय, निज़ाम की मुस्लिम रियासत में आर्यसमाज का उद्भव हुआ - हिन्दू जनता प्रतिकूल परिस्थितियों में अपना जीवन बिता रही थी। रियासत में निर्धनता, अविद्या, निर्बलता छायी हुई थी। छुआ-छूत, बालविवाह, विधवा-विवाह की समस्याएँ थी। समाज में फैली हुई घोर अंधश्रद्धा, जातिप्रथा, सच्चे धर्म का लुप्त होना, अनेक व्यक्तिपरक संप्रदायों का जन्म होना आदि - समाज विघातक बातें दीख पड़ती हैं। आर्यसमाज ने,

अपनी प्रारंभिक अवस्था में इन्हीं बातों से उभरने के लिए समाज सुधार के कार्य अपने हाथों लिए। इन चुनौती का सामना करने के लिए रायबहादुर राव आर्यसमाज के मंच पर आये। स्थानीय कई महानुभाव-आदि पुडि सोमनाथ राव, पं. श्रीनिवासजी जैसे पौराणिकों ने भी आर्यसमाज की विचारधारा को स्वीकार किया, आर्यसमाज से जुड़ भी गये। परिणामतः पुराने रीति-रिवाज बदलने लगे, जातिपाति के बंधन टूटने लगे, छुआछूत विरोधी आंदोलन भी छेडा गया। आर्यसमाज के प्रति लोगों का आकर्षण भी बढ़ने लगा।

आर्यसमाज को प्रारंभिक अवस्था में एक नयी चुनौती का सामना करना पड़ा। सिद्दीकी दीनदार नामक मुस्लिम प्रचारक अपने आपको 'चन्न बसवेश्वर' का अवतार बताकर, हिन्दुओं को बहका रहा था। हिन्दुओं के देवताओं, महापुरुषों पर असभ्य आक्षेप लगाकर धर्म परिवर्तन के लिए बहका रहा था। ऐसे समय आर्यसमाजने पं. रामचन्द्र देहलवी, पं. मंगलदेव, नित्यानन्द,विश्वेश्वरानन्द आदि विद्वानों के भाषण और शास्त्रार्थ आयोजित किये और दीनदार सिद्दीकी की बोलती बंद कर दी। मुस्लिम रियासत में, इस्लाम को चुनौती देना कोई आसान कार्य नहीं था, किन्तु निडर आर्यसमाजने इस धर्म परिवर्तन के क्षेत्र में भी सफलता पायी। इस तरह रियासत में प्रतिकूल अवस्थाएं होती हुई भी भारत के दक्षिण में आर्यसमाज के बींज को अंकुरित, पुष्पित और पल्लवित होने में अधिक समय नहीं लगा। उस समय कोई यह नहीं जानता था कि सुलतान बाजार का आर्यसमाज भविष्य में समूचे हैदराबाद रियासत में वटवृक्ष का स्वरूप धारण करेगा और एक समय ऐसा भी आयेगा, जब कि निरकुंश निज़ाम को अपने घुटने टेकने के लिए बाध्य होना पडेगा

दयानन्द के वीर सैनिक बनेंगे'
दयानन्द का काम पूरा करेंगे।

उठाये ध्वजा धर्म की हम फिरेंगे
इसीके लिए हम जियेंगे मरेंगे ।।

"भाई, हमारा कोई स्वतंत्र मत नहीं। मैं तो वेद के आधीन हूँ और भारत में पच्चीस कोटि आर्य हैं। कई कई बात में किसी किसी में कुछ कुछ मतभेद है, सो विचार करने से आप ही छूट जायेगा। मैं सन्यासी हूँ और मेरा कर्तव्य यही है कि जो आप लोगों का अन्न खाता हूँ, इसके बदले जो सत्य समझता हूँ, उसका निर्भयता से उपदेश करता हूँ। मैं कुछ कीर्ति का रागी नही हूँ। चाहे कोई मेरी स्तुति करे या निन्दा करे, मैं अपना कर्तव्य समझ के धर्मबोध कराता हूँ। कोई चाहे माने वा न माने, इसमे मेरी कोई हानि-लाभ नहीं है"– स्वामी दयानन्द

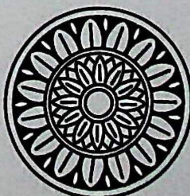
संदर्भ: 'नव जागरण के पुरोधा-दयानन्द सरस्वती', डॉ भवानीलाल भारतीय पृ. २४३.

राष्ट्र वन्दना करो

भद्रमिच्छन्त ऋषयः स्वर्विदस्तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे ।
ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं तदस्मै देवा उपसंनमन्तु ।।

- अथर्व० १९।४१।१

"आत्मसुख प्राप्त किये हुए ऋषियों ने लोक कल्याण की इच्छा करते हुए, तप का अनुष्ठान किया। तप और दीक्षा से राष्ट्र उत्पन्न हुआ। राष्ट्र के सामने झुके और उसका सत्कार करे"



३ मराठवाड़ा के अन्तर्गत निलंगा - इतिहास की दृष्टि में

'निलंगा'* श्री शेषरावजी की जन्मभूमि और कर्मभूमि रही है। उनका कार्यकाल १९३० से १९८४ तक का रहा है अर्थात् निलंगा आर्यसमाज स्थापना वर्ष १९३० से उनकी मृत्यु - १९८४ तक इस प्रदीर्घकाल में उनके जीवन के अनेक पहलू दिखाई देते हैं। उनके व्यक्तित्व और कृतित्व में सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक सेवा निहित है, साथ ही हैदराबाद मुक्ति संग्राम के इतिहास में उन्होंने निश्चित रूप से कुछ पृष्ठ जोड़े हैं। इतिहास के पृष्ठों पर अपने हस्ताक्षर अंकित करने वाले श्री शेषरावजी के मराठवाड़ा के अन्तर्गत निलंगा के विगतकाल में पहुँचकर, उसे पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना आवश्यक प्रतीत होता है।

निज़ाम के शासनकाल में मराठवाड़ा एक सूबा था, जिसके अन्तर्गत ५ जिले आते थे। उस्मानाबाद जिले के अन्तर्गत निलंगा इस छोटे शहर को तहसील का दर्जा प्राप्त हुआ था जो वर्तमान काल में भी प्राप्त है। लातूर जिले में निलंगा हैदराबाद के दक्षिण की ओर २५० कि.मी. पर स्थित है। निलंगा का प्राचीन इतिहास ज्ञात की अपेक्षा अज्ञात ही अधिक है। निलंगा आज जिस क्षेत्र में है, उसका इतिहास मात्र ज्ञात है। प्राचीन सिक्कों, शिल्पों, ताम्र पत्रों, शिलालेखों के माध्यम से निलंगा के तथा वह जिस भूमि क्षेत्र से जुड़ा हुआ है, उसके इतिहास को अभिव्यक्त करने में इतिहासकार प्रयत्नशील रहे हैं। यह प्रदेश 'दिंडीसन' से लेकर 'गोदावरी' तक, तुंगभद्रा से मांजरा नदी तक फैला हुआ था। इतिहासकारों ने प्रमाणों के आधार पर अश्म युग में इस क्षेत्र के भूभाग में मानव बसने की बात कही है। इसके पश्चात् के बृहादाश्म युग में भी इस प्रदेश में मानव की बस्ती होने के ठोस प्रमाण उपलब्ध हुए हैं। ताम्रपाषाण और लोहयुग में मानवीय संस्कृति का विकसित स्वरूप भी देखा जा सकता है। इस विकसित काल में, इस भू भाग में

टिप्पणी :- निलंगा, महाराष्ट्र के लातूर जिले में बसा एक शहर है। यह तहसील का नगर है। निजाम के शासनकाल में यह नगर बीदर जिले में था। पहले इसकी आबादी दस हजार से अधिक नहीं थी। आज यहाँ नगर-परिषद् है और जनसंख्या लगभग सत्तर हजार है।

'मूलक' 'अश्मक', 'कुंतल', 'ऋषिक' आदि जनपद अस्तित्व में आये थे। ये जनपद, किसी समय, वर्तमान मराठवाड़ा क्षेत्र के अलग अलग शहरों से जुड़े हुए थे। ये शहर हैं औरंगाबाद, बीड़, जालना, परभणी, नान्देड, उस्मानाबाद, लातूर आदि।

इ. सन् पूर्व आठवी शताब्दी से इ.सन् १३०० तक के इस दो हजार वर्ष के काल में, इस भूभाग पर सम्राट अशोक के पश्चात्, सातवाहनों का राज्य इ. सन् २३० से ४६० वर्ष तक रहा। इसकी राजधानी पैठण रही। यहाँ वाकाटक सन् २५० - सन् ५५०, राष्ट्रकूट सन् ७४४ से सन् ९७३, चालुक्य सन् ७५३, यादव सन् ११८१-१३१८ आदि राजवंशीयों का राज्य रहा। अल्लाउद्दीन खिलजीने सन् १२९४ में यादवों को पराजित किया। तत् पश्चात् दक्षिण में खिलजी सुलतान की सत्ता स्थापित हुई और इसके साथ ही दक्षिण क्षेत्र में हिन्दू राज्य का लोप हो गया।

सातवाहन राजवंशीय राजा पराक्रमी थे। उन्हीं के काल में महाराष्ट्र समृद्धि दिशा की ओर अग्रसर हुआ। इसीलिए इतिहास में सातवाहन युग 'सुवर्ण युग' कहा जाता है। वाकाटक युग में 'अजिंठा' गुफाओं में चित्रकला सर्जित हुई। राष्ट्रकूट काल में निर्मित कैलास गुहाओं में पाषाण कला का अद्भुत आविष्कार दृष्टिगोचर होता है। यह कला और वास्तुकला के सुन्दर मिलाप का यह आश्चर्यकारक उदाहरण है। यादवों के काल में दुर्जेय दुर्गोका निर्माण हुआ। इसी काल में कई सुन्दर मन्दिरों का निर्माण भी हुआ। ये मंदिर शिल्पकला की दृष्टि से अद्वितीय उदाहरण कहे जाते हैं - धर्मापुरी, निलंगा, औसा, परंडा, चम्पावती, औंढा, देवगिरी, पैठण, परली, अम्बाजोगाई आदि स्थानों के हेमाद्री मंदिर यादव वंशीय राजाओंकी कलाप्रियता व्यक्त करते है।

दिल्ली के बादशाह द्वारा दक्षिण में जो सूबेदार नियुक्त किये गये थे, उनकी सन्तानों में सत्ता हथियाने के लिए आपसी कलह, संघर्ष शुरू हुए। उनकी सत्ता की ललक हत्याओं में परिणत हुई। दक्षिण के इस हिस्से का बँटवारा भी हुआ - वह इतिहास में अलग अलग नामों से परिचित हैं। वे हैं आदिलशाही, बरीदशाही, कुतुबशाही आदि। अन्त में मुगलों का सूभेदार - निज़ाम उल मुल्क ने मुगलों से दगाबाजी कर स्वतंत्र रूप से एक अलग रियासत की स्थापना की। वह थी निज़ाम

हैदराबाद रियासत। इस आसफशाही घराने के सात शासक रहे -

(१) निज़ाम - उल मुल्क आसिफ शाह - १७२४ - १७४८
(२) मीर निज़ाम अली - १७६२ - १८२९
(३) सिकंदर शाह - १८०३ - १८२९
(४) नासिर उद् दौला - १८२९ - १८५७
(५) आसिफ उद् दौला - १८५७ - १८६०
(६) मीर महबूब अली - १८६१ - १९११
(७) मीर उस्मान - अलीखान - १९११ - १९४८

निज़ाम रियासत के अंतिम शासक मीर उस्मान अलीखान के निरकुंश कार्यकाल में हैदराबाद की हिन्दू जनता ने स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष किया, इतिहास में वह हैदराबाद का मुक्ति संग्राम के नाम से विख्यात है। अगले अध्यायों में इस संघर्ष का विवरण प्रसंग के अनुरूप प्रस्तुत किया जाएगा।

पांचवे निज़ाम असफ उद् दौला के कार्यकाल में उनके प्रधानमंत्री सालार जंग ने हैदराबाद रियासत के प्रशासन में काफी सुधार किये। उन सुधारों में एक है - हैदराबाद रियासत का महसूल तथा उसके व्यवस्थापन दृष्टि से पुन: रचना का कार्य। रियासत में ५ सूबे १७ ज़िले बनाए गये। उसमें से एक सुबा है 'मराठवाड़ा'। 'वाडा' शब्द का प्राचीन अर्थ था - सूबा।

जब से दक्षिण में मुसलमानों की सत्ता स्थापित हुई तब से निलंगा भी इसी सत्ता के अन्तर्गत आया और किसी न किसी रुप मे निलंगा इतिहास के पृष्ठों पर विशेषत: अंकित होता गया। 'कोदि-द लिज्ज्यारिस' इस पोर्तुगीज यात्रीने अपने रोज़नामा में (१० मई १६३४) लिखा है - 'एक लाख महसूल का निलंगे का किला और भूभाग है, जो बगावतखोर आदिलशाही सरदार के आधीन है'। जेम्स बरगेस (James Burgess), Report on the antiquities (1878) ग्रथ में लिखते है "Larger town Nilanga on a tributory of the Terana River. It has once been a place of more popular and importance then now. Though, it is still the famous town of the district."

निलंगा फरमान सम्बन्धी कुछ फरमान भी उपलब्ध हुए हैं। मुहम्मद आदिलशाह (इ.स.१६३५-१६७२) के काल में ६२ फर्मानों का एक गट्ठा कुछ वर्ष पूर्व निलंगा में ही उपलब्ध हुआ है। (संदर्भ - उस्मानाबाद गॅजेटिअर)। इन फर्मानों में तत्कालीन राजनीतिक इतिहास अल्प मात्रा में मिलता है। आदिलशाह प्रशासन का स्वरूप, राज्य का महसूल स्त्रोत आदि की जानकारी प्राप्त होती है। यह आदिलशाह की आस्थिरता का समय था।

२५ नवम्बर १६६५ में मुगल और मराठों ने संयुक्त रूप से विजापुर के आदिलशाह के विरुद्ध लड़ाई की। इस लड़ाई में वह पराजित हुआ। इस लड़ाई में मराठा सरदार दत्ताजी जाधव और उसके पुत्र नौबतराव निलंगा में ही मारे गये (संदर्भ - उस्मानाबाद गॅजेटिअर)।

१४ में १६७७ में, बहादुरखान के समय मुगलोंने नलदुर्ग का किला हस्तगत किया। इस कारण निलंगा भी मुगलों के अधीन रहा।

इ.स. १८५७ में शुरू हुए स्वतंत्रता संग्राम से मराठवाड़ा भी प्रभावित रहा। १८५७ से १८६७ तक सशस्त्र बगावत की मालिका में लातूर, निलंगा के व्यक्ति सम्मिलित हुए थे। उनका नेता रामराव उर्फ जंगबहादुर था। वह मूल सातारा का था। निलंगा तहसिल के विठोजी खंडोजी के इस स्वतंत्रता आन्दोलन में सम्मिलित होने के कारण अंग्रेजोंने उसे पकड़कर औरंगाबाद के क्रान्ति चौक में तोप से उडा दिया था। (संदर्भ-उस्मानाबाद गँजेटिअर)

प्राचीन समय में यह क्षेत्र दण्डकरण्य से घिरा था। इसी दण्डकारण्य में 'श्री शृंग' नामक पर्वत था। इसी पर्वत को 'निर्लिंग' भी कहा जाता रहा है। यह निर्लिंग शब्द निलेवाड़ी शब्द में परिवर्तित हुआ - आगे चलकर निलेवाड़ी से निलावती फिर निलंगा हुआ। जंगलों से घिरे हुए अज्ञात स्थल में स्थित निलंगा ज्ञात की अपेक्षा अधिक अज्ञात ही रहा। बाद के समय, इस क्षेत्र में लोग बसने लगे। बस्तियाँ बढ़ती गयीं और निलंगा काफी प्रसिद्ध होने लगा। राष्ट्रकूट, चालुक्य तथा यादव राज्य काल में सामाजिक प्रगति द्रष्टव्य रही। निलंगा तथा इसके परिसर में हेमाद्री-मंदिरों का निर्माण किया गया। हेमाद्री मंदिर की विशेषता यह है कि ऐसे मंदिरों की नींव नहीं होती। मंदिरों के निर्माण में चूना-सीमेंट आदि तत्सम पदार्थों

का उपयोग नहीं किया जाता। पत्थरों में एक प्रकार का 'खांचा' कर एक से ऊपर एक पत्थर रखे जाते हैं, एक पत्थर-दूसरे पत्थर में फँसाया जाता है और इस प्रक्रिया से मंदिरों का निर्माण किया जाता है।

हेमाद्रि मंदिर के निर्माण से यह ज्ञात होता है कि निलंगा तथा इसके इर्द-गिर्द के गावों में ऐसे अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ है। निलंगा - अनेक कलाविद, वैज्ञानिक, योग-विद्या तथा संशोधकों की नगरी रही है, ऐसा इतिहास के पृष्टों से जान पड़ता है।

निलंगा तथा आसपास के ग्रामों में प्राचीन शिलालेख पाये गये हैं :-

प्राचीन ग्राम के नाम	वर्तमान ग्राम के नाम
(१) जमलग्राम	(१) माने जवळगाव
(२) कोरअर	(२) कोराळी
(३) मल्लरु डिगे	(३) मल्लार वाडी
(४) मोद गौलू	(४) मुदनगड़ (रायलिंग मुदगड)
(५) मुग्गल	(५) ताड़ मुगळी
(६) मुक्तदम बिड़	(६) मुत्तल गांव
(७) सरबल	(७) साकोळ
(८) सिसली	(८) शिरूर अनंत पाळ
(९) शिवपुर	(९) शिरूर
(१०) तलामखेड	(१०) तळीखेड़
(११) बिन्दुराम	(११) अम्बुलगा
(१२) बुल्लवारील	(१२) बोरपुरी

(१) नीलकंठेश्वर मंदिर - निलंगा : इ.सन ११ से १४ शताब्दी के बीच जिन मंदिरों का निर्माण हुआ वे हेमाद्रि मंदिर के नाम से जाने जाते हैं। श्री हेमाडपंत यादव वंशीय - राजा रामचन्द्र और महादेव राय के प्रधान मंत्री थे। श्री हेमाडपंत

वास्तुशास्त्रज्ञ, कूटनीतिज्ञ, राजनीतिज्ञ थे। हेमाद्रि मंदिरों के निर्माण का सारा श्रेय इसी श्री हेमाडपंत को दिया जाता है।

निलंगा में एक मंदिर है - 'नीलकष्ठेश्वर'। शिव का यह मंदिर है, किन्तु मंदिर में शिव की जो पिण्डी है, वह मात्र शिव की न होकर विष्णु का प्रतीक भी है। इसलिए इस मंदिर को 'हरिहर' भी कहते है। अनेक धार्मिक दंतकथाएँ इस मंदिर से जुड़ी हुई हैं। मंदिर की रचना कमल दल के सदृश है, साथ ही वह चौदह विद्या, चौसष्ट कलाएं और चौरास्सी योनियों के अध्यात्म प्रतीकों से युक्त है। मुसलमान शासकों ने इस मंदिर को तोड़ने का प्रयास किया है, फिर भी वर्तमान का यह मंदिर अच्छी अवस्था में है तथा शिल्पकला का अद्भुत परिचय देनेवाला है।

(२) हजरत दादा पीर : नीलकष्ठेश्वर मंदिर की पूर्व दिशा में हजरत दादा पीर का दरगाह है। हैदर अली ५० वर्ष पूर्व, बगदाद शहर से भारत आये, भ्रमण करते हुएं, वे निलंगा पहुँचे और यहीं बस गये। हजरत हैदर अली बुद्धिमान् थे, योगी थे, सीधे साधे व्यक्तित्व के थे। हैदर तारीख फारसी ग्रंथ में उनका जीवन चरित्र लिखित है। भारत के नाथ संप्रदाय से जुड़ा हुआ - यह एक मुसलमान महापुरुष था। इनके व्यक्तित्व की ओर आकृष्ट हो, कई व्यक्ति इनके शिष्य बने। हजरत हैदर की मृत्यु १०३३ हिजरी में हुई, उनकी समाधि 'हजरत दादा पीर' के नाम से निलंगा में स्थित है। निलंगा में हर वर्ष उर्स या मेला लगता है - चार दिन तक मनाये जानेवाला यह मेला आज भी धूमधाम से मनाया जाता है।

(३) हजरत पीर पाशा कादरी : ये एक सद्गुणी, धर्म परायण मुसलमान थे। (जन्म १७२७, मृत्यु १७७८ हिजरी) हजरत पीर पाशा के दादा सय्यद नूरोद्दीन भिवंडी-कल्याण के मूल निवासी थे। उनकी मृत्यु के पश्चात, कादरी परिवार निज़ाम के निमंत्रण पर अपना घरबार छोड़कर हैदराबाद पहुँचने के लिए निकल पड़ा। किन्तु बीच में ही उन्हें यात्रा रोक देनी पड़ी। प्रथम वे कल्याणी के पास नारायणपुर में रुके रहे, बाद में निलंगा पहुँचे और यहीं बस गये। हजरत पीर पाशा का उर्स-मेलाभी हर वर्ष लगता है।

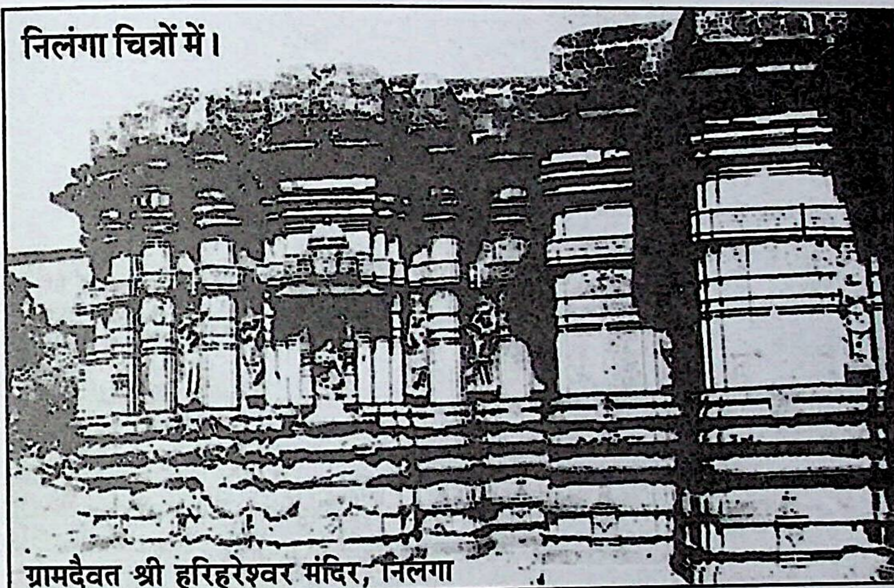
अन्य संत, फकीर भी यहाँ रहे। वीरनाथ (इ.स.१६००) समर्थ शिष्य आनन्द स्वामी की समाधि भी यहाँ है। जयराज स्वामी दासपंथी संप्रदाय के उत्तम कीर्तनकार, और कवि आनन्ददास भी यहीं के थे।

निलंगा विद्वानों, धर्माचार्यों के लिए प्रसिद्ध रहा है। धर्माचार्यो में वासुदेव महाराज भी एक थे, वे ऋषि तुल्य, सरस्वती के उपासक, ज्ञानी, वेदोक्त धर्माचार्य थे। इनके दो पुत्रों ने भी अपने पिताश्री की धर्माचार्य परम्परा का संवर्धन किया। अगली पीढ़ी में गोविन्दाचार्य हुए। गोविन्दाचार्य न केवल विद्वान, धर्माचार्य थे अपितु वे एक प्रसिद्ध आयुर्वेदाचार्य भी थे। एक तरह से निलंगा आचार, सद्विचार का शहर रहा है। मध्व संप्रदायी, वैष्णव संप्रदायी, रामदासी, वारकरी, शैवपंथों की संस्कृति यहाँ दृष्टिगोचर होती है। निज़ाम के शासनकाल में निलंगा मुसलमानों की नृशंसता का शिकार भी हुआ। निज़ामी नृशंसता के विरोध में शेषरावजी जैसा वैष्णव पंथी - व्यक्तित्व खड़ा हुआ, जिसने भाई बन्सीलाल तथा भाई श्यामलाल से प्रेरणा पाकर ऋषिवर दयानन्द के वैदिक सिद्धांतो को अपनाया और निलंगा में १९३० में आर्यसमाज की स्थापना की।

निलंगा का आर्यसमाज अपने स्थापना वर्ष से ही, शेषरावजी के नेतृत्व में एक प्रभावशाली, कृतिशील संगठन के रूप में उभरा और निर्भय बनकर निज़ाम की अन्याय-अत्याचारों का हर तरह से सामना करता रहा। निलंगा और परिसर की हिन्दू जनता संकट के समय आर्यसमाज को अपना संरक्षक मानती रही। आर्यसमाज के माध्यम से श्री शेषरावजी ने संरक्षक की भूमिका निभाते हुए, वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार किया तथा सच्चे ईश्वर और सच्चे धर्म की वास्तविकता भी जनता के सन्मुख रखी। वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार की कमान स्वयं संभालते हुए वे आर्य जगत के कई विद्वानों को निलंगा में आमंत्रित कर, उनके व्याख्यान, शास्त्रार्थ आदि कार्यक्रम आयोजित करते रहे। भाई बन्सीलाल, पं. देवेन्द्र शास्त्री, बुद्धदेव विद्यालंकार, श्यामजी पाराशर, स्वामी सत्यप्रकाशजी, आचार्य कृष्णजी, मदनमोहन विद्यासागर, प्रकाशवीर शास्त्री, पं. नरेन्द्रजी, पं. विनायकराव विद्यालंकार, पं. ओमकुमार वर्मा, पं. नरदेव स्नेही, पं. प्रेमचन्दजी 'प्रेम' सरीखे महान विद्वान, उपदेशक, भजनोपदेशकों के नाम अवश्य उल्लेखनीय हैं।

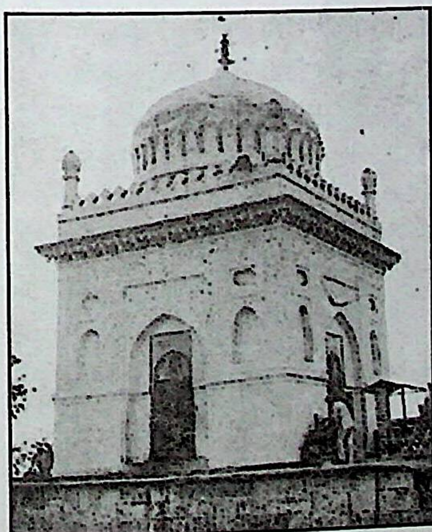
राजनीति के क्षेत्र में श्री शेषरावजी विधायक भी रहे थे। (१९५२-१९५७) अपनी राजनीति की गद्दी श्री शिवाजीराव निलंगेकर के स्वाधीनकर आर्यसमाज के कार्य से वे पूर्ण रुप से जुड़े रहे। शेषरावजीके उत्तराधिकारी श्री शिवाजीराव

निलंगा चित्रों में।

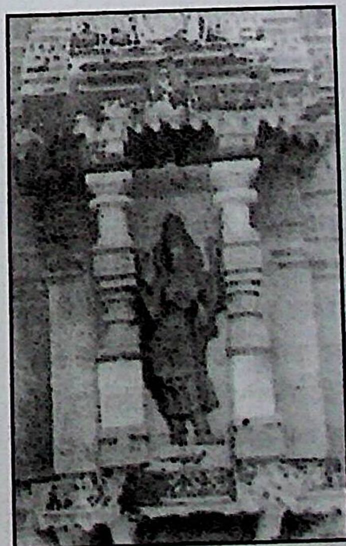


ग्रामदैवत श्री हरिहरेश्वर मंदिर, निलंगा

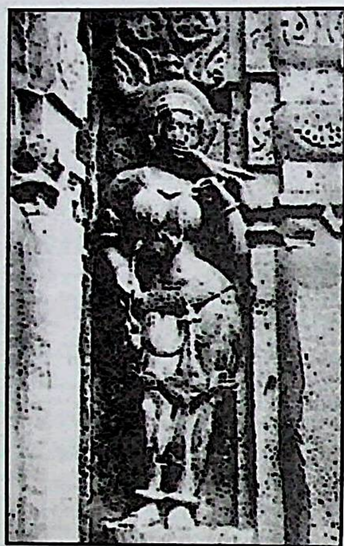
(बाहरी दीवार तथा कलात्मक स्तंभ दर्शनीय हैं।)



हैदरवीर दरशाह - निलंगा



सुरभैरवी



श्री हरिहरेश्वर निलंगा
एक काव्यात्मक शिल्पाकृति



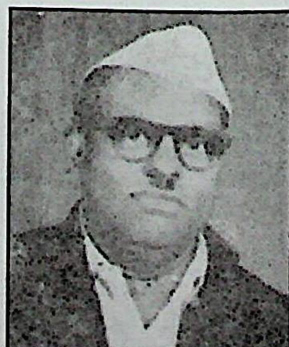
शिव पंचायतन



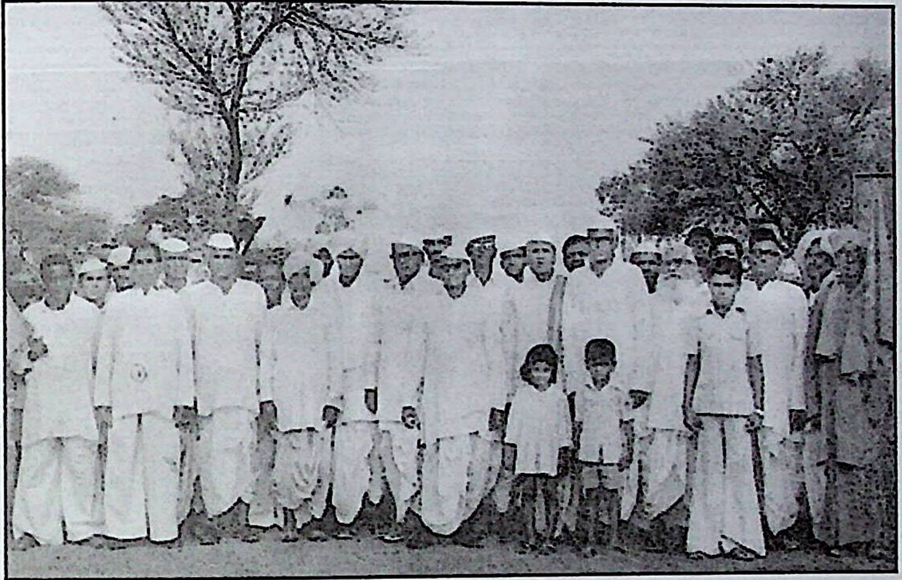
पू. श्री श्रीधराचार्य महाराज
अपसिंगेकर



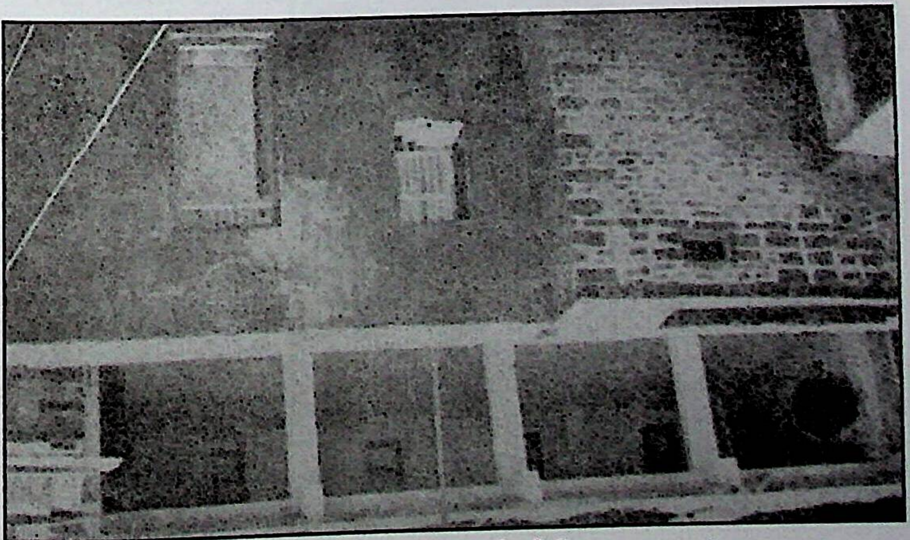
पू. श्री गोविंदाचार्य महाराज
'केसरी'



श्री शेषरावजी वाघमारे



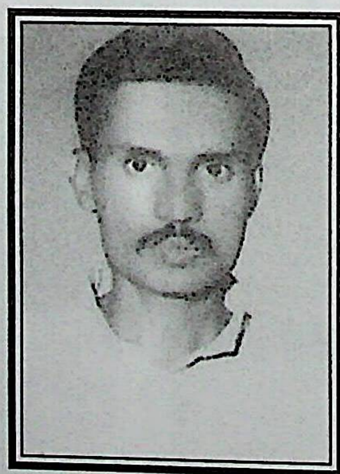
आर्यसमाज निलंगा के कार्यकर्तागण -
बाँयें से १. लिंबराज कोळी २. गुरुनाथ येडवे ३. संतराम ४. पुंडलिक आर्य ५. मल्हारराव होळकर ६. रघुनाथ आर्य ७. ज्ञानचंद ८. ...... १० शेटकार, नामदेवराव चोपणे १०. विजयकुमार शेटकार ११. रामरावशाहीर १२. बळीराम पाटील १३. मन्मथप्पा १४. नागप्पाधर्मशेटे १५. रामलालबाहेती १६. विश्वनाथ निटुरे १७. यशवंतराव आदि (२ नाम अपरिचित) चि. अजीत बळीराम पाटील (बालक) नागप्पाजीके पास।



आर्य समाज- मन्दिर, निलंगा (भीतरी विशाल सभागृह)



वर्तमान निलंगा-आर्य समाज के पदाधिकारी - बायीं ओर से श्री गणेश शाहीर आर्य, गौरव आर्य, श्री नामदेवराव पाखर सांगवे (पुस्तकाध्याक्ष), श्री ओम् प्रकाश वाघामारे (मंत्री), श्री रामविलास धूत (व्यायामशाला अध्यक्ष), श्री बळीराम पाटील (प्रधान), श्री विजयकुमार शेटकार (संरक्षक), श्री विजयकुमार वाघमारे (संरक्षक), पं. सुधाकरजी रामजी (उपदेशक म. आ.प्र. सभा)।



श्री विजयकुमार कानडे
(वर्तमान) कोषाध्यक्ष आर्य समाज, निलंगा

निलंगेकर, महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री बने। और वे अपनी प्रगति का सारा श्रेय - आर्यसमाज को देते हैं।*

वर्तमान समय में आर्यसमाज के मंत्री पद पर शेषरावजी के पौत्र श्री ओमप्रकाश वाघमारे हैं, और प्रधानपद पर शेषरावजी के पुराने अभिन्न साथी श्री बळीराम पाटील विराजमान हैं। वर्तमान में निलंगा आर्यसमाज समय के साथ करवटें लेते हुए नवयुवकों में चारित्र्य की महत्ता, जीवन की गरिमा और राष्ट्र उन्नति के प्रश्नों को लेकर उसी शक्ति से मार्ग क्रमण कर रहा है, जो शक्ति शेषरावजीने कभी लगायी थी।

तरुणाई ने ली अंगडाई
यौवन भर हुंकार रहा है।
उठो देश के वीर जवानों
तुम को देश पुकार रहा है।।



संदर्भग्रन्थ :

- प्राचीन भारताचा इतिहास - श्री मा.म. देशमुख

- The report on the antiquities of Dist. Bidar and Aurangabad - James Burger

- उस्मानाबाद लातूर जिल्हातील मंदिर (पी.एच.डी. का प्रबध अप्रकाशित) - सौ. माया जगदीश पाटील - (सोलापुर)

- उस्मानाबाद गॅझेटीअर, लातूर गॅझेटीयर (मई २००८ को कलेक्टर कार्यालय में प्रकाशन के पूर्व रखा हुआ - गॅझेटिअर का मसौदा)

- हरिहरदर्शन - बाळराजे उटगे - निलंगा

* श्री. शिवाजीराव निलंगेकर जब महाराष्ट्र राज्य के मुख्य मंत्री बने, तब सांताक्रुज (मुंबई) आर्य समाज ने एक स्वागत समारोह का आयोजन किया था। स्वागत समारोह में; श्री शिवाजीराव निलंगेकर ने अपने भाषण में अपनी यह भावना व्यक्त की थी। (के. देवरत्नजी ने अपने एक लेख में इस प्रसंग का विवरण प्रस्तुत किया है)

४ श्री शेषरावजी के पूर्वज और प्रारम्भिक परिचय

शेषरावजी जिस ऐतिहासिक भूमि से जुड़े हुए थे, उस मराठवाड़ा भूमि का विवरण पिछले अध्याय में 'मराठवाड़ा के अन्तर्गत-निलंगा-इतिहास की दृष्टि में'. हम प्रस्तुत कर चुके हैं। इसी मराठवाड़ा क्षेत्र में उस्मानाबाद जिले की तहसील परांडा के अन्तर्गत सोनारी नामक एक गांव में शेषरावजी के पूर्वज श्री भवानी पंत रहते थे। एक सज्जन महानुभाव के रूप में उनकी ख्याति थी। वे गांव के देवी मंदिर के पुजारी थे। उनके पुत्र थे श्री राघोपंत, जो किसी कारणवश कई वर्षों बाद सोनारी गांव छोड़कर, तहसील औसा के हसलगण नामक गांव चले आये। यहाँ उनके चचेरे भाई श्री रघुनाथराव रहा करते थे। श्री राघोपंत भी वहीं रहने लगे। श्री राघोपंत के पुत्र थे श्री नरसिंहराव। वे अपने घराने की तीसरी पीढ़ी के थे। वे भी 'हसलगण' गांव छोड़कर निलंगा के समीपवर्ती गौर नामक गांव में जा बसे और वहीं गौर गांव में खेती कर जीवन व्यतीत करने लगे। श्री नरसिंहराव के पुत्र चौथी पीढ़ी के थे - श्री माधवराव कुलकर्णी। वे वकालत की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और क्योंकि निलंगा तहसील था अत: वकालत करने के उद्देश्य से वे तहसील निलंगा के निवासी बन गये।

कुलकर्णी परिवार की इस चौथी पीढ़ी का कार्यकाल बीसवी शताब्दी के प्रारम्भ का (१९०१ से १९२५) काल रहा है। निलंगा कोर्ट में, उस समय श्री माधवराव कुलकर्णी और श्री भातंब्रेकर ये दो ही वकील थे। श्री माधवराव की वकालत अच्छी थी, व्यवसाय में से आमदनी भी अच्छी खासी हो जाती थी। श्री माधवराव वकील का विवाह निलंगा निवासी सम्पन्न परिवार के श्री आबासाहब जहागीरदार की कन्या बकुलाबाई से हुआ। श्री माधवराव कुलकर्णी का गृहस्थ जीवन सुख एवम् समृद्धि से भरा रहता था। श्री माधवराव कुलकर्णी वैष्णव संप्रदायी ब्राह्मण थे और कट्टर सनातनी, मूर्तिपूजक थे। वे रामानुज मत के अनुयायी थे। रामानुज सम्प्रदाय में चक्रांकित मुद्रा धारण करना महत्व का माना जाता था। चक्रांकित अपने आपको वैष्णव मानते थे और अपने आराध्य देवता विष्णु की पूजा अर्चना में लगे रहते थे। श्री माधवराव भी विष्णु की पूजा अर्चना में लगे रहते थे। वे प्रतिदिन भगवद्-गीता पुराण आदि का पाठ भी किया करते थे। उनकी



श्री माधवराव कुलकर्णी, श्रीमती बकुळाबाई
(श्री शेषरावजीके पिताजी एवं माताजी)

'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद।'
(शतपथ ब्राह्मण का १४)

जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् एक माता, दूसरा पिता
और तीसरा आचार्य होवें तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है।
वह कुल धन्य है! वह सन्तान बड़ी भाग्यवान,
जिसके माता पिता धार्मिक विद्वान हो।

स्वामी दयानन्द - 'सत्यार्थ
प्रकाश'
द्वितीय समुल्लास 'शिक्षा
प्रवक्ष्याम'

धर्मपत्नी बकुलाबाई धर्म परायणा महिला थी। वे भी हर वर्ष पंढरपुर की आषाढी एकदशी की यात्रा में सम्मिलित होकर विठोबा के दर्शनों के लिए पंढरपुर जाया करती थी। उनका स्वभाव मृदु था। वे अति स्नेहशील थी। इससे विपरीत माधवराव नारियल के समान थे। अर्थात् ऊपरी भाग में कठोर किन्तु भीतर से मृदु और कोमल। मन से पवित्र थे और बातों के पक्के थे - एकवचनी थे। उन्होंने अपने जीवन को मर्यादित रखा, न किसी के कर्जदार बने और न कभी झूठी वकालत की। श्री माधवराव कुलकर्णी के तीन पुत्र और सात कन्याएँ थी। रामचन्द्र, शेषराव, नरसिंहराव (बापू साहब) ये तीन पुत्र और राजाबाई, कमलाबाई, विठाबाई, भारतबाई, काशीबाई, वेणूबाई और सरलाबाई ये सात कन्याएँ। माधवराव अपने पहलें पुत्र रामचन्द्र को वकील बनाना चाहते थे, पर उनकी रुचि शिक्षा में नहीं थी, मटरगश्ती में लगे रहते थे। पिताजी के कठोर शब्द नित्य प्रति उन्हें सुनने पड़ते थे, प्रताडना भी सहन करनी पड़ती थी। परिणामतः पुत्र रामचन्द्र ने गृह त्यागा और औसा, परांडा, सोनारी, उदगीर - आदि गांव गांव भटकते रहे। भटकते हुए भी उन्होंने अपने आपको संभाला। वे शिक्षा में लगे रहे। वे चौथी कक्षा मे उत्तीर्ण हो, वकालत की परीक्षा भी उन्होंने दी और वे उत्तीर्ण होकर ही निलंगा लौटे। माता-पिता को अपार हर्ष हुआ। इस हर्ष के अवसर पर पिता ने सत्यनारायण कथा आयोजित की। किन्तु उनके भाग्य में कुछ दूसरा ही लिखा था। रामचन्द्र कुल्हाडी से लकडी फोड़ रहे थे। लकड़ी फोडते समय लकड़ी का टुकडा उनके मर्म स्थान पर लगा और उनकी मृत्यु हो गयी। सत्यनारायण की कथा अधूरी ही रही। इस विदारक घटना से पिता-माधवराव कुलकर्णी, माता बकुलाबाई को अतीव दुःख हुआ। ऐसे असहनीय दुःख में, दम्पती ने धैर्य धर्म को धारण किया और उन्होंने दुःख को सहन करने की क्षमता प्राप्त कर ली। जीवन सुख दुःख का मिश्रण है - 'कभी सुख - कभी दुःख है' इसी का नाम जीवन है - (कवि सतपाल 'पथिक' के शब्द)। कालान्तर में यह कुलकर्णी परिवार सुख और शांति का जीवन व्यतीत करता रहा।

माधवराव कुलकर्णी को व्यायाम आदि का भी शौक था। वे अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखते थे ही, साथ ही अपने पुत्रों के स्वास्थ्य का ध्यान भी रखते थे। ऐसे धर्मानुरागी, प्रामाणिक बातों के पक्के, समाजप्रिय - वकील माधवराव कुलकर्णी

के घर में हमारे चरित्रनायक, ऋषिवर दयानन्द के भक्त, आर्यनेता, वेद सिद्धान्तों के वाहक, क्रान्तिकारी, हैदराबाद मुक्ति संग्राम के सेनानी, समाज सेवक, सुधारक, प्रभावशाली वक्ता, शेषराव कुलकर्णी का जन्म हुआ। उस दिन विजय दशमी थी और इ.सन था १९१२।

आरंभिक शिक्षा और विवाह : निज़ाम रियासत के बीदर जिले में स्थित शहर निलंगा एक पिछड़ा हुआ गांव था। निज़ाम रियासत में सर्वत्र मुसलमानों का वर्चस्व था। इस रियासत की उर्दू राजभाषा थी। सातवें निज़ाम-मीर उस्मान अलीखान के कार्यकाल में सभी तरह की शिक्षा का माध्यम उर्दू ही रहीं। सारी पाठ्यपुस्तकें उर्दू में ही उपलब्ध कराई जाती थीं। उस समय निलंगा में 'उर्दू मदरसा' एक मस्जिद में हुआ करता था। निज़ाम ने अपने शासन के रौप्य महोत्सव पर निलंगा में एक अलग मदरसे का निर्माण किया। शेषराव कुलकर्णी को उर्दू माध्यम से ही शिक्षा प्राप्त करनी पड़ी। वे अभी निलंगा की पाठशाला में सातवी कक्षा में ही पढ़ रहे थे कि उनके पिताजी ने अपने पुत्र शेषराव का विवाह करने का निश्चय किया। शेषराव के योग्य लडकी की खोज में वे लगे रहे। उस समय श्री केशवराव डुमणे निलंगा के निवासी थे। वे निलंगा के समीपवर्ती गांव मदनसुरी की पाठशाला में मुख्याध्यापक थे। नागीणबाई उनकी कन्या थी। श्री माधवरावने अपने पुत्र के लिए पत्नी के रूप में नागीणबाई को पसंद किया। नागीणबाई से शेषराव का विवाह पौराणिक रीति-रिवाज के अनुसार सम्पन्न हुआ। उस समय शेषराव की आयु लगभग १२ वर्ष की थी अर्थात वे बालक ही थे। उस काल में बाल विवाह एक सामान्य प्रथा थी। शेषराव ने युवावस्था आने पर पत्नी का नाम बदल कर सुमित्रादेवी रखा।

विवाह के उपरान्त, शेषराव कुलकर्णी अपनी शिक्षा पूर्ण करने में लगे रहे और उन्होंने निलंगा पाठशाला से ही उर्दू माध्यम से सातवीं की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन दिनों 'ज्युडिशियल कमेटी' की वकालत की परीक्षा देने के लिए मिड्ल या मॅट्रिक होना जरूरी नहीं था, केवल सातवीं कक्षा उत्तीर्ण उम्मीदवार सीधे दर्जे दुय्यम की परीक्षा उत्तीर्ण कर कोई भी वकील बन सकता था। शेषराव भी दर्जे दुय्यम की परीक्षा उत्तीर्ण कर निलंगा कोर्ट में वकालत करने लगे। निज़ाम रियासत में सात वर्ष वकालत करने पर, अपने आप कोई भी प्रथम श्रेणी का वकील बन

सकता था। शेषराव ने इस मार्ग को स्वीकार न करते हुए, उन्होंने दुबारा वकालत की परीक्षा दी और ९९% अंक प्राप्त कर प्रथम श्रेणी - अर्थात् अव्वल दर्जे के वकील बने - यह उनके वकील जीवन का यह प्रथम पुरुषार्थ कहा जा सकता है।

शेषराव निलंगा कोर्ट में वकालत करने लगे। उस समय अन्य वकीलों में धोंडीराम पंढ़रीकर, बाबाराव सबनीस, वामनराव अंसारवाडीकर, रामराव शाहीर और पाशामियाँ वकील थे। शेषराव फौजदारी मुकदमे चलानेवाले वकील थे। वकालत अच्छी चल पड़ी। थोडे ही समय में अपने पिताजी की भाँति शेषरावजी भी एक सफल-निष्णात वकील बन गये। उनके पिताजी-माताजी का पुत्र की सफलता पर आनंदित होना स्वाभाविक ही था।

शेषराव अपनी मधुर वाणी से समाज में प्रिय होने लगे। मधुरवाणी के साथ, उनकी वाणी हास्य विनोद से भरी रहती थी। उनकी दृष्टि में अमीर और दीन, स्पृश्य-अस्पृश्य के बीच किसी तरह का भेद-भाव न था। हमेंशा हर किसी के प्रति वे समानता का ही बर्ताव करते थे। जब कभी गरीब, अस्पृश्य व्यक्ति का मुकदमा आता था। उसे सहर्ष स्वीकार कर, पैसा न लेते, उन्हे न्याय दिलाने में तत्पर रहा करते थे। पैसा कमाना उनका कभी उद्देश्य नहीं रहा, अपितु सामान्य वर्ग की सेवा करना, वे अपने जीवन का ध्येय मानते रहे। इन्ही कारणों से निम्न से निम्न वर्ग में वे देवता कहलाये जाते रहे। प्रथम वे गौर गांव के रहने के कारण, गौरकर कहलाए जाते थे तत् पश्चात अपने उपनाम कुलकर्णी के कारण वकील शेषराव कुलकर्णी के नाम से ख्याति प्राप्त हुए। उस समय उनकी आयु मात्र १८ वर्ष थी।

हे पुरुष! तू ऊपर उठ।

उद्यानं ते पुरुष नावयानं जीवातुं ते दक्षतातिं कृणोमि ।

आ हि रोहेममममृतं सुखं रथमथ जिर्विर्विदथमा वदासि ।।

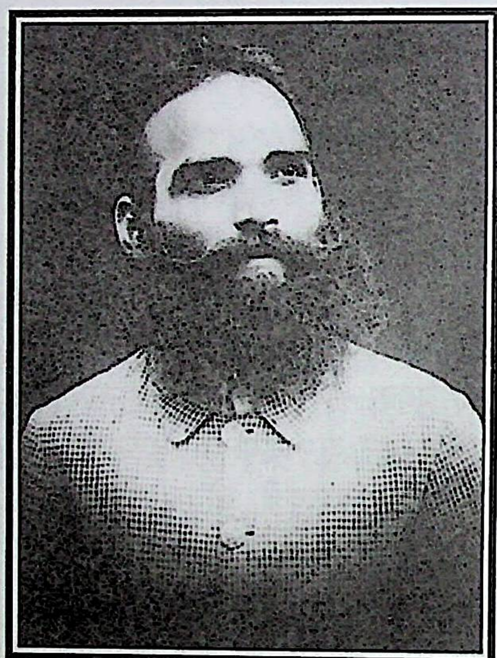
- अथर्व० ८।१।६

''हे जीव। तेरा उत्थान ही हो, उन्नति ही हो।
इस विद्यमान अमृतयुक्त रथ पर ही निश्चय से
तू चढ़ जा। बूढापे में भी ज्ञान का प्रचार करता रह''

५ श्री शेषरावजी - आर्यसमाज की ओर

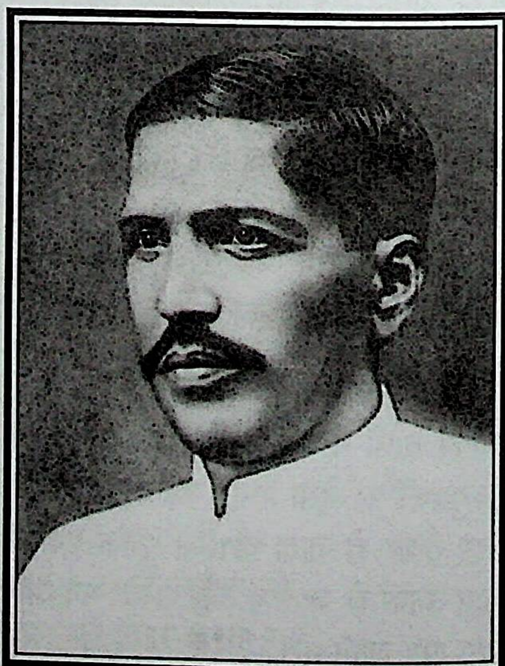
हैदराबाद रियासत आर्यसमाज के प्रथम आन्दोलन (१८९२-१९३०) के अंतिम समय से ही शेषराव आर्यसमाज के विधायक कार्य की ओर प्रवृत्त हुए। इस प्रथम काल में ही रियासत में आर्यसमाज की जड़ें मजबूत हुई थीं। रियासत के जिलों, तहसीलों में आर्यसमाज की शाखाएँ शुरू हुई थीं, रियासत का कन्नड भाषी क्षेत्र - कर्नाटक तथा मराठी भाषी क्षेत्र - मराठवाड़ा आर्यसमाज की गतिविधियों से विरक्त नहीं रहा। बीदर जिले के दो युवक - भाई बन्सीलालजी और भाई श्यामलालजी आर्य मंच पर अवतरित हुए। इन दो भाईयों के प्रेरणास्त्रोत रहे, उनके मामाजी, हलिखेड़ ग्राम-निवासी श्री गोकुल प्रसादजी, जो कानून की शिक्षा के लिए हैदराबाद पहुँचे थे। आर्यसमाज की गतिविधियों, वैदिक सिद्धान्तों की ओर आकृष्ट हो, सुलतान बाजार के आर्यसमाज से सक्रिय रूप से वे जुड़े रहे। इन भाईयों का प्रेरणास्त्रोत धारुर का आर्यसमाज भी रहा। उनकी बहन धर्मवती धारुर में ब्याही गयी थी। यद्यपि ये दो भाई बहन धर्मवती की सनातन पद्धति के विवाह से नाराज थे, पर बहन से मिलने के लिए दोनों भाई धारुर जाया करते थे। उस समय धारुर आर्यसमाज की गतिविधियाँ काफी बढ़ गयी थी, उन्हे नजदीक से देखने का अवसर इन दो भाईयों को मिला। इन्ही दो भाईयों के प्रयत्न से उदगीर में १९२६ में आर्यसमाज की स्थापना हुई। इन दो भाईयोंने - उदगीर तथा हलिखेड़ को केन्द्र बनाकर आर्यसमाज का क्षेत्र बढ़ाया। पाठशालाएँ खोलीं, व्यायामशालाएँ चलायीं, वाचनालय स्थापित किए। इन संस्थाओं के निर्माण का, एकही उद्‌देश्य था। नवयुवक शारीरिक शक्ति के उपासक हों, ऋषिवर दयानन्द के सच्चे भक्त हों और वैदिक सिद्धांतो का जनता में प्रचार प्रसार हो।

भाई बन्सीलालजी और भाई श्यामलालजी का व्यक्तित्व प्रभावशाली था। उनकी वाणी में ओज और तेज था। उनके हृदयस्पर्शी व जोशीले भाषणों का नवयुवकों पर ऐसा प्रभाव पड़ता था कि प्रत्येक युवक देशधर्म पर मर मिटने के लिए तैयार हो जाता था। जो युवक एक बार उनके सम्पर्क में आते, वे सदा के लिए उनके हो जाते थे और उनके मन और मस्तिष्क पर आर्यसमाज की अमिट छाप लग जाती थी।



कर्मवीर भाई बंसीलालजी वकील

(कर्मवीर भाई बंशीलाल जी वकील शेषराव जी वाघमारे के लिए प्रेरणास्त्रोत रहे)



हुतात्मा भाई श्यामलाल जी
(श्री. शेषराव जी के अन्य प्रेरणा-स्त्रोत)

निजाम हैदराबाद की बीदर जेल में अत्याचार एवं यातनाओं के परिणामस्वरूप देहावसान हुआ। इस भाँति प्राणार्पण कर आप शहीद कहलाए।

शेषराव का उदगीर आना जाना हुआ करता था। उदगीर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव (१९२८) पर, शेषरावजी निलंगा के युवकों के साथ उदगीर पधारे थे। यहीं से शेषरावजी भाई बन्सीलालजी तथा भाई श्यामलाल के सम्पर्क में आये। दो भाईयों के व्यक्तित्व, उनके क्रान्तिकारी विचारों का और सामाजिक, धार्मिक, क्रियात्मक कार्यो का शैषरावजी पर काफी गहरा प्रभाव पड़ा। सत्संग से शेषराव का लक्ष्य उज्वल हो गया। वैसे देखा जाए तो शेषरावजीं कट्टर सनातनी, ब्राह्मण संस्कारों से युक्त परिवार में जन्मे थे, पले थे और बढे थे, किन्तु बाद में इन संस्कारों से विरक्त हो आर्यसमाज की ओर अग्रसर हुए - यहीं से उनकी नयी दिशा का प्रारम्भ होता है - भर्तृहरि ने नीतिशतक में कहा है -

'जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं,
मानोन्नतिं दिशति पापमपा करोति ।

चेत: प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं,
सत्संगति: कथय किं न करोति पुंसाम् ।।

''सत्संगति बुद्धि की जड़ता को दूर करती है, वाणी में सत्य का सिंचन करती है, सम्मान को बढ़ाती है, पाप को दूर करती है और चहूँ दिशाओं में यश फैलता है। सत्संगति से क्या प्राप्त नहीं होता - सब कुछ प्राप्त होता है''



अग्निना रयिमश्नवत् पोषमेव दिवेदिवे।
यशसं वीरवत्तमम् ।।३।। ऋग्वेद - १/१/१/३ ।।

आपकी कृपा से स्तुति करनेवाला मनुष्य विद्या आदि धन तथा सुवर्ण आदि धनों को अवश्य प्राप्त करता है। ये धन प्रतिदिन अत्यधिक पुष्टि करनेवाले और यश में वृद्धि करनेवाले हैं। इनसे हमें विद्या, वीरता, धैर्य, चतुराई, बल, पराक्रमयुक्त धर्मात्मा, न्याययुक्त वीर पुरुष प्राप्त हों। उसी तरह मैं भी भौतिक सम्पदा सुवर्ण आदि तथा चक्रवर्ती राज्य और विज्ञान स्वरूप धन को प्राप्त करुँ और आपकी कृपा से सदैव धर्म परायण जीवन यापन करता हुआ अत्यधिक सुखी रहूं।

६ श्री शेषराव और निलंगा आर्यसमाज

शेषरावजी को भाई बन्सीलाल और भाई श्यामलाल की सत्संगति मिली, जिसके कारण उनके जीवन में एक नया मोड़ आया। शेषरावजी के प्रयास से निलंगा तथा आसपास गांवों के नवयुवक भी उनसे आ मिले। उन नवयुवकों में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की धुन लग गयी और सारे निलंगा शहर में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की धूम मच गयी। युवकों के आर्य संगठन के कारण ही, निज़ाम का क्रूर-शासन होते हुए भी लोग निर्भय होकर सामने आये और युवकों का साथ देने लगे। शेषराव निलंगा में आर्यसमाज की स्थापना करना चाहते थे, परंतु निज़ाम आर्यसमाज का कट्टर शत्रु था। वह अपनी रियासत में आर्यसमाज को पनपने देना नहीं चाहता था। निलंगा के सनातनी लोग भी आर्यसमाज को फूटी आँख देखना नहीं चाहते थे, क्योकि आर्यसमाज मूर्तिपूजा और सामाजिक रूढियों का प्रखर शब्दों में खंडन किया करता था। यहाँ तक कि शेषराव के माता-पिता और नजदीक के सम्बन्धी भी सनातनी थे, शेषराव का आर्यसमाज की ओर झुकाव, उन्हे भी पसंद नही था, वे भी उनके घोर विरोधी थे। ऐसी प्रतिकूल स्थिति में भी शेषरावजी ने हार नहीं मानी।

नृशंस निज़ाम की रियासत में भाई बन्सीलालजी, भाई श्यामलालजी निर्भय होकर, अहर्निश वैदिक धर्म के प्रचारार्थ गांव-गांव घूमते थे। भाई बन्सीलालजी प्रचार करते हुए निलंगा भी पहुँचे। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के सेनानी नवयुवक हृदय सम्राट, पं.नरेन्द्रजी अपनी पुस्तक 'हैदराबाद के आर्यो की साधना' में कहते हैं "पं. बन्सीलालजी प्रचार करते हुए निलंगा पहुँचे। निलंगा के मुस्लिम पुलिस इन्स्पेक्टर ने कहा कि आर्यसमाज का प्रचार करने से पूर्व न्यायालय से अनुमति प्राप्त करना आवश्यक है, उसे प्राप्त कर लो। इतना कहना ही था कि पं. बन्सीलालजी मुस्लिम इन्स्पेक्टर पर गरज पड़े। उन्होंने कहा कि प्रचार करना हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, न्यायालय और पुलिस को इसमें हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं। इस मुँहतोड उत्तर पर पुलिस इन्स्पेक्टर को चुप होना पड़ा। पं. बन्सीलाल ने निलंगा में सभा आयोजित कर, सफलता पूर्वक आर्यसमाज का प्रचार किया"

निलंगा की इस प्रचार सभा में शेषरावजी तथा उनके नवयुवक साथी उपस्थित

थे। इस प्रचार सभा से निलंगा के नवयुवक ही नहीं, सारा निलंगा ही प्रभावित हुआ और सोयी हुई वीरता जाग उठी। शेषरावजी के पूर्व प्रयासों को काफी बल मिला। शेषरावजी ने यह दृढ संकल्प ठान लिया कि निलंगा में आर्यसमाज की स्थापना करके ही रहूँगा। निलंगा निवासियों को भी लगने लगा कि आर्यसमाज की स्थापना अवश्य ही होनी चाहिए।

- पं. प्रकाशचन्द्रजी कविरत्न (अजमेर) के शब्द याद आते हैं -

'शशि से रजनी की शोभा, जल से सरोवर की शोभा है।
रवि दिन की शोभा है, नारी से नर की शोभा है।

शोभा है, दुग्ध से गाय की, सुत से घर की शोभा है।
आर्यसमाज के संगठन से हर ग्राम, नगर की शोभा है।'

शेषरावजी ने निलंगा में आर्यसमाज स्थापना करने का दृढ संकल्प किया, किन्तु उसके लिए जगह कहाँ से लाएँ? यह समस्या उनके सम्मुख थी। पुरुषार्थी को ही प्रभु मार्ग दिखाते हैं, कर्महीन को नहीं। निलंगा में, आर्यसमाज संगठन का कार्य १९३० में महादेव मंदिर में प्रारम्भ हुआ। इस सम्बन्ध में कुछ ऐतिहासिक दस्तावेज प्राप्त हुए हैं। १९३५ में निलंगा आर्यसमाज को ढहाया गया था। (एक अलग से अध्याय में - इस घटना का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है) उस समय (**दि. १९-९-४४ फसली**) उर्दू और देवनागरी लिपि में दर्ज किये बयान कहते हैं ''महादेव के मंदिर में आर्यसमाज का कार्य शुरू हुआ। मराठे, ब्राह्मण, लिंगायत कौम के ४० लोग आर्य हुए। उन्हे मंदिर में जाने की इजाजत थी पर दलितों को मंदिर में जाने नहीं दिया जाता था''। श्री बालिरामजी पाटील जो शेषराव के पुराने साथी रहे हैं। उन्होंने इन पंक्तियों के लेखक के साथ हुए अपने साक्षात्कार में इसी बात का विशद रूप में विवरण प्रस्तुत किया है। इस प्रकार निलंगा आर्यसमाज का कार्य प्रारम्भ तो हुआ, पर आर्यसमाज की नित्यप्रति की गतिविधियों में बाधा उपस्थित होने लगी। वह मंदिर ही आर्यसमाज के उद्देश्यों के प्रतिकूल था। सभी वर्ग के व्यक्ति इस मंदिर में पहुँच नहीं सकते थे। ऐसी प्रतिकूल अवस्था में भी आर्यसमाज की गतिविधियाँ डेढ़ दो वर्ष तक चलती रहीं। महादेव मंदिर में स्थापित आर्यसमाज की प्रारम्भिक अवस्था को परिवर्तित करने की आवश्यकता शेषरावजी महसूस करने लगे।

निलंगा में ही श्री माधवराव भोज नामक एक सज्जन रहते थे। उनका एक पुराना मकान था, मकान के सामने थोड़ा सा मैदान भी था। इस मकान में कोई रहता भी नहीं था, कई वर्षों से मकान खाली ही पड़ा था। श्री भोज इस मकान को बेचना चाहते थे, परंतु इस मकान को कोई खरीदता ही नहीं था, क्योंकि इस मकान के सम्बन्ध में एक अफवाह फैल चुकी थी कि इस मकान में भूत रहते हैं। अत: लोगों की नजरों में यह भूतों का मकान था। शेषरावजी को इस मकान की सारी जानकारी थी। पर उन्हे आर्यसमाज के लिए जगह चाहिए थी। अत: उन्होंने विचार किया कि जगह मिले या न मिले अपनी, योजना तो श्री माधवराव भोज के सामने रखनी चाहिए। इसी विचार से वे माधवराव भोज से मिले और अपनी योजना को उन्होंने उनके सम्मुख रखा। श्री भोज ने तनिक भी देर न लगाते हुए हामी भरी - और आर्यसमाज के लिए मात्र एक रुपये में मकान देने के लिए तैयार हो गये और वह मकान आर्यसमाज के लिए शेषरावजी को सौंप दिया। उस समय यह प्रश्न भी उठा की श्री भोज ने केवल एक रुपये में अपना मकान क्यों बेचा? वैसे ही दान रूप में दे देते तो क्या होता? श्री भोज ने यह सोचा होगा कि लोग यह न कहें कि मैंने अपना मकान दान में दिया है और मैं भी कभी घमंड में आकर यह कह नहीं सकूँ कि वैसे ही मैंने मकान दान कर दिया है। वास्तव में श्री भोज का यह बड़ा व्यापक त्याग था। इस तरह निलंगा आर्यसमाज की गतिविधियों की प्रगति का मार्ग खुल गया।

श्री भोज शेषरावजी को वह मकान सौंप रहे हैं, यह बात हवा की भाँति सारे निलंगा में फैल गयी। शेषरावजी जिस गली से गुजरते, लोग उन्हें पूछते कि इस भूतिया मकान का क्या करेंगे? शेषराव कहते ''इस भूतिया मकान' में आर्यसमाज की स्थापना करके, लोगों के मन में बसे हुए भय रूपी भूत को भगाऊँगा। लोग जान सकेगे कि आर्यसमाज भूतप्रेत को नहीं मानता है''।

पं. बन्सीलालजी ने श्री भोज के मकान में निलंगा आर्यसमाज के विषय में - मंत्री सार्व देशिक सभा दिल्ली को दि २/७/१९ ३५ तथा मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब-गुरुदत्त भवन, लाहौर को दि. १४/७/१९३५ के पत्र द्वारा, जानकारी दी है - ''निलंगा आर्यसमाज किराये के मकान में था कुछ खराब दीवारें ठीक

करवाकर एक वर्ष से समाज का काम चल रहा है, साथ में एक व्यायामशाला भी है।*

उस समय इस आर्यसमाज की दक्षिणी दीवार से लगकर श्री वीरप्पा का मकान था। श्री वीरप्पा - वल्द - लिंगप्पा कौम कोष्टी, उमर ३५, पेशा कपडा बुनना - इस तरह अपने लिखित बयान (दि.१७/१०/४४ फसली) को शुरू करते हुए वे आगे कहते है "आर्यसमाज, जिस भोज के मकान में है, इसके इहाते (अहाते) के पुरानी दीवारें थी। डेढ़ साल से इस मकान में आर्यसमाज है। पहले कोई नहीं रहते थे। आर्यसमाजी लोग इस मकान में आकर दीवारें, फर्श के अंतमें आदि को लीप थोप कर रहने लगे" (इस बयान का चित्र इसी अध्याय में प्रकाशित है)।

श्री रामरावजी - मंत्रा। आर्यसमाज निलंगा दि.२४/९/४४ फसली के लिखित बयान में कहते है, "समाज का दफ्तर" किराये के मकान में है - मकान मालिक महादेव भोज निलंगा है"।*

उपर्युक्त लिखित बयान निलंगा आर्यसमाज के सम्बन्ध में एक विशेष दुर्घटना घटित होने के बाद दिये गये हैं। पर इन बयानों से निलंगा आर्यसमाज की प्रारंभिक जानकारी प्राप्त होती है।

शेषरावजी और उनके साथियों ने उस पुराने मकान का जीर्णोद्धार किया। शेषरावजी केवल आदेश देना नहीं जानते थे, काम करना भी जानते थे। स्वयं, इस आर्यसमाज के निर्माण कार्य में ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि ढोते रहे। आर्यसमाज भवन का जब निर्माण हुआ तब शेषरावजी ने निलंगा - आर्यसमाज की विधिवत स्थापना सन् १९३२ में की। वे ही निलंगा आर्यसमाज के संस्थापक हैं।

'अप्रीति-रीति, कुरीति छोडो, आर्यसमाज में चित्त धरो।
बहु दिवस सोये मत रहो - अब सत्यता में रूचि करो।।

'देश हितैषी' (१८८२ में प्रकाशित पत्रिका) पत्रिका के इस घोष वाक्य के अनुसार शेषरावजी के आर्यपन की शुरूआत होती है। सन्त तुकाराम ने कहा है

---

* यह मूल पत्र लेखक के पास उपलब्ध है।

ओ३म्

बयान वीरप्पा जो समाज के दाहिने दीवार से लगकर इनका मकान है

मैं ईरप्पा वल्द लिंगप्पा कोम कोष्टी उमर साल ३५ पेशा कपड़े बुनना साकिन निलंगा / राम कृष्णा मोज इस (समाज जिसमे है) मकान का कार्यवाह है इसके ईहाते के पुराने दिवारें थे / अब देड साल से इस मकान मे आर्यसमाज है पहले कोई नहीं रहते थे / पूर्व के ओर सदर दर्वाजे की दीवार का कोना और पश्चिम का कोना राम कृष्णा मोज गीरने से बांधा था / जिसको अन्दाजा पांच छे साल हुवे यह भी नीचे दो गज दीवार थी ऊपर बांधा था / आर्यसमाजी लोग इस मकान मे आकर लीप थोप कर रहे कोई तामीर नहीं की / इस मकान की दिवारे अब सरकार खरीदी / इसमे एक हवन कुण्ड था इसको भी सरकार गिरा दी / माल जब्त कर दी / मेरा बयान अभी जलाल जिरवाकिर है उनको भी यही बयान दिया है / अन्दाजन दो माह हुवे होंगे।

बयान सुना सही है /

[illegible] [illegible]

[illegible]

श्री. इरप्पा वल्द लिंगप्पा का बयान (दि. १७ - - ४४ फसली)

'केल्याने होत आहे रे, आधि केलेचि पाहिजे', कोई काम होता है, उसे करना चाहिए, केवल बोलने से कुछ नहीं होता।

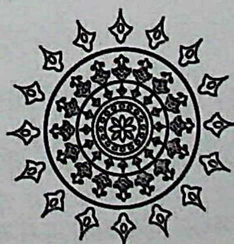
तत् पश्चात्, शेषराव और उनके साथियों ने आसपास के गांवों में - कासार शिरसी, मदनसुरी, हणमन्तवाडी, अम्बुलगा, पान चिंचोली आदि गांवो में आर्यसमाजों की स्थापना की। इन समाजों में हर वर्ष के वार्षिकोत्सव, विभिन्न पर्वो पर, कई विद्वानों को निमंत्रित किया जाता था। विद्वतापूर्ण भाषणों से लोग आर्यसमाज की ओर अधिक संख्या में आकर्षित हुआ करते थे।

हम अकेले ही चले थे, जानिबे वे मंजिल मगर
हमसफर आते गए और कारवाँ बनता गया।

''दयानन्द वचनामृत''

''जो उन्नति करना चाहो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा। क्यों कि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, उसकी उन्नति तन मन धन से सब मिलकर प्रीति से करे। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है, वैसा दूसरा नहीं हो सकता''

(सत्यार्थ प्रकाश - एकादश समुल्लास)



७ आर्यकुमार सभा-निलंगा

हैदराबाद रियासत में आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए योग्य, चरित्रवान्, बलवान् और कर्मठ युवकों की आवश्यकता थी। इसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए, भाई बन्सीलाल, भाई श्यामलाल, पं. विनायकराव विद्यालंकार, पं. नरेन्द्रजी, श्री गंगाराम आर्य आदि आर्य नेताओं के प्रयास प्रंशसनीय रहे हैं। इन्हीं के प्रयत्नों से सम्पूर्ण रियासत में आर्यसमाजें स्थापित हुई और जहाँ जहाँ आर्यसमाजें स्थापित हुई, वहाँ वहाँ नवयुवकों के लिए आर्यकुमार सभाएँ भी स्थापित की गयीं।

निलंगा में आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही शेषरावजी और उनके साथियों नें आर्यकुमार सभा की स्थापना की। हर शुक्रवार को आर्यकुमार सभा का अधिवेशन भी होने लगा। कुछ कालान्तर से यह अधिवेशन रोज़ होने लगा। शेषरावजी ने अपने प्रेरणास्रोतों के पदचिन्हों पर चलते हुए एक व्यायामशाला (अखाडा) और वाचनालय भी खोल दिया। इस अखाडे और वाचनालय से सम्बन्धित जानकारी उस समय के आर्य युवकों की लिखित बयानों से उपलब्ध होती है, जिसका विवरण महादेव मंदिर में आर्यसमाज और स्वतंत्र रूप से भोज के मकान में स्थापित आर्यसमाज के अंतर्गत दिया गया है।

गोविन्दाचार्य वल्द तात्याचार्य के बयान (ता. १९/९/४४ फसली) से निलंगा अखाडे के बारे में जानकारी उपलब्ध होती है- बयान सवाल - जवाब के रूप में है। ''सवाल : अखाडा कहाँ था ? गोविन्दाचार्यने जवाब दिया - ''नारायणराव जहागीरदार के मकान में अखाड़ा बच्चों के लिए खुला रहता है''। अगला जवाब है - ''बच्चों से पांच 'आणा' महिना लिया जाता है। महिना एक आणा हर दूकान से वसुल किया जाता है।''*

गोविन्दाचार्य और धैर्यशील बाबाराव निलंगा निवासी का एक संयुक्त बयान उर्दू में है। इन दोनों के बयान से 'निलंगा अखाडे' की अधिक जानकारी प्राप्त होती

* 'निलंगा आर्य समाज भवन का विध्वंस' इस अध्याय में बयान का चित्र प्रस्तुत है।

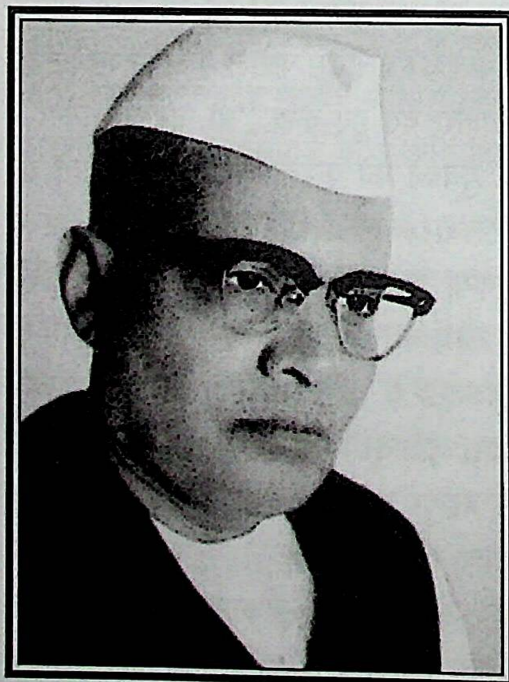
है। ''मंत्री का काम अखाड़े को कायम रखकर, देखरेख करना। अखाडे के ६३ सदस्य हैं। अखाडे का मक्सद है कौम को मजबूत बनाना और (शरीर) जिस्म मजबूत करके अपनी हिफाजत कर सके। दंड, बैठक, डबलबार, सिंगलबार, मलखांब, मकदेर फेक पट्टा, भाला, बरछी, जंबिया, तिरंदाजी, नेमबाजी, अंदोजी वगैरा।''

उस समय के बयानों से ज्ञात होता है कि आर्यकुमार सभा (अखाड़ा-निलंगा) का संचलन शेषरावजी स्वयं करते थे। निलंगा के युवक नित्यरूप में अखाडे में आते थे। शेषराव स्वयं कर्मठ कार्यकर्ता, निर्भय और लंगोट के पक्के थे। कुशल संगठक थे। शेषराव इस अखाडे में युवकों को लट्ठ, भाला बरछी, तलवार, व्यायाम, आसन, संध्या, यज्ञादि का प्रशिक्षण दिया करते थे। व्यायामशाला और कुश्ती का अखाड़ा देशभक्ति का केन्द्र बन जाय, कुशाग्र बुद्धि सम्पदा के लिए वाचनालय हो, यह शेषरावजी की भावना रही है। युवकों को संगठित करने में शेषरावजी माहिर थे। युवकों को, उनकी योग्यता के अनुसार संगठन कार्य सौंपकर उनके दिल और दिमाग को अधिक शक्तिशाली बनाने में वे सदा व्यस्त रहते थे। सभी युवकों पर उनका अच्छा प्रभाव था। वे युवकों को जो भी कार्य सौंपते, युवक उस कार्य को बड़ी लगन से निभाते थे। बलीराम पाटील ने अपने साक्षात्कार में उस समय के नवयुवकों की जानकारी देते हुए कहा ''श्री नागाजी धनगर - कुश्ती में कुशल थे, अतः वे सभी युवकों को कुश्ती की कला सिखाते थे। श्री ज्ञानोबा कोरके, लाठी, भाला, तलवार चलाना जानते थे। वे इस दृष्टि से युवकों को प्रशिक्षित करते थे। श्री नागप्पा शरणगप्पा धर्मशेटे ब्राह्ममुहुर्त में उठकर घंटी बजाकर युवकों को जगाने का कार्य करते थे। घंटी की आवाज सुनते ही सभी युवक आर्यसमाज के मैदान में इकट्ठा हो जाते थे। ''हे प्रभो आनन्द दाता - ज्ञान का हमको दीजिए'' गीत से सारा वातावरण आनन्दमय हो जाता था। श्री गोविन्द नाईक बहुत ही समझदार और बहादुर युवक थे। जब निलंगा में, प्रसंगवश शोभायात्रा निकलती, तो उस शोभायात्रा को सफल बनाने में, उनकी कुशलता द्रष्टव्य थी। निजाम राज्य में आर्यों की शोभायात्रा पर मुसलमान अचानक हमला किया करते थे और शोभा यात्रा भग्न कर देते थे। ऐसी स्थिति में श्री गोविन्द नाईक



स्व. पं. विनायकरावजी विद्यालंकार

मूल नाम - विनायक केशवराव कोरटकर गुरुकुल कांगडी, हरिद्वार के स्तानक; विद्यालंकार पदवी; हैदराबाद आर्य सत्याग्रह (१९३८) के एक सर्वाधिकारी; हैदराबाद मुक्ति-संग्राम के अग्रगण्य नायक; स्वतंत्र हैदराबाद के मंत्रीमंडल में एक मंत्री; श्री. शेषराव जी के सहयोगी वरिष्ठ कार्यकर्ता:



पं. नरेन्द्रजी

हैदराबाद आर्य सत्याग्रह एवं मुक्ति-संग्राम के अजेय योद्धा; आयोजन, सम्मेलन एवं संयोजन कार्यों में अतुलनीय कुशल; हैदराबाद विधान-सभा के सदस्य; ब्रम्हचर्याश्रम से सीधे सन्यासाश्रम में प्रवेश; नाम - स्वामी सोमानन्द जी; साहस एवं त्याग की प्रतिमूर्ति;

पं. शेषराव जी वाघमारे के अनन्य सहयोगी;

और श्री नागप्पा मुसलमानों के इरादों को नाकामयाब बना देते थे।''

युवकों के शारीरिक प्रशिक्षण के साथ साथ बैदिक-सिद्धान्तों की शिक्षा भी दी जाती थी। इस उत्तरदायित्व को शेषरावजी, वामनराव तथा बाबासाहब देशमुख ने सम्भाला था। शेषरावजी युवकों को देशभक्ति भरे और वीरों की स्तुति भरे जोशीले गीत गाकर सुनाते थे - ताकि युवकों में देशभक्ति जागृत हो, उसकी आन-बान की रक्षा में वे सदैव तैयार रहें। इतना ही नहीं, वे युवकों को अंडा, माँस, मछली, बीड़ी, सिगारेट, शराब आदि व्यसनों से दूर रहने का उपदेश भी देते थे। ''व्यसनों से दूर रहना अपने जीवन को दीर्घ बनाना है'' ऐसे जीवन मूल्यों से युवकों को परिचित किया करते थे। ''शरीर तंदुरुस्त हो, दिमाग खूब चुस्त हो, दिल दुरुस्त हो और कष्ट सहिष्णुता के लिए शरीर को व्यायाम की आवश्यकता है। इसी के अभाव में छात्र तेजहीन हो जाते है साथ ही ज्ञान का अभाव भी हो जाता है'' - यह शेषरावजी का शारीरिक स्वास्थ्य का चिन्तन था। उनके उपदेशोंसे युवकों को निर्व्यसनी होकर दीर्घकाल तक जीने का अवसर प्राप्त हुआ था। शेषरावजी के कुछ साथी काल के अधीन हुए। आजभी कई एक साथी ऐसे है जिनकी आयु ८० वर्ष से ९० तक की है। वे है श्री बलीराम पाटील, रामजी शिंदे, मदनलाल अट्टल, भीमराव देशमुख आदि। साक्षात्कार के समय उन्होंने कहा ''शेषराव पिताजी की सत्संगति के कारण ही वे आजीवन निर्व्यसनी बने रहे और सदाचारी बने।

प्रत्येक आर्य युवक अपने कार्य में दक्ष था, अनुशासन उनके जीवन का अभिन्न अंग बन गया था। इस तरह शेषरावजी के नेतृत्व में एक सशक्त आर्य संगठन स्थापित हुआ। इस आर्य संगठन ने अपने कृतित्व से एक अनोखी छाप अंकित कर दी थी। इसके कारण उनके अपने क्षेत्र में हलचल सी मच गयी थी। युवकों की हलचल के कारण मुसलमान अपना सिर उठा न पाते थे। निज़ाम पुलिस की नींद भी हराम हो जाती थी। निज़ाम शासन ने इस आर्य संगठन को तोड़ने की कोशिश की पर वह नाकामयाब रहा। युवा संगठन ने उस क्षेत्र के हिन्दुओं में प्राण फूंके थे -

स्व.पं. प्रकाशचन्द्रजी के शब्दों में -

देखकर जलती शमा परवाने
खुद भी आ जाते है जलने के लिए।
अरे! उठ चल तेरे पीछे पीछे
लाख हो जाएंगे चलने के लिए।।

दयानन्द वचनामृत

"विदेशियों के आर्यावर्त में राज्य होने के कारण आपस की फूट, मतभेद, ब्रह्मचर्य का सेवन न करना, विद्या न पढ़ना, पढ़ाना, बाल्यावस्था में अस्वयंवर विवाह, विषयासक्ति, मिथ्याभाषणादि कुलक्षण, वेदविद्या का अप्रचार आदि कुकर्म है। जब आपस में भाई-भाई लड़ते हैं, तभी तीसरा विदेशी आकर पंच बन बैठता है"

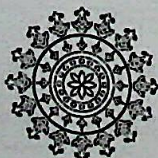
(सत्यार्थ प्रकाश - दशम - समुल्लास)

आत्मा का सिंहनाद

अहमिन्द्रो न परा जिग्य इद् धनं न मृत्यवेऽव तस्थे कदा चन ।
सोममिन्मा सुन्वतो याचता वसु न मे पूरवः सख्ये रिषाथन ।।

- ऋ० १०।४८।५

"मै आत्मा हूँ। मै ऐश्वर्य को कभी हार नही सकता। मृत्यु कभी भी मुझे नहीं आ सकती। हे मनुष्यों। यज्ञार्थ कर्म करते हुए मुझसे ऐश्वर्यों कों माँगो। मेरी मैत्री में हुए तुम कभी भी नष्ट नही होओगे"



८ वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार और जनजागृति

निलंगा में आर्यसमाज और आर्यकुमार सभा की स्थापना हुई, मानो शेषरावजी के भविष्य के कर्मण्यवादी दिशा के मील का पत्थर सिद्ध हुई। जहाँ-जहाँ आर्यसमाज के उत्सव होते थे, वहाँ वे उपस्थित रहते थे। आर्य विद्वानों के भाषण सुनते और ऋषिवर दयानन्द द्वारा बताये गये वैदिक सिद्धान्तों से परिचित होते थे।

ऋषिवर दयानन्द निर्वाण के ५० वर्ष के पश्चात् ऋषि दयानन्द सरस्वती निर्वाण अर्ध शताब्दी १४ अक्तूबर से २० अक्तूबर सन १९३३ में अजमेर में आयोजित की गयी थी। इस अर्धशताब्दी समारोह में आर्य जगत् के अनेक प्रसिद्ध विद्वान और नेता यथा स्वामी श्रद्धानंद, महात्मा नारायण स्वामीजी, महात्मा हंसराजजी, यतिगण और दक्षिण से भाई बन्सीलालजी, भाई श्यामलालजी अजमेर पहुँचे थे। इस अवसर पर शेषराव, अपने कुछ साथियों के साथ भाई बन्सीलालजी के साथ ही अजमेर पहुँचे थे। ऐतिहासिक नगरी - अजमेर के इस दयानन्द निर्वाण अर्धशताब्दी के सम्बन्ध में आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु ने अपने ग्रंथ 'महात्मा हंसराज' ग्रन्थावली, दो भागों में 'महात्मा हंसराज'जी के लेख छापे हैं। महात्मा हंसराजजी ने ऐतिहासिक अजमेर के आर्यनगर का वर्णन इस प्रकार किया है। ''अजमेर के आर्य नगर का दृश्य दर्शनीय था। प्रांत: काल से लेकर रात्रि दस बजने तक कहीं परमात्मा के भक्ति के भजन आत्मा को आनंदित करते थे, कहीं ऋषि-भक्ति के गीत हृदयों के अंदर सद्भावों को प्रकाशित करते थे। विद्वानों के भाषण वेद और शास्त्रों के प्रमाणों तथा युक्तियों के आधार पर अज्ञान के अंधकार को दूर करते थे। अपनी, अपनी धुन के मतवाले स्थान-स्थान पर सम्मेलन करके अपने विचारों की पुष्टि करते थे। स्वामी सर्वदानन्द ने तो साधुमंडल में विशेष रौनक पैदा कर दी थी। .... इस प्रकार जिधर जाओं, उधर किसी न किसी रूप में वैदिक धर्म का प्रकाश दिखाई देता था। ऐसा अद्भुत दृश्य देखकर एक मृत हृदय में भी उत्साह का संचार हो जाता था। परन्तु आर्यो के हृदय तो मानो ऋषि भक्ति और धर्म प्रेम से लबालब भरे हुए थे। जिधर देखों, उधर आनन्द ही आनन्द प्रसृत प्रतीत होता था।'' इस अवसर पर एक विशाल नगर कीर्तन शोभायात्रा का आयोजन भी किया गया था। इस नगर कीर्तन में २० वर्ष का

युवक शेषरावजी अपने हाथ में ओ३म् ध्वज लेकर सबसे आगे चल रहे थे। नगर कीर्तन में आर्यों का महासागर हिंलोरे ले रहा था। ऋषिवर दयानन्द और वैदिक धर्म के जयजयकारों से आकाश गूँज रहा था। इन जयजयकारों में शेषराव की ध्वनि भी सम्मिलित थी। उनके अन्तरमन में अनेक विचारों की लहरें भी उठ रही थी। इतने बड़े विशाल कार्यक्रम देखने का और उसमें सम्मिलित होने का उनके जीवन में यह प्रथम ही अवसर था।

अनेक विद्वानों के तार्किक एवम् मार्मिक उपदेशों से शेषरावजी बहुत प्रभावित हुए। उनके जीवन का आमूल परिवर्तन हो गया। उन्होंने मूर्ति-पूजा के स्थान पर वैदिक-संध्या, यज्ञ, और पुराणों के स्थान पर दैनिक वेदपाठ तथा वैदिक साहित्य का अध्ययन तथा वैदिक कर्मों को करना प्रारम्भ कर दिया। वेद कहते है 'अग्निना अग्नि समिध्यते' अर्थात् अग्नि से अग्नि प्रज्वलित होती है, चरित्र से चरित्र का निर्माण होता है।

अजमेर की अर्धशताब्दी के पश्चात, शेषरावजी और उनके साथियों ने मिलकर वैदिक धर्म के प्रचार की योजना बनाई। निलंगा तथा आसपास के गांवों में प्रचार कार्य शुरू कर दिया। प्रचार कार्य करते समय उन्होंने अनुभव किया कि समाज में अनेक कुरीतियाँ, अंधश्रद्धा गहरे तक पैठ कर गयी हैं, धर्म का विशुद्ध रूप लुप्त हो गया है। यज्ञों में पशुबालि दी जाती थी और पत्थर की बनी देवी देवताओं को प्रसन्न करने के लिए मंदिरों में पशुओं की बलि दी जाती थी। इस घिनौने और पाखंडी कृत्य को बंद करने की बात तो अलग ही रही, इन प्रवृत्तियों के विरुद्ध बोलनेवाला भी उस समय नहीं था। इसके लिए साहस और धैर्य की आवश्यकता थी। ऐसे समय शेषरावजी ने प्रचार अभियान प्रारम्भ कर दिया। इस प्रचार अभियान में श्री बलीराम पाटील, श्री नारायणराव हिरास, तमन्ना आर्य, गोविन्द नाईक, नागप्पा धर्मशेटे आदि नवयुवक सक्रिय रहे।

निलंगा में ही मरियाई देवी का मंदिर था। निलंगा तथा आसपास के गांवों में इस मरियाई के कई भक्त-जन थे। इनमें इस देवी की बड़ी मान्यता थी। देवी के नाम पर हर पांच वर्ष बाद एक भव्य मेला लगता था। इस मेले में पोतराज देवी के भक्त अपने सिर शरीर पर गेरूआ रंग लगा कर, मुंह में निंबू पकड, हाथ में चाबूक लें, रंग उडाते हुए जोर जोर से चिल्लाते खूब नाचते थे और अपने ही चाबुक से

स्वयं पर चोट करते थे। इस प्रकार अपना विकराल रूप बनाकर मेले के वातावरण को और भी भयानक बनाते थे। अपने शरीर में देवी के प्रवेश का बहाना बनाकर, लोगों का भविष्य बताते थे, पैसे भी ऐंठते थे। देवी को प्रसन्न करने के लिए उसकी शान्ति के लिए पचास भैंसों की बलि भी चढ़ाई जाती थी। इस प्रकार का घिनौना, शर्मनाक कार्य धर्म के नाम पर किया जाता था। शेषरावजी और उनके साथी इस घिनौने कृत्य के विरोध में खड़े हो गये और उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर इस कृत्य का पर्दाफाश किया। यह देवी न सच्ची देवता है और न पशुबलि से प्रसन्न होनेवाली है - सच्चा देवता तो और है, सच्चे ईश्वर की उपासना करें। इस वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का परिणाम यह हुआ कि यह अज्ञानतापूर्ण, बिभत्स, पाखंड कृत्य बन्द हुआ और हजारों पशुओं के प्राण बच गये।

इसी प्रकार का और एक पाखंड निलंगा से थोड़ी ही दूर हलसी तुगांव में होता था। इस गांव में एक लक्ष्मी का मंदिर था। लक्ष्मी के नाम पर हर तीन वर्ष के बाद भव्य मेला लगा रहता था। लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए और उसकी शान्ति के लिए अज्ञानी अंधे भक्त सौ भैसों की बलि चढ़ाते थे। शेषरावजी और उनके साथी मेले के अवसर पर वहाँ भी पहुँचे। उन्होंने इस पाखंड के विरोध में खूब प्रचार किया। शेषरावजी भाषण कला में निपुण थे। उनकी वाणी में ओज तेज था, हास्य व्यंग्य भी पर्याप्त मात्रा में होता था, मीठास भी होती थी और कडुवाहट भी। भक्तगण उनके भाषणों से प्रभावित हुए। परिणामत: यह लक्ष्मी का मेला भी बन्द हुआ, साथ में मंदिर से लक्ष्मी की पत्थर की मूर्ति को उखाड़कर बाहर फेंक दिया गया। लोगोंको लगा - यह लक्ष्मी मात्र पत्थर की है, शक्तिहीन-निर्जीव है, वह भक्तों का कल्याण कैसे करेगी भला?

शेषराव और उनके साथियोंने अपने क्षेत्र में वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार की धूम मचायी और जनता मे जागृति करने का सफल कार्य किया और यह कार्य उनके जीवन के अन्त तक चलता रहा।

'उछल रही मेरी इच्छाएँ, कूद रहे मेरे अरमान,
फूँकूंगाँ नवजीवन जग में, मेरा निश्चय है बलवान।
जलती आग बुझा ना पाए, वह नीर ही क्या?
अपने लक्ष को भेद न पाए - वह तीर ही क्या?

९ श्री शेषरावजी और शुद्धि आन्दोलन

निज़ाम की रियासत में आर्यसमाज के प्रवेश के साथ ही, आर्यसमाज ने अपनी अनेक गतिविधियां प्रारम्भ कर दी थीं। समाज में पनपती हुई कुरीतियाँ, अन्धश्रद्धाओं का खंडन, विधवा-विवाह, अन्तर्जातीय विवाह तथा शुद्धि कार्य आदि आर्यसमाज की प्रारंभिक गतिविधियां रहीं। आगे चलकर ये कार्य आन्दोलन में परिवर्तित हुए - उनमें एक शुद्धि आन्दोलन भी था। निज़ाम की हैदराबाद रियासत में आर्यसमाज का प्रवेश इस अध्याय में सिद्दीकी दीनदार द्वारा चलाए धर्म परिवर्तन का विवरण प्रस्तुत किया गया है। इत्तेहादुल-मुसलमीन यह संगठन हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन करने के लिए तथा राज्य का इस्लामीकरण करने के लिए लड रहा था। इस्लामीकरण के लिए अन्य रास्ते भी अपनाए जाते थे। कभी हिन्दुओं को फुसलाकर तो कभी जोर जबरदस्ती से धर्मभ्रष्ट कर, धर्म परिवर्तन के लिए उन्हें बाध्य किया जाता था। किसी भी कारण से, हिन्दुओं को जेलों में ठूंस दिया जाता था, उन्हे कुछ सहूलतें प्रदान कर इस्लाम मजहब को स्वीकार करने के लिए राजी किया जाता था। पाठशाला में मुसलमान मास्टरों के द्वारा छोटे छोटे हिन्दु बच्चों को मीठी मीठी बातों से लुभाकर उनका धर्म परिवर्तन किया जाता था। कभी हिन्दुओं को जान से मारने की धमकी देकर तो कभी, हिन्दुओं को मुसलमान लड़कियों से निकाह कर धर्म परिवर्तन के लिए विवश किया जाता था। हिन्दुओं को शासन में हुद्दा तथा वतनों को बहाल कर और उन्हें शर्मिंदा बनाकर उनका धर्म परिवर्तन किया जाता था। मुसलमानों की आबादी बढ़ाने के लिए अन्य प्रदेशों से मुसलमानों को बुलाकर, रियासत में बसाया जाता था। हिन्दुओं पर इस्लाम मजहब को लादने के ये सभी रास्ते अपनाए गये थे।

आर्यसमाज ने धर्म परिवर्तन के इन सभी दुष्ट नीतियों का मुँहतोड जवाब दिया है।

जहाँ-जहाँ हिन्दुओं का धर्म परिवर्तन कर मुसलमान बनाने का कार्य चलता, वहाँ-वहाँ आर्यसमाजी पहुँचते और इस्लामीकरण के नापाक इरादों को मटियामेट कर देते थे। इस शुद्धि कार्य में भाई बन्सीलालजी, भाई श्यामलालजी, पं.नरेन्द्रजी, पं.मंगलदेवजी, पं. मनोहरलालजी आदि आर्य नेता अग्रणी रहे।

इन अग्रणी नेताओं के सम्पर्क में रहनेवाले शेषरावजी इस शुद्धि आन्दोलन के कार्य से अलग कैसे रह सकते थे? निलंगा क्षेत्र में जहाँ जहाँ धर्म परिवर्तन की घटनाएँ घटी, शेषरावजी वहाँ-वहाँ पहुँचते और धर्मपरिवर्तित व्यक्तियों की शुद्धि करते थे और सनातन वैदिक धर्म की दीक्षा देते थे। आर्थिक विपन्नावस्था और अन्य कारणों से जो विधर्मी बनने के लिए विवश होते, उन्हें भी समझा-बुझाकर, अपनी ही जाति में रहने का उपदेश देते थे।

शेषरावजी के समकालीन, उनके साथियों और उनके प्रति अनन्य श्रद्धा रखनेवाले व्यक्तियों के साक्षात्कार के समय जो घटनाएँ सुनने में आयी, उन्हें यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

निलंगा में महादेव पाटील नामक एक व्यक्ति थे। उनका लगाव एक दलित स्त्री से हुआ और वे उस स्त्री से विवाह करना चाहते थें, परंतु हिन्दू समाज ने इस विवाह का घोर विरोध किया। मुसलमानो नें पाटिल का विवाह इस शर्त पर कर दिया कि पाटील मुसलमान बनें। पाटील मुसलमान बन गये और उन्होंने अपना नामकरण भी किया - अब्दुल करीम। यह समाचार सारे निलंगा में फैल गया। शेषरावजी को इस घटना की जानकारी मिली। वे तुरन्त महादेव पाटील के यहाँ पहुँचे और समझा बुझाकर पुनः उन्हें अपने धर्म में ले आये। मुसलमान देखते ही रहे।

निलंगा में बाबू मांग रहा करता था। उसका प्रेम अपने मौसेरी बहन से हुआ। वह इस स्त्री से विवाह करना चाहता था परंतु सनातनी हिन्दू लोगोंने इस विवाह का विरोध किया। अतः बाबू मांग मुसलमान बनने की तैयारी करने लगा। मुसलमान इसी ताक में थे। बाबू मांग का निकाह हुआ और वह मुसलमान बन गया। शेषरावजी बाबू मांग के घर गये। उन्हे समझाने की कोशिश करते रहे, पर दोनों अपने अपने निर्णय पर दृढ़ रहे। शेषरावजी ने स्थिति को समझा और उन्हे कहा 'दोनों का विवाह हो सकता है पर मुसलमान बनने की आवश्यकता नहीं थी। शेषरावजीके कहने पर वे मान गये। इस तरह पति पत्नि पुनश्च हिन्दू धर्म में लौट आये।

निलंगा में ही आजम नाम का मुसलमान था। उसका लगाव एक हिन्दू स्त्री

सोनाबाई मालिन से हुआ। आजम सोनाबाई से मस्जिद में निकाह करना चाहता था। अन्य मुसलमान भीं आजम का साथ देने लगे। शेषरावजीने इस निकाह को रोक दिया और कोर्ट में मुकदमा दायर किया। कई महीने तक यह मुकदमा चला और अंत में कोर्ट ने आजम की ओर से अपना फैसला सुना दिया। शेषरावजी ने कानून को दुत्कारते हुए कहा 'यह निकाह नहीं होगा, यदि होगा तो मेरी लाश पर होगा'। हैदराबाद रियासत में निकाह को लेकर कोर्ट को ही ललकारना यह आसान बात नहीं थी। यह हिम्मत शेषरावजी ही कर सके। उद्देश्य था एक हिन्दू स्त्री मुसलमान न बने। शेषरावजी की ललकार से आजम भी डर गया, मुसलमान भी भयभीत हुए। आजम भागकर कहाँ चला गया इसका पता नहीं चला। पुलिस ॲक्शन के समय आजम मारा गया। सोनाबाई पुनश्च हिन्दू धर्म में परिवर्तित हुई। शेषरावजीने सोनाबाई के पुत्र को शिक्षा के लिए गुरुकूल भेजा। इस पुत्र को किसी हिन्दू ने अपनी पुत्री नहीं दी। वह मुसलमान ही बना रहा। शेषरावजी के जीवन की यह पराजित घटना रही है।

और एक घटना है - कमलाबाई ब्राह्मण की कन्या थी। एक मुस्लिम ने उसे भगाकर, जबरदस्ती से निकाह किया था। उसी समय कमलाबाई ने शेषरावजी को संदेशा भेजा था, किसी तरह से उसे धर्मान्ध मुस्लिम से छुटकारा दिलवा दे। उस समय शेषरावजी वारण्ट के कारण भूमिगत थे। मिलीट्री एक्शन के पश्चात् शेषरावजी को कमलाबाई का स्मरण हुआ। उस समय शेषरावजी ने हिन्दू धर्म स्वीकार करने के लिए कमलाबाई को संदेशा भेजा; पर काफी समय बीत चुका था। कोई हिन्दू इस कमलाबाई को स्वीकार करने के लिए सामने नहीं आया। ऐसे समय शेषरावजी को निराश ही होना पड़ा।

मिलीट्री ऍक्शन के पश्चात कई मुस्लिम लड़कियाँ, महिलाएँ निराश्रित हुई। शेषरावजी ने निराश्रित महिलाओं को आश्रय दिया। इन निराश्रित महिलाओं में कुछ महिलाओं का विवाह अपने साथी श्री अप्पाराव फटे, तमण्णा आर्य, बाबूराव पहलवान से करवाया। इन साथियों ने आर्य धर्म को निभाया। वे अपने गृहस्थ जीवन में सुख और आनन्द से रहे।

इस तरह शेषरावजी आर्यसमाज के शुद्धि आन्दोलन से जुड़े रहे। भले ही उन्हे

अपने इस आन्दोलन में सफलता कुछ सीमा तक ही मिल सकी हो, किन्तु उन्होंने अपने प्रयास में किसी तरह त्रुटि या कमी आने न दी।



आर्य जाति के धर्म प्रवक्ता वा धर्माचार्य पद के लिए कठोर तपस्या आवश्यक है, ज्वलन्त वैराग्य आवश्यक है, एवं विषय तृष्णा वा वैषयिकता के साथ सर्व प्रकार से सम्बंध छोड़ देना आवश्यक है। यह हो सकता है कि कोई व्यक्ति इच्छा करने से ही ज्ञानापन्न हो जाए, प्रथितनामा पंडित हो जाय, किंवा मेधा और मनस्विता के सम्पर्क से लोगों के हृदय में विस्मय उत्पन्न कर दे। परन्तु वह नही हो सकता कि वह इस देश के धर्माचार्य वा धर्म प्रचारक के नाम से परिगणित हो जाय। सौभाग्य से दयानन्द में वे सभी गुण विद्यमान थे, जिनके कारण आर्य जाति के धर्म प्रवक्ता पद पर आरूढ हो सके।

— देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय

शुभ सङ्कल्प ही आएँ

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धोसो अपरीतास उद्भिदः ।
देवा नो यथा सद्मिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे ।।

- ऋ० १।८९।१; यजुः० २५।१४

"हमारे पास श्रेष्ठ ही संकल्प सब ओर से आएँ, जो कभी न दबनेवाले हों। देवता हमारे लिए सदा उन्नति के लिए होवें और प्रति दिन प्रमाद रहित होकर हमारे रक्षक होवें।"

१० निलंगा आर्यसमाज-भवन का विध्वंस

पूरी निज़ाम रियासत में आर्यसमाज का कार्य शनैः शनैः बढ़ता गया। आर्यसमाजों की संख्या भी बढ़ती गयी। इन सब कारणों से निज़ाम चौंक उठा। यहाँ से दौर शुरू होता है, निज़ाम का आर्यसमाज की गतिविधियों पर प्रतिबन्ध लगाने का। निज़ाम ने आर्यसमाज के भवन निर्माण पर प्रतिबन्ध, साप्ताहिक सत्संगो पर, आर्यसमाज के उत्सवों पर अनेक प्रतिबन्ध लगाने प्रारम्भ किये। यहाँ तक कि मुहर्रम-ईद के अवसर पर कोई हिन्दू मंगलकार्य-विवाह आदि भी कर नहीं सकता था। आर्यसमाज की हर गतिविधि पर निज़ाम शासन की पैनी नजर रहती थी। उस समय की सरकार की खुफिया रिपोर्ट से जान पड़ता है कि आर्यसमाज की गतिविधियों का पता लगाने के लिए निज़ाम का खुफिया विभाग बहुत सक्रिय था।

निलंगा आर्यसमाज की गतिविधियों पर भी खुफिया विभाग की कड़ी नज़र थी। खुफिया विभाग की एक रिपोर्ट जो उर्दू लिपि में है, उसका देव नागरी लिपि में विवरण यहाँ प्रस्तुत है -

"खुदा दोस्त खान वलद कादरखान - मुसलमान
कान्सटेबल - ९४; दर्जे दुय्यम
पोलिस स्टेशन हाउस - निलंगा
बयान की नकल

महकुमा - अव्वल तालुकदारि, बीदर शरीफ ता. १९ अमरदाद - ४४ फसली (जून १९३३) फाईल न १५३/६६ 'मोहर'

कसम लेकर बयान - दो महीने से निलंगे में हूँ। हुकूमत के खिलाफ काम करनेवालों की रिपोर्ट करना मेरा काम है। आर्यसमाज का एक अखाडा है, जो भोजराज के मकान में है। मकान मालिक उस्मानाबाद में रहता है। रामराव हलगरकर समाज अखाडे के सेक्रेट्री हैं। शेषराव वकील सदर हैं। रात के वक्त समाज में लेक्चर होते हैं। अखाड़े में वर्जिश होती है। हवन कुण्ड बनाया गया है। हवन होता है। मै खुफिया जानकारी लेता हूँ। उसकी रिपोर्ट अपने हुदेदार को

करता हूँ। खुफिया कमेटियाँ समाज के मकान में और धोंडीराव और रामराव हलगरेकर के मकान में होती है। ता. २७ तीर (मई) को जब मैं अखाड़े में गया, शाम का वक्त था। मुझे अखाड़े से चले जाने के लिए शेषराव साहब वकील, सिद्रामप्पा साहब वकील और रामचन्द्र राव ने कहा। इस वक्त कुछ आदमी वर्जिश कर रहे थे, कुछ हवन कुण्ड के पास बैठे थे। मुझसे कहा गया कि अंदर आना नहीं चाहिए, आवोगे तो फौजदारी कानूनी कार्यवाही करेंगे। मैंने अपनी रिपोर्ट अपने अफसर को कर दी है। जो बोल रहा हूँ वह सही है।'' (मौलवी महमूद सरदार - बेगसाहब - कोर्ट इन्स्पेक्टर के सामने दिया हुआ यह बयान है। खुदा दोस्त खान - वल्द कादरखान) इस बयान की नकल उर्दू लिपि में है।*

मौलवी मिर्जा गुलाम महमूद बेग अव्वल तालुकेदार (कलेक्टर) आर्यसमाज निलंगा की दीवारे ढहाने के लिए हुक्म देते हैं - हुक्म की नकल उर्दू में है - हिन्दी में उसका विवरण यहाँ प्रस्तुत हैं

''नकल तजवीज अली जनाब - अव्वल तालुकेदार, बीदर।
ता. २० अमरदाद, १३४४ फसली
नशान - १५३/८६ - मोहर

यहाँ के आर्यसमाज अखाड़े का मुआयना किया। यह समाज व अखाड़ा बहुजराज (भोजराज) उस्मानाबाद के वीरान मकान में ७ महीने से कायम है। मकान पड़ी हुई विरान जगह नाम से पोशिंदा रखकर, किराये पर हासिल की गयी है।... टीन का छत ड़ालकर, अतराफ की दीवारे, बिना इजाजत महकमें सफाई.... तामीर करके, वर्जिश और लेक्चरो का काम होता है।... इस अखाड़ा और समाज के लोगों की तादाद ४७ है। इसमें किताबें, अखबारात हैं। ... समाज का सेंटर उदगीर है। उदगीर और निलंगा के वकील कानून जानने वाले इसमें शरीक हैं.... पूरी दिलचस्पी लेते है। लेक्चरों में सरकार के खिलाफ नफरत पैदा करनेवाले और बागियाना खयालत के हैं।... हकुमत के इंतेजाम पर भी बहस होती है - नुक्ताचिनी होती है। शेर (गीत) गाये जाते हैं। जजबात भड़काने वाले लेक्चर होते हैं। पुलिस इन तमाम वाकियात का रिकार्ड भेजती है। .... इन हालात मद्देनजर

* उर्दू बयान की नकल आगे जोडी गई है।

इस समाज और अखाड़े जुमला तहकीकात और खयाल को सियासी खिलाफी हकुमत खियाल करता हूँ। मुझे अन्देशा है इस किसम के जलसे बड़ी कुव्वत हासिल करेंगे और फैलकर फिरकवारी फसाद बदअदमी का बायस होंगे। .... इसलिए हुक्म देता हूँ कि यह अखाडा और समाज बरखास्त किया जाएँ। ... मकान और अखाड़ा बिला इजाजत के हैं। वह गिरा दिया जाए, सामान जप्त कर, सरकार में जमा करें। दस्तकत - मौलवी मिर्जा गुलाम महमूद बेग अव्वल तालुकेदार (कलेक्टर) बीदर - शरीफ*

उपर्युक्त खुफिया विभाग की रिपोर्ट और कलेक्टर बीदर का बयान - निजाम शासम की आर्यसमाज के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता है। आर्यसमाज की हर गतिविधियों से निजाम शासन की नींद हराम हो गयी - फिर निजाम शासन आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध लगाने पर विवश हो जाता है।

निज़ाम की इस नीयत का परिणाम था कि बीदर के अव्वल तालुकेदार के हुक्म से निलंगा के तहसीलदारने दि. २५ जून १९३५ में निलंगा आर्यसमाज को ढहाया और हवन कुंड को उखाड़कर फेंक दिया। पं. नरेन्द्रजीने 'विवृति' पत्र के संपादकीय में निज़ाम के इन नापाक इरादों का विरोध किया है। कलेक्टर के बयान को उन्हीं अंतिम शब्दों को दुहराया है, जिसमें कलेक्टर की उद्दण्डता व्यक्त होती है। बीदर के मोहतमीम पुलिस (डी.एस.पी.) का बयान भी उन्होंने उद्धृत किया है। ''इस भवन को और हवनकुंड को बुनियाद से उखाड़ फेको ताकि आर्यसमाज बाकी न रहे'' (संदर्भ - हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष : पं. नरेन्द्रजी)

जब आर्यसमाज की दीवारें गिराई जा रही थी, उस समय शेषरावजी और रामराव हलगर का वकील ने आपस में चर्चा कर, तहसीलदार निलंगा को एक दरखास्त दी कि 'हमें मालूम होना चाहिए कि किस कारण समाज को गिराया जा रहा है''। इस घटना की जानकारी पं. बन्सीलालजी उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उदगीर को भी दी गयी।**

---

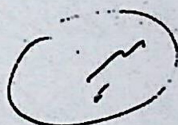
* कलैक्टर बीदर के उर्दू बयान का चित्र आगे दिया गया है।

** शेषराव जी तथा रामराव जी की तहसीलदार को दी हुई दरखास और बंसीलाल जी को दी हुई जानकारी - मल प्रत - लेखक पास उपलब्ध हैं।

نقل بیان خدا دوست خاں درشتہ محکمہ سی آئی ڈی متعلقہ ... حیدرآباد ... مورخہ ۱۹ امرداد

آئی ایم ... 3124167

ن ... ۱۰۳ ... ۸۶ ... صیغہ ...



خدا دوست خاں ولد فادر خاں قوم پٹھان عمر ... ساکن مکان نمبر ۹۲ درجہ دوم

متعینہ اسٹیشن ... وس ...

حلف :- میں تقریباً دو ماہ سے ... آریہ سماج سے راز کی اطلاعات فراہم کرنے کا کام کیا جارہا ہوں ... آریہ سماج دکھاٹرہ ... مکان میں ہے۔ اصل مالک مکان ... رام راؤ ... اس سماج وکھاٹرہ کے سکریٹری ہیں اور ... راؤ ... وکیل ... صدر ہیں۔

اس سماج میں لکچر ہوتے ہیں اور اکھاڑہ میں ورزش ہوتی ہے۔ لکچر اور ورزش رات کے وقت ہوتے ہیں۔ ... کیا جاتا ہے ... دن ہوتا ہے۔ میں خفیہ طور ... اور ... کیا ہوں اور ... رپورٹ اپنے عہدہ دار ... کرتا ہوں۔

میں اور بھی ... آریہ سماج اور اکھاڑہ کے متعلق اطلاعات فراہم کرکے اپنے عہدہ دار کو رپورٹ تحریری دیتا ہوں۔ خفیہ کمیٹیاں بھی اس سماج کے اندر ... ہوتی ہیں۔ یہ خفیہ کمیٹیاں اس سماج کے مکان میں اور ... کے مکان میں اور رام راؤ ... وکیل ... کے مکان میں ہوتی ہیں۔ ...

... اکھاڑہ سے چلے جانے ...

منشی رام چند صاحب وکیل و سنہ را رادھا صاحب وکیل اندر داخل ہوئے اور نقل نویس نے کہا:
اس وقت کچھ آدمی وارنٹ کر رہے تھے۔ اور کچھ آدمی کندھے کے پاس بیٹھے ہوئے تھے۔
مجھ سے کہا گیا کہ اندر نہیں آنا چاہئے آ جاؤ گے تو جوابدہ بیچ کا اشتہار کر دینگے۔
میں نے ان کی رپورٹ اپنے افسر کو کر دی۔ اظہار سنکر مطابق صحت تسلیم کی دستخط

دستخط حاکم
مولوی مرزا غلام محمود صاحب
اردو ترجمہ

نقل دستخط
محمد خدا دوست خان

سر دستخط
مولوی محمد ... صاحب
بحروف انگریزی

(खुदा दोस्त वल्द कादरखान का बयान-नकल)

نقل تجویز [illegible] [illegible] صاحب [illegible]

[illegible] ف
وارد [illegible]
۲۲ [illegible] ۱۳۵۰ ف
۸۷

[illegible]

قیام اکھاڑہ آریہ سماج [illegible]

نمائندہ [illegible] نے [illegible] صاحب [illegible] عہدہ دارانِ کوتوالی اور تحصیلدار صاحب [illegible] میں
مکانِ آریہ سماج و اکھاڑہ کا معائنہ کیا۔ یہ سماج و اکھاڑہ [illegible] عثمان [illegible]
[illegible] مکان میں تقریباً سات ماہ سے قائم ہے۔ [illegible] جگہ [illegible] کو
[illegible] حاصل کی گئی۔ اور اسمیں [illegible] کا سامان [illegible]
[illegible] ورزش [illegible]
[illegible] کیا گیا۔ [illegible] بیانات [illegible] کا [illegible]
بیان سے [illegible] کی تصدیق ہوتی۔ اس اکھاڑہ و سماج کے [illegible] کی
تعداد (۲۷) نفوس ظاہر ہوتی ہے۔ اسمیں [illegible] سماج سے متعلق کتابیں اخبارات
و رسالے [illegible] اندرون و بیرون ممالک [illegible] آتے ہیں۔ اور سماج
[illegible] کرتے ہیں۔ [illegible] طریقہ [illegible]
[illegible] ظاہر کیا جاتا ہے۔ لکچروں میں [illegible] انگریز اور
[illegible] کا [illegible] ہوتا ہے۔ حکومت کے احکام و انتظام پر تنقید بھی
کی جاتی ہے۔ [illegible] بھی جو فرقہ واری جذبات کو [illegible] کرنے والے ہوتے ہیں

ذرائع یات روز مرہ ہو صیغہ کوتوالی کے علم میں لایا گیا ہے۔ ان حالات کے مدنظر میں
آریہ سماج و اکھاڑہ کی جملہ تحریکات و افعال کو سیاسی اور خلاف حکومت خیال
کرتا ہوں مجھے اندیشہ ہے کہ اس قسم کے جلسہ اجتماعی قوت اختیار کر سکتے۔
اور بلکہ فرقہ واری فساد و بدامنی کا باعث ہو سکتے۔ اس لیے حکم دیتا ہوں کہ
یہ اکھاڑہ و سماج قطعاً بند و آئندہ جاری نہ کیا جائے۔ مکان اکھاڑہ جو
بلا اجازت تعمیر ہوا ہے منہدم کیا جائے اور سامان ضبط و زیر نگرانی
سرکار رہے

دستخط
مولوی مرزا غلام محمود بیگ اول تعلقدار ضلع بیدر

(मौलवी मिर्जा गुलाम महमूद बेग-अव्वल तालुकेदार (कलेक्टर) बीदर के बयान का चित्र)

बयान ओ३म्

बयान गोविंद वल्द ताम्राचार्य सा० निलंगा सिक्रेटरी व्यायाम
शाला आर्यसमाज निलंगा

रोज़ बयान ता० फ़० रात्रि के ११½ बजे तालुकदार सा० बीदर
१९।१।३८ फ०

लिया। ज० मोहतमीम मरम० पोलिस सवालात करते थे। ज० तालुकदार सा०
लिख लेते थे। मुझे जितना याद रहा है बताता हूँ। आप आर्यसमाजी
कहाँ बने? पूछा गया। आर्यसमाजी कहीं नहीं बना उदगीर गया था वहाँ उपदेश
होते थे सुनता था। तुम्हारे खियालात आर्यसमाजी कबसे हुवे? चार वर्ष से
तुम्हारी शुद्धि की गई क्या? ज० हिन्दुओं का शुद्धि नहीं किया जाता।
निलंगा कब आए? उदगीर से एक वर्ष हुवा आया। तुम आने पर यहाँ
आर्य समाज का अखाड़ा था। ज० अखाड़ा था। समाज कब के विचार से
यहाँ समाज कब से कायम हुआ। और आने के बाद ४ मास में। स० वहाँ प्रचार
कहाँ होता था? ज० यहाँ देवजी के मन्दिर में। प्र० अखाड़ा कहाँ था?
ज० नारायणाचार्य जागीरदार के मकान में। प्र० वहाँ कितने साल था?
चालीस साल? वहाँ से महादेवजी के मकान में। प्र० कब यहाँ
पांच शुद्धियाँ हुई? किसकी हुई नाम बताओ? अकीनसा०
नाम बताए। (वह हिन्दुओं के नाम थे मैं तकरार कहीं हिन्दु की शुद्धि होती
है) यह बातें अर्जीनस० के बयान के समय हुई) प्र० यहाँ समाज में उपदेश कौन
करते हैं? ज० शेषरावजी/कावा० हे डाकुरव, वामनराव, / प्र० गणेश ठाकुर
के समय यहाँ झगड़ा हुआ था/ ज० हो हुआ था पत्थर। किस समय मुसल
मानों ने किया मुझे भी एक पत्थर लगा था/ [illegible]
करने का इंकार किया। — — —

वह तामीर नहीं किया गया। ~~किन्तु~~ उसके [illegible] पांच

प्र० कितना बांधा गया। उ० कुछ भी नहीं। यहां सब तामीर किर लिया

लिया गया मैंने कहा साहिब सब तामीर नहीं की गई तो मोहतमीम

सा० ने कहा हां इसी को तामीर कहते हैं।

बयान सुना समझा

गोविंद वल्द तात्याचार्य

बंसीलाल आर्य

वकील [illegible]

अ.म. [illegible]

2/5/[illegible]



गोविंदाचार्य वल्द तात्याचार्य के बयान की नकल इस पर वकील बंसीलाल आर्य के हस्ताक्षर भी हैं।

पं. बन्सीलालने दि. २/७/१९३५ को सार्वदेशिक सभा - दिल्ली को तार भेजकर इस घटनाकी जानकारी दी। तार का आशय था। तहसीलदार ने आर्यसमाज - निलंगा को ढहाया और हवनकुंड कानून को ताकपर रखकर नष्ट किया है''। हैदराबाद से आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान - श्री बिनायकराव बिद्यालंकार ने सार्वदेशिक को तार भेजा। तार का आशय है। कानून का पालन न करते हुए आर्यसमाज धार्मिक संस्था को तहसीलदारने ढहाया है। समाज का धार्मिक कार्य रुक गया है। इस घटना की जांचकर न्याय दिलवाये''। उपर्युक्त दोनों तार की स्कॅनिंग फोटो - इसी अध्याय में दिये गए हैं।

सार्वदेशिक सभा दिल्ली तार द्वारा पं. बंन्सीलाल को सूचना देती है। "your telegramme(.) taking early action(.) post full details"

पं. बन्सीलाल सार्वदेशिक सभा दिल्ली को तार भेजकर अपनी कर्तव्य की पूर्ति समझते नहीं हैं, दक्षिण में हुई इस घटना की जानकारी मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन, लाहौर को दि. १४/७/३५ के पत्र द्वारा देते हैं। वे अपने पत्र में लिखते है - ''निलंगे के आर्यसमाज को, जो एक किराये के मकान में था, बिलकुल कानून के विरुद्ध, झूठे समाचार लिखकर तालुकदार के हुक्म पर तहसीलदार ने मकान की दीवारे गिरा दिया है। हवन कुंड तोड़ दिया गया है। सब सामान जब्त कर के ले गये। आर्यसमाज और अखाड़ा बंद व बरखास्ती का हुक्म दिया गया है। हमने अफसरों को तार और दरखास्त भेजे हैं। अभी कुछ हुआ नहीं। तालुकदार की नकल इसके साथ भेज रहा हूँ। शेष समाचार श्री पं. बुद्धदेवजी की जबानी विदित होंगे''। * (मूल पत्र उपलब्ध है)।

२/७/१९३५ को रामराव वकील - मंत्री आर्यसमाज निलंगा ने सार्वदेशिक सभा दिल्ली को एक विस्तृत पत्र भेजा, जिसमें आर्यसमाज उध्वस्त करने का विवरण है - पत्र के कुछ अंश इस तरह है ''बिना किसी सूचना के ता. २५ जून ३५ को मोहतमीम साहब व तालुकदार (बीदर) - अचानक आकर बयानात लिये, (जिसकी प्रति-लिपि इसके साथ है।) कानून के विरुद्ध समाज की तमाम दीवारें गीरा दी गई, सब सामान जब्त कर लिया गया, इतना ही नहीं, वहाँ पर दाखल होने की मनाई कर दी गयी है। जमीन तक जप्त कर लिए। दूसरे दिन हवन

Om तार सं. १५८५ ता. २-८/३५

Sarwadeshik Delhi

Tahasildar ruined Hawankund and Nilnga Aryasamaj office confiscated goods unlawfully

Bansilal

श्री. बन्सीलाल जी द्वारा सार्वदेशिक सभा दिल्ली को भेजा हुआ तार उसकी की नकल।

Bansilal Vakil aryasmaj Gbb.

your telegram taking early steps Post full details.

Sarwadeshik

उत्तम सं. १५८८ ता० ६ ८/३५

सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने तार भेजकर उचित कदम उठाने तथा विस्तृत विवरण भेज देने की सूचना देने के बारे में लिखा है। उसकी नकल।

Samaj property Confiscated

Nilanga ArySamaj mandir demolished without legal procedure religious fire place dug up Samaj closed down enquiries should be held and justice granted

Vinayakrao

President Aryapratinidhi Sabha

श्री. विनायक राव विद्यालंकार ने निलंगा आर्य समाज का भवन उद्ध्वस्त होने पर सार्वदेशिक सभा दिल्ली को तार भेजकर सूचना दी। उसकी नकल।

कुण्ड भी तोड़ दिये। सारे ग्राम में दु:ख ही दु:ख है। मोहतमीम-पुलिस आर्यसमाज के सख्त विरुद्ध है। सब लोग आर्यसमाज में आने से भय खा रहे हैं। कोई भी इलजाम लगाकर चालान करवा देते हैं। आर्यों की हर हरकत पर निगरानी और रिपोर्ट करने की हिदायत की है, जिससे जनता में यह भ्रम फैले कि आर्यसमाजी होना जुर्म है। मै कानूनी कार्यवाही कर रहा हूँ। मोहतमीम बीदर बहुत चिढा हुआ है।... जुल्म हो रहा है। ईश्वर की इच्छा'' इस पत्र की एक प्रतिलिपि पं. बन्सीलालजी को भी भेजी गयी है।'' (पत्र की मूलप्रत उपलब्ध है)।

श्री रामराव वकील के इस पत्र से ज्ञात होता है कि निजामी शासन - आर्यसमाज को किस दृष्टि से देखता था। आर्यों को भयभीत करना, किसी भी कारण से उन्हे दंडित करना, जेल में भिजवाना यह आम बात थी। लोग सहमें हुए थे। यह पत्र उस समय का एक चित्र प्रस्तुत करता है।

सार्वदेशिक सभा - दिल्ली इस घटना के सम्बन्ध में चिन्तित है, पर जल्दबाजी में कोई ऐसा कदम उठाना नहीं चाहती, जिससे दक्षिण के आर्यजनों को निजाम की नृशंसता का शिकार होना पड़े। वह तारद्वारा सूचित करती है "your wire (.) letter already posted (.) Await for further order" सभा ने दूसरा तार (दि. २२/८/१९३५) भेजा है - "your wire (.) glad (.) sabha ready to offer every help (.) communicate your requirement" इस सारी लिखा-पढ़ी के बाद केवल निलंगा आर्यसमाज का विषय लेकर दि. २१ आगस्त १९३५ को एक सभा आयोजित की गयी। यह निर्णय लिया गया कि आर्यसमाज निलंगा के ढहाये जाने पर निजाम शासन के विरोध में आन्दोलन चलाना चाहिए। सार्वदेशिक सभा दि. १८/८/१९३५ तथा दि. २२/८/१९३५ के पत्र द्वारा निर्देश देती है कि ''जो भी कानूनी कार्यवाही हो सकती है जरूर करे परंतु जो कुछ करे श्रीयुत - विनायकरावजी की सम्मति से ही किया करें। यहाँ से पं. केशवदेवजी ज्ञानी को हैदराबाद भेज रहे हैं।... हमारी इच्छा है कि आप, पं.केशवदेवजी ज्ञानी, पं. विनायकरावजी तथा स्थानिक प्रमुख सज्जन मिलकर वहाँ की अवस्था को ध्यान में रखते हुए किसी उचित निर्णय पर पहुँचे। निलंगा में ही आन्दोलन प्रारंभ करना हो, तो संकोच न करे। हां, इतना अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि आन्दोलन एक बार छिडकर बीच में रुक न पाये।''

पं. केशवदेव ज्ञानी ने हैदराबाद पहुँचने के पश्चात, वहाँ के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के साथ चर्चा की। दि. ३१/८/१९३५ को सार्वदेशिक सभा, दिल्ली को पत्र लिखकर, लिए गये निर्णयों से सभा को उन्होंने अवगत किया है। पत्र में उन्होंने लिखा है - ''हैदराबाद में श्री पं. विनायकरावजी, श्री चन्दूलाल तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों से मिला। आर्यसमाज निलंगा के सम्बंध में आगामी आन्दोलन के सम्बन्ध में चर्चा की। उसके बाद निलंगा गया। वहाँ श्री बन्सीलालजी के साथ रहा। स्थानीय व्यक्तियों में श्री शेषरावजी उनके साथियों के साथ भावी कार्य पर विचार विमर्श किया। निम्न निर्णय पर पहुँचे।

(१) आर्यसमाज - निलंगा मकान मालिक की ओर से हरजाने का दावा कराया जाये.

(२) हवन कुण्ड तोड़ने तथा सामान जप्त के बारे में फौजदारी कार्यवाही, आर्यसमाज-निलंगा की ओर से की जाए।

(३) दैनिक संध्या, हवन तथा उपदेश टूटे हुए मकान मे ही शुरु किये जायें।

(४) Revenue व police officer को तहकीकात की दरखास्त का Reminder किया जाए।

(५) प्रतिनिधि सभा हैदराबाद द्वारा इस कार्य के लिए एक war-council बनाई जाये

(६) आपके लिखे अनुसार श्री स्वामी स्वतंत्रानन्दजी के आने पर उन्हे बीदर जिला संगठन के लिए दिया जाय तथा वकील बन्सीलाल उनके साथ रहें''*

आर्यसमाज - निलंगा ढहाने के बाद - शेषराव, रामराव-वकील, पं. बन्सीलालजी, पं. विनायकरावजी ने बड़ी जिम्मेदारी तथा सोच समझकर कदम उठाते हुए निजाम शासन के विरोध में निषेध कार्य प्रारम्भ कर दिया था। आन्दोलन चलाने के लिए वे शिरोमणि संस्था देहली की आज्ञा चाहते थे ताकि आन्दोलन की दिशा सही हो। निजाम के विरोध में आन्दोलंन की बात बारबार की जाती थी,

* इस पत्र का चित्र प्रस्तुत है।

* ॐ *

संस्थापित १९०८ ई० तार का पता—"सार्वदेशिक"

सार्वदेशिक-आर्य्य-प्रतिनिधि सभा

सं०...... देहली .... १९ .

१८-९

लिपि

Camp Hyderabad City.
ता. २१-८-३५

श्रीमन्मन्त्रिन्!

मैं देहली से चलकर सीधा हैदराबाद आया। यहां पं. विनायकराव, श्री चन्दूलाल जी, तथा अन्य प्रतिष्ठित सज्जनों से मिला। यहां से निलंगा गया। वहां भी वेंकटलाल जी वकील के साथ रहा तथा सारे मामले की कार्रवाई को सोचा। निम्न निर्णय पर पहुंचे हैं:—

(१) मालिक मकान की ओर से हरजाने का दावा कायम जाय —

(२) हवनकुण्ड तोड़ने तथा सामान जब्त करने की बिना पर फ़ौजदारी समाज निलंगा की ओर से की जाय —

(३) दैनिक, सन्ध्या-हवन तथा उपदेश आदि टूटे हुए मकान में ही शुरू किए जावें — वे शुरू भी हो गए हैं।

(४) Revenue & Police Officers को जो तहक़ीकात की दरख्वास्त का Reminder किया जाय —

"५. प्रतिनिधि सभा हैदराबाद आंदोलन कार्य के लिए एक War Council बनाई जावे।

६. आपके लिखे अनुसार श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के आने पर उन्हें बीदर जिला संगठन के लिए दिया जाय तथा श्री बंसीलाल जी वकील उनके साथ रहें आदि -" - - - - - - विनीत

[illegible] के. ज्ञानी

ओ३म्

श्री म. मंत्री जी

नमस्ते

[illegible] पत्र प्राप्त हुए [illegible] गत सं. १६०८ [illegible] नियत होने के समाचार [illegible] १५/१/३९ को [illegible] पत्र [illegible] है अर्थात् [illegible] समाचार [illegible] पत्र में [illegible] गोवर्नमेंट और आपके [illegible] नहीं आया आते ही [illegible] प्रयत्न होगा इति [illegible]

१५/१/३९ [illegible]

(श्री. केशवराव ज्ञानी द्वारा सार्वदेशिक सभा को लिखा - पत्र - प्रतिलिपि)

ताकि निजाम द्वारा आर्यसमाज पर लगाये गये प्रतिबन्ध समाप्त हो और आर्यसमाज बिना किसी रुकावट के अपना कार्य कर सके।

सार्वदेशिकसभा ने दक्षिण में आर्यजनों द्वारा निज़ाम के विरोध में चलाये गये आन्दोलन को आशीर्वाद प्रदान किया। यह आशीर्वाद था पू. नारायण स्वामीजी का, जो शिरोमणि संस्था के प्रमुख थे। स्वामीजी की आज्ञा से दि. ९/९/१९३५ को सार्वदेशिक सभा - दिल्ली ने पं. बन्सीलालजी को पत्र भेजकर सूचित किया है "इस समय तक जितना काम आपने किया है, वह सब ठीक है। इसी प्रकार वहाँ के कानून को दृष्टि में रखते हुए काम करे। इस काम के लिए धन वहीं से जमा करना चाहिए। यदि कोई असाधारण बात हुई तो यहाँ भी चन्दा करने का यत्न किया जाएगा"

पं. बन्सीलालजी, शेषरावजी तथा उनके साथियों ने इस आन्दोलन की शरूआत निलंगा से ही की। इस आन्दोलन को जनता का सहयोग भी प्राप्त हुआ और आन्दोलन विभिन्न-विभिन्न माध्यम से फैलता ही गया। औराद के पं. देशबन्धु भारत वर्ष के मुख्य समाचारों में वक्तव्य प्रकाशित कर तथा, पोलिटिकल, रेवेन्यु मेम्बरान को तार, तथा चिठ्ठियाँ भेज कर उन्होंने आन्दोलन की तीव्रता अधिक बढ़ायी।

पं. बन्सीलाल वकील तथा शेषराव वकील ने मिर्जा गुलाम महमूद बेग तालुकदार बीदर शरीफ के विरोध में व्यक्तिगत फौजदारी का मुकदमा दायर कर दिया। रियासत के विभिन्न आर्यसमाजों ने निलंगा आर्यसमाज के सन्दर्भ में जिस अधिकारीने यह घृणित कार्य कर धार्मिक संस्था का अपमान किया है, अपनी अपनी आर्यसमाजों में निषेध प्रस्ताव - पारित कर, खुले तौर से उस अधिकारी का विरोध किया है। उपमंत्री श्री गणेशलाल रामनारायण आर्यसमाज हिंगोली निषेध पत्र दि. ३/८/१९३५, आर्यसमाज सदर बाजार मोमीनाबाद (वर्तमान अम्बाजोगाई), मंत्री मदनलाल आर्यसमाज-वरंगल - निज़ाम राज्य निषेधपत्र दि. ६/८/१९३५, मंत्री माणिक राव, आर्यसमाज हलिखेड - निषेध पत्र ३०/७/१९३५, आर्यसमाज उदगीर - निषेध पत्र - ता.२५ सरेवर - १३४४ फसली, श्री भीमसेनजी - मंत्री, आर्य प्रतिनिधि सभा - पंजाब-लाहोर आदि आर्यसमाजों ने पत्र द्वारा निषेध व्यक्त कर आन्दोलन को सक्रीय सहयोग प्रदान किया। उपर्युक्त आर्यसमाजों के निषेध पत्र का आशय इस प्रकार है - "यह जानकर अत्यन्त

POST CARD

H.THE NIZAM'S GOVERNMENT

WRITING SPACE

REPLY

ADDRESS ONLY

भाई बन्सीलालजी को लिखा शेषरावजी का पत्र - प्रति लिपि

२६।१।४९ ओ३म् निलंगे। १
श्रीमान् मंत्रीजी आर्यसमाज
उदगीर सा. स. नमस्ते।
अगर वकील साहब जी वहां हजर हैं तो
उनको कह दीजिये की हमने
अरबाउ का नामजन वापस लोटि-
या है। तामीर की दरख्वास्त
दी थी उसकी नमुनासम लाइसेंस
दार (जो यहांके पेशकार हैं)
उन्होंने लिखा है की तामीर को
[illegible] राज में करवाई चल रही
है मुस्तकविल तहसीलदार
साहेब आने के बाद बरतमी
[illegible] देंगे। अभी तामीर का
काम शुरू नहीं हुवा है

तहसीलदार साहेब आये हैं
दूसरा मजकूर यह है की।
हमारे पास कार्तिकी पौर्णिमा
को उत्सव हुवा करता है
(सनातनियों का) गुजस्ता
साल स्वामी कर्मानन्द जी
यहां पधारे थे और यहां शास्त्रा-
र्थ भी हुवा था। इस वक्त भी
किसी पंडित की आवश्यकता
है जरूर जरूर भेजिये। यहां आर्य समा-
ज का काम जारी है

साप्ताहिक आर्य वेषण हुवा
करता है। आवश्यकता सिर्फ
उपदेशक की है। इति।
आपका
शेषराव प्रधान
आर्यसमाज के ओर से
[illegible]

पत्र का उत्तर दूसरी आदमी के साथ [illegible]
[illegible] नमस्ते [illegible]
[illegible] नहीं कर रहे हैं [illegible]
क्या कारण है [illegible]
[illegible] नहीं हुवा [illegible]
[illegible]
[illegible]

यहां आया दूसरा [illegible] यहां
उपदेशक [illegible] जरूरत है।
[illegible] साल [illegible]
पधारे थे [illegible]
[illegible]

शेषराव प्रधान
आर्य समाज
निलंगा

[illegible]

श्री. शेषराव जी, प्रधान आर्य समाज निलंगा ने मंत्री आर्य समाज उदगीर को लिखे पत्र की प्रतिलिपि

आघात पहुँचा है कि आर्यसमाज निलंगा को बल का प्रयोग करके गिराया गया है, बंद किया गया है, हवनकुंड तोड़ा गया है। जिस तालुकदार बीदर ने ऐसा किया है, यह आर्यसमाज उसे परमशत्रु मानता है। उसे अपराधी घोषित कर उचित दंड दिया जाये। आर्यसमाज यह भी घोषित करता है कि वह अपने धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिए यह आर्यसमाजी किसी भी बलिदान से पीछे न हटेगा और ऐसे पापी राज्य कर्मचारी का हर प्रकार सें विरोध करने में समाज सदा तैयार रहेगा''।*

'समाज की दुनिया' उर्दू समाचार पत्र ने निषेध व्यक्त किया है ''आर्यसमाजों का तालुकेदार बीदर के खिलाफ प्रोटेस्ट'' इस शीर्षक के अन्तर्गत - आर्यसमाज अपने मजहबी हुकुम की हिफाजत के लिए किसी बलिदान के लिए पीछे न रहेगा''।**

'वैदिक आदर्श' उर्दू समाचार पत्र ने ता.१७ शहरेवर, १३४४ फसली के अंक में तालुकेदार बीदर की इस हरकत पर निषेध व्यक्त किया है। इस निषेध के कारण ही निज़ाम ने इस पत्र को बन्द करवा दिया था।

चारों ओर के ऐसे निषेध का एक मात्र उद्देश्य था, निज़ाम का ध्यान आकर्षित करना, तालुकेदार के इस कृत्य की भर्त्सना करना और उसे उचित सजा दिलवाना।

पं. बन्सीलालजी ने महात्मा नारायण स्वामी को पत्र द्वारा कानूनी कार्यवाही के संदर्भ के में जानकारी देते हुए कहा है ''ता.१४/९/१९३५ को महकमें सरकार में निलंगे के सम्बन्ध में हमारी बहस हुई। हमारी सब बहस लिख ली गयी। थोड़े ही दिन में फैसला देगें - ऐसा कहा है। यह भी पूछा गया कि अपने मुल्क की बात देहली को क्यों जाती है? हमने कहा वह हमारी शिरोमणी सभा है, हमारा रोजनामा हमें वहाँ भेजना पड़ता है। अभी हमने न रेजीडेन्सी साहब के पास, न वायसराय बहादुर के पास गये है। हम काम चालू रखते है''।***

उपर्युक्त विश्लेषण से यह ज्ञात होता है कि आन्दोलन जोरों पर प्रारंभ हुआ था। परिणामत: प्रतिनिधि सभा की बैठकें भी रद्द कर दी गयी हैं। समाचार पत्रों में

* विभिन्न आर्यसमाजों के पत्र उपलब्ध हैं।

** समाचार पत्र उपलब्ध हैं।

*** यह पत्र उपलब्ध हैं।

टैलीफोन नं० २६५७ # ओ३म् #

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब,

(सन् १८६० के ऐक्ट २१ के अनुसार रजिस्ट्री हुई)

गुरुदत्त भवन, लाहौर

पत्र सं० ४६६८५ ति० २४-३- १११ दयानन्दाब्द / १९९२ विक्रमी

कृपया उत्तर देते समय पत्र-संख्या तथा तिथि का हवाला अवश्य दीजिए।

श्रीमन् मन्त्री जी
आर्य प्रतिनिधि सभा
निज़ाम राज्य हैदराबाद

श्रीमान् जी, नमस्ते !

आपकी सभा के छपे हुये फार्म पर हमें एक पत्र ति० ३०-६-३५ छपा हुआ है जिसमें यह लिखा है
"निज़ाम राज्य में आर्यों पर अत्याचार-
आर्य समाज निलंगे ज़मीन दोस्त !
"ता० २४-६-३५ को अव्वल तालुकादार (कलेक्टर) ज़िला बीदर और मोहतमीम पोलिस के हुकुम से बग़ैर किसी इतल्ला या नोटिस के एकदम समाजमन्दिर गिराया गया और सब माल व पुस्तकालय ज़ब्त कर लेगये वजह कुछ नहीं बताया"

भवदीय
[illegible]
सभा मन्त्री

आर्य प्रति निधि सभा - पंजाब - लाहौर द्वारा, मंत्रीजी; आर्य प्रतिनिधि सभा निजाम राज्य हैदराबाद को लिखा यह पत्र।

स्थापना समाज.
१३-१०-१९२९ ई.

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् ॥

आर्य समाज वरंगल निजाम राज्य.

ता 16 / 6/8/35

आगत
न. १०५९
२८-१०-३५

श्रीमान आर्यप्रतिनिधी सभा. उदगीर सादर नमस्ते

आर्यसमाज. वरंगलको. यह. सुनकर. अती. दुःख हुवा है. की. तालुकदार. साब. बिदरने. मु० तिलगांव के. आर्यसमाजको. बलपुर्वक. गीरवादिया. और. हूवन कुंडको. फुडवा. दिया है. और समाजके पुस्तक. वगैरा को. जप्त. करालिया. है. जो. हद. दरजा. खिलाफ. इनसाफ है. यह. समाज. निजाम. सरकारसे. जरिये. तार. बाद. वाकिफकार. इनसाफकी प्रार्थना करता है.

मदनलाल
मंत्री आर्य समाज, वरंगल.

नोट. कृपाकरके. हलिखेड के. मुकदमेके. मुताल्के कि और. मंत्रीजी. हलिखेडके मुकदमेको. क्या हालयहै. मालुम करिये. मुझे इसकी. अती. चिंता है. सकल भाइयोंके. सेवामें सादर नमस्ते

आ०
शुभचिंतक
मदन

आर्यसमाज वरंगल (हैदराबाद रियासत के तेलगूभाषी क्षेत्र) से भेजा गया निषेध - पत्र (प्रतिलिपि)

श्री शेषरावजी ने श्री बन्सीलालजी को यह पत्र भेजकर आवश्यक जानकारी दी हैं।

विरोधियों की पराजय

अध्यक्षो वाजी मम काम उग्रः कृणोतु मह्यमसपत्नमेव ।
विश्वेदेवा मम नाथं भवन्तु सर्वे देवा हवमा यन्तु म इमम ।।

- अथर्व० ९।२।७

"मेरा प्रबल संकल्प ज्ञान बल से युक्त है। यह संकल्प मेरे लिए सर्वथा प्रतिद्वन्दीरहित कर देवे। सब देव मेरे सम्बन्ध में हो जाएँ। मेरी इस पुकार पर आजाएँ।"

INTERNATIONAL ARYAN LEAGUE

SARVADESHIK ARYA PRATINIDHI SABHA

[illegible]

Ref. No. —— Dated 11th October, [illegible]

Shree Mahatma Narayan Swami, President of the International Arya League has issued the following statement to the Press:-

The [illegible] at Nilanga, where the congregation of Aryas assembled regularly and Havan was performed, was demolished by order of the Tahsildar towards the end of June 1938 and the Havankund (sacramental fire altar) was desecrated. The news created great indignation and deep resentment in the Arya Samaj circles. Hundreds of resolutions were passed and the high-handedness of the local officials was denounced from a thousand platforms.

The matter was taken up by the Judiciary of His Exalted Highness the Nizam, and it is satisfactory to note that in a Judicial Pronouncement, dated 12th September 1938, it is clearly recognised that, "the above rules have nothing to do with the ordinary activities of the Samaj which should of course continue". The order of confiscation of Arya Samaj furniture has been set aside and the articles "Samagri" has been ordered "to be returned forthwith". So far so good. But it is a matter for surprise and regret that although the desecration of the Havankund (sacramental fire altar) has not been denied, all that the judgment says is, "the Tahsildar gave no such order and it is quite clear that there was no intention to desecrate anything nor, of course, would any officer [illegible] knowingly tolerate such action". Unfortunately it is also quite clear that there was desecration and the Tahsildar seems to have tolerated it, for the matter was brought to his notice as also to the notice of the higher authorities. Desecration of a sacred place of worship is, in all conscience, a grave affair and cannot be lightly passed over. It is the clear duty of His Exalted Highness' Government to investigate the case, find out the actual perpetrator of the sacrilegious outrage and to inflict upon him condign and exemplary punishment.

The League trusts that this will be done and the place of Arya Samajists' congregation will be re-built soon as directed in the judgment "with the help of the local authorities". That only will [illegible] communal peace and contentment of a law-abiding section of the Nizam's subjects.

The Editor,

....

....

Dear Sir,

I should be obliged if you would kindly publish the above statement in the valuable columns of your esteemed paper.

Yours faithfully,

[illegible]

[illegible]

[illegible]

विशेष - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली (International Ayan leage) के सर्वे सर्वा महात्मा नारायण स्वामी द्वारा अन्य पत्र - पत्रिकाओं को अंग्रेजी में लिखा पत्र। इस पत्र में यह विनंती की गयी है कि - निलंगा-आर्य समाज भवन विध्वंस करने के समाचार को अपने पत्र - पत्रिकाओं में अवश्य स्थान दें।

धूम मची हुई है। जनता में फैले हुए रोष तथा चहूँ ओर के निषेध के कारण तहसीलदार निलंगा तथा तालुकेदार बीदर और निज़ाम शासन कुछ भयभीत हो गये हैं, कुछ नरम पड़े हैं। आर्यसमाज निलंगा के पुनः निर्माण के लिए तहसीलदार निलंगाने २००/- रु. देने की पेशकश की। शेषरावजी और माधवराव आर्य ने पं. बन्सीलाल को पत्र लिखकर इस बात की जानकारी दी और उनसे यह भी जानना चाहा कि रुपये ले या नहीं? बताने का कष्ट करें। पं. बन्सीलालजी ने शेषराव को पत्र भेजा है, पत्र मे उन्होंने कहा है - "पत्र आर्यभाषा में ही लिखा करें। दूसरे पत्र में यह भी सुझाव दिया है कि प्रचार कार्य में शान्ति बरतें, किसी के प्रति सख्ती न बरते, कठोर शब्द का प्रयोग न करें (पत्र दि. १७/२/४५ फसली) ।

बीदर के तालुकेदार द्वारा नियम के विरुद्ध किये गये कार्य का देश व्यापी विरोध हुआ - यह विरोध बढ़ता ही गया तो तत्कालीन सचिव नवाब जुलकदर जंग को विवश होकर दि. २८ सितम्बर १९३५, यह फैसला देना पड़ा कि "तालुकेदार का कार्य अन्यायपूर्ण था। अतः तालुकेदार अपने निजी धन से आर्यसमाज मंदिर का पुनः निर्माण करे, हवन कुंड बनवा दे और जब्त किया सामान लौटा दे - इस आज्ञा का तुरन्त पालन किया जाए" पं. बन्सीलालजी ने यह फैसला निलंगा आर्यसमाज को दि. ५/१०/१९३५ पत्र के द्वारा विदित किया है और आर्य युवकों को हिदायत भी दी है कि "आर्यसमाज की दीवारें जैसी थी, उसी हालत में बनवा लें। पत्थर तो वहीं है, मिट्टी तहसीलदार लाएँगे, मजदूर राजमिस्त्री सब उनके होंगे - केवल आप निगरानी करें कि दीवार हो रही या नहीं। यदि इसमें ननुनच वह किये तो तुरन्त इन्कार कर देना और हमें लिखना। आवश्यकता पड़ी तो मैं आऊगाँ। सामान वापिस लेना। ... और जब सब सारा भवन बनकर पूरा हो जाए, तो इसका उद्घाटन करते समय एक बड़ा भारी उत्सव करना है। पैसे की आप चिन्ता न करे, उत्सव करके, उस नवीन मकान में आर्यसमाज के कार्य प्रारम्भ होंगे, बड़े बड़े लोग बुलवायेंगे"। (पत्र उपलब्ध है)।

इस तरह आर्यसमाज के पक्ष में दिये गये फैसले के कारण तथा पं. बन्सीलालजी के इस पत्र से न केवल निलंगा में खुशियाँ मनाई गयीं, बल्कि पूरा आर्य जगत् इस आन्दोलन की सफलता पर प्रसन्न और पुलकित हो उठा - जनता का मनोबल

बढ़ता गया। इस कानूनी जंग में आर्यसमाज की जीत हुई और निजाम के प्रशासन को करारी हार का सामना करना पड़ा। आर्यसमाज के इतिहास के पृष्ठों पर यह विजय कथा हमेंशा के लिए अंकित हो गई।*

'यतो धर्मस्ततो जय'

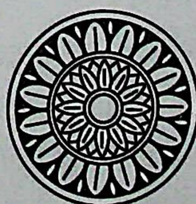


दयानन्दबचनामृत

पशु बलवान होकर निर्बलों को दु:ख देते हैं और मार डालते हैं। जब मनुष्य मनुष्य जन्म पाकर दु:ख देनेवाले कार्य करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं, किन्तु पशुवत् है और जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहलाता है। जो स्वार्थवश होकर परहानि मात्र करता है वह जानों पशुओं का भी बड़ा भाई है।

'सत्यार्थ प्रकाश' महर्षि स्वामी दयानन्द -

* निलंगा आर्य समाज भवन के विध्वंस से सम्बन्धित कई व्यक्तियों तथा आर्य समाज संस्थाओं के बीच हुए पत्र व्यवहार, बयान आदि की संख्या लगभग ८० है। यह ऐतिहासिक धरोहर किसी भी शोधविद्यार्थी के लिए लेखक के पास उपलब्ध है।



११ श्री शेषराव कुलकर्णी - शेषराव वाघमारे कैसे बने?

प्राचीन काल में निलंगा दण्डकारण्य में बसा हुआ था। आज तो वहाँ दण्डकारण्य के अवशेष भी देखने को नहीं मिलते। निलंगा के बुजुर्ग लोग बताते हैं कि निलंगा के पूर्व और पश्चिम दिशा में शिंदी (जंगली खजूर) का घना बीहड़ वन था। आज जहाँ श्री गुलजारअली का खेत है वहाँ और उसके आसपास जंगल था। इसी जंगल में बाघ भी रहता था। अनेक बार बाघ किसान के खेतों में बंधे हुए गाय, बैल आदि पशुओं को मार ड़ालता था। एक दिन बाघने श्री हणमन्तराव पादरे की गाय और बछडे को मार डाला। ऐसी घटनाओं की चर्चा तो बहुत होती रही, पर किसी ने यह हिम्मत नही की कि बाघ को मार डाले। श्री पादरे शेषरावजी के पास गये और उन्हे गाय मारने की घटनासे अवगत किया। उस समय शेषरावजी कोर्ट जा रहे थे। समाचार सुनते ही कोर्ट की ओर न जाकर, उन्होंने अपने साथियों को एकत्रित किया और पूरी तैयारी और योजना के साथ बाघ को मारने के लिए वन की ओर निकल पड़े।

बुढ़ापा देखता है, सोचता है, बैठ जाता है ।
जवानी देखती है, सोचती है, कूद पड़ती है ।।

शेषरावजी मे शारीरिक बल तो था ही, आत्मिक बल भी भरपूर था। उनमें साहस और वीरता कूटकूट भरी थी। यद्यपि तत्कालीन निजामी राज्य में शेरों को मारना कानूनन अपराध माना जाता था, फिर भी शेषरावजी उनके साथियों ने निश्चय किया कि हिंस्त्र पशु को समाप्त किया जाय क्योंकि वह किसानों की बहुत हानि कर रहा था। ऐसे समय पशुधन को विनाश से बचाने के लिए, भयजनक वातावरण में हिंस्त्र पशु की हत्या करना अपराध नहीं है। शेषरावजी ने अपने साथी नागप्पा धर्मशेटे, बाबूराव शेटकार, हणमंतराव पादरे, नागोराव धनगर, रामचन्द्र शिंगाडे, गुंडाजी लोंढ़े, गोविन्द नाईक, रानबाजी रोडे आदि के साथ बीहड जंगल की ओर निकल पड़े। उनके पास ऐसा कोई हथियार भी नहीं था जिससे आसानी से बाघ को मारा जा सके। बाबूराव शेटकार के पास एक नलीवाली बंदूक थी, जिससे एक बार में केवल एक ही गोली चलाई जा सकती थी। बन्दूक की नली में पहले छर्रे भरो - फिर दाग दो - ऐसी बन्दूक थी। शेषरावजी के पास

अपना प्रिय सोटा था, जिसे वे अपने पास हमेंशा रखते थे। दूसरे लोगों के पास भाला, बरछी, तब्बर आदि शस्त्र थे। लोग शेषरावजी और उनके साथियों का मज़ाक उड़ाने लगे 'बाघ को मारना आसान है? अपने आपको भी बचा नहीं पायेंगे? बाघ को देखते ही सब नौ दो ग्यारह हो जायेंगे? कई मुँह, कई बातें थी।'' लोगों के उपहास को सुनाअनसुना कर सभी साहसी साथी आगे बढ़ते गये। कुछ लोग तमाशबीन भी थे, जो इनकी वीरता देखने के लिए उनके पीछे-पीछे चलने लगे। ये सभी साहसी वीर पुत्र बीहड जंगल में जाकर चारों ओर बिखरकर अपनी अपनी जगह तैनात होकर बैठ गये। सभी लोग शोर करते हुए, टीन कनस्तर पीटते रहे, ताकि बाघ जंगल से बाहर आये, पर बाघ का कहीं पता नहीं चला। अचानक बाबूराव शेटकार ने गुफा में अपने बच्चों के साथ लेटी हुई बाघिन को देख लिया और वे साथियों को आवाज देने लगे कि 'बाघ यहाँ है - आओ।' आदमी की आवाज सुनते ही बाघिन गुफा से बाहर आयी और शेटकार को पंजा मार फिर गुफा में चली गयी। शेटकार का हाथ काफी लहू लुहान हो गया।

फिर से गुफा की ओर पत्थरों का वर्षाव शुरू हुआ, शोर गुल शुरु हुआ, टीनकनस्तर पीटकर शोरगुल किया जाने लगा, ताकि बाघ गुफा से बाहर आये। तभी बाघिन गुफा से बाहर आयी। वीरों ने उसपर चारों ओर से पत्थर बरसाना शुरू किया, पर बाघिन पर किसी प्रकार का असर नहीं हुआ। शेषरावजी ने आव देखा न ताव, हाथ मे डण्डा लेकर वे बाघिन की ओर बढ़ गये। तब बाघिन उनपर लपक पड़ी। उसने उनका दाहिना पैर अपने मुँह में पकड लिया। उस समय शेषराव के पैरों में रबड के बूट थे। रबड के बूट में बाघिन के दांत फँस गये, मुँह में बूट भी फँस गया। शेषरावजी घबराये नहीं। उन्होंने एक हाथ से बाघिन का कान पकड़ा और वे दूसरे हाथ से बाघिन के सिर पर डण्डा चलाते रहे। बाघिन सिर पर पड़ी जबरदस्त चोट से छटपटाती रही, पर भाग नहीं सकती थी क्योंकि शेषरावजी के रबड़ के बूट में उसके दांत फँसे थे, तो दूसरी ओर उसका एक कान शेषरावजी ने मजबूती से पकड रखा था। शेषराव लगातार बाघिन के सिर पर चोट करते रहे। बाघिन का सिर लहूलुहान हुआ और अन्त में अपना मुह शेषराव के मुँह मे ही रखी हुई बाघिन ने दम तोड़ दिया। उसके बाद ही शेषराव ने अपने पैर को मृत बाघिन के मुँह से निकाला। पैरों से बहुत खून बह रहा था पर उन्होंने उफ तक नहीं की। वीर साथी

मृत बाघिन को निलंगा ले आये। बाघिन को देखने के लिए पूरा निलंगा उमड़ पड़ा। पुलिस भी वहाँ आ पहुँची - बाघिन को देखने के लिए नहीं, अपितु यह जानने के लिए बाघिन को मारनेवाला अपराधी कौन है? शेषराव ने बाघिन को मारा है - जानकर और भी चिढ़ गये और कानूनी कार्यवाही पर उतर आये। शेषराव वकील थे, उन्होंने लिखित बयान दिया कि शिकार खेलने का हमें कोई शौक नहीं है, हिंस पशु बाघ, गाय आदि घरेलू पशुओं को मार कर खा जाते हैं, लोगों को परेशानी होती है, हिंस्र पशुसे आम जनता भयभीत भी होती है। बाघिन मारकर हमने कोई अपराध नहीं किया है। हिंस्र पशु के वध से किसी को कोई हानि नही होती। ऐसे बयान से निलंगा की पुलिस कानूनी कार्यवाही करने में असमर्थ हो गई।

बाघिन के शिकार का समाचार सुनकर पं. बन्सीलालजी, उदगीर से निलंगा आर्यसमाज के मंत्री को दि. माघ शद्ध १०/३६ को पत्र लिखते हैं ''पत्र देखते ही, जिन भाईयोंने शेर को मारा है, उन सबकी फोटो लेकर शीघ्र भेजें। हाथ मे वह चीज भी रहें, जिस से शेर को मारा गया है। फोटोग्राफर मोहन सिंह (ये कल्याणी के निवासी थे) लातूर में हैं, उन्हे बुला ले, देरी न करें, सार्वदेशिक में छपवाना है''*

आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य की उर्दू पात्रिका 'दिग्विजय' उस समय सोलापुर से प्रकाशित होती थी। दि. २० जनवरी १९३६ के अंक के मुखपृष्ट पर समाचार प्रकाशित है ''निलंगा के आर्य वीरोंने एक जबरदस्त खूंखार शेरनी का शिकार लाठी से किया .... शेषरावजी ने लाठी से ही बाघिन पर वार कर बाघिन को घायल किया। शेषराव का पैर बाघिन के मुँह में फँस गया, उसपर वार करना खत्म नहीं किया और बाघिन मर गयी। ... इस वीरता की चर्चा सारे जिले में हो रही है'' * *

दूसरों के बल पर वाहवाही लुटना आसान है ।
बहादुर वही हैं, जो अपने बलबूते पर काम करता है ।।

(पं.बन्सीलाल का पत्र तथा 'दिग्विजय' में छपे समाचार स्कॅनिंग फोटो - इसी अध्याय में प्रकाशित है)।

---

* पत्र की प्रतिलिपि संलग्न है।

२५२२.९८०

उदगीर ओ३म माघ शु. ३

श्री मान जी, नमस्ते।

क्रमांक ग्यारह

पत्र देखते ही जिन भाइयोंने शेरको मारा है उन सबकी फोटो लेकर शीघ्र भेजें। हाथ में वह चीज रहे जीस से शेर को मारे हैं। फोटोग्राफर मोहन सिंग लातूर पर है बुलाले। देरी न करें। सार्वदेशिक में छपवाना है। शेष समाचार पत्र द्वारा मालूम करो। सबको सेवा में नमस्ते

आ० मो०
बन्सी लाल आर्यवकील
उपप्रधान

[illegible]

मंत्री, निलंगा आर्य समाज को लिखा हुआ पं. बन्सीलाल जी का पत्र

[illegible]

آریہ لڑکوں نے ایک زبردست خونخوار

شیر کا شکار لکڑیوں سے کیا

نلنگہ ریاست حیدرآباد دکن میں - ایک خونخوار

شیر نے آریہ سماج کے کھیت میں داخل ہو کر جانوروں کو

مارا مالک کو پکڑ لیا - مالک بچارہ زخمی کر

شیش راؤ جی وکیل (پریزیڈنٹ آریہ سماج) [illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

20 जनवरी 1936

[illegible]

[illegible]

[illegible]

उर्दू समाचार पत्र दिग्विजय में छपा समाचार, 'निलंगा के आर्य युवकों ने बाघ का शिकार लट्ठ से किया'

शुरु में लोग शेषरावजी को कहते रहे - बाघ मारनेवाले शेषरावजी। तत् पश्चात् वे जनता की उपाधि 'शेषराव बाघमारे' के नाम से विभूषित हुए। उदगीर आर्यसमाज के अगले वार्षिक उत्सव के अवसर पर, आर्य मंच पर इस 'बाघमारे' उपाधि को अंतिम स्वरूप दिया गया। उसके बाद 'वाघमारे' नाम के साथ जुड़ गया - नाम के सामने लगा हुआ शब्द 'कुलकर्णी' हमेशा हमेशा के लिए हट गया और शेषरावजी 'वाघमारे' बन गये।

शेषराव की इस वीरता और गुणगान से निलंगा के मुसलमान उनका और अधिक द्वेष करने लगे। 'हम भी कुछ कम नहीं हैं' यह दिखाने के लिए उन्होने दूसरा बाघ मारने का निश्चय किया। अत: मुसलमान युवक भी वाघ को मारने के लिए जंगल की ओर निकल पड़े। वहाँ वे अभी बाघ को ढूंढ ही रहे थे कि बाघ की दहाड़ सुनाई पडी। बाघ की दहाड सुनकर वे मुसलमान युवक सिर पर पैर रखकर भाग खड़ें हुए, जैसे तैसे हाँफते-हाँफते निलंगा पहुँचे।

इस घटना को सुनकर शेषराव और उनके साथी फिर से जंगल की ओर चल पड़े। वही शोर, टीन-कनस्तरियों की आवाज, जो बाघिन को मारते समय प्रयुक्त की गयी थी। बाघ दहाड़कर गुफा से बाहर आया - वह काफी चिढ़ा हुआ था - उसकी साथिन जो अब नहीं थी। शेटकार ने उसी नली की बन्दुंक से निशाना साधा, पर निशाना चूक गया। उन्होंने बाघ के जबड़े को पकडकर उसे फाडने का प्रयत्न किया पर उन्हें सफलता नहीं मिली। वे बाघ के गिरफ्त में आये। ऐसी स्थिति में शेषरावजी और उनके अन्य साथियों ने भाले, बारछी, लठ्ठों की वर्षा कर, दूसरे बाघ को भी मार डाला।

बाघिन को मारते हुए, शेषराव का पैर इतना लहु लुहान हुआ था कि उन्हे लगातार तीन महीने हर रोज माली गली में स्थित 'खिंडी दवाखाने' में मरहम पट्टी के लिए जाना पड़ा था। शेषरावजी के जीवन के बाद के दिनों में उनके पैर का पुराना दर्द कभी कभी उभर पड़ता था यह स्मरण दिलाने के लिए कि किसी और के नहीं किसी समय बाघिन के मुँह में फँसा हुआ पैर है और पैर में दर्द हैं।



१२ श्री शेषरावजी पर धर्मान्ध मुसलमानों का रोष

आर्यसमाजों की ओर से प्रतिवर्ष दशहरा, होली आदि के अवसर पर जलूस निकाले जाते थे। यह प्रथा बहुत पहले से ही चली आरही है। वर्तमान में भी आर्यसमाज की ओर से दशहरा त्यौहार बड़े ही धूमधाम से मनाया जाता है और जलूस भी निकलता है, गांव की सीमा का उल्लंघन कर विजयोत्सव मनाया जाता है।

निलंगा आर्यसमाज की स्थापना के पश्चात् शेषरावजी के नेतृत्व में सामाजिक, धार्मिक गतिविधियाँ उत्तरोत्तर बढ़ती ही गयीं। इन बढ़ती हुई गतिविधियों के कारण आर्यसमाज और भी शक्तिशाली होता गया। आर्यसमाज की यह शक्ति धर्मान्ध मुसलमानों को अखरने लगी, परिणामतः आर्यसमाज धर्मान्ध मुसलमानों की वक्रदृष्टि का शिकार होता गया। इतना ही नहीं, धर्मान्ध मुसलमानों ने कई बार शेषरावजी को समाप्त करने की योजना बनाई, पर उनकी योजनाएँ हर बार असफल ही रहीं।

श्री बलीराम पाटील, श्री मदनलाल अट्टल, श्री भीमराव देशमुख प्रारम्भ से ही शेषरावजी के साथी रहे। इन महानुभावों के साक्षात्कार के समय कई घटनाएँ सुनने को मिली। यहाँ पर कुछ घटनाओं का विवरण प्रस्तुत है।

हर वर्ष की तरह एक दशहरे के अवसर पर दोपहर में आर्यसमाज में आर्यजन एकत्रित हुए थे। वैदिक प्रार्थना के पश्चात्, ओ३म् की पताका फहरायी गयी। 'जयति ओ३म्, ध्वज ओ३म्, विहारी', ध्वज-गीत गूँज उठा। आर्यजनों का जलूस निकल पड़ा। आर्य युवक, जगह जगह रुक-रुककर लठ्ठ, तलवार का प्रदर्शन कर 'वैदिक धर्म की जय' घोषणा करते आगे बढ़ रहे थे। दूसरी तरफ मुसलमान इस जलूस को तितर बितर करने की योजना बना रहे थे। हाथों में लठ्ठ, तलवार आदि लिए वे भी तैयारी कर रहे थे। जैसे ही आर्यों का जुलूस पीरपाशा दरगाह, पुलिस स्टेशन, रोहिला गली से गुजरने लगा, मुसलमान जलूस को तितर बितर करने के लिए सामने आ गये। 'मारो काटो' की पुकारों ने धूमधाम मचाना शुरू कर दिया। पुलिस सिवाय देखने के, कुछ नहीं कर पा रही थी। मुसलमानोंने

जलूस पर पत्थर बरसाना शुरू किया। शेषरावजी ने अपनी कराबीन* चलायी। कराबीन की आवाज सुनकर और कराबीन में भरे हुए पैसे और छर्रें की मार पड़ती देख, सारे मुसलमान बिखर गये। जलूसने उसी जोश से, वैदिक नारे लगाते, लठ्ठ-तलवार का प्रदर्शन करते, निलंगा सीमा का उलंघन किया, विजयोत्सव की गौरव गरिमा के साथ लौट पड़ा।

भारत में मोहरम का दिन हर साल मनाया जाता है। निलंगा में भी यह दिन मनाया जाता रहा है। जगह-जगह 'डोला' बिठाया जाता था और दूसरे दिन 'डोला' विसर्जित किया जाता रहा था। उस साल निलंगा में श्री माधवराव पाटील के घर के सामने 'डोला' बिठाया गया। किसी ने डोला के समीप दीपक रख दिया। इस दीपक की लौ से 'डोला' जल गया। इस घटना से मुसलमान भड़क उठे। 'अवश्यही यह किसी आर्यसमाजी की करतूत है,' इस धारणा के कारण एक बड़ा जमावडा शेषरावजी को ही निशाना बनाने के लिए उनके घर की ओर निकल पड़ा। शेषराव को इस बात की जानकारी मिली। उन्होंने अपने साथियों को एकत्रित किया। देखते ही देखते आर्ययुवक भी तलवारें, भालों से लैस हो गये। शेषरावजी ने स्वयं अपनी छाती पर लोहे का तवा और सिर पर लोहे का कटोरा बांधा और ऊपर पगडी बांधी ताकि इससे वे सुरक्षित रह सकें। जैसे मुसलमानों की भीड़ शेषराव पर हल्ला करने के इरादे से उनके मकान की ओर बढ़ रही थी - गौरी नामक फौजदार ने भीड को थामे रखा। गौरी एक समझदार फौजदार थे। उन्होंने सारी स्थिति भाँप ली और यह भी जान लिया कि इस संघर्ष में मुसलमानों की खैर नहीं है। वह जानता था आर्य शक्ति क्या होती है। उसने गरज कर कहा "वहाँ तुम्हारे लिए मौत इंतजार कर रही है - उस तरफ बढ़ना मौत को बुलाना है - और मौत तुम्हारी ही है - उनकी नही, जिनकी ओर आगे बढ रहे हो! अरे! उसने शेर को मारा है और आप लोग तो शेर से डरकर भाग निकले थे। ऐसे डरपोक क्योंकर लड़ पायेंगे?" यह सुनते ही भीड आगे बढ़ने के बजाय पीछे लौट मुड गयी। इस तरह गौरी फौजदार की समझदारी के कारण दो वर्गों में होता हुआ संघर्ष टल गया।

श्री रामराव - मंत्री आर्यसमाज निलंगा के पं. बन्सीलालजी को लिखे दि. २/४/१९३६ के पत्र से मोहर्रम ईद, जुलूस आदि के मुसलमानों की

---

* खुले चौडे मुँहवाली एक छर्रेदार बन्दूक

हरकतों का पता चलता है। श्री रामराव पत्र में लिखते है ''मोहरम की तारीख से आज तक मुसलमानों की ओर से बिला इजाजत - तलवारें, लाठियां लेकर हिन्दुओं याने आर्यो के खिलाफ गालियाँ देते जुलूस निकाले हैं। .... अफवाह उडाये हैं कि आर्यसमाजी को घर घर घुसकर मारेंगे, आर्यसमाज गिरा देंगे। ... हिन्दू लोग काफी परेशान हैं।..... काजी साहब, निलंगा इन्ही की साजिश से गांव में मजलिस हो रही है।..... और एक अफवाह है कि शेषराव वकील और रामराव शाहीर वकील की नाक काटी जायेगी।.... आप जो उचित समझे कारवाई जाबता फरमाए'' इस पत्र की भाषा, उस समय की यथार्थता को दर्शाती है।*

इ.स. १९३५ के लातूर आर्यसमाज के तीसरे वार्षिक उत्सव की घटना को यहाँ उद्धृत करना असंगत न होगा। इस उत्सव को असफल करने के लिए कासिम रज़वीं के रजाकार गुण्डों ने हुडदंग मचाना शुरू किया। गुण्डों पर मुकदमा दायर कर दिया गया। न्यायाधीश श्री वासुदेव प्रसादजी ने सजा सुनाई। इस पर गुण्डों ने उनकी कार पर पत्थर बरसाए। शेषरावजी ने कासिम रजवी की इस चालाखी को समझा, उसकी बदनियत नाकामयाब करने के लिए लगभग ५० साथियों के साथ लातूर समाज में पहुँचे। वहाँ धीरज से काम लेकर आर्यों का हौसला बढाया। परिणामतः गुण्डों को अपनी हुडदंग बंद करनी पडी।**

(संदर्भ - 'आर्य जीवन विशेषांक व मराठवाड़ा - आर्यसमाज का विकास एक रेखा चित्र पृ. ६०)

हुमनाबाद जि. बीदर में हर वर्ष श्री माणिकप्रभू का मेला लगता था। वर्तमान में भी इस मेले की परंपरा है। इस मेले में दूर दूर से हजारों लोग इकठ्ठा होते थे। लोगों को वैदिक सिद्धान्तों से अवगत कराने के लिए आर्यसमाज के प्रचारक भी वहाँ पहुँचते थे। १९३६ के मेले के अवसर पर आर्यसमाज के प्रचार के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद द्वारा शेषरावजी को आमंत्रित किया गया था। शेषरावजीने इस निमंत्रण को स्वीकार कर 'माणिक प्रभू' के मेले में पहुँचने की तैयारी करने लगे।

---

* यह मूल पत्र लेखक के पास उपलब्ध है।

** संदर्भ: आर्यजीवन विशेषांक मराठवाडा आर्यसमाज का विकास - एक रेखाचित्र पृ. ६०

शेषरावजी ने कल्याणी मार्ग से हुमनाबाद जाने का मार्ग निश्चित किया था। कल्याणी में मुसलमानों की संख्या अधिक थी। शेषराव कल्याणी होते हुए हुमनाबाद जा रहे हैं, इस की भनक वहाँ के मुसलमानों को लगी। कल्याणी के मुसलमानों ने शेषरावजी को सबक सिखाने की योजना बनाई। उनका कहना था 'शेषरावजी कल्याणी से गुजरें और वह भी बचकर? हम देख लेंगे। कल्याणी के किसी सज्जन ने मुसलमानों के इरादों से शेषरावजी को अवगत करा दिया।

शेषरावजी ने अपने निर्धारित समयअनुसार पूरी तैयारी से अपने ५० साथियों को लेकर, हाथों मे लाठी, भाला, तलवार, बन्दूक और स्वयं कराबीन लेकर यात्रा शुरू की। कल्याणी के पास पहुँचते ही, उन्होंने अपने साथियों की दो पंक्तियाँ बनाई और स्वयं बीच में कराबीन लेकर आगे बढ़ते गये। जहाँ मुसलमानों की गली थी, वहाँ कराबीन की पांच-छ आवाजे लगायीं और 'भारत माता की जय', 'महर्षि दयानन्द की जय' के नारे लगाते आगे बढ़ते गये। इस दृश्य को देखकर किसी भी मुसलमान की हिम्मत नहीं हुई कि शेषरावजी को हाथ तक लगाये। किसी ने चूं तक नहीं की, नारे सुनते रहे, लाठी, तलवार, भाला, बरछी से लैस नवयुवकों की टोली को ताकते ही रहे। मुसलमान औरतें अपने घरों पर रहकर देखते, वे सोचने लगीं कि यह क्या बला आयी है। शेषरावजी बड़े ही आराम से कल्याणी से हुमनाबाद माणिक प्रभू के मेले में जा पहुंचे और उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों को लोगों के सम्मुख रखा। यह है शेषरावजी की वीरता -

'कातिल से दबनेवाले, ए आसमां नहीं हैं हम।
सौ बार ले चुका है, तू इम्तिहाँ हमारा।।





१३ श्री शेषरावजी का पौराणिक पंडितों से शास्त्रार्थ

शास्त्रार्थ में 'शास्त्र' और अर्थ यह दो शब्द हैं। शास्त्रार्थ में शास्त्र की चर्चा की जाती है। एक तरह से यह खंडन-मंडनात्मक वादविवाद है। सामान्यत: शास्त्रार्थ का स्वरूप प्रश्नोत्तर होता है। शास्त्रार्थ परम्परा वैदिक काल से प्रारम्भ होती है। ब्राह्मणकाल, उपनिषद् काल, दर्शनकाल, बौद्ध जैनियों काल - ऐसे अनेक कालों की यात्रा करते हुए यह शास्त्रार्थ परम्परा आधुनिक युग तक पहुँची हुई दीख पड़ती है।

ऋषिवर दयानन्द का समय, सामाजिक, धार्मिक दृष्टि से बड़े ही उथल पुथल का रहा है। समाज में अनेक विसंगतियां आयी हुई थी। धर्म के नाम पर अनेक मतमतान्तर, पंथ, सम्प्रदाय प्रचलित हो गये थे। हर एक का अपना अलग अलग ईश्वर हुआ करता था। ईश्वर के अनेक स्वरूप भी माने गये थे। अनेक अवतार निश्चित किये गये थे। न सच्चे ईश्वर का पता था, न सच्चे धर्म का ही। वेदों का वास्तविक अर्थ ही लुप्त हो गया था। ऐसी विषम अवस्था में ऋषिवर दयानन्द के सम्मुख एक ही रास्ता था, समाज, धर्म के क्षेत्र में फैली हुई विसंगतियों पर प्रहार करना, शास्त्रार्थ रूपी शस्त्र चलाना। महर्षि दयानन्द ने अपने जीवनकाल में विभिन्न विषयों पर शास्त्रार्थ किए थे।

ऋषिवर दयानन्द के पश्चात् आर्यसमाज ने वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार के लिए अनेक माध्यमों का अवलम्ब किया। उसने प्रवचन, व्याख्यान, भजनोपदेश, शास्त्रार्थ आदि मे से सशक्त माध्यम अर्थात् शास्त्रार्थ को चुना। उत्तर भारत में आर्यसमाज का शास्त्रार्थ काफी प्रभावशाली रहा है। दक्षिण में, निज़ाम रियासत मे शास्त्रार्थ का शस्त्र पहुँचा। हैदराबाद शहर में उत्तर भारत से कई आर्य विद्वान पहुँचते रहे। पं. पूर्णानन्दजी, स्वामी विश्वेश्वरानन्दजी, स्वामी नित्यानंदजी, पं. रामचन्द्रजी देहलवी आदि विद्वानों के नाम गिनाए जा सकते हैं। इन विद्वानों ने सनातनियों के आरोपों का मुँहतोड जवाब दिया।

पं. बन्सीलालजी ने दि. २/७/१९३५ के पत्र द्वारा सार्व देशिक सभा दिल्ली को जानकारी दी है - "आर्यसमाज की ओर से पं. देवेन्द्रनाथजी, पं. बुद्धदेवजी,

ओ३म्.

मु. निलंगे   ता. ५. मु. ७५ मा.

शनिवार

अगस्त १७ ६३

श्रीमान् मंत्री आर्य प्रांतीय प्रतिनिधि सभा निजामराज्य.

से मंत्री आर्य समाज निलंगा का सादर सप्रेम नमस्ते. आपका कृपापत्र प्राप्त हुवा. समाचार मालूम हुवा. यहां पर आर्यवीरदल हुआ भी नहीं आजतक. पं. [illegible] कुछ में सिर्फ बालवाड उपदेशक मास्टर आत्माराम [illegible] प्रचार नहीं हुआ. यहां आर्यवीरदल नहीं है आवश्यक है. शीघ्र आपकी सेवा में निवेदन किया जायेगा. शास्त्रार्थ [illegible] छापा है. उसका उत्तर मूर्तिपूजा [illegible] छापा जायेगा. कोई [illegible] तैयार हो रहा है. शीघ्र ही छापा जायेगा. [illegible]

नोट:- यहां पर प्रचारक की सख्त जरूरत है. कोई उपदेशक शीघ्र ही भेज दीजिये.

आपका मंत्री आर्यसमाज
निलंगा
[illegible signature]

मंत्री-निलंगा आर्यसमाज द्वारा पं. बन्सीलालजी को भेजा हुआ पत्र। पत्र में आर्य समाज का प्रचार और शास्त्रार्थ संबंधी जानकारी दी गयी है।

पं. नित्यानन्दजी थे। सनातनियों की ओर से श्री वामनराव नाईक जहागीदार थे। शास्त्रार्थ चार विषयों पर दो दिन तक चलता रहा। क्या हिन्दू सनातनी, क्या आर्यसमाजी, क्या बच्चे बूढे सभी आर्यसमाज के पंडितों की प्रशंसा करते थे, उनपर अच्छा प्रभाव पड़ा है।''

निलंगा में जिस समय आर्यसमाज की स्थापना हुई थी और वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार जोरों पर चलने लगा था, उस समय निलंगा में संस्कृत के बड़े से बड़े विद्वान रहा करते थे यथा श्री गोविन्दाचार्य, श्री मुकुंदाचार्य, श्री मध्वाचार्य आदि। ये सभी विद्वान पौराणिक मतावलम्बी थे। श्री गोविन्दाचार्य ने आर्यसमाज के समकक्ष सनातन समाज की स्थापना की और वे अपने नाम के आगे 'केसरी' उपाधि लगाने लगे। निलंगा के बुजुर्ग बताते हैं, शेषरावजी 'वाघमारे' हैं तो गोविन्दाचार्यने सोचा कि हम भी अपने नाम के साथ बाघ के समान ही 'केसरी' क्यों न लगाएँ? वे अपने नाम के सामने केसरी लिखने लगे। पर यह सही है कि यद्यपि वे पौराणिक थे पर संस्कृत के उद्भट विद्वान भी थे। उस समय निलंगा पौराणिकों का गढ़ माना जाता था।

शेषरावजी स्वाध्यायशील व्यक्ति थे; वे नित्यप्रति वेद, शास्त्र, उपनिषद, आर्य ग्रन्थों का निरंतर स्वाध्याय करते थे और महर्षि दयानन्द के विचारों को समझने का प्रयत्न करते थे.। उस समय के वैदिक विद्वानों को सुनते भी थे। स्वयं शेषराव ने प्रवचन, व्याख्यान, भजनोंपदेश के साथ शास्त्रार्थ को वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार का माध्यम भी चुना था।

शेषरावजी प्रधान, आर्यसमाज निलंगा भाई बंसीलाल उदगीर को दि. २६/१/१९४५ फसली को पत्र द्वारा प्रार्थना करते हैं ''हमारे पास कार्तिक पोर्णिमा को उत्सव हुआ करता है। (सनातनियों का) गुजस्ता साल स्वामी कर्मानन्दजी यहाँ पधारे थे और यहाँ शास्त्रार्थ भी हुआ था। इस वक्त भी किसी पंडित की आवश्यकता है - जरूर जरूर भेजे। साप्ताहिक अधिवेशन हुआ करता है। आवश्यकता सिर्फ उपदेशक की है।''

आर्य प्रतिनिधि सभा-निजाम राज्य के नाम से लिखा हुआ एक दूसरा पत्र है ''यहाँ पर आखिलानन्दजी नहीं आये, सिर्फ धारवाडकर मास्तर आये थे। उन्होंने

कुछ भी प्रचार नहीं किया। .... शास्त्रार्थ का विषय मूर्ति पूजा जैसा कि सनातनियोंने छापा है, उसका उत्तर तैयार हो रहा है, शीघ्र ही छापा जायेगा - नोट :- यहाँ पर प्रचार की सख्त जरूरत है।''

उस समय के पत्र व्यवहार से यह भी ज्ञात होता है कि सार्वदेशिक सभा - दिल्लीने स्वामी स्वतत्रानन्दजी को शास्त्रार्थ, प्रचार के लिए बीदर जिले में भेजा था, वे निलंगा भी पहुँचे थे।

इन सभी पत्रों को उध्दृत करने का यह उदेश्य है कि निलंगा आर्यसमाज एक जागृत और कर्मशील आर्यसमाज था। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, वेद पढ़ने का अधिकार आदि विषयों को लेकर निलंगा के सनातनियों के साथ शास्त्रार्थ करने में निलंगा आर्यसमाज अग्रणी रहा है, और मुँह तोड़ जवाब देने में समर्थ भी रहा है। कई बार तो पंडितो के न आने पर शेषरावजी ने ही शास्त्रार्थ की कमान संभाली थी। सार्वजनिक हित के लिए हाथ में तर्क का शस्त्र लेकर सनातनियों को ललकारा था। सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए उन्होंने खंडन का खड़ग धारण किया था। सनातनियों ने के पाखंड का जमकर खंडन भी किया था।

एक बार, प्रसिद्ध पौराणिक पंडित कालूराम शास्त्री निलंगा पहुँचे थे। शास्त्रीजी तर्क युक्त और कडे शब्दों का प्रयोग करते थे, जिससे सामनेवाले विरोधी पंडित को चोट पहुँचती थी। शेषरावजी आर्यसमाजी थें। उसी के कारण कालूराम शास्त्री उन्हें भरपेट गालियाँ भी देते थे। एक दिन शास्त्रीजी ने अपने प्रवचन में स्वामी दयानन्द का उपहास करते हुए कहा ''दयानन्द कहता है - ओ३म् वाक्-वाक्, ओ३म् प्राण: प्राण: और आगे कहता है - ओ३म् नाभि - ये नाभि भी कोई इन्द्रिय है?'' यह विधान आर्य युवकों में संशय पैदा करनेवाला था। शेषराव उस सभा में उपस्थित थे। श्री कालूराम के उपहास को सुनते ही वे उठ खड़े हुए और उनके उपहास का उत्तर देने लगे - ''शास्त्रीजी, नाभि इन्द्रिय नहीं है पर माता के गर्भ में सब इन्द्रियों के पोषण का स्त्रोत और मूल स्थान नाभि ही है। इसका ज्ञान शायद आपको नहीं है?'' शेषरावजी ने इस उत्तर से देखते ही देखते सभा जीत गयी - आर्य नवयुवक उछल पडे।

शेषरावजी आर्यसमाज के उत्सवों पर दलितों को निमन्त्रित कर उन्हें यज्ञ में

यजमान बनाते थे। उनके साथ भोजन भी करते थे। सनातनियों के लिए ये बाते अशास्त्रीय थी। श्री गोविंदाचार्य और मुकुंदाचार्य - ये दोनों सनातनी संस्कृत के विद्वान शेषराव के दूर के रिश्तेदार भी थे। इनके साथ मूर्ति पूजा, स्त्री और शूद्रों को वेद पढ़ने का अधिकार, अवतारवाद, आदि अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ हुए और इन शास्त्रार्थों में सनातनियों की सदा हार हुआ करती थी। सनातनी वेद के सच्चे अर्थो से अनभिज्ञ थे। यही अनभिज्ञता उनके हार का कारण सिद्ध होती थी। शेषराव की तार्किकता, युक्ति वादिता और वेदों के अध्ययन के कारण ही निलंगा का पौराणिक गढ़ हिल गया। आर्यसमाज का प्रचार बढ़ता गया, और प्रभाव भी बढ़ा।

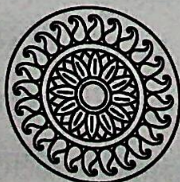
प्रा. वेदकुमार वेदालकार ने इस शास्त्रार्थ का विवरण महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा निलंगा के महासम्मेलन के अवसर प्रकाशित विशेषांक में प्रस्तुत किया है।

हम कठिनाइयों से पार उतरें

ते घेदग्ने स्वाध्योऽ हा विश्वा नृचक्षसः ।
तरन्तः स्याम दुर्गहा ।।

- ऋक्० ८।४३।३०

हे प्रभो! हम तेरे लिए ही कर्म करनेवाले हों। हम सदा, सब काल, आठों पहर, दिन और रात जो कुछ करें वह सब तेरे लिए ही करें और सब सुकर्म ही करें। अहा, अपने छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े कर्म को तुझे समर्पित करते जाना, अपने एक-एक कर्म से आठों पहरों में निरन्तर तेरा ही पूजन करते जाना, यह कितना सात्त्विक जीवन है, कितना शान्त और सुखमय जीवन है!



१४ श्री शेषरावजी पर विषप्रयोग

शेषरावजी को वैदिक धर्म प्रचार की ऐसी लगन लगी कि उन्होंने निलंगा तहसील में अनेक आर्यसमाज स्थापित किये। उनके प्रयत्न के फलस्वरूप वैदिक धर्म की गूँज चारों ओर फैल गयी। किन्तु इसका एक अन्य परिणाम यह भी हुआ कि मुसलमान तो उनके विरोधी थे ही, वहाँ के पौराणिक भी उनसे रुष्ट हो गये। यहाँ तक कि शेषरावजी के माता-पिता, परिवार के सदस्य भी उनके प्रति रोष प्रकट करते रहे। समीप के सम्बन्ध भी टूटने लगे। फिर भी शेषरावजी का आर्यसमाज के प्रति रुझान और वैदिक सिद्धांतो का प्रचार कार्य थमा नहीं। वे निस्वार्थ भाव से प्रचार कार्य में लगे रहे।

प्रतिवर्षानुसार पौराणिक लोग निलंगा के राम मंदिर में रामनवमी का पर्व बड़े ही उत्साह के साथ मनाया करते थे। हर पर्व के अवसर पर, शेषरावजी आमंत्रित थे। पौराणिकों का आमंत्रण स्वीकार करते हुए, शेषरावजी मंदिर में उपस्थित हुए। पर्व का कार्यक्रम रात्रि में था। कार्यक्रम की समाप्ति के पश्चात् भोजन की व्यवस्था भी थी। पौराणिकों ने शेषरावजी को भोजन करने का आग्रह किया, तो वे भी, सभी के साथ पंक्ति में बैठ गये। उनके निकट श्री रामरावजी सबनीस बैठे थे, जिनका शेषरावजी के साथ पारिवारिक सम्बन्ध था। भोजन परोसा जाने लगा, पर शेषरावजी को जो भोजन दिया गया, वह एक अलग पत्तल में लाया गया। रात्रि का समय था, प्रकाश के लिए लालटेन ही थे। पत्तल लानेवाला व्यक्ति कौन था, कुछ पता नहीं चला। भोजन शुरू करने के पूर्व मन्त्रपाठ हो रहा था, शेषरावजी दाल चावल (भात) मिला रहे थे, अचानक श्री रामराव सबनीस की दृष्टि शेषरावजी की पत्तल की ओर गयी तो उन्होंने देखा कि चावल हरे लग रहे थे। उन्होंने शेषरावजी का हाथ थामकर कहा 'वकीलसाहब मत खाईए'। शेषरावजी का हाथ थमा गया और उन्होंने चावल की ओर देखा तो वास्तव मे चावल हरे दिखाई दिए। वे तुरंत उठ खडे हुए। वे बाहर आये। फिर उन्होंने चावल कुत्ते और बकरी के सामने रखे। पशु चावल खाते रहे किन्तु थोड़ी देर में वे पशु लुढक पडे और मर गये। इससे यह रहस्य स्पष्ट हुआ कि शेषरावजी को जी जान से मारने के लिए भोजन में विष मिलाया गया था। यह एक प्रकार से घोर षड़यंत्र की योजना थी। **'जाको राखे साईयाँ मार सके न कोय'** मारने वाले से बचाने वाला बलवान होता है, वह है ईश्वर। शेषरावजी ईश्वर के प्रति नितांत श्रद्धा रखते थे।

ओ३म् मु. निलंगा.

श्रीमान मंत्रीजी सार्वदेशिक आ. प्र. सभा उदगीर कैम्प.

सादर नमस्ते. ता. २८।३।४८ [illegible] शेषराव जी को रामनवमी के [illegible] निलंगा में सनातनियों की ओर से विष डाला गया था. शेषराव जी का भोजन [illegible] विष डाला गया था. [illegible] पंचनामा करके और [illegible] भोजन को विष परीक्षा के लिये भेजा गया है. सुना गया है श्री सनातनियों की ओर से विष परीक्षक के पास [illegible] विष नहीं है बल्कि रंग है [illegible] परीक्षा [illegible] गया है.

[illegible] है.

[illegible] रवाना हो रहा हूँ. आर्य [illegible]

आपका
भवदीय. रामराव शाहीर
मंत्री.

[illegible]

[illegible]

[illegible]

श्री. रामराव शाहीर- (मंत्री निलंगा आर्य समाज) का पं. बन्सीलालजी को लिखा पत्र। पत्र में श्री शेषराव जी पर विष-प्रयोग की बात कही गयी है।

'हतभागी अपनों ने किया विष का प्रयोग
मृत्यु मुख से बचे, क्योंकि वे ईश्वर के प्यारे थे।

इस षड़यंत्र के लिए, उंगली उठती है, उस समय के पौराणिक विद्वान श्री गोविन्दाचार्य केसरी की ओर, पर उन्होंने इनकार करते हुए, इस घृणित कार्य की निन्दा की है। वे कहते है - ''भले ही हमारे बीच मूर्ति पूजा - अवतार वाद - आदि विषयों पर मतभेद हों, पर शत्रुता की भावना कतई नहीं, जैसा कि लोग सोचते है। लोगों की सोच में सचाई नहीं है। हैदराबाद मुक्ति संग्राम में हम साथ-साथ संघर्ष करते रहे - हम एक दूसरे के काफी समीप रहे - शेषरावजीने शस्त्र सुरक्षित रखने की जिम्मेदारी भी मुझे सौंपी थी - अन्य अवसरों पर भी मुझे वे सम्मान भी देते रहे'' (श्री गोविन्दाचार्य का यह मन्तव्य - महाराष्ट्र - आर्य सम्मेलन निलंगा स्मारिका में प्रकाशित है) शेषरावजी की ६१वी वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में श्री गोविदाचार्य उपस्थित रहे - शेषरावजी के बडप्पन को स्वीकार करते हुए उन्होंने उनकी प्रशंसा भी की। वास्तविकता यह है, शेषरावजी ने स्वयं पर किये हुए विष प्रयोग को महत्वपूर्ण ही नहीं माना। इस घटना के बाद भयभीत न होते हुए, वे कर्मशील ही बने रहे। न किसी के प्रति रोष, द्वेष, न किसी प्रकार का आरोप-प्रत्यारोप। हर एक को उचित सम्मान देना- यह उनका सहज सरल स्वभाव था। वे ऋषिवर के भक्त थे, उनके विचारों से भलीभांति परिचित थे।

''इस संसार में वही व्यक्ति अपने कार्य में सफल होते हैं जो परिस्थितियों को अनुकूल बना लेते हैं और यदि वे बना नही सकते तो अपने लिए अनुकूल परिस्थितियाँ पैदा कर लेते हैं''

'दयानन्द वचनामृत'

मेरा तात्पर्य किसी की हानि या विरोध
करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय
कराने का है। .... मनुष्य जन्म का होना
सत्यासत्य के निर्णय करने - कराने के
लिए है न कि वाद-विवाद, विरोध
करने कराने के लिए।

'सत्यार्थ प्रकाश - अनुभूमिका - एकादश समुल्लास

१५ आर्य महासम्मेलन सोलापुर - १९३८
स्वयंसेवक, दलपति शेषरावजी

१९३८ तक के पड़ाव में, हैदराबाद की रियासत में आर्यसमाज अपने पैर गडाए हुए अटल खडा हुआ था। ऐसे समय यह अनुभव किया गया कि एक केन्द्रीय सभा की स्थापना हो। हैदराबाद शहर के आर्यसमाज सुलतान बाजार में मंत्री श्री चन्दूलालजी तथा भाई बन्सीलालजी के सुझाव पर दि. ४ एप्रिल १९३१ को, आर्य प्रतिनिधि सभा, निज़ाम राज्य की स्थापना की गयी। इस सभा की स्थापना के साथ ही आर्य जगत में एक नया मोड़ आया। सभा की स्थापना के पूर्व से ही, आर्यसमाज की गतिविधियों पर निज़ाम शासन द्वारा कड़े प्रतिबंध लगाने शुरू हुए थे, वे प्रतिबंध अब और अधिक कठोर हो गये। दि. २३ जनवरी १९३४, १२ एप्रिल १९३४, २९ एप्रिल १९३४ को निज़ाम शासन का आज्ञापत्र प्रकाशित हुआ। इस आज्ञा पत्र के अनुसार आर्यसमाज मंदिर में कोई उपदेश - व्याख्यान या सार्वजनिक सभा नही की जा सकती थी। आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य ने इन आज्ञापत्रों का कड़ा विरोध किया, किन्तु निज़ाम शासन पर कोई असर नहीं हुआ। आर्यसमाज और निज़ाम शासन में प्रतिबंधो के मुद्दे को लेकर ६, ७ वर्ष तक संघर्ष बढ़ता ही गया। निज़ाम की चुनौती का जवाब देने के लिए आर्यसमाज अपनी पूरी शक्ति से इस मैदान में उतर पड़ा। मा. क्षितीशकुमारने आर्यसमाज के इस संघर्ष को इन शब्दों में व्यक्त किया है

'पादाहतं यदुत्थाय मूर्धानमधिरोहति।
स्वस्थादेवापमानेऽपि देहनस्तद्वरं रज:।।

(महाकवि माघ)

पाँवों से आहत होने पर धूल भी सिर पर चढ़ जाती है, तब यदि कोई धीर और स्वाभिमानी व्यक्ति अपमान सहकर भी व्यग्र नहीं हो उठता, तो उससे धूल ही भली।''

बढ़ते हुए संघर्ष को देखते हुए, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली ने अपनी अन्तरंग सभा के प्रस्ताव (दि.९/१०/१९३८) द्वारा हैदराबाद की

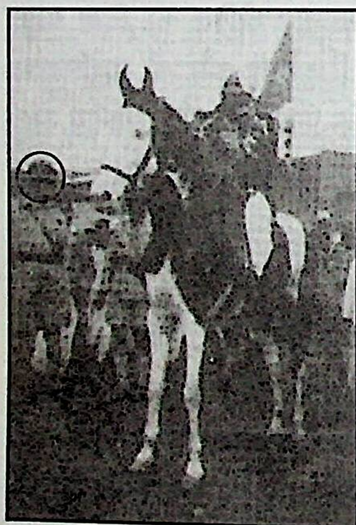
समस्याओं का हल करने का उत्तरदायित्व महात्मा नारायण स्वामीजी को सौंपा। महात्मा नारायण स्वामी ने एक आर्य महासम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया और घोषणा की कि आर्य सम्मेलन दि. २५, २६, २७ दिसंबर १९३८ को, सोलापुर में सम्पन्न होगा। (संदर्भ - आर्य महासम्मेलन - सोलापुर का कार्य विवरण - प्रकाशक: सार्वदेशिक आर्यप्रतिनिधि सभा - देहली)

इस घोषणा के पश्चात्, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी स्वतंत्रानन्दजी को लेकर ३० अक्तूबर १९३८ को सोलापुर पहुँचे और सम्मेलन के प्रबन्ध में लग गये। इस सम्मेलन के अध्यक्ष पद के लिए महाराष्ट्र प्रदेश के बड़े नेता लोकनायक श्री माधव हरि अणेजी (M.L.A.-central) का नाम घोषित कर दिया गया। तुलजापुर रोड पर नहर के किनारे श्री गणपति सिद्रामप्पा और श्री महालिंगय्या पाटील की कुल २५ एकड़ भूमि इस सम्मेलन के लिए ली गयी। स्थानीय आर्य सज्जनों, आर्यजगत् तथा महात्मा नारायण के अथक प्रयत्न से सोलापुर का आर्य सम्मेलन दि.२५, २६, २७ दिसंबर १९३८ को संपन्न हुआ। इस सम्मेलन की सम्पूर्ण कार्यवाही स्वयं महात्मा नारायणस्वामी ने सम्मेलन के कार्य विवरण के रूप में प्रकाशित की है। यहां विषय की दृष्टि से उस कार्य विवरण को पुन:व्यक्त करने की आवश्यकता नहीं है।

इस कार्य विवरण का वही अंश लिया गया है, जिस से श्री शेषरावजी सम्बंधित थे। सोलापुर आर्य महासम्मेलन के आर्यनगर का प्रबन्ध दो भागों में किया गया था। एक विभाग स्वयंसेवकों का था। प्रबन्ध की दृष्टि से स्वयंसेवक विभाग में १० दलपति और एक मुख्य दलपति नियुक्त किये गए थे। ५०० से अधिक आर्यवीर थे। स्वयंसेवक आर्य वीरों को सूचना दी गयी कि उन्हें कहाँ कहाँ अपनी सेवाएं अर्पित करनी हैं। (विस्तृत विवरण सम्मेलन कार्य विवरण मे छपा है।) पं. शिवदयालजी मेरठ निवासी मुख्य दलपति थे। १० दलपतियों में से एक दलपति थे - शेषरावजी वाघमारे। दलपति शेषरावजी के अधीन स्वयंसेवक आर्यवीर भी थे। सभी दलपति और स्वयंसेवक आर्यवीर ड्रिल और प्रारम्भिक सहायता (first aid) आदि कार्यों से परिचित थे। उन्हे प्रशिक्षित किया गया था। दलपति और स्वयंसेवक सम्मेलन के आयोजन में सहायक बने रहे। महात्मा नारायण स्वामी ने आर्यवीरों की सेवा कार्य का विवरण विस्तृत रूप में दिया है।

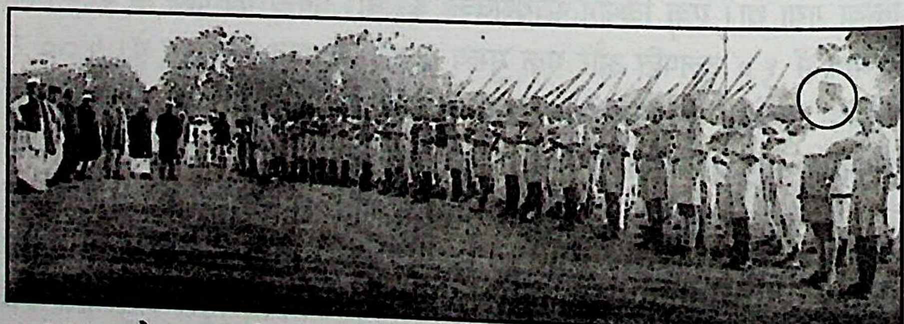


१८३८ सोलापुर आर्यमहासम्मेलन। दांयी ओर खडे दलपति, स्वयं सवेक श्री शेषराव जी वाघमारे (गोलाकार में) मध्य में महात्मा नारायण स्वामी जी तथा स्वामी स्वतंत्रानंद जी। (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली द्वारा छपे- सोलापुर सम्मेलन कार्यविवरण से प्राप्त चित्र।



श्री पं. बंसीलालजी नगर कीर्तन के आगे।

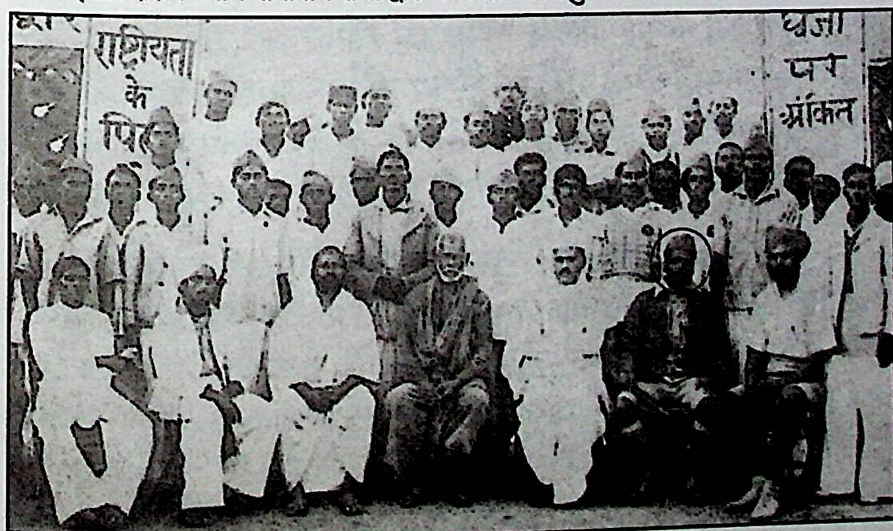
बायीं ओर दलपति श्री शेषरावजी हॅट पहने हुए (गोलाकार में) (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सोलापुर कार्यविवरण से प्राप्त चित्र)



१९३८ सोलापुर आर्य सम्मेलन। दायीं ओर खडे अभिवादन करते हुए श्री शेषरावजी वाघमारे सामने की ओर खडी पंक्ति में (गोलाकार में) महात्मा नारायण स्वामीजी एवं स्वामी स्वतंत्रानंदजी अभिवाद का स्वीकार करते हुए। (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली द्वारा छपे सोलापुर सम्मेलन आर्य विवरण से प्राप्त चित्र)।



आर्य नगर के स्वयं सेवकों का एक ग्रुप
१ ९ ३ ८- आर्य महासम्मेलन सोलापुर। महात्मा नारायण स्वामी तथा स्वामी स्वतंत्रानंदजी के साथ दलपति श्री शेषरावजी वाघमारे (बीच की पंक्ति में दायें पहले), सोटा लिए खड़े) (गोलाकार में) (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित सोलापुर कार्यविवरण से प्राप्त चित्र)



आर्य नगर का दलपति और मुख्य दलपति ग्रुप
१ ९ ३ ८ सोलापुर आर्य सम्मेलन में महात्मा नारायण स्वामी के साथ दलपति श्री शेषरावजी। अगली बैठी पंक्ति में छटवे दलपति श्री शेषरावजी वाघमारे (गोलाकार में) (सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा-देहली द्वारा छपे सोलापुर विवरण से प्राप्त चित्र)

इस सम्मेलन में स्वयंसेवक दलपति के रूप में नवयुवक शेषराव वाघमारे का अनोखा व्यक्तित्व हमारे सम्मुख खड़ा होता है। विवरण में छपे हुए, कार्यरत स्वयंसेवक, दलपतियों के चित्र भी आकर्षक हैं।

इस महासम्मेलन में एकत्रित पचास हजार जनो के सम्मुख शेषरावजी ने एक स्फूर्ति गीत, ऊंची आवाज में गाया था। गीत की पंक्तियाँ थीं -

'यह मत कहों कि जग में कर सकता क्या अकेला।
लाखों में काम करता है सूरमा अकेला।

इस गीत से जनसमूह तो प्रभावित रहा ही। स्वातंत्र्यवीर सावरकरजी भी प्रभावित हुए। उनके शब्द थे ''निज़ाम के जुल्मी रियासत में ऐसे वीर, सूरमाँ होंगे, तो वैदिक धर्म पर आँच कभी नहीं आयेगी'

इस सम्मेलन में २० प्रस्ताव पारित किये गये। यह सम्मेलन सफलता से संपन्न हुआ। सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात् महात्मा नारायण स्वामीजीने दलपति और आर्यवीरों के कार्य की भूरि भूरि प्रशंसा की थी।





१६ आर्यसत्याग्रह - (१९३८-३९) और सत्याग्रही श्री शेषरावजी

जब आर्यसमाज पर लगाए गए कठोर प्रतिबन्ध असहनीय हो गए, तब आर्य प्रतिनिधि सभा - निज़ाम राज्यने एक आर्य रक्षा समिति स्थापित की। हैदराबाद में स्थानीय सत्याग्रह २९ अक्तूबर १९३८ को प्रारम्भ हुआ। प्रथम सत्याग्रही जत्थे के नेता थे, श्री पं. देवीलालजी। इस प्रथम सत्याग्रह के सम्बन्ध में जो अन्य वीर सत्याग्रही चुने गये उनमें से श्री शेषरावजी वाघमारे एडव्होकेट निलंगा भी थे। (संदर्भ - हैदराबाद आर्यो की साधना और संघर्ष - प. नरेन्द्रजी पृ. १०८)

निज़ाम शासन ने इस आर्य सत्याग्रह को अनदेखा कर प्रतिबंध और भी कठोर कर दिये। प्रतिबन्धों की कठोरता जब असहनीय हुई, तब आर्य प्रतिनिधि सभा ने सार्वदेशिक सभा - दिल्ली का ध्यान आकर्षित करते हुए, सामाजिक, धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए सहयोग की प्रार्थना की। सार्वदेशिक सभा - दिल्ली - आर्य रक्षा समीति हैदराबाद द्वारा चलाए आर्य सत्याग्रह के महत्व को समझ सकी और रक्षा समिति को सम्पूर्ण सहयोंग देने के लिए कटिबद्ध हुई। परिणाम स्वरूप महात्मा नारायण स्वामीने सोलापुर आर्य महासम्मेलन की घोषणा की और यह सम्मेलन उन्हीं के नेतृत्व में दि. २५, २६, २७ दिसम्बर -१९३८ को सम्पन्न हुआ। जिसका विवरण पिछले अध्याय में प्रस्तुत किया जा चुका है।

तीन दिन के इस सम्मेलन में कई प्रस्ताव पारित किये गये। प्रस्ताव - ४ यह सम्मेलन हैदराबाद के अपने सहधर्मियों के आवश्यक अधिकारों की घोषणा करता है - वे अधिकार हैं, धार्मिक प्रचार, नगरकीर्तन, यज्ञशाला बनाना, व्यायामशाला, वाचनालय, बालक - बालिकाओं की शिक्षा पर लगे बन्धन हटाना।

प्रस्ताव-५ कहता है "निज़ाम द्वारा गत छ - सात वर्षो में प्रतिबन्ध हटाने विषयक तथा अधिकार सम्बधी शिकायतों के निराकरण की सभी प्रार्थनाएँ ठुकरा दी गयी हैं और सभी प्रयत्न निष्फल हो चुके हैं। भारत के समस्त आर्यों में घोर असन्तोष फैल रहा है। आत्मत्याग और अंहिसात्मक सत्याग्रह के अतिरिक्त -

कोई दूसरा चारा नहीं रह गया है। अतः यह सम्मेलन अहिंसात्मक सत्याग्रह के आन्दोलन के संचलन के लिए 'सत्याग्रह सम्मेलन' नियत करता है''

इस प्रकार सार्वदेशिक सभा - देहली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा - हैदराबाद - निज़ाम-राज्य के संयुक्त निर्णयानुसार व्यापक स्तर पर सत्याग्रह का निर्णय लेना पड़ा। 'सत्याग्रह समिति' का प्रधान कार्यालय नवी पेठ सोलापुर में स्थापित किया गया - (संदर्भ - आर्यसमाज का इतिहास - भाग-२ डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार पृ. ५९२)

३१ जनवरी १९३९ को प्रथम सत्याग्रह हुआ। (वस्तुतः यह द्वितीय सत्याग्रह कहना चाहिए - क्योंकि प्रथम सत्याग्रह आर्य रक्षा समिति ने इसके पूर्व ही प्रारम्भ किया था। महात्मा नारायण स्वामीजीने ४ फरवरी १९३९ को अपने प्रथम जत्थे के साथ, हाथ में ओ३म् की पताका लिए, भजन गाते गुलबर्गा रेल्वे स्टेशन से बाहर निकले। पुलिस ने इस जत्थे को गिरफ्तार किया। ७ फरवरी को इन सत्याग्रहियों को डेढ़ वर्ष के कठोर कारावास को दण्ड दिया गया (संदर्भ - वही पृ. ५९४)

इस कठोर कारावास - दण्डितों में युवक शेषराव वाघमारे भी थे। गुलबर्गा कारावास का प्रमाण पत्र यह कहता है कि ''कठोर कारावास की तिथि, १७ खुरदाद १३४८ फसली - दण्ड - एक वर्ष छः महीने। गुलबर्गा कारागृह में रहते कुछ महीनों के बाद शेषराव १९ थीर १३४८ फसली को हैदराबाद के चंचलगुडा मध्यवर्ती कारागृह में भेज दिये गए''।

एक कारागृह से दूसरे कारागृह में स्थानांतरित करने के लिए एक विशिष्ट शब्द का प्रयोग कारागृह में किया जाता था ''बदरखा''। किसी भी समय सत्याग्रही को अलग अलग किया जाता था। सत्याग्रही के कहने पर यह न पूछो ''बदरखा'' किधर जाएंगे - वे जिधर भेज देंगे - उधर जाएंगे।'' शेषरावजी ने गुलबर्गा से हैदराबाद, पुनः गुलबर्गा - कारागृह की यात्रा की थी।

श्री क्षितीशकुमार वेदालंकार उस समय गुरुकुल कांगडी के विद्यार्थी थे। दि.२८ जनवरी १९३८ को महात्मा नारायण स्वामीजी के आवाहन पर अपने चौदह विद्यार्थी साथियों के साथ वे सत्याग्रह में सम्मिलित होने के लिए हरिद्वार से

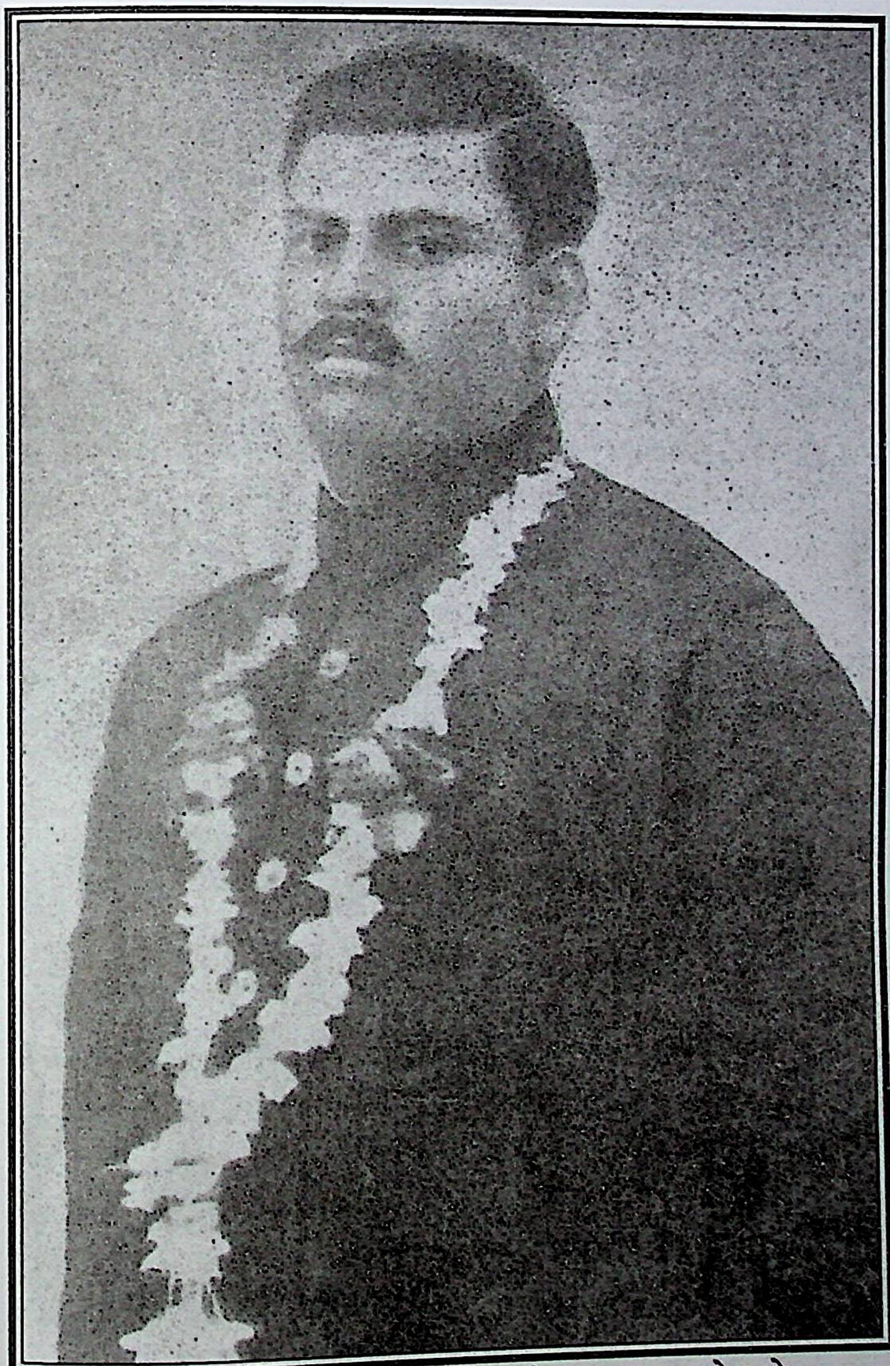
हैदराबाद के लिए निकल पड़े थे। उनके जेबों मे पर्चे थे। उनमें लिखा था ''काश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक सारा हिन्दुस्तान एक है। सांस्कृतिक दृष्टि से उनके दो भाग किये नहीं जा सकते।..... उनके अंग पर किये गए अत्याचार से सारा का सारा आर्यावर्त कराह उठा है। ...... जब तक हमें नागरिक और धार्मिक अधिकार नहीं मिलेंगे, हम अंतिम दम तक लड़ते रहेंगे''। (निज़ाम की जेल में - पृ. २३)

कारागृह में दण्डित सत्याग्रहियों को किस प्रकार की यातनाएँ दी जाती रही हैं - इसका हृदयद्रावक वर्णन श्री क्षितीश कुमार ने किया है - ''इतनी भारी डण्डा बेडियाँ मनुष्य के पैर में पहनाई जाती हैं, ये शायद पशुओं को भी भारी पड़ें। ..... टिकटिकी ऊपर हाथ बांधने के लिए उसमें दोनों ओर एक एक लोहे का कड़ा तथा बीच में शरीर के मध्यभाग को टिकाने के लिए चमड़ी की छोटीसी गद्दी...। कई दर्जन बेतें - कुछ तेल में भीगी हुई'' (निज़ाम की जेल में पृ. २८)। सत्याग्रहियों को अधिक यातनाएँ देने के लिए कालकोठरी भी थी।... ''कालकोठरी में, जिसे 'सर्वलगंजी' कहते हैं। यह सर्वल गंजी - सिंगल गंजी और डबल गंजी दो प्रकार की होती थी। चारों तरफ तारकोल से पुती हुई भयानक लगती थी। एक कोने में छोटा शौचालय, उसकी गंदगी और बदबू के कारण असंख्य मच्छर, ठीक बीचोंबीच फर्श में जडी हुई एक मोटी लोहे की जंजीर, जो इस तरह पैरों में बांधी जाती थी कि कैदी को दिन रात खड़ा ही रहना पड़ता था'' (वही - पृ. ४२)

क्षितीशकुमार जिस कारागृह की भयावहता व्यक्त कर रहे हैं, उस समय, शेषरावजी गुलबर्गा के मध्यवर्ती कारागृह में कठोर कारावास भुगत रहे थे। सत्याग्रही के रूप में शेषरावजी को कालकोठरी, सर्वल गंजी, तथा मोटी लोहे की जंजीर पैरों में बांधे - दिन-रात खड़ा रहना पड़ता था। इस कठोरता में कुछ नरमी भी आयी तो सत्याग्रहियों को आपस में मिलने का अवसर प्राप्त होता था और हँसी-मजाक भी चलता था। आपस में सुख-दुखों की वार्ताएँ होती थी - दुःख बाटें भी जाते थे। सत्याग्रह के नीरस वातावरण में सरसता घोलने में शेषरावजी अगुआ रहा करते थे। हँसाने की कला में निपुणता और निश्छल हँसी - ये प्रभु से ही उन्हें प्राप्त हुई थी। शेषरावजी की शारीरिक सम्पदा का वर्णन प्रस्तुत करते हुए श्री क्षितीशकुमार लिखते हैं - ''एक दिन मैंने देखा कि दिन भर मस्त रहनेवाला चारों तरफ हँसी बिखरनेवाला यह व्यक्ति शाम को चार बजे के आसपास कुछ उदास हो जाता है

और एक कोने में जाकर चुप चाप लेट जाता है। मन में शंका हुई कि कहीं घर की कोई याद तो नहीं सता रही है? कहीं नई-नई शादी हुई हो और घर में नववधू तड़प रही हो, जेल में ये स्वयं तड़प रहे हो। यह तड़प तो यौवन का धर्म है। ..... सहानुभूति प्रकट करते हुए मैं बार बार पूछता रहा। वे कुछ न बताते। मैंने जोर देकर कहा - आपको यहाँ कोई कष्ट हो तो बताईए। .... अपनी सौगंध ही दे डाली। तब धीरे धीरे उन्होंने कहा - 'इस समय भूख के मारे हाल बेहाल हो जाता हूँ' इसलिए मैं एकान्त में आकर लेट जाता हूँ'। तब सारा रहस्य समझ में आया।'' (वही पृ. ६०) वास्तव में शेषरावजी ने जो शरीर सम्पदा कमाई थी वह शरीर सम्पदा व्यायाम के कारण थी। शरीर सम्पदा के अनुपात में भोजन की आवश्यकता होती है। आवश्यक तथा अनुपात का भोजन कारागृह में कहाँ प्राप्त हो सकता था। कारागृह के नियमानुसार हर बंदी को दो दो रोटियाँ, कच्ची पकी जली हुई भी, सीमेन्ट मिली हुई, दाल-साग का पता ही नहीं, दाल के रूप में छौक लगाया हुआ पानी - दाल नदारद, यह भोजन भी समय पर मिलता नहीं था। बन्दीजनों को अधिक से अधिक कठोर दंड देने का यह एक तरीका था - शेषरावजी निज़ाम शासन के इस दण्ड को भी भुगत रहे थे। हिरण और हाथी का खुराक समान नहीं होता। क्षितीशकुमार और अन्य साथियों ने अपनी चौथाई रोटी बचाकर शाम को चार बजे शेषरावजी को भेट करने की ठानी। शेषरावजी पहले रोटियाँ लेने में संकोच करते रहे और अंत में उन्होंने मित्रों की यह भेट स्वीकार कर ली। शाम को उनकी उदासी बंद हुई (वही - पृ. ६१)।

श्री ल.वि. चाकूरकर ने अपनी पुस्तक 'मी पाहिलेला मुक्ति संग्राम' में कारागृह तथा बन्दिजनों की संत्रस्तता का इसी तरह का विवरण प्रस्तुत किया है। उन्होंने भी इस यातना को स्वयं कारागृह में भोगा था। इन संत्रस्तों में से एक है पं. ज्ञानेन्द्रजी शर्मा, जो गुलबर्गा के कारागृह में ही थे। उनके साक्षात्कार के लिए - शेषरावजी के संस्मरण सुनने के लिए जब इन पंक्तियों का लेखक औरंगाबाद के सरस्वती कॉलोनी में पहुँचा। वे लेटे हुए थे, आहट से जाग उठे। वे काफी कमजोर हो गये हैं - उनकी स्मरण शक्ति भी कमजोर हो गयी है। बार बार पूछने पर गुलबर्गा के कारावास की कहानी कहने लगे। वही कालकोठरी, वही सिंगल गंजी, डबल गंजी, वही भोजन - अनन्त यातनाएँ - उनके मुख से प्रकट होती गयी।



श्री शेषराव वाघमारे आर्य सत्याग्रह के अवसर पर जेल से छूटने के बाद : १९३९ ई.

2784. (Seal) Office of the Superintendent,
Central Prison Gulbarga.

Dated: 13-9-1967.

EXTRACT FROM THE CONVICT REGISTER.

Con. No.	Name and father's Name.	Date of Admission	Date of sentence.	Sentence	Sec.
11186	Seshrao s/o Mahadevrao Vakil.	15th Khurdad, 1348 Fasli.	17th Khurdad, 1348 Fasli.	One year six months.	Transfer to Hyderabad Central Jail on 19th theer 1348 F.

(Seal) Sd/-
Superintendent,
Central Prison Gulbarga.

// True Copy //

प्रमाण पत्र - दण्डित शेषरावजी गुलबर्गा कारावास में

सत्याग्रही जत्था
श्री शेषरावजी वकील (हैदराबाद स्टेट) तथा उनका जत्था जिन्होंने गुलबर्गा में सत्याग्रह किया था।

पं. ज्ञानेन्द्रजी तथा पं. नरदेवजी स्नेही - शेषरावजी को अपना अग्रज तथा नेता मानते हैं। उनकी दृष्टि में - पं. बन्सीलालजी और श्यामलालजी के पश्चात आर्यसमाज के द्वितीय काल में (१९३१ से १९४१) मराठवाड़ा क्षेत्र में आर्यसमाज का कट्टर कार्यकर्ता कोई हुआ था तो वे थे शेषरावजी वाघमारे।

१९३८ के इस आर्य सत्याग्रह में सम्मिलित हुए - शेषरावजी के एक साथी, निलंगा निवासी श्री भीमराव देशमुख से इन पंक्तियों के लेखक ने जब भेंट की और शेषरावजी के संस्मरण जानने का उद्देश्य बतलाया तो प्रथम उनकी आँखों से अश्रु की धारा बहने लगी। वातावरण काफी गंभीर हो गया। कुछ क्षणों के बाद वे कहने लगे कि इस सत्याग्रह में उन्हें दो वर्ष की सज़ा और रू. ५०० का दण्ड दिया गया था। वे उसी कारागृह में दण्डित थे, जहाँ शेषरावजी दण्डित थे। वह कारागृह था हैदराबाद का चंचलगुडा - का मध्यवर्ती कारागृह। कारागृह के १५ क्रमांक बॅरेक में शेषरावजी थे और वे थे १६ क्रमांक के बॅरेक में।

शेषरावजी ने 'प्रथम आर्य सत्याग्रह' (१९३८-३९) में सम्मिलित होकर जेल की यातनाएँ सहीं, उसके पश्चात् भी निज़ाम का डट कर सामना करते समय वे दण्डित हुए, बाहर निकलने पर घरबार को छोड़कर भूमिगत रहे, भटकते - संघर्ष करते रहे। कष्टों और संघर्षो से गुजरते हुए उन्होंने कड़ी परीक्षा दी और उत्तीर्ण हुए। वे असामान्य मानव थे, तभी तो टूटना नहीं जानते थे न झुकना -

कवि कहता है -

तू न रुकेगा कहीं
तू न झुकेगा कहीं
कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ
अग्निपथ - अग्निपथ - अग्निपथ।

शेषरावजी इसी अग्निपथ पर, शपथ ले, चलते रहे, चलते रहे, पैरों में छाले पड़े, परवाह न करते हुए, पीड़ा सहते, हैदराबाद की पीडित जनता को नृशंस निज़ाम के चंगुल से छुडाने के लिए चलते रहे - चलते रहे।



१७ औराद शहाजानी का अग्निकांड

मीर उस्मान अलीखान, अंतिम निज़ाम शासक थे। उनके काल में रियासत की हिन्दू जनता पर जो अन्याय और अत्याचार हुए, वे इतिहास के काले पन्ने बनकर रह गये हैं। क्रूर, नृंशस निज़ाम ने हिन्दुओं के सैंकडों गांव अग्नि की भेंट चढ़ा दिये। १९४० में बीदर में एक साम्प्रदायिक दंगा हुआ था। इस दंगे में मुसलमानों ने गंज (हाट) लूटकर उसमें आग लगा दी थी। १९४० में ही गुरमिटकल का दंगा और आगजनी हुई, फिर धूलपेठका दंगा, निज़ामाबाद में दंगा, यादगीर कांड, सिकंद्राबाद का फसाद, निलंगा का अग्निकांड ऐसे न जाने कितनी ही घटनाओं का उल्लेख किया जा सकता है। इन भीषण अग्निकाण्डों में औराद - शहाजानी का अग्निकांड भी एक है, जिसकी भीषणता औराद के लोग आज भी भूले नहीं हैं। हैदराबाद मुक्ति संग्राम और आर्यसमाज की भूमिका को लेकर जितने ग्रंथ लिखे गये हैं, उनमें औराद के अग्निकांड का विवरण जरूर मिलता है। निलंगा और औराद में केवल १८ कि.मी. का अंतर है। निज़ाम के विरोध में सक्रिय रहे निलंगा के शेषरावजी और औराद के पं. वीरभद्रजी देशबंधू के बीच मित्रता, सौहार्द्र तो था ही, वे हमसफर भी थे।

इन पंक्तियों का लेखक, जब औराद अग्निकांड की घटना विस्तृत रूप से जानने के लिए औराद पहुँचा तो श्री हिरामण अंबादास डोईजोडे, आयु ८४ वर्ष, मंत्री आर्यसमाज से भेंट हुई। वार्तालाप में उन्होंने १९४१ में घटित औराद अग्निकाण्ड का चित्र ही साक्षात प्रस्तुत किया। २४ मई १९४१ का दिन - कासिम रज़वी के रज़ाकारों ने गांव में अमानवीय ढंग से अत्याचार करना शुरू किया। 'कासिम रजवी जिन्दाबाद, इस्लाम जिन्दाबाद' के नारे लगाते हुए वे हिन्दुओं को लूट रहे थे। पं. देशबन्धुजी के नेतृत्व में आर्य हिन्दुओं ने रजाकारों का मुकाबला जरूर किया पर वे असफल रहे। रजाकारों की संख्या अधिक थी और वे हथियारों से भी लैस थे। वही हुआ जो होना नहीं चाहिए था। औराद अग्निकांड की चपेट में आया। देखते ही देखते घर-दुकानें जलने लगीं। भयभीत होकर लोग जिधर सूझा उधर भागते रहे। सब तरफ चीखें, चिलाहट। अग्निकांड में व्यंकटराव आनंदराव भंडारे को वीरगति प्राप्त हुई। इस अग्निकांड के पश्चात् आर्यसमाज के

कई गणमान्य व्यक्ति दूर दूर से औराद पधारे थे - इनमें पं. नरेन्द्रजी, स्वामी रामानंद तीर्थ, शेषरावजी वाघमारे आदि प्रमुख थे। महात्मा गांधी ने सहायतार्थ कुछ धनराशि भी दी थी।

इस अग्निकांड के पूर्व १९४० में पं. देशबन्धु पर निज़ाम सरकार की कुदृष्टि पड़ी थी। इतिहादुल मुसलमीन के अनुयायियों ने पुलिस पटेल को किसी कारण से पीटा था। उस समय भी औराद के वातावरण में आतंक फैल गया था। पं. देशबन्धुजी पर बिना किसी कारण झूटा आरोप कर उन्हें, निलंगा के पुलिस कस्टडी में रखा गया था। शेषरावजी ने ही पं. देशबन्धुका केस अपने हाथ में ले, उनकी निर्दोष मुक्तता की थी।

इस अग्निकांड के संदर्भ में शेषरावजी वकील ने रजाकारों के खिलाफ प्रथम निलंगा में, बाद में बीदर के कोर्ट में फौजदारी मुकदमा दायर किया। रजाकारोंकी ओर से स्वयं रज़वी खड़े हुए। यह कल्पना भी नहीं की जाती थी कि निज़ाम के शासन काल में, कोई हिन्दू वकील, कासिम रजवी वकील के सम्मुख अपनी वकालत चला सकता है या उनके विरोध में खड़ा रह सकता है? पर शेषरावजी निर्भय होकर, मुकदमा चलाते रहे। शेषरावजी वकील को यह मुकदमा चलाने में कई दिक्कतों का सामना करना पडा। उन्हें दुःख इस बात का हुआ कि कोई हिन्दू माई का लाल गवाही देने के लिए सामने नहीं आया। एक जैन व्यक्ति श्री नरसप्पा ने ही गवाही दी और वह गवाही भी विरोधी पक्ष को बल देनेवाली सिद्ध हुई। गवाही का बयान ऐसा था 'इधर से भी भाले, तलवारें चली, उधर से भी चली। कौन किसे मार रहा है, मैं समझ नहीं पाया, मैंने अपनी आंखे बंद कर ली थीं।' यह गवाह कन्नड भाषा में थी - 'इकडीन उच्चा, अकडीन उच्चा, नरसप्पा कण मुच्चा'' शेषरावजी ने अग्निकांड में मृत व्यक्ति की हड्डी कोर्ट में पेश की, यह कह कर की रजाकारों ने इस व्यक्ति को धधकती अग्नि में झोंक दिया था। वे इस हड्डी से अपनी बात सिद्ध करना चाहते थे कि रजाकार अग्निकांड के लिए जिम्मेदार हैं। कासिम रजवी वकील पूरा चालाक वकील था। उसने कहा - 'यह हड्डी इन्सान की नहीं है, बन्दर की है। वकील मुसलमान, कोर्ट मुसलमान और शासन था निज़ाम का। सो, शेषरावजी वकील की एक न चली। पं. वीरभद्रजी को सात वर्ष का कारावास का दंड और अन्यों को ५ वर्ष कारावास का दंड दिया गया।

निष्पक्ष इतिहास कहता है 'रजाकारों की नृशंसता का दूसरा नाम है औराद का अग्निकांड। पं. देशबन्धूजीने शेषरावजी सम्बन्धित संस्मरण लेख में वकील शेषरावजी के प्रयत्नों की सराहना करते हुए कहा है ''शेषरावजी अपने खर्चे से बीदर कोर्ट में मुकदमा चलाने के लिए उपस्थित रहते थे। बारह दिन तक बहस चलती रही, पर सफलता प्राप्त नहीं हुई''।

श्री हिरामण अंबादास डोईजोडे ने इस अग्निकांड के पश्चात की एक दूसरी घटना भी सम्मुख रखी जिसमें शेषरावजी तथा पं. वीरभद्रजी की निर्भीकता और सजगता अभिव्यक्त होती है। अग्निकांड के सभी दंडित व्यक्ति दंड भोगने के पश्चात् औराद लौटे। कासिम रज़वी और रज़ाकारों ने निज़ाम सरकार को पत्र लिखकर मांग की कि सज़ा पूरी करके छूटे हुए व्यक्ति निज़ाम सरकार के प्रति विद्रोह कर सकते हैं। इस मांग के अनुसार बीदर के तालुकेदार (कलेक्टर) को सूचना दी गयी कि शेषरावजी वाघमारे और पं. वीरभद्रजी देशबंधुजी पर किसी तरह वारंट जारी करे और उन्हे पुलिस की हिरासत में डाल दिया जाये। बीदर के कलेक्टर और पुलिस मोतमीन बीदर से निकलकर, रास्ते में हुलसूर पहुँचे। वहीं रहे। दूसरे दिन प्रातः ही औराद और निलंगा पहुँचे, वे सावधानी बरत रहे थे ताकि उन्हें शेषरावजी और देशबन्धुजी को पकड़ने में कोई दिक्कत न आये। मगर हुलसूर के आर्यसमाज के व्यक्ति ने रातोंरात औराद पहुँचकर, होनेवाली खतरे की सूचना पं. देशबन्धुजी को बतायी। उसी रात्रि में पं. देशबन्धू ने शेषरावजी निलंगा - संदेश भेजकर उन्हें औराद बुलवा लिया। समीप के गांव - शेळगी, जवळगा, भोलसुरी, तेरखेडा, मेहकर के कार्यकर्ताओं को औराद में एकत्रित किया। आर्य हिन्दुओं की एक खासी संख्या औराद के आर्यसमाज में एकत्रित हुई। अपने निर्धारित समय पर तालुकेदार, मोतमीन - औराद के तहसील कचहरी में पधारें और कचहरी में ही हाजिर होने का हुक्म शेषरावजी और पं. देशबन्धुजी को दिया गया। दोनों ने निर्भिकता से जवाब भेजा - आपको हमसे मिलना है, हम आर्यसमाज में हैं, आप ही हमें मिलने के लिए आयें। हां - ना करते हुए, अंत में तालुकेदार और मोहतमीन आर्यसमाज में पुलिस के साथ पधारे। स्थान स्थान पर पुलिस खड़ी थी - आर्य हिन्दुओं पर नजर गडाये, पर जान नहीं सके कि हर पुलिस के इर्द-गिर्द आर्य हिन्दू कार्यकर्ता भी हैं। इन आर्य हिन्दुओं को आदेश दिये गये थे

कि पं. वीरभद्रजी देशबन्धु और शेषरावजी पकडे गये तो पुलिस को खत्म कर दे। जैसे ही निज़ाम शासन के दोनों अधिकारी आर्यसमाज में पहुँचे, वैसे ही उन्होंने शेषरावजी तथा पं. देशबन्धूजी को पकड वारंट थमा दिया। शेषरावजी ने हँसते हुए कहा ''चलो फिर से ससुराल (जेल) जाने का वक्त आया है''। इधर-उधर बिखरे आर्यसमाजी आर्यसमाज में घुस गये। शेषरावजी दोनों अधिकारियों की ओर पिस्तौल ताने खड़े हो गये और गरजकर बोले ''बोलो अब क्या कहना है। यहाँ से खामोश जाते हो या गोली खाते हो?'' आर्य कार्यकर्ता भी भाले - तलवारें लिए आर्यसमाज में घुस गये। दोनों अधिकारियों की घिग्घी बँध गयी। दोनों हाथ जोड़े - माफी मांगने लगे - 'हम आपकी शरण में है'' शेषरावजी ने उन्हे शांत कर, दोनों के लिए चाय का आर्डर दिया। हमे चाय नहीं चाहिए, हमे गांव के बाहर हिफाजत के साथ पहुँचाइए - यही काफी है''। यह सत्य घटना है - १९४६-४७ की।

'लहरो से डरकर नौका पार नहीं होती।
कोशिश करनेवालों की कभी हार नहीं होती।।

वेद-संन्देश

१) देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्ट्रवासिम्।
उद्वा सिञ्चध्वमुय वा प्रणध्वम् आदिद् वो देव आहते।।
(सामवेद)

प्रभू प्राप्ति के लिए दो बातें आवश्यक हैं।
दया से पूर्ण होना और दुःखियों की सेवाकरना।।

२) त्वमग्ने गृहपतिस्त्वं होता नो अध्वरे।
त्व पोता विश्ववार प्रचेता यक्षि यांसिःच वार्यम्।।
(सामवेद)

मोक्ष मार्ग की पाँच मंजिले हैं -
गृहपति बनना, हिंसा न करना, पवित्रता, विश्वप्रिय बनना और यज्ञोशील बनना।

१८ आर्य महा सम्मेलन - गुलबर्गा - १९४५

सन् १९४२ से १९४८ तक का समय, हैदराबाद रियासत में आर्यों के लिए अत्यंत संघर्ष का काल रहा है। अनेक महानुभावों को कठोर यातनाओं से गुजरना पड़ा। निजामी हुकूमत की नृशंसता चरम सीमा पर थी। 'मजलिसे इतेहादुल मुसलमीन' संगठन को द्वेष पूर्ण भाषणों की खुली छूट मिली हुई थी। साथ ही आर्य हिन्दुओं पर गुण्डागर्दी करने की छूट भी थी। संगठन मुसलमानों का, शासन मुसलमानों का, फिर भय काहे का ? परिस्थिति यहाँ तक पहुँची कि कोई आर्यसमाजी बच न पाये, कोई आर्य अपना उत्सव मना न पाये, कोई हिम्मत भी करे तो उसे दबोचा जाये। हुकूमत की इस कठोरता के कारण ही आर्यसमाज में दृढ़ता और प्रतिकार की शक्ति बढ़ती गयी और वैदिक धर्म का प्रचार निरंतर बढ़ता ही गया। आर्यसमाज के उत्सव, पर्व, समारोह धूमधाम से मनाये जाते रहे, वे सम्पन्न भी होते रहे।

आर्य सत्याग्रह के पश्चात्, आर्य प्रतिनिधि सभा निज़ाम राज्य ने यह निश्चय किया कि प्रतिवर्ष आर्य सम्मेलन का आयोजन हो। इस निर्णय के अनुसार गुलबर्गा में चतुर्थ आर्यसम्मेलन दि. २२, २३, २४ एप्रिल, १९४५ को आयोजित हुआ। इस सम्मेलन का ऐतिहासिक महत्व है। इतिहास इस बात का गवाह है कि इस आर्य सम्मेलन ने निज़ाम सरकार की बढ़ती क्रूर साम्प्रदायिकता का निडरता के साथ सामना किया था।

'आर्यभानु' साप्ताहिक पत्र मई १९४५ के विशेषांक में संपादक श्री कृष्ण दत्तजी ने इस सम्मेलन का पूरा विवरण प्रस्तुत किया है। संम्पादकीय शीर्षक है '' 'गुलबर्गा दुर्घटना', गुलबर्गा पुलिस का अत्याचार, पुलिस का आर्य नेताओं पर लाठी प्रहार, आर्य जगत की घोर अवहेलना।'' अंक के पृष्ठ १५ से १८ में सम्मेलन की सम्पूर्ण कार्यवाही का विवरण मिलता है।

वर्तमान में भी कई व्यक्ति जीवित हैं, जो इस सम्मेलन में उपस्थित थें। श्री एम.पी. गणेशराव, पूर्व प्रधान, आर्यसमाज, सुलतान बाजार, हैदराबाद - आज उनकी आयु ९० वर्ष की है और प्रा. हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर - आयु- ८६ वर्ष,

ये उस समय लातूर में शिक्षा प्राप्त कर रहे थे, दोनों इस सम्मेलन में प्रारम्भ से अंतिम दिन तक रहे। यहाँ प्रस्तुत है कुछ पढा हुआ, कुछ सुना हुआ, सम्मेलन का विवरण -

शेषरावजी और एम.पी. गणेशराव सम्मेलन के द्वार पर रोज खडे रहते थे, शेषरावजी के हाथ में कराबीन, तो गणेशराव के हाथ में तलवार रहा करती थी, इसलिए कि कोई मुसलमान दंगाफसाद के लिए सम्मेलन में घुस न पाये।

राजा नारायणराव पित्ती की अध्यक्षता में तथा सम्मेलन के उद्घाटक की उपस्थिति में सम्मेलन के प्रारंभिक दो दिन की कार्यवाही शान्ति के साथ सम्पन्न हुई। तीसरे दिन की कार्यवाही में श्री शेषरावजी वकील - निलंगा की अध्यक्षता में 'स्वयंसेवक सम्मेलन' भी बड़े धूम धाम से संपन्न हुआ। सायंकाल ५ बजे, शस्त्र कला - प्रदर्शन, कुश्तियाँ, पशु प्रदर्शन, शिशु प्रदर्शन कार्यक्रम भी संपन्न हुए। सात बजे खुला अधिवेशन सम्पन्न होने वाला था। इसी समय सम्मेलन पुलिस के पूर्व नियोजित षड़यंत्र का शिकार हुआ। षड़यंत्र का मूर्त रूप दंगे के रूप में प्रकट हुआ। दंगा मचा। इस दंगे में पुलिस ने श्री विनायकराव विद्यालंकार, पं. नरेन्द्रजी, श्री गणपत शास्त्री तथा हीरालाल - इन प्रमुख कार्यकर्ताओं को बुरी तरह से घायल कर दिया। पं. नरेन्द्रजी की पैर की हड्डी टूट गयी। घुडसवार पुलिस ने सम्मेलन में घुसकर लोगों को कुचलना शुरू किया। लोग तितर बितर हो भागने लगे। ऐसी स्थिति में शेषरावजी, गंगाराम और कृष्णदत्त ने तितर बितर होते हुए लोगों को धीरज बँधाया, लोग तो वहाँ से भाग निकले पर सम्मेलन का पंडाल अपनी जगहपर खड़ा था। पंडाल की सुरक्षा भी उतनी ही महत्त्व की थी। पंडाल और सामान को सुरक्षित रखने की, उसे सम्बन्धित लोगों तक पहुँचाने की जिम्मेदारी शेषरावजी ने ली। रात्रि में ही पंडाल खोला गया, सामान इकठ्ठा किया गया, सम्बन्धित लोगों तक वह सुरक्षित पहुँचाया गया। २०,००० चौरस मीटर क्षेत्र में, बारदान से बसाया गया पंडाल दियासलाई की मात्र एक काडी से अग्नि के स्वाधीन हो सकता था पर शेषरावजी चौकन्ने थे। उनकी जागरुकता के कारण रात्रि में ही उसे खोला गया और उसे लौटाया गया। अत: पंडाल बच गया। इतना ही नहीं, बाहर के लोगों को स्टेशन तक पहुँचाने में भी शेषरावजी सफल रहे।

आपत्ति में, धैर्य से, बुद्धिमता के साथ आपत्ति का सामना करना शेषरावजी की विशेषता रही है।

दूसरे दिन शेषरावजी, गंगारामजी, कृष्णदत्तजी, बलिराम पाटील, गोविन्द नाईक, गोविन्दलाल बाहेती - आदि कार्यकर्ता जंगल के रास्ते निकल पड़े। मुसलमान गुण्डे आर्यों की ताक में थे ही। इन आर्य कार्यकर्ताओं की भनक पड़ते ही उन्होंने इनका पीछा किया और उन्हे घेर लिया। कार्यकर्ताओं पर आक्रमण होना ही था कि गंगारामजी ने प्रथम अपनी बन्दूक उठायी और गुण्डों को निशाना बनाने के लिए उनकी ओर निशाना साधा - गुण्डे उलटे पांव भाग निकले।

एक अश्वारोही ने म्यान से तलवार निकालकर कृष्णदत्त पर वार करना चाहा था, पर कृष्णदत्त वार की चिन्ता न करते अश्वारोही के समीप पहुँचे और उसे समझाने की कोशिश करते रहे। वह तलवार की धाक दिखाता ही रहा - यदि उसकी तलवार कृष्णदत्त पर पड़ती तो उनकी कोई खैर न होती। कृष्णदत्त के पीछे ही शेषरावजी और गंगारामजी खड़े थे। कृष्णदत्त उस घुडसवार की तलवार से बचने के लिए पीछे हटे तब शेषरावजी ने गरजकर कहा ''खुदा की कसम, जरा तुम पीछे हटो, मैं इसकी बहादुरी अजमाना चाहता हूँ, एक को भी यहाँ से जिन्दा बचकर जाने न दूँगा''। अब परिस्थिति बदल गयी। गुण्डों के हौसले पस्त हुए। एक एक करके सभी रफूचक्कर हुए। सब आर्यकर्ता बच गये, सुरक्षित लौट पड़े। ऐसी वीरता, निर्भीकता थी - शेषरावजी में।

हमने जिस दौर को चाहा है
बदल ड़ाला है।
हम जिस दौर को चाहेंगे
बदल डालेंगे''।।

(संदर्भ : (१) हैदराबाद में आर्यों की साधना और संघर्ष - पं. नरेन्द्रजी। (२) कृष्णदत्तजी का स्वयं का लिखा- अप्रकाशित लेख - शीर्षक है - 'वे दिन भी क्या मजे के दिन थे'')



१९ भारत वर्ष में स्वतंत्रता का सूर्योदय - निज़ाम रियासत में अंधकार ही अंधकार

अनेक वर्षों के प्रदीर्घ संघर्ष के पश्चात्, भारत वर्ष में स्वतंत्रता का सूर्योदय - १५ आगस्त १९४७ को हुआ। चारों और प्रसन्नता की लहरें हिल्लोरें लेने लगी। यद्यपि निज़ाम रियासत में किसी प्रकारका बदलाव न था, वही भयभीत वातावरण फैला हुआ था। फिर भी यहाँ की जनता अपने आनन्द को दबा न सकी। उसके मन में तीव्र अभिलाषा जागृत होने लगी कि भारत की स्वतंत्रता के साथ हैदराबाद रियासत की भी मुक्ति होनी चाहिए और वह भी भारत का अभिन्न अंग बने। आर्यसमाज, स्टेट काँग्रेस, हिन्दू महासभा, किसान दल आदि संस्थाओंने १५ अगस्त १९४७ को ही स्थान स्थान पर 'तिरंगा झंडा' फहराकर आनन्द की अभिव्यक्ति की।

शेषरावजी ने भी निलंगा में, खुले तौर पर झंडा फहराकर हैदराबाद रियासत की स्वतंत्रता घोषित की। वे अन्य गरम गुट के नेताओं के साथ मिलकर, हैदराबाद रियासत को भारत में विलीन करने के लिए, जनता को सशस्त्र संघर्ष करने के लिए प्रेरित करते रहे। दूसरी ओर निज़ाम शासक, इत्तेहादुल जैसी संघटनाएँ हैदराबाद रियासत को यथावत् आज़ाद ही रखने के ताक में थी। कई मुस्लिम संगठन हैदराबाद रियासत को आज़ाद ही रखने के लिए उग्र दमन नीति को अपनाते रहे।

११ खुर्दाद स. १३५७ फसली - १९ एप्रिल १९४८ - रविवार के दिन निलंगा में लूटमार शुरू हुई। घर और दुकानें जला दी गयीं। उनमें बंकटलाल की दुकान, नाईक की दुकान और उनके घरों को जला दिया गया। इस दंगे फंसाद में हिरास नामक व्यक्ति को जलती दुकान में ढकेल दिया गया। ऐसी भयावह स्थिति में शेषरावजी ने जनता का धीरज बढ़ाया।

निज़ाम की दमन नीति को जैसे के तैसे उत्तर देने के लिए, शस्त्र का उत्तर शस्त्र से ही देने के लिए शेषरावजी ने शस्त्र उठाने की ठानी। उनके सम्मुख प्रश्न

था - शस्त्र कहाँ से लायें। हैदराबाद में शस्त्रों की उपलब्धि करना-बड़ा टेढा काम था। क्यों कि निजाम शासन शस्त्र और शस्त्रों के प्रयोग पर काफी कठोर था। शेषराव संगठन कुशल थे, बुद्धिमान थे - उचित समय - योग्य निर्णय लेने की क्षमता उनमें थी। उन्होंने आर्यसमाज को शस्त्रों से सुसज्ज बनाने का दृढ़ निश्चय किया। इस निर्णय के सिवाय कोई अन्य चारा भी नहीं था। कभी किसी समय, उन्होंने शास्त्रार्थ के सहारे, सनातनियों का पराभव किया था। अवसर आ गया है - शस्त्र उठाने का। इस समय रियासत की सीमा से जुड़ा हुआ शहर - सोलापुर शस्त्र-प्राप्ति का केन्द्र था। इस केन्द्र से बाबासाहब परांजपे, बळवंत नागणे, व्यासाचार्य, शेषरावजी, रा. श्री दिवाण आदि इस केन्द्र से जुड़े रहे। सोलापुर केन्द्र में हर दिन ५० बम निर्मित किये जाते थे - आवश्यकता के अनुसार बम निर्माण की संख्या २०० तक बढ़ गयी। इस केन्द्र द्वारा निर्मित ६००० बम कर्नाटक, तेलंगण आदि क्षेत्र में भेज दिये गये। श्री अनन्तराव भालेराव ने अपने ग्रंथ 'हैदराबाद मुक्ति संग्राम आणि मराठवाडा' पृ. ३६६ पर शेषरावजी की टिप्पणी के आधार पर कहा है -' शेषरावजी एक मिलट्री आफिसर से परिचित हुए थे। नाम था श्री अरोरा। श्री अरोरा, होटल 'ताज', मुंबई में रूके थे। शेषरावजी होटेल ताज में उनसे मिले और इन्हीं के माध्यम से, अन्यत्र से शेषरावजी ने बडी संख्या में स्टेनगन, काडतूस आदि शस्त्र इकठ्ठा किये। सोलापुर केन्द्र से निर्मित बम का प्रयोग श्री नारायण राव पवार तथा उनके साथियों ने निज़ाम पर किया था और उसे समाप्त करने का प्रयास किया था, पर वह प्रयास सफल नहीं हुआ।

सोलापुर केन्द्र के अतिरिक्त पुणें भी केन्द्र रहा हैं। देशमुख एँड कम्पनी प्रकाशन संस्था पुणे के शनिवार वाड़ा के समीप मकान नं. १६१ में स्थित थी। बाबासाहब परांजपे, शेषरावजी, गोविन्द नाईक आदि क्रांतिकारी यहाँ एकत्रित हुआ करते थे। श्री रामचन्द्र धोंडिबा शिंदे, अम्बुलंगा बुजुर्ग (निलंगा), माधवराव नाईक, बापू साहब (शेषराव वाघमारे के अनुज), वासुदेवराव पिंपके (शेषराव के भांजे) ये निलंगा निवासी युवक भी पुणें के इस केन्द्र में एकत्रित हुआ करते थे। उद्देश्य था, कहीं सें हथियार उपलब्ध करें। पुणे, मिलट्री साउथ डिव्हीजन, नागपूर मिलट्री के कॅम्पस से भी हथियार प्राप्त किये जाते थे। प्राप्त हथियारों की परीक्षा

करने के बाद उन्हें हैदराबाद रियासत में पहुँचाया जाता था। हथियारों की प्राप्ति के साथ, हथियार चलाने की ट्रेनिंग भी दी जाती रही है। बँगलोर और नागपुर उस समय के ट्रेनिंग केन्द्र थे। श्री शेषरावजी मिलट्री की वेशभूषा में पुणें में रहते थे। निलंगा के उनके साथी गोविन्द नाईक भी छाँव की तरह उनके साथ रहते थे। इनके पुणें में संचरण की भनक पुलिस को लगी। पुलिस पकड़ने की कोशिश में रही। पर ये दोनों सदा पुलिस की पकड के बाहर ही रहे।

साक्षात्कार के समय माधवराव नाईक ने उस समय की एक घटना का विवरण प्रस्तुत किया है। शेषरावजी और गोविन्द नाईक हॉफ पँट, टी शर्ट पहने प्रात:काल पर्वती की ओर प्रात: भ्रमण करने के लिए निकल पड़ते थे। माधवराव नाईक, और बापू साहब अपने कमरे के सामने ही टहल रहे थे। उन्होंने देखा कि शेषरावजी और गोविन्द नाईक भ्रमण कर लौट रहे थे। पुलिस हवालदार वहाँ पर पहुँचे और उन्होंने स्वयं शेषरावजी तथा गोविन्द नाईक से ही उन दोनों के बारें मे उन्ही से पूछताछ की। दोनों ने बिना हड़बड़ाये सहज ही, बड़ी ही शान्ति से कहा- अभी यही थे अब यहाँ नहीं है, लगता है इर्द गिर्द ही भटक रहे होंगे। वहाँ से हवालदार चले गये। शेषरावजी और गोविन्द नाईक वहाँ से अन्यत्र चल पडे।

अनेक स्थानों से शस्त्रों की प्राप्ति का उद्देश्य यह रहा कि क्रान्तिकारी शस्त्रों से सज्ज हों, निजाम शासन, मुस्लिम संघटनाओं की नृशंसता का मुँह तोड जवाब दें। इन्ही शस्त्रों से लैस हो, क्रान्तिकारी सैनिक, निज़ाम के पुलिस थाने, कार्यालय, सरहद पर स्थापित करोड गिरी नाका आदि स्थानों पर हमला कर उन्हें तहस-नहस कर देते थे। कभी रेल की-पटरियाँ उखाड़ फेंक दी जाती थीं, तो कभी तार व्यवस्था में बांधाएं उपस्थित की जाती थी। ये ध्वसांत्मक कार्य इसलिए किये जाते थे कि निज़ाम शासन की नींव खोखली कर दें। शेषरावजी ऐसे कार्यों से सम्बन्धित रहे।

शेषरावजी से सम्बन्धित केवल ऐसी ही एक घटना का विवरण यहाँ प्रस्तुत है। उस्मानाबाद के अडव्होकेट श्री दिगंबरराव कृष्णराव जिंतूरकर, आयु ८५ वर्ष - ये इस घटना के प्रत्यक्ष दर्शी हैं। तुलजापुर तहसील में अपसिंगा नामक एक छोटा सा गांव है। यहाँ पर कासिम रजवी की एक टोली बसी हुई थी। आये दिन



पुलिस एक्शन के अवसर पर नगेन्द्रसिंह की भूमिका में
श्री शेषरावजी वाघमारे: १९४७ ई.

हिन्दुओं पर अत्याचार करना, इस टोली का काम था। रजाकारों की उस टोली पर हमला करने के इरादें से शेषरावजी वाघमारे, रामचन्द्रजी मंत्री, चन्द्रशेखरजी बाजपेयी, दिगंबरराव जिंतूरकर, लक्ष्मणराव चाकूरकर, श्रीनिवास खोत, श्रीधर वर्तक आदि क्रान्तिकारियों का समूह निकल पड़ा। क्रान्तिकारीयो के हमले की जानकारी, किसी दगाबाज व्यक्ति ने रज़ाकारों तक पहुँचायी। रजाकार सावधान हो गये। इस टोली ने भी जमकर तैयारी की। रज़ाकारों की टोली पहाड़ के कारण ऊपरी हिस्सें में थी और ये क्रान्तिकारी पहाड़ की ढलान के कारण नीचे की ओर थे। इस कारण रजाकार क्रान्तिकारियों की हलचल देख सकते थे, जबकि क्रान्तिकारी देख नहीं सकते थे। ऊपरी हिस्से में जो दरगाह थी, वहाँ से रज़ाकारों ने अचानक गोलियाँ बरसाना शुरू कर दिया, इससे ढलान के नीचे स्थित क्रान्तिकारियों में हडबडी फैल गयी। रज़ाकारों पर निशाना बांधना भी क्रान्तिकारियों के लिए कठिन काम था, जबकि रजाकारों के लिए गोलियाँ चलाना आसान था। क्रान्तिकारी वहाँ से बच कर निकल भी नहीं सकते थे। किसी तरह एक छोटे से गढ़ें में छिपे रहने के सिवाय, बचने का और कोई रास्ता नहीं था। गढ़े से सिर भी उठाना मृत्यु को आमंत्रित करना था। शेषरावजी बार बार चेतावनी दे रहे थे कि कोई अपना सिर न उठाये। फिर भी श्रीधर वर्तक गढे से सिर उठाते रहे। वे इस ताक में थे कि रजाकारों की टोली दिखाई पड़े तो उन पर गोली चलायें, पर रजाकार दिखाई ही नहीं दिये। अंत में वही हुआ, सिर उठाते हुए श्रीधर वर्तक को रजाकारों की गोली का निशाना बनना पड़ा। वे वहीं शहीद हुए। किसी तरह श्रीनिवास खोत ने वर्तक के मृत शरीर कों उठा लिया और चिंचोली कँप की ओर भाग खड़े हुए। शेषरावजी की चेतावनी, सतर्कता अगर मान ली जाती तो यह घटना भी न होती। ल.वि. चाकूरकर, स्वयं क्रान्तिकारियों में से एक थे। उन्होंने अपनी पुस्तक 'मी पाहिलेला मुक्ति संग्राम' पृ. ५४, ५५ पर इसी घटना का प्रत्यक्षदर्शी वर्णन किया है। श्रीमती सिन्धु नरसिंहराव वाघमारे (बापूसाहब) इस घटना की प्रत्यक्षदर्शी नहीं थीं, वे उस समय 'बार्शी विस्थापितों के कॅम्प' मे थीं। उन्होंने अपने वार्तालाप में कहा कि - शेषरावजी इस घटना से काफी व्यग्र रहे। उन्होंने भोजन करना भी छोड़ दिया था। श्रीधर वर्तक और शेषरावजी के बीच काफी समीपता थी। श्रीधर वर्तक को

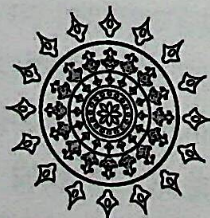
अपने बीच न पाना, उनके लिए असहनीय ही रहा। आजादी कुर्बानी चाहती है, श्रीधर वर्तक कुर्बान हुए - इस आजादी के लिए।

'कभी वह दिन भी आयेगा, जब आजाद हम होंगे।
जब अपनी ही जमी होगी, जब अपना आसमाँ होगा।
शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मिटनेंवालों का यहीं बाकी निशाँन होगा।

श्रीधर वर्तक जहाँ शहीद हुए, वहाँ हर बरस मेला लगता है या नहीं यह नहीं मालूम, किन्तु यह बात सत्य है कि श्रीधर वर्तक के मित्र ने वर्तक के शहीद होने पर, वहाँ एक पौधा जरूर लगाया था। आज वह पौधा बड़ा वृक्ष बन गया है। राहियों को छाया देते हुए वह आज भी श्रीधर वर्तक का स्मरण करवा रहा है।

यास्मिन जीवति जीवन्ति बहब: सोडत्रजीवतु,
वायसा: कि न कुर्वन्ति स्वार्थात् सोदर पूरणम्।
जो अपने जीवन से दूसरे जीवन को जीने
योग्य बनाता है उसी का जीना है
वह दीर्घजीवी बनता है।
स्वार्थ के लिए तो कौवे भी जीते हैं
और अपना पेट भरते है उनका क्या जीना ?

आचार्य सत्यानन्द नैष्टिक



२० विस्थापितों के कँप और श्री शेषरावजी

भारत स्वतंत्र तो हुआ किन्तु निज़ाम अपनी रियासत को भारत में विलीन करने के लिए तैयार नहीं था। हैदराबाद रियासत में अपनी सत्ता पूर्ववत् चलती रहे - यह उसकी कामना थी। रियासत के स्वतंत्र अस्तित्व के लिए वह सशस्त्र संघर्ष करने पर उतर आया। 'इत्तेहा दुल', खाकसार पार्टी, रजाकारों की टोली - निज़ाम के सशस्त्र संघर्ष में शामिल हुए थे। ये संगठनाएँ भी हैदराबाद का स्वतंत्र अस्तित्व चाहती थीं। इन मुस्लिम संगठनों की अनेक नृशंस कहानियाँ हैदराबाद मुक्ति संग्राम के इतिहास के पृष्ठों पर अंकित हैं। रियासत की जनता परेशान हो कर, अपनी जान बचाने के लिए, स्वजनों के साथ रियासत से बाहर, सीमा पर बसे गांवों, शहरों में आश्रय पाने के लिए जाने लगी - ये शहर थे - सोलापुर, बार्शी नगर, नासिक, जलगांव, अकोला, यवतमाल। सीमा के समीप इन शहरों में विस्थापितों के लिए कई शिबिर कॅम्प खोले गए थे। इनमें बार्शी, वागदरी, गौड़गाव, चिंचोली, खर्डी, उमरखेड़ आदि कैम्पों के नाम लिए जा सकते हैं।

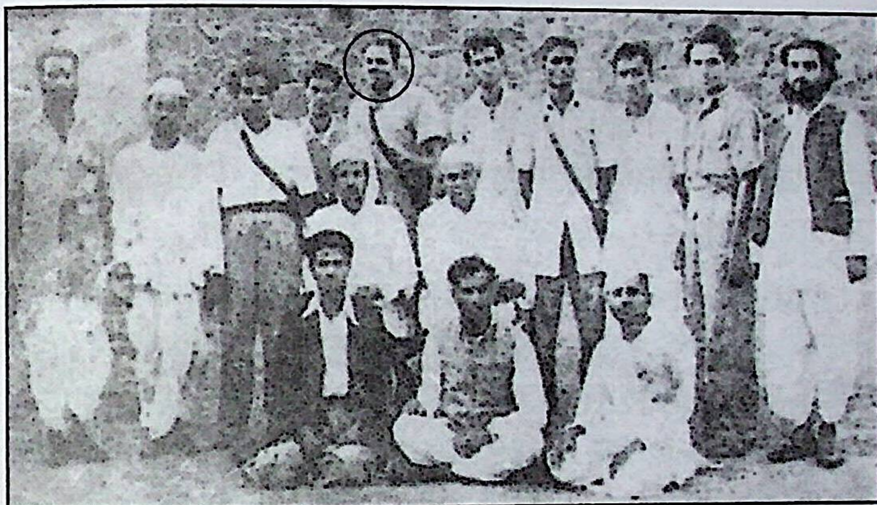
उस समय विस्थापितों के लिए सोलापुर एक प्रमुख केन्द्र रहा। क्षेत्र की दृष्टि से, इस केन्द्र का व्यापक कार्य था। प्रशासकीय दृष्टि से बार्शी, चिंचोली और वागदरी कैम्प स्थापित किये गए थे। श्री फूलचंद गांधी, शेषरावजी वाघमारे और बाबासाहब परांजपे की नियुक्ति सोलापुर केन्द्र के कार्यकारी मंडल के रूप में की गई थी। शेषरावजी बार्शी कैम्प के संचालक के रूप में कार्यरत रहें। बार्शी कैम्प में विस्थापितों का ताँता लगा रहा, उनकी संख्या बढ़ती गयी और अनेक समस्याएँ खड़ी हो गयीं। विस्थापितों के लिए भोजन, कपडे का प्रबन्ध करना यह आसान कार्य नहीं था। पहले पहले तो, हर विस्थापित का आठ आना खर्चे के हिसाब से भोजन का प्रबंध श्री राजाभाऊ के होटल में किया गया, किन्तु विस्थापितों की अधिक संख्या के कारण यह व्यवस्था कुछ काम कर नहीं सकी। बाद में उत्तरेश्वर के मंदिर में भोजन की व्यवस्था की गयी। भोजन व्यवस्था का प्रबंध कार्य शेषरावजी ने अपने निलंगा निवासी श्री तमण्णा को सौंपा था और तमण्णा इस कार्य को बखूबी निभाते रहे।

शेषरावजी के सम्मुख विस्थापितों की बढ़ती समस्या थी ही, उनके सम्मुख

कैम्पों का बढ़ता हुआ खर्च भी था। बढ़ते हुए खर्चे की समस्या का सामना करने के लिए शेषरावजी को अनेक मार्ग ढूंढने पड़े। उस समय अनेक व्यापारी अपने व्यवसाय की दृष्टि से बार्शी होकर मुम्बई (बम्बई) जाया करते थे। शेषरावजी कई व्यापारियों को रोक लेते थे। व्यापारियों के परिवारवाले अपने स्वजनों के लौटने में विलम्ब होने से परेशान रहते थे। विलम्ब न हो, अपने शहर सुरक्षित भी पहुँचे, इस लिए व्यापारी कैम्प के लिए धन देकर अपना छुटकारा पा लिया करते थे। व्यापारियों से काफी धन इकठ्ठा होता रहा और कैम्प की समस्या सुलझती गयी। विस्थापित किसी कारण जख्मी हो, बीमार हो तो उनका इलाज डॉ. हिरेमठ के अस्पताल में किया जाता रहा। डॉ. हिरेमठ के सहयोग से कैम्प की यह समस्या भी हल हो गई।

शेषरावजी के एक भांजे वासुदेवराव पिम्पळे, उस समय मॅट्रिक की परीक्षा दे नहीं सके। वे भी बार्शी कैम्प में कार्यरत रहे। उन्होंने शेषरावजी से सम्बन्धित एक घटना दर्शायी है। शेषरावजी की माताजी ने रजाकारों से परेशान हो, किसी तरह अपना सोना-धन बचाए रखने में लगी थी। माताजी ने २५ तोला सोना वासुदेव पिम्पळे को सौंपा। इसलिए कि सोना बार्शी कैम्प स्थित शेषरावजी तक पहुँचे और शेषरावजी सोना सुरक्षित रख सकें। सोना तो शेषरावजी तक पहुँचा पर शेषरावजी ने यह सोना ६० रु. तोला - इस हिसाब से बेच दिया और इस धन से कैम्प की आवश्यकताओं की पूर्ति की। जब माताजी निलंगा से बार्शी पहुँची, तो उन्होंने सोने के बारे में पूछताछ की। प्रथम तो शेषरावजी कहते रहे कि सोना उन तक पहुँचा ही नहीं है। शेषरावजी की बातों पर विश्वास कर, माताजी वासुदेवराव पिम्पळे पर क्रोधित हुई। वासुदेवराव अपने मामा-शेषरावजी की झूठी बातों के कारण परेशानी में पड़ गये। एक ओर नानी तो दूसरी ओर मामा - इन दोनों की कैंची में फँसे रहे। शेषरावजी ने परिस्थिति को अधिक न तानते हुए जब वास्तविकता बताई - तो माताजी का कठोर हृदय भी पिघल गया। उन्होंने अपने हाथ के सोने के कंगन भी शेषरावजी को सौपे - और कहा 'तू अपना कर्तव्य निभा - तुम्हारें सहयोग के लिए तुम्हारी माँ सदैव तैयार है।'

बार्शी के समीप ही, चिंचोली नामक इस छोटे से गांव में विस्थापितों का कैम्प था। सुरक्षितता तथा आवागमन की दृष्टि से यह चिंचोली कैम्प महत्वपूर्ण था। इस



६५ गांवों का मुक्तापुर स्वराज्य का मंत्री मंडल। श्री शेषरावजी पिछली पंक्ति में ५वें (बाएँ से दाएँ) (गोलाकार में) खड़े बाँये से तीसरे श्री चंद्रशेखर वाजपाई। (कुर्सी पर) श्री बाबासाहब परांजपे (बाँयें) श्री फूलचंद गांधी (दायें)



श्री. शेषरावजी वाघमारे संचालक हैदराबाद स्टेट कॉंग्रेस - बार्शी जि. सोलापुर, तथा सचिव, ल. वि. पाकुरकर, निजाम रियासत के देहातों को मुक्ति दिलाकर स्वतंत्र मंत्री मंडल की स्थापना के संदर्भ में इल्युस्ट्रेटेड विकली में छपे हुए समाचार को देखते हुए। (१९४७)

कैम्प की सुरक्षा के लिए एक सौ पचास सशस्त्र (सैनिक) क्रान्तिकारी थे। एक सैनिक अधिकारी - क्रान्तिकारी के रुप में शेषरावजी इस चिंचोली कैम्प में कार्यरत थे। इस कैम्प से दूसरे कैम्प को शस्त्र और आवश्यक सामान पहुँचाना, समय पड़ने पर रज़ाकारों का सामना करना - आदि कार्यों में शेषरावजी अगुआ रहा करते थे।

स्वतंत्रता प्रेमी क्रान्तिकारियों ने परण्डा तहसिलके ६५ गांवों को निज़ाम शासन से मुक्त कर, अपना शासन स्थापित किया था। क्रांतिकारी इन स्वतंत्र गांवो के प्रशासन से जुडे रहे - उनका एक मंत्रीमंडल बना - जो इस प्रकार था

(१) श्री फूलचंद गांधी - प्रधान
(२) कॅप्टन जोशी - न्यायाधीश
(३) चन्द्रशेखर बाजपेयी - पुलिस मंत्री
(४) रामचन्द्रजी मंत्री - सुरक्षा अधिकारी
(५) विमलचन्द गांधी - अर्थ मंत्री
(६) शेषरावजी वाघमारे - गृह मंत्री
(७) राघवेन्द्र दिवाण - गृह मंत्री

उस समय के 'इलुस्ट्रेटेड विकली' साप्ताहिक पत्र में निज़ाम शासन के ६५ गांवों में क्रान्तिकारियों द्वारा चलाए शासन का समाचार छपा था। श्री ल.वि. चाकूरकर ने शेषरावजी को इस समाचार पत्र में छपी वार्ता दिखायी। समाचार पत्र दिखाते हुए का चित्र - चाकूरकरने अपनी पुस्तक 'मी .पाहिलेला मुक्ति संग्राम' के अंतिम पृष्ठ पर छापा है, जिसमें शेषरावजी सैनिक वेशभूषा में हैं - दोनों समाचार पत्र पढ़ने में लीन हैं।''

'काट लेना हर कठिन मंजिल का
कुछ मुश्किल नहीं।
इक ज़हा इंसान में
चलने की हिम्मत चाहिए।।

२१ पुलिस ऍक्शन और स्वतंत्रता सेनानियों की सफलता

स्वतंत्र भारत का शासन निज़ाम की गतिविधियों पर दृष्टि लगाए था। मुस्लिम संगठनों की क्रूर कहानियाँ दिल्ली तक पहुँच रही थी। केन्द्रीय शासन द्वारा अनेक प्रयास किये जाते रहे कि निज़ाम अपनी बर्बरता से बाज़ आये और रियासत को भारत में विलीन करें। निज़ाम अपनी रियासत की आजादी के लिए जिद्द पर अड़ा हुआ था। इतना ही नहीं, वह विदेशों से सम्पर्क स्थापित कर, शस्त्र-अस्त्रों को एकत्रित करने में भी लगा था, ताकि समय आने पर भारत के शासन से मुकाबला कर सके। ऐसी परिस्थिति में भारत सरकार को कड़ा निर्णय लेना पड़ा कि निज़ाम की रियासत में भारतीय सेना भेजकर निज़ाम को उनकी हठधर्मी का पाठ पढाए। इस निर्णय के अनुसार, कदम उठाने के पूर्व, भारत सरकारने निज़ाम की सैनिक शक्ति तथा मुस्लिम संगठनों की शक्ति का अन्दाजा लेना प्रारम्भ कर दिया था। यहीं से हैदराबाद मुक्ति संग्राम के इतिहास का अंतिम अध्याय प्रारम्भ होता है।

सरदार वल्लभभाई पटेल के प्रतिनिधि श्री हृदयनाथ कुंजरुने शेषरावजी वाघमारे, लक्ष्मणराव चाकूरकर, श्री रामचन्द्रजी मंत्री, चन्द्रशेखर वायपेयी आदि क्रान्तिकारियों के साथ प्रदीर्घ चर्चा की। उन्होंने निज़ाम की सैनिक शक्ति, रजाकारों की संख्या, प्रशिक्षित सैनिक आदि की भी जानकारी प्राप्त की और भारत सरकार को निज़ाम की शक्ति का पूरा ब्यौरा भेज दिया। इस ब्योरे का अध्ययन करने के बाद भारतीय सेना को निज़ाम की रियासत में प्रवेश करने की आज्ञा दी गयी। भारतीय सेना ने निज़ाम की सेना, स्थलों, रजाकारों की टोलियाँ आदि की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर ली। उन्हें इस प्रकार प्रथम स्तर (First Hand) की जानकारि क्रान्तिकारियों की चर्चा से ही प्राप्त हुई।

भारतीय सेना ने निज़ाम रियासत की सीमा के चहूँ ओर से रियासत में प्रवेश करना प्रारम्भ किया। एक सीमा थी सोलापुर की, जहाँ से रियासत में आसानी से प्रवेश किया जा सकता था। हैदराबाद रियासत का नलदुर्ग एक छोटा सा ऐतिहासिक गांव जो उस्मानाबाद जिले में बसा है। हैदराबाद से नलदुर्गकी दूरी २५० कि.मी. की है और सोलापुर से करीब ४०/५० कि.मी. की दूरी पर है। नलदुर्ग गांव से

ही हैदराबाद रियासत की सीमा समाप्त होती है और शुरू होती है - सोलापुर जिले की सीमा अर्थात् भारत सरकार का भूक्षेत्र। हैदराबाद रियासत के इसी नलदुर्ग की सीमा तक पहुँचने के प्रयास में भारतीय सेना को कोई दिक्कत नहीं आयी। जैसे ही भारतीय सेना नलदुर्ग में प्रवेश कर आगे बढ़ने का प्रयास करने लगी, रजाकारों का प्रतिकार प्रारम्भ हुआ। भारतीय सेनाने २५ गधों की मांग की। उस समय शेषरावजी अपने कँप-कार्यालय में थे और उन्होंने भारतीय सेना के अधिकारियों से प्रत्यक्ष चर्चा की। भारतीय सेना अधिकारियों को गधे इस लिए चाहिए थे कि रात्रि के समय रियासत की सीमा पर स्थित नलदुर्ग तक पहुँचने के लिए निज़ाम की सेना, रजाकारोंकी टोलियों में दिशाभ्रम उत्पन्न करना था। गधों के सिर पर मशालें बांधकर उन्हे एक ओर छोड़ा गया, निज़ाम की सेना इस भ्रम में रही कि भारतीय सेना उस दिशा में सीमा प्रवेश करने के प्रयास में है। वह उस दिशा की ओर कूच कर गयी जबकि भारतीय सेना अलग दिशा से नलदुर्ग मे प्रवेश कर गयी।

१३ सितंबर १९४८ - रात्रि के एक बजे भारतीय सेना हैदराबाद रियासत के नलदुर्ग में प्रवेश कर गयी। उस समय मिलट्री की वेशभूषा में शेषरावजी वाघमारे और एक ट्रक में उनके अन्य साथी भारतीय सेना का मार्गदर्शन करने के लिए निकल पड़े। भारतीय सेना नलदुर्ग से आगे, निज़ामी सेना का सामना करते हुए आगे बढ़ने लगी वैसे शेषरावजी और अन्य साथी मार्गदर्शन करते हुए, आगे बढ़ते रहे।

१६ सितम्बर १९४८ को कॅप्टन इन्द्रसेन अपने टँक के साथ परांडा की ओर निकल पड़े, तो उस समय, विभिन्न कैम्पों में कार्यरत क्रान्तिकारी फूलचन्द गांधी, बाबासाहब परांजपे, शेषरावजी आदि ने सीमा पर पहुँचकर कॅप्टन इंद्रसेन का स्वागत किया। उस समय की एक घटना है - कॅप्टन इन्द्रसेन की घड़ी कहीं खो गयी थी, उन्हें घड़ी की आवश्यकता थी। शेषरावजी को १००/- रू. का नोट थमाकर कहा कि कहीं से घड़ी खरीद ले आयें। शेषरावजी ने अपनी हाथ की घड़ी निकालकर, कॅप्टन इद्रसेन के हाथ में बाध दी और उनके १००/- रू. धन्यवाद के साथ उन्हें लौटा दिये। क्रान्तिकारी और स्वतंत्र सेनानी और कॅप्टन इन्द्रसेन की यह चिरस्मरणीय ऐतिहासिक भेंट कही जाती है।

१७ सितम्बर १९४८ को भारतीय सेना के सम्मुख निज़ाम शासन को झुकना पड़ा और निज़ाम को यह घोषणा करनी पड़ी कि निज़ाम रियासत भारत का एक अभिन्न अंग है। नियति भी क्या खेल दिखाती है । ''निज़ाम ने जिस दिन घुटने टेक दिए, वह जुम्मे (शुक्रवार) का दिन था। इसलाम में जुम्मे का दिन पवित्र माना जाता है। ऐसे ही पवित्र जुम्मे के दिन ही कई वर्षो से चली आ रही आसिफशाही का अंत हुआ। हैदराबाद स्वतंत्र हुआ। यह स्वतंत्रता सबके लिए - कवि के शब्दों में -

'स्वतंत्रता, स्वतंत्रता, स्वतंत्रता
अन्त्यजों पिछेड हुए वर्गों के लिए
स्वतंत्रता उन सब के लिए
आओं हम तन से यत्न करें
किसी को भी छोड़े नहीं,
किसी को दु:ख न दे,
चलते हुए सत्य और प्रकाश के मार्ग पर।
नहीं होगा कोई अन्याय का शिकार
जिसने भी जन्म लिया भारत में
वही है सवर्ण, वही उच्च है।
स्वतंत्रता, स्वतंत्रता,

'कवि सुब्रह्मण्यम भारती'

सभी स्वतंत्रता सेनानी फूलचन्द गांधी के साथ तुलजापुर होते हुए उस्मानाबाद पहुँचे। वहाँ की जनता ने हर्षोल्लास के साथ उनका स्वागत किया। वहाँ से शेषरावजी अपने साथियों के साथ निलंगा पहुँचे। निलंगावासियों ने शेषरावजी , वीर सेनानी तथा उनके साथियों का अभूत पूर्व भव्य स्वागत किया।

इस प्रकार हैदराबाद मुक्ति संग्राम का अंतिम अध्याय तो समाप्त हुआ। हैदराबाद रियासत मुक्त हो भारत में विलीन हुई। सामान्य जनों की नजर में मुसलमानों की एक नृशंस, अन्यायी प्रतिमा बनी हुई थी। मुस्लिम समाज के प्रति प्रतिशोध की भावना भड़क न उठे - इस तरह क्रान्तिकारियों के मन में आशंका

की भावना उठती रही। ऐसा ही हुआ - हिन्दू जनता में प्रतिशोध की भावना उभर आयी। ऐसे समय शेषरावजी बड़ी ही समझदारी और संयम से हिन्दुओं की भड़कती हुई भावना रोकते रहे। कहीं कोई दंगा फसाद न हो, इस दृष्टि से समाज में विचरण करते रहे। कहीं कहीं पर मुस्लिम स्त्रियाँ बेसहारा हुई थी, उन्होंने सम्मान पूर्वक साडी, चोली, आदि वस्त्र तथा चूडियाँ प्रदान कर उनके घर उन्हे सुरक्षित पहुँचा दिया। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के बाद की सार्वजनिक स्थिति विकृत न हो जाए, सामाजिक सामजंस्य बना रहे इस तरह सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने में भी शेषरावजी को सफलता मिली।

''यदि आर्यसमाज न होता ?
न होता स्वराज्य सूर्योदय
न ज्ञान का प्रकाश होता
न वेदशास्त्र, न रामकृष्ण
न सत्य का विकास होता।
होता हिन्दू किन्तु अवैदिक
मतवादियों से आज पूर्ण होता
मिट जाता देश का गौरव - भूमंडल पर
यदि आर्यसमाज न होता....''

विपत्ति मे -

'लोहा जब गरम होता है, तब लाल सुर्ख हो जाता है और उसमें से चिनगारियाँ उड़ने लगती हैं। परंतु लोहा चाहे कितना ही गरम हो जाए, हथौडे को ठंडा ही रहना चाहिए। हथौडा गरम हो जाए तो अपने दस्ते को जलाता है। लोहे को इच्छानुसार रूप देना हो तो हथौडे के गरम होने से काम नहीं चल सकता। इस लिए कितनी ही विपत्ति हो, हमें गरम नहीं होना चाहिए''

सरदार वल्लभ भाई पटेल

हैदराबाद मुक्ति संग्राम का अंतिम अध्याय, एक ऐतिहासिक प्रसंग



१७ सितंबर १९४८ को भारत के गृहमंत्री लोह परूष सरदार वल्लभभाई पटेल के सम्मुख आसफशाही के सातवे और अन्तिम निज़ाम मीर उस्मानखान का आत्म समर्पण - एक ऐतिहासिक दृश्य।



२२ श्री शेषरावजी विधान सभा में

भारतीय काँग्रेस की स्थापना १९ शताब्दी के अन्त में हुई। काफी विलम्ब से अर्थात् १९३८ में वह निज़ाम रियासत में अवतरित हुई, जब कि आर्यसमाज शीर्षस्थ स्थान पर पहुँच चुका था। निज़ाम की नृशसंता न थमने के कारण आर्यसमाज ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी थी। स्वामी रामानन्द तीर्थ के नेतृत्व में स्टेट कॉग्रेस ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी, किन्तु काँग्रेस का यह सत्याग्रह शुरू ही नहीं हुआ। किन्तु धीरे धीरे स्टेट कॉग्रेस की शक्ति रियासत में बढ़ती गयी - निज़ाम के विरोध में वह भी सक्रिय रही।

सन १९३८ से ही आर्यसमाज के गणमान्य व्यक्ति काँग्रेस के समीप आये और अपनी आर्यसमाजी पहचान बनाये रखते हुए काँग्रेस के साथ कंधे से कंधे मिलाकर वे हैदराबाद मुक्ति संग्राम से जुडे रहे। रियासत के ऐसे आर्य नेताओं में शेषरावजी एक थे, जो निलंगा में काँग्रेस की स्थापना में अग्रसर रहे। वे कई वर्षों तक निलंगा काँग्रेस के अध्यक्ष पद पर बने रहे।

हैदराबाद रियासत का भारत में विलय होने के बाद, प्रजातंत्रीय प्रशासन लाने के लिए हैदराबाद राज्य में सार्वजनिक चुनाव घोषित किये गये। निलंगा तथा परिसर में ही नहीं, अपितु मराठवाड़ा, कर्नाटक क्षेत्र में शेषरावजी एक ख्यातिप्राप्त नेता के रूप में परिचित हो चुके थे। अत: निलंगा चुनाव क्षेत्र से उन्हे काँग्रेस का उमीदवार घोषित किया गया। उनके विरोधी थे शेतकरी कामगार पक्ष की ओर से श्री बापूसाहब एकंबेकर और तीसरे उमेदवार थे श्री रामराव। बड़ी ही आसानी से अधिक मतों से शेषरावजी इस चुनाव में विजयी हुए और काँग्रेस के विधायक बने।

विधान सभा आंध्र प्रदेश के ग्रंथालय में रखी हुई चुनाव रिपोर्ट से यह ज्ञात होता है कि चुनाव का नोटिफिकेशन जारी हुआ - शब्द हैं "The first general election to the Legislature Assembly of Hyderabad State, under representation of People Act 1951, were held during December to January 1952 and 175 members elected for

legislature Assembly" श्री शेषरावजी माधवराव वाघमारे ने शनिवार २२ मार्च १९५२ को विधानसभा सदस्य के रूप में शपथ ली - (संदर्भ : Assembly Report 1952 - 1957, volume 1, Page no. 7).

विधायकों का प्रमुख कार्य होता है कि शासन का कार्य प्रजातंत्रीय ढंग से चलाएँ। प्रशासन को सुदृढ़ बनाये ताकि वह सुचारु ढंग से कार्यान्वित हो। न केवल अपने चुनाव क्षेत्र के लिए प्रयत्नशील रहे, अपितु राज्य के विकास के लिए भी प्रयत्नशील रहें। जनता के सम्पर्क में रहे, उनकी आवश्यकताओं को समझें, अध्ययनशील रहे, जनता की समस्याओं को सभागृह में रखें, राज्यके विकास की दृष्टि से अपने तात्विक विचारों को रखें, उसपर चर्चा करें। सकारात्मक ठोस निर्णय तक पहुँचने के लिए राज्य शासन को सहयोग प्रदान करे, मार्गदर्शन दे। २२ मार्च १९५२ से ३१ मार्च १९५६ तक हैदराबाद राज्य विधान सभा की कार्यवाही पर दृष्टि डालने पर यह ज्ञात होता है कि श्री शेषरावजी वाघमारे एक सफल विधायक के रूप में दीख पड़ते हैं।

हैदराबाद राज्य में तीन क्षेत्रीय भाषाएँ - तेलगू, कन्नड और मराठी प्रयुक्त थी, एक चौथी भाषा - उर्दू, जो पहले से ही निज़ाम रियासत की प्रमुख भाषा थी। विधान सभा का कार्य भी इन्हीं चारों भाषाओं में चलता रहा। शेषरावजी ने विधान सभा कार्यकाल में कभी उर्दू में, कभी उर्दू मिश्रित हिन्दी में, कभी मराठी भाषा में, अनेक प्रश्नों को उठाते रहे और अनेक विषयों पर तात्विक चर्चा में सम्मिलित होते थे और वे स्वतंत्र रूप से अपने मन्तव्यों को भी रखते थे।

शेषरावजी निलंगा चुनाव क्षेत्र के विधायक थे। वे प्रथम अपने क्षेत्र से सम्बन्धित समस्याओं से जुड़े रहते थे - यह स्वाभाविक भी है। उन्होंने निलंगा की अनेक समस्याओं को विधान सभा के पटल पर रखा। उदाहरण के रूप में - कुछ प्रश्नों को - जैसे के तैसे यहाँ प्रस्तुत किया गया है।

निलंगा में पानी की कमी न हो, आवश्यकता के अनुसार 'बोरिंग' मशीनों की व्यवस्था भी होनी चाहिए। शेषरावजी ने कृषि मंत्री से प्रश्न पूछा है - (रिपोर्ट पुस्तिका में प्रश्न अंग्रेजी भाषा में है)

Supply of Boring Machine -

504-736 - Shri Sheshrao Waghmare -

will the Hon. Minister for Agriculture and Supply be pleased to state -

(a) Whether it is fact the people of Nilanga Taluka have supplied of Boring Machine?

(b) Whether it is also fact that while other taluka have been supplied with two Boring Machine, Nilanga Taluka have not been supplied even one?

(c) If so why?

(d) The Govt. intend to supply one Boring Machine to Taluka in the immediate future?

सम्बन्धित मिनिस्टरने उर्दू में उत्तर दिया है - 'निलंगा से वैसे दरखास्त आयी थी।

श्री शेषरावजी ने उस पर मराठी में प्रश्न पूछा।

'दरखास्त आपणास केंव्हा दिली होती?

मिनिस्टर ने तेलगू में शेषरावजी का समाधान करने का प्रयास किया

- शेषरावजी - कोणत्या वर्षी?

- इस प्रश्न का उत्तर भी तेलगू में ही दिया गया।

शेषरावजी ने प्रश्न मराठी में ही पूछा था। 'इतके दिवस दरखास्त आपल्या जवळ का पडून राहिली?' (संदर्भ Volume - 1, पृ. 2326, 2327 - 9th April 1953 - Starred Question and Answer)

सम्बन्धित विषयों के मिनिस्टर से प्रश्न प्रतिप्रश्न फिर पूछकर - समाधानकारक उत्तर पाने का प्रयास विधायक शेषरावजी का रहा है। इस प्रयास में न केवल

उनका विधायकवाला रूप देखने को मिलता है, अपितु वकील शेषरावजी भी दीख पड़ते हैं।

निलंगा चुनाव क्षेत्र से सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को शेषरावजी ने विधान सभा के पटल पर रखा है।

(१) बांधकाम मंत्रीसे - भालकी और निलंगा के बीच - सडक सम्बन्धित प्रश्न - 524-735, Volume 1 पृ. 2424 D/ 10th April 1953

(२) Extension of Residential area of Nilanga.

प्रश्न क्र. 5481723 11th April, 1953

(३) निलंगा मे दलितों के लिए कितनी जमीन दी गयी है? दलितो को दी हुई जमीन, जिसकी कीमत है १०,०००/- रू. है, केवल १५०/ - रु. में एक वकील के नाम कर दी गयी है - क्या यह सच है? प्रश्न क्र. 576 - 733 - Vol. 1, 11th April 1953 पृ. 2536

(४) निलंगा की परम्पोक जमीन - दि. २० सप्टें. १९५४ - पृ. १३२४

(५) पॅडी मिक्सर का हिसाब, पॅडी मिक्सर का उपयोग?

दि. २० सप्टे - १९५४ . पृ. १३३९

(६) निलंगा अस्पताल? स्वयं की इमारत? पेशंट, कमरे, आदि की संख्या? कमरों में हवा न चलने पर, पेशंटों पर विपरीत परिणाम - शासन की कार्यवाही?

प्रश्न क्र. ८९, दि. २० सप्टे. १९५४ - पृ. १३४५

(७) निलंगा तहसील का विकास -

विकास की कोई योजना? योजना की जानकारी? तालुका में कितनी बावलियाँ खोदी गयी? विद्यालयों की इमारतों का बांधकाम आदि प्रश्न,

प्रश्न क्रं. १५४ (३४३) दि. २० सप्टे. १९५४ पृ. १३६०

(८) निलंगा तहसील में मंत्रियों का दौरा?

मंत्रियों का भालकी-निलंगा सडक से दौरा?

सड़क की स्थिति का मुयायना किया है?

पृ. क्र. ५०९ - ८०३ दि. २१ सप्टे. १९५४ पृ. १३६५

(९) Pending Tenancy cases in Nilanga

पृ. क्र. ५०३, ८०२, Date 21st Sept. 1954, Page 1371.

(१०) निलंगा तहसील में हाईस्कूलों की संख्या? अध्यापकों की संख्या, विद्यार्थियों की संख्या? हरिजन विद्यार्थियों की संख्या। अनुपात में अध्यापकों की नियुक्ति? नये हायस्कूल शुरू करने की योजना?

पृ. क्र. १५८ - ३४७ दि. २२ सप्टे. १९५४

(११) रजाकारों द्वारा लूट और आगजनी खुरदाद - १३५७ फसली सम्बन्धमें शासन से जानकारी? लूटमार - आगजनी के कारण? हानि का ब्यौरा?

प्र. क्र. ८८३ - दि. २२ सप्टे. १९५४ पृ. १४३

(१२) निलंगा तालुके में कितनी चोरियाँ - डकैती? कार्यवाही?

प्र. क्र. १६५ - ३४९ - १६६ - ३५०

विधायक शेषराव द्वारा कुछेक प्रश्नों का विवरण यहाँ प्रस्तुत किया गया है। ऐसे प्रश्नों की संख्या कहीं अधिक है। प्रश्नों के माध्यम से वे अपने चुनाव क्षेत्र सम्बन्धित जानकारी जानना चाहते हैं। शासन का ध्यान अनेक समस्याओं की ओर आकर्षित कर, समस्याओं को हल करने का भी वे पूरा प्रयास करते रहे हैं। विधायक शेषरावजी के ही शब्दों में "मराठवाड़ा के निलंगा, अहमदपूर, उदगीर तालुके उससे फायदा हासिल करने में महरुफ रह गये हैं। बीदर जिले में तीन

तालुके कन्नड भाषी हैं, तीन मराठवाडा के मराठी के है। वहाँ की मर्दुमशुमारी के लिहाज से भी बीदर जिल्हे में ३२.१% मराठी बोलने वाले हैं और कन्नड़ बोलने वाले हैं ३१.९% फिरभी उसको कर्नाटक का एरिया करार कर दिया गया है। कमीशन जो उसका तसफिया करेगा, लेकिन सवाल है - मराठवाडे के लिए मदद मिलनी चाहिए। कन्नड तहसीलों को मदद मिलनी चाहिए - वैसे ही मराठवाडा के इन तहसीलों को भी मदद मिलनी चाहिए, पर मिलती नहीं। दो मुल्लाओं के बीच मुर्गी मुर्दार - जैसी इस तालुके की हालत हो गयी है। .... निलंगा तालुके की हालत यह है कि यहाँ सडकें नहीं हैं, दवाखाने नहीं हैं, जचकी खाना नहीं है, डाकबंगला भी नहीं है, तालाब नहीं हैं, बोरिंग मशीन कैसी होती है - लोगों को मालूम नहीं है - ट्रॅक्टर भी नहीं जानते।..... अमोनियम सल्फेट, अमोनियम नायट्रेट का निलंगा में तकसीम होना चाहिए था - नहीं हुआ। आपस में बांट लिया गया। निलंगा तालुका उससे महरुफ रहा। इसलिए मिनिस्टर से दरखास्त करता हूं - तालुका निलंगा, अहमदपुर और उदगीर की ओर खास तौर पर ध्यान दे।। 'Demand and grants Budget' सम्बन्धित चर्चा में सहभागी होते हुए विधायक शेषराव ने विकास सम्बन्धित अनेक प्रश्नों को सभागृह के सम्मुख रखा था। (संदर्भ दि. २९ मार्च १९५५ पृष्ठ १९८१-१९८२)

विधायक के सम्मुख मात्र अपना चुनाव क्षेत्र होता नहीं है, होना भी नहीं चाहिए, उनका ध्यान संपूर्ण राज्य तथा राष्ट्र की समस्याओं तथा उसके विकास की ओर भी रहना चाहिए। विधायक शेषरावजी अपने चुनाव क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहे, उनके सम्मुख हैदराबाद राज्य और राष्ट्र भी रहा है - हैदराबाद राज्य असेम्बली की कार्यवाही इस बात की साक्ष्य है। विधायक शेषरावजी ने विस्तृत रूप में राज्य से सम्बन्धित चर्चाएँ भी की हैं। वे सकारात्मक दृष्टि से शासन के साथ रहे, शासन को सलाह देते रहे और समय पड़ने पर शासन के विरोध में खड़े रहने में कभी हिचकिचाहट नहीं की। शेषरावजी ने कहा है - "जिन डिमान्ड पर चर्चा हो रही है, मैं कुछ सजेशन पेश करना चाहता हूँ। विकास योजना के तहत जो कुछ काम हो रहा है इतमीनान बक्ष है। हम चाहते हैं कि वक्ते बाहद में हर तरफ इस योजना को लागू किया जाय। .... जब कोई योजना किसी खास एरिया के लिए - मराठवाड़ा, तेलगांना, कर्नाटक के लिए हो तो उनका जो हिस्सा है वह मुतालिक

होना चाहिए - पर मुतालिक नहीं होता तो यह गैर है'' (Demand and grants - चर्चा दि. २० मार्च - १९५५ पृष्ठ १९८१)

अधिकारों के विकेन्द्रीकरण की दृष्टि से सभागृह में "The Hyderabad District Bill" प्रस्तुत हुआ। जनता के हित को दृष्टि में रखते हुए निर्णय लेने का अधिकार एक के हाथ में नहीं होना चाहिए अपितु उसका विकेन्द्रीकरण होना चाहिए। यह बिल चुने हुए प्रतिनिधियों को कुछ अधिकार प्रदान करता है। साथ ही जनता के हित में, जो योजनाएँ बनी हुई है, उस पर त्वरित कार्यवाही के लिए बहुत कुछ अधिकार ग्राम-पंचायत, टाउन कमीटी और म्युनिसीपालीटी को भी देता है। शेषरावजी ने इस बिल का स्वागत किया है। उनका मन्तव्य है ''इसका प्रोसिजर टेढा है - जो फायदे जल्दी हासिल होना चाहिए नहीं होते। इसमें कुछ कसूर कमीटीज का है, कुछ गवर्नमेन्ट का भी। मेरा तजुर्बा यह है कि दस साल से दरखास्तें पडी हैं, कानून के तहत उसका तसफिया नहीं हुआ है। अगर बाप ने दरखास्त दी है - तो उसके बेटे को तसफिया मिलता नहीं है। प्रोसीजर टेढा न होकर आसान प्रोसिजर होना चाहिए। जरूरतमंदों को फायदा जल्दी मिले। प्रोसिजर को आसान बनाने के लिए मिनिस्टर मुतालुका से यह दरखास्त करूगाँ कि हम बिल को इस तरह रखे कि जिससे लोगों की ख्वाहिशात जल्द से जल्द पूरी हो। आखिर में, मैं हाउस से अर्ज करूगाँ कि बिल जल्द से जल्द पास कर दें'' (संदर्भ - The Hyderabad District Board Bill - Dated 23rd Feb. 1955 - Pape No. 291-292)

"The Hyderabad Municipal Corporation Bill 1954" के अंतर्गत बिल सदन दि. १४ सप्टे १९५५ को चर्चा के लिए प्रस्तुत हुआ। प्रापर्टी पर टॅक्स लगाने की चर्चा चल रही थी - चर्च, मंदिर और मस्जिद पर भी अन्य प्रापर्टी की तरह ही टॅक्स लगना चाहिए। शेषरावजी ने इस बिल के पक्ष में अपने विचार मराठी में व्यक्त किया है ''मंदिर व मस्जिद वर टॅक्स लावणे योग्य होईल, कारण कारपोरेशनच्या पैश्याचा विनियोग लोकोपयोगी - कामासाठी आहे - एका व्यक्ति साठी नाही। टॅक्स चे पैसे लोकांसाठीच खर्च होतील''। सदन में ऐसी भी चर्चा हुई कि मंदिर और मस्जिद का उत्पन्न मात्र ६०० रु. है तो टॅक्स नहीं लगना चाहिए। शेषरावजी इसका विरोध करते हुए टॅक्स लगाने की बात करते हैं कारण व्यापारी

लोग झूठे हिसाब दिखाकर टॅक्स मुक्त होने के चक्कर में रहते हैं। दो प्रकार के हिसाब रखे जाते है - एक वास्तविक और दूसरा हिसाब टॅक्स बचाने हेतु झूटा हिसाब, जो कम आय को दर्शाता है। किसी तरह की टॅक्स में मर्यादा न हो, सब प्रापर्टी पर टॅक्स लगना चाहिए''

शेषरावजी सस्ते दाम की दुकान शुरु करने की योजना का स्वागत करते हुए कहते हैं'' गवर्नमेंट की जानिब से जो दूकान कायम किया गया है, मै उसका खैरमकदम करता हूँ। यह अच्छा स्टेप है। लेकिन सिर्फ कुछ जगहों पर सस्ते अनाज की दुकानें खोलने से मसला हल नहीं हो जाता.... आम जनता के परवरिश का इनतेजाम हमें करना चाहिए'' (संदर्भ Statement of Food Situation Dated 11th April 1956 पृ. 132)

'The Hyderabad Public Conveyance Bill 1956' चर्चा में बेरोजगारी और बेरोजगारी मिटाने के लिए रिक्षा चलाना के प्रश्न पर शेषरावजी ने कहा है ''आज हमारे सामने सबसे बड़ा सवाल बेरोजगारी का है। और जब कि हमारे मुल्क में काफी लोग बेरोजगार हैं, तब ऐसी हालत में यहाँ काफी लोगों को रिक्षा चलाने के धंधे में रोजी मिलती है। वहाँ इस तरह की उमर की शर्त लगाना ठीक न होगा। लिडर ऑफ अपोजिशन ने फरमाया कि १८ साल के नीचे के लोगोंको रिक्षा चलाने से रोका जाना चाहिए लेकिन मैं उससे मुख्तालिफ हूँ। .... मौजूदा बेरोजगारी की हालत में उन्हे रिक्षा चलाने की इजाजत दी जाए तो कोई बड़ा नुकसान नहीं होगा''।

मराठवाड़ा में ज्यादा प्रोजेक्ट नहीं हैं, पानी की किल्लत, तालाब, बावलियों के न होने पर शेषरावजी ने अपने विभाग की चिन्ता को सदन के सम्मुख रखा हैं - ''छोटे छोटे काश्तकारों की हालत बहुत खराब है। इस साल वहाँ अनाज नही हुआ, जहाँ एक खंडी होता था, वहाँ मन दो मन से ज्यादा नहीं हुआ।.... गरमी का मौसम इतना है कि हर साल पानी की किल्लत-महसूस होती रही है - काश्तकार बैचेन हैं। गवर्नमेंट से गुजारीश है , तकावी के जरिये हालत को रफा करने की कोशिश करे। मराठवाडे में जो चारे का सवाल है, वह भी हल करना चाहिए। इन्सान को खाने को मिलता है - जानवरों को चारा भी नहीं मिलता''।

Discussion on demand for Grants - Dated 31 March, 1956.

विधायक शेषरावजी के द्वारा सदन में उठाए प्रश्नों, और उनके मन्तव्यों से ज्ञात होता है कि उन्होंने राज्य की समस्याओं को समझा था, समस्याओं के समाधान के लिए योजनाओं को भी विधान सभा के पटल पर रखा था। काश्तकार, रिक्षा चलाने वाला, दलित, सामान्य आदमी, डॉक्टर, वैद्य, पुलिस, शासकीय अधिकारी, अध्यापक, विद्यार्थी, आदि समाज की इकाई उनके मन्तव्यों का केन्द्र बिन्दु रही हैं। यहाँ तक कि चोर और डाकू, भ्रष्टाचारी व्यक्ति, अधिकारी भी छूटे नहीं हैं। आवागमन के लिए सडकें, पानी की किल्लत, महिलाओं के लिए जचकी खाना, शासकीय इमारत - दवाखाना, डॉक बंगला, बिमार व्युक्तियों की अन्य जरूरतों को भी उन्होंने सदन में रखा है।

प्रश्नों को सदन में रखने के लिए, उन्होंने स्पीकर से बार बार गुजारीश की है - समय मांगा है, समय न मिलने पर स्वयं खड़े होकर स्पीकर महोदय का ध्यान आकर्षित किया है। स्पीकर के अनदेखे करनेपर, अमूक विषय पर मुझे कुछ कहना है कहकर उन्होंने स्पीकर का ध्यान आकर्षित किया है। कभी-कभी वे कुछ जोश मे भी आये हैं। बार बार उठ खड़े होने पर स्पीकर की ओर से बैठने का आदेश भी दिया गया है - वे बैठ गये हैं, उसी समय, जब कि स्पीकर महोदय ने उन्हे आश्वासन दिया है कि उन्हे समय जरूर मिलेगा। अपना मंतव्य रखकर ही वे आश्वस्त हुए।

उनके मंतव्यों में विषय सम्बधित उनका चिंतन और मनन दीख पड़ता है। सोच, समझकर, मुद्दों को रखने में वे कुशल थे। शासन की योजनाओं का समर्थन करते, यदि कुछ दोष भी हो तो उनको भी दर्शाते रहे हैं। राज्य की जनता - राज्य की केन्द्र बिन्दु होती है, उसका विकास में राज्य का विकास निहित है, यह विधायक शेषराव का दृष्टिकोण रहा है।

१९५६ में भाषा के आधार पर हैदराबाद राज्य की पुनः रचना की गयी। हैदराबाद का मराठी बहुभाषी प्रदेश महाराष्ट्र में सम्मिलित हुआ। विधायक शेषराव महाराष्ट्र विधान सभा में पहुँचे पर थोड़े ही समय के लिए (१९ नवंबर १९५६ से

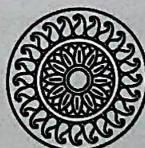


मुख्यमंत्री श्री बी. रामकृष्णराव, श्री. चेन्ना रेड्डी, श्री. दिगंबरराव बिन्दू, श्री. निवर्ति रेड्डी, श्री तुलशीराम कांबळे, श्री. माधवराव घोणसीकर आदि भी चित्र में हैं। (श्री. शेषराव जी दाँयें से छठे) (गोलाकार में) (नीचे बैठी हुई पंक्ति में) द्वारकादास चौधरी (बाँयें से नववें)



गोदावरी बाढ़ पीडितों के सहायनार्थ मुख्यमंत्री XI विरूद्ध सभापति XI के बीच खेला गया फुट बॉल मॅच। विधायक श्री. शेषराव जी नीचे की पंक्ति में (बाएँ से तीसरे) (गोलाकार में)। हैदराबाद दक्कन, दि ३ अक्तूबर १९५३.

मुख्यमंत्री श्री. वी. रामकृष्णराव, (खडी पंक्ति के मध्य में) श्री. शंकरदेवजी वेदालंकार (बैंठी पंक्ति में बाँयें से दूसरे)



४ एप्रैल १९५७ तक) महाराष्ट्र विधानसभा का केवल एक सत्र संपन्न हुआ, वह भी विधायकों को विदाई देने के लिए। महाराष्ट्र विधान सभा उनके लिए अल्प काल की रही।

वे १९५२ से ५७ तक विधायक रहते हुए महात्मा गांधी के सत्य एव्म शुचिता तत्वों पर चल कर काँग्रेस के अग्रणी कृतिशील विधापक रहे, तो दूसरी ओर महर्षि दयानन्द के वीर सैनिक बनकर दयानन्द का काम पूरा करने में भी लगे रहे।

वास्तव में राजनीति उनके जीवन का कभी लक्ष्य नहीं रही, उन्होंने राजनीति से चिपके रहना भी पसंद नहीं किया। उनके लिए कॉग्रेस का टिकट प्राप्त कर लेना भी कठिन कार्य नहीं था। आसानी से फिर से चुनाव लडकर विधायक भी बन सकते थे, वैसे उनकी लोकप्रियता भी थी, फिर भी उन्होंने राजनीति से मुँह मोड़ा। उन्होंने शिवाजीराव निलंगेकर, युवक को अपना राजनीतिक उत्तराधिकारी चुना। श्री शिवाजीराव १९५७ के चुनाव में हार गए, पर बाद में १९६२ के चुनाव में यशस्वी हुए, विधायक बने, मंत्री बने और मुख्य मंत्री बने अपने राजनीति के प्रगति का सारा श्रेय वे आर्यसमाज को देते हैं।

शेषरावजी ने बड़े ही तार्किक दृष्टि से कई विषयों पर विधान सभा में अपने विचार प्रस्तुत किये है। (1) Hyderabad Tenancy and Agriculture Land - Amendment Bill-1953 दि. ८ एप्रिल १९५३, (२) तकावी माफी के संदर्भ में शेषराव का वक्तव्य (३) राजप्रमुख भाषण के पश्चात् - धन्यवाद - शेषराव का निवेदन (४) Abolition of Whipping Bill, 31st July 1945 (५) Discussion on Resolution-draft-state reorganisation dated 11th April, 1956

उपर्युक्त महत्वपूर्ण विषयों के संदर्भ में शेषरावजी का मन्तव्य, उनकी बुद्धिमता का परिचायक है।

परिशिष्ठ में इन मन्तव्यों को प्रस्तुत किया गया है।



२३ हिन्दी सत्याग्रह और श्री शेषरावजी

पंजाब में हिन्दी को उचित स्थान दिलाने के लिए देश की आर्यसमाजों ने १० जून १९५७ को आन्दोलन चलाया था। यह आन्दोलन पंजाब राज्य की भाषा समस्या से जुड़ा रहा है। भाषा समस्या ही हिन्दी आन्दोलन की पार्श्वभूमि रही है। हिन्दी सत्याग्रह के स्वरूप तथा उसके कारणों को जानने के लिए पंजाब की भाषा समस्या को जानना जरूरी है।

भारत में कई भाषाएँ बोली जाती हैं। हर प्रदेश की अपनी भाषा है। सार्थक रूप में स्थापित होनेवाली समर्थ भाषा है तो वह है - हिन्दी। इसीलिए भारतीय संविधान में वह 'राजभाषा' का स्थान पा सकी है।

भारत में, कुछ ऐसे राज्य थे जिनके क्षेत्रों में अलग-अलग भाषाएँ प्रचलित थीं। बृहन् बम्बई में मराठी और गुजराती भाषा प्रचलित थी, उसी तरह पंजाब में पंजाबी और हिन्दी। भारत में भाषा के आधार पर राज्यों का निर्माण हुआ था। यथा गुजराती भाषाक्षेत्र गुजरात और मराठी भाषाक्षेत्र, महाराष्ट्र कहलाया गया। यही स्थिति पंजाब की भी थी।

भाषा के आधार पर पंजाब का भी निर्माण हुआ। यही विभाजन ही १९५७ में आर्यसमाज को हिन्दी रक्षा आन्दोलन चलाने का कारण बना। आर्यसमाज द्वारा चलाया हिन्दी आन्दोलन इतिहास का एक पृष्ठ बन गया। इस अध्याय से परिचित होना आवश्यक ही नहीं, महत्व का भी है।

भारत की स्वतंत्रता के पश्चात्, पंजाब में ऐसे क्षेत्र थे, जहाँ हिन्दी भाषा प्रमुख रही। पंजाबी बोलनेवालों की संख्या केवल ३% थी। अत: वहाँ हिन्दी को उचित स्थान देना समुचित था, पर ऐसा नहीं हुआ। पंजाबी भाषा को अधिक महत्व दिया गया। हिन्दी को उचित स्थान न देना हिन्दी भाषा भाषियों के लिए अन्यायपूर्ण था।

पंजाब के अनेक सिक्खों की यह भावना थी कि गुरुमुखी लिपि में लिखी जानेवाली पंजाबी उनकी भाषा है - पंजाबी को पंजाब की भाषा मानना चाहिए। अपनी अलग पहचान के लिए पंजाबी सूबा की माँग भी बढ़ने लगी। शासन इस प्रयत्न में था, कि पंजाब का विभाजन न करते हुए भाषा समस्या का हल किया जा

सकता है। पंजाब के मुख्य मंत्री भीमसेन सच्चर ने पंजाबी और हिन्दी को समान स्थिति प्रदान की। यह 'सच्चर फार्मूला' था। यह फार्मूला न्याय देने में असमर्थ रहा।

पंजाब में, आर्य नेताओं का ध्यान इस भाषा समस्या की ओर गया। पंजाब में हिन्दी भाषा का क्या स्थान रहेगा? पंजाबी के पूर्व क्षेत्र में - ७० प्रतिशत हिन्दी भाषियों पर पंजाबी थोपी नहीं जानी चाहिए अन्यथा आर्यसमाज आन्दोलन करने के लिए बाध्य होगा। स्थिति न बदलने पर आर्य नेताओं ने ५ मई १९५७ को हिन्दी रक्षा समिति के अंतर्गत हिन्दी रक्षा आंदोलन प्रारंभ भी कर दिया। केवल हरियाणा से ५०,००० - तथा अन्य प्रदेशों - उत्तर भारत, राजस्थान, बिहार, हैदराबाद राज्य से भी इस आन्दोलन मे सम्मिलित होने के लिए आर्यजनों का समूह उमड पड़ा। इस आन्दोलन को स्वामी आत्मानंद का नेतृत्व प्राप्त हुआ। स्वामी आत्मानंद का हर प्रयत्न असफल रहा। पंजाब के मुख्यमंत्री प्रताप सिंह कैरों अपनी पंजाबी भाषा नीति से हट नहीं सके। पं. जवाहरलाल नेहरु भी आर्यजनों की हिन्दी भाषा नीति को समझ नहीं सके। जब हिन्दी भाषा का हल ही नहीं हो रहा था तो सार्वदेशिक सभा दिल्ली ने अगस्त १९५७ में देश के आर्यसमाजों को पत्र लिखकर, हिन्दी सत्याग्रह में कूद पड़ने का आह्वान किया।

हरियाणा में हिन्दी सत्याग्रह अधिक तीव्र बना। इस सत्याग्रह में महिलाएं भी सम्मिलित हुईं। इस संघर्ष में सत्याग्रहियों को पुलिस की अमानुषता का शिकार बनना पड़ा।

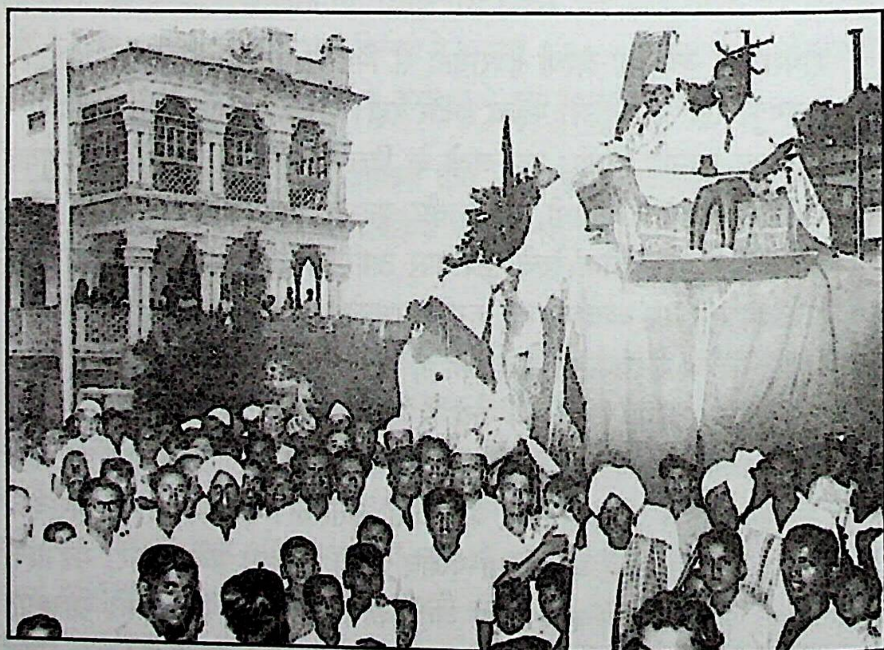
मूलतः यह सत्याग्रह वर्तमान के हरियाणा तथा पंजाब की हद तक था। इस सत्याग्रह का स्वरूप अखिल भारतीय बन गया। आर्य प्रतिनिधि सभा - मध्य दक्षिण, हैदराबाद इस आन्दालन से अपने आपको अलग रख नहीं सकी। हैदराबाद स्वयं. इस भाषा समस्या से जुड़ा हुआ था। भाषा के आधार पर १९५६ में राज्य की पुनःरचना की गयी और राज्य की भाषाओं की समस्या हल कर दी गयी थी। आर्य प्रतिनिधि सभा - हैदराबाद ने 'हिन्दी सत्याग्रह' के लिए आर्य नेताओं के नेतृत्व में अनेक जत्थों को पंजाब के प्रमुख प्रमुख शहरों में भेजा। दक्षिण के आर्य जत्थे हिन्दी रक्षा आन्दोलन में सम्मिलित हुए।

शेषरावजी जैसे आर्य नेता भी 'हिन्दी सत्याग्रह' के समर में कूद पड़े। शेषरावजी के नेतृत्व में इस जत्थे में सम्मिलित एक थे - औराद के श्री हिरामण अंबादास जोईजोडे। इस समय वे औराद आर्यसमाज के मंत्री हैं। अपने साक्षात्कार के समय उन्होंने शेषरावजी के नेतृत्व में किये गए 'हिन्दी सत्याग्रह' का आँखों देखा का हाल विदित किया। शेषरावजी के जत्थे में औराद-शहाजानी, उदगीर, निलंगा, लातूर आदि के आर्यसमाजी सम्मिलित हुए थे। यह जत्था प्रथम भालकी से गुजरा, तो वहाँ के आर्यसमाज ने इस जत्थे का स्वागत किया। इस जत्थे के हैदराबाद पहुँचने पर वहाँ आर्य प्रतिनिधि सभा, तथा वहाँ के आर्यसमाजोंने इस जत्थे का बड़े ही जोश के साथ स्वागत किया। शेषरावजी को हाथी पर बिठाकर हैदराबाद के किशनगंज से आर्यसमाज सुलतान बाज़ार तक शोभा यात्रा निकाली गयी। इस शोभा यात्रा में प. नरेन्द्रजी, श्री विनायकराव, बन्सीलालजी व्यास, पं. मनोहर लालजी, पं. गंगारामजी आदि आर्य जगत् के दिग्गज नेता और ५००० से अधिक आर्यजन सम्मिलित हुए थे। पंजाब में हिन्दी को उचित स्थान देने सम्बन्धी घोषणाओं से हैदराबाद शहर गूंज उठा था।

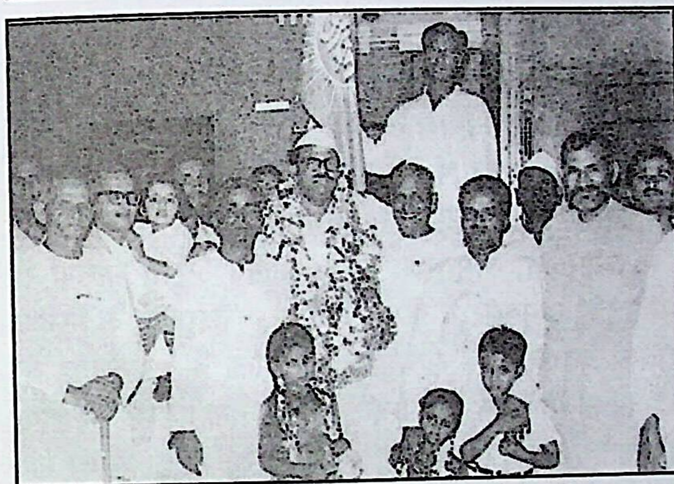
शेषरावजी का यह जत्था हैदराबाद से निकल पड़ा। इस जत्थे का पहला पड़ाव नागपुर रहा और दूसरा पड़ाव इन्दौर रहा। पड़ाव में वहाँ की आर्यसमाजों ने इस जत्थे का स्वागत किया। इस जत्थे के दिल्ली पहुँचने पर जत्थे की अगुवाई करने के लिए आनन्द स्वामी, प्रकाशवीर शास्त्री, रामगोपाल शालवाले, ओम प्रकाशजी त्यागी, आदि नेता रेल्वे स्टेशनपर उपस्थित थे। पं. प्रकाशवीर शास्त्रीजी इस जत्थे की समुचित व्यवस्था की कमान संभाले हुए थे। सत्याग्रह की तीव्रता को देखते हुए, पंजाब सरकार ने सत्याग्रहियों के जत्थों को पंजाब प्रदेश में प्रवेश करने पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। जैसे ही कोई जत्था पंजाब राज्य की सीमा पर पहुँचता, वहीं धरपकड़ शुरु होती थी और सत्याग्रहियों को लाठी से पीटा भी जाता था। फिर उन्हें पंजाब प्रदेश से बाहर कर दिया जाता था। ऐसी स्थिति में शेषरावजी के नेतृत्व में सत्याग्रहियों का जत्था पंजाब राज्य में कैसे प्रवेश करे, यह एक समस्या थी। शेषरावजी ने कहा ''इस जत्थे को किस शहर में पहुँचकर सत्याग्रह करना है इतना ही बताईए। सत्याग्रहियों की तनिक भी चिन्ता न करते हुए, जत्था पंजाब में कैसे पहुँचे, इसका निर्णय मुझ पर छोड़ दीजिए।'' इस जत्थे को अमृतसर



स्थान : आर्यसमाज दीवान हॉल, दिल्ली; हैदराबाद से पं. शेषरावजी वाघमारे के नेतृत्व में आये हिन्दी सत्याग्रही जत्थे का दिल्ली के आर्यसमाजों द्वारा स्वागत; चित्र में पं. देशबंधु जी औराद (शहा.) श्री एकनाथराव गायकवाड (लातूर) श्री. हिरामण डोई जोडे (औराद शहा.) (१९५७)



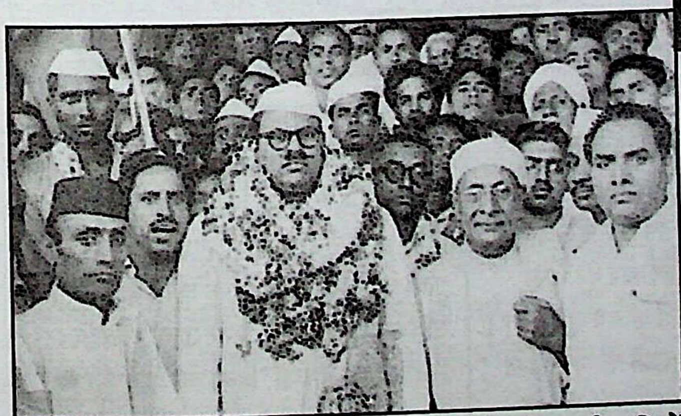
किसी विजयादशमी के अवसर पर, सुलतान बाजार- आर्य समाज द्वारा निकाले शोभा यात्रा में - हाथी पर बैठे हुए विधायक श्री. शेषरावजी वाघमारे- (अनुमानत: १९५६-५७)।



श्री शेषरावजी वाघमारे के नेतृत्व में हिन्दी रक्षा आन्दोलन के लिए जा रहे जत्थे का हैदराबाद के आर्यजनों द्वारा हैदराबाद रेलवे स्टेशन पर दी गई भावपूर्ण विदाई का चित्र; चित्र में पं. मंगलदेव जी (बाँये में प्रथम), पास में बालक को लिये खडे डॉ. ओम प्रकाश जी आयुर्वेदालंकार) पं. मंगलदेव जी के पीछे कोने में प्रा. वेद्कुमार वेदालंकार, पं. शेषरावजी के दाँयें श्री बाल रेड्डी जी, बायें- पं. मनोहरलाल जी तथा पं. गंगाराम जी बी.ए., उनके पास पं. श्याम पराशर जी (पंजाब) रेलवे के द्वार में खडे श्री विनयकुमार जी।



हिन्दी रक्षा आंदोलन में कपूरथला (पंजाब) जेल से छूटने के बाद श्री शेषराव जी वाघमारे वकील (दि. १९-१२-१९५७) चित्र का स्थान - हैदराबाद



हिन्दी रक्षा आन्दोलन के नेता श्री शेषरावजी का दिल्ली के आर्यनागरिकों की ओर से हार्दिक स्वागत। दायीं ओर से श्री रामगोपालजी शालवाले, श्री. शेषरावजी वाघमारे, पीछे पं. देशबन्धु जी, महात्मा आनन्द स्वामीजी, श्री ओम् प्रकाश जी पुरुषार्थी।

पहुँचकर सत्याग्रह करना था। शेषरावजी ने योजना बनाई - सत्याग्रही समूह में न चलते हुए, रेल के अलग अलग डिब्बे में बैठेंगे। अमृतसर पहुँचने पर, स्टेशन से अलग अलग ही, अलग मार्गों से आर्यसमाज लोहगड़ चौक पहुँचेंगे। एक निश्चित समय पर उस चौक में सत्याग्रही समूह में सम्मिलित होंगे और सत्याग्रह प्रारम्भ करेंगे। इस योजना के अनुसार ही, इस जत्थे के सत्याग्रही दिल्ली से ही रेल के अलग अलग डिब्बे में सवार हो, अमृतसर पहुँचे। अलग अलग साधनों से आर्यसमाज के चौक में पहुँचे। अमृतसर में पोस्टर लगे थे - 'हैदराबाद के निज़ाम को मिटानेवाले शेषरावजी का जत्था - सत्याग्रह करनेवाला है'। सत्याग्रह के समूह ने पंजाब में हिन्दी को उचित स्थान देने सम्बन्धी घोषणा देना प्रारम्भ कर दिया और पंजाब की पुलिस देखती ही रही। तत्पश्चात्, इस जत्थे को भी पुलिस की मार सहनी पडी, सत्याग्रहियों की धरपकड़ शुरू हुई। प्रथम इस जत्थे को पुलिस कस्टडी दी गयी और बाद में कपूरथला की जेल में दो महीने के लिए रखा गया।

श्री हिरामणजी बता रहे थे - शेषरावजी एक प्रतिष्ठित आर्य नेता थे। इसलिए उन्हे जेल की A श्रेणी के कमरे में रखा गया। इस व्यवस्था को ठुकराते हुए, शेषरावजी ने सब सत्याग्रहियों के बीच में रहना पसंद किया और दो महीने तक जेल में सत्याग्रहियों के साथ ही रहे। सत्याग्रहियों को दिया जानेवाला भोजन ही वे करते थे। यह कहानी है एक आर्य नेता की, हिन्दी के भक्त - सत्याग्रही शेषरावजी की।

हिन्दी की महत्ता

अंग्रेजी पढि कै जदपि सब गुन होत प्रवीन।
पै निज भाषा ज्ञान के रहत हीन के हीन।।
- भारतेन्दू हरिश्चन्द्र

हिन्दी जन की सुरसरी, हिन्दी भव का प्राण।
जनमानस को सींचती, तन से मन से प्राण।।
हिन्दी वेदों की ऋचा, अग्निहोत्र का धूम।
तर जाते हैं देव भी, हिन्दी के पग चूम।।
हिन्दी सूर कबीर की, तुलसी की मुसकान।
मीरा के घनश्याम हों मानुष वहि रसखान।।
महादेवी की साधना, शुक्ल, गुप्त की शान्ति।
हिन्दी पंत, प्रसाद की, सूर्यकान्त की कान्ति।।
हिन्दी जीजाबाई है, वीर शिवा की शान।
भूषण की कविता प्रखर, छत्रसाल का मान।।
आजादी के बिगुल में, हिन्दी का ही नाद।
कूद पड़े रण में निडर, सिंह छोड़कर माद।।
हिन्दी ही बनकर लड़ी, सत्याग्रह का मंत्र।
गांधी को उसने दिया, लोक लोक का तंत्र।।
संविधान तो बन गया, मगर उलट व्यवहार।
सिंहासन पर है कहाँ, हिन्दी का अधिकार।।
एक प्रतिष्ठा, एक मन, एक कर्म विश्वास।
हिन्दी पथ पर सुन्दरम्, सत्य शिवम् की आस।।

- 'देवेन्द्र सतसई', कवि डॉ. देवेन्द्र से साभार

२४ श्री शेषरावजी आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता के रुप में

हैदराबाद मुक्ति संग्राम के पश्चात् राज्य में स्वाधीनता और प्रजातंत्र का नया युग प्रारम्भ हुआ। ऐसे समय आर्यसमाज को एक नयी परिवर्तन दिशा की ओर अग्रसर होना पडा - वह दिशा थी रचनात्मक कार्य की। रचनात्मक कार्य के उत्तरदायित्व को निभाने की चुनौती सभी आर्यसमाजियों पर आ पड़ी थी। उनके सम्मुख यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि आर्यसमाज का भविष्य क्या हो?। हैदराबाद मुक्तिसंग्राम की सफलता आर्यसमाज का एक मात्र उद्देश्य कभी नहीं रहा। संपूर्ण समाज का ढ़ाँचा बदलना था, रचनात्मक कार्य के नये मोड़ पर बढना था। प्रचार के नये माध्यम, नयी नीति अपनायी जाना आवश्यक था। इन्हीं बातों का विचार कर आर्यसमाज ने अपनी अगली यात्रा प्रारम्भ कर दी।

पं. बन्सीलालजी और श्यामलालजी की प्रेरणा से श्री शेषरावजी आर्यसमाज की ओर आकर्षित हुए थे, तब से ही आर्यसमाज के प्रचारक के रूप में उनकी यात्रा का प्रारम्भ होता है। यह यात्रा सन् १९२६ से प्रारम्भ होती है और उनके देहावसान तक चलती रहती है। यात्रा के अनेक पड़ावों को पार करते हुए शेषरावजी ने आर्यसमाज का एक कार्यकर्ता, एक प्रचारक आदि रूपों में प्रदीर्घ यात्रा की है।

शेषरावजी ने आर्य सिद्धान्तों के प्रचार के लिए प्रथम अपने परिवार को ही आर्यसमाज का मंच बनाया। अपने परिवार-मंच से ही आर्यसमाज का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। वे नित्य प्रति अपने परिवार के सदस्यों के साथ, संध्या करते, यज्ञ सम्पन्न करते, भजन गीत गाते और सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय करते रहते थे। उनका पूरा परिवार आर्यसमाज से अभिन्न से जुड़ा रहा। निलंगा आर्यसमाज के साप्ताहिक सत्संग में परिवार के सभी सदस्य सम्मिलित होते रहे और अन्यों को भी सम्मिलित होने के लिए प्रेरित करते रहे।

'जन्मना जायते शूद्रः संस्काराद् द्विज उच्यते।

वेदपाठी भवेद्विप्रः ब्रह्म जानाति ब्राह्मणः।।

शेषरावजी ने इस वैदिक सिद्धांत को भलीभांति जाना था। ऋषिवर दयानन्द

के विचारों में वे रमे हुए थे। वैष्णव परिवार में जन्मे और उसी वातावरण में पले हुए शेषरावजी ने सदियों से चली आ रही जातिप्रथा समाप्त करने का कार्य प्रथम अपने घर से ही प्रारम्भ किया। वे चाहते थे कि बहन सरला का विवाह जाति बन्ध तोड़कर गुण कर्म और स्वभावानुसार हो। समयानुसार, सरला का विवाह लाहौर उपदेशक विद्यालय में शिक्षित श्री वामनरावजी येळणूरकर से सं १९४१ के लातूर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव में सम्पन्न हुआ। यह वैदिक पद्धति से संपन्न हुआ आदर्श विवाह था। इस विवाह में केवल २५/ रू. खर्च हुए थे।

वैसे देखा जाए तो यह विवाह अन्तर्जातीय विवाह नहीं था। ब्राह्मण परिवारों में ही था, किन्तु शाखाएँ अलग अलग थीं। इसपर भी शेषरावजी को अपनी माताजी के क्रोध का सामना करना पड़ा और माताजी के जूतों की मार सहनी पड़ी किन्तु उन्होंने कुछ बुरा माना नहीं। वे अपने ब्राह्मण समाज से बहिष्कृत भी हुए, पर उन्होंने कभी चिन्ता नहीं की। यह उनके आर्यसमाज का एक पड़ाव रहा है।

अगले पड़ाव में, उन्होंने अपने पुत्रियों, पुत्रों का विवाह जाति प्रथा को तोड़ते हुए किया। वे दम्पति हैं - प्रा. हरिश्चन्द्रजी रेणापूरकर और श्रीमती सत्यवती (विवाह-१९५१), प्रा. वेद्कुमारजी वेदालंकार और श्रीमती प्रतिभा (विवाह - १९५५), डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे और श्रीमती सविता (विवाह-१९६७), प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी और श्रीमती उर्मिला (विवाह - १९६८), पुत्र ॲडव्होकेट विजयकुमार वाघमारे और श्रीमती सुमति (विवाह - १९६४), डॉ. शरदचन्द्र वाघमारे और श्रीमती वासन्ती (विवाह - १९६८), भरत वाघमारे और श्रीमती सुचेता (१९७९)। इनमें दो एक विवाह अन्तर्जातीय न होकर परंपरागत जाति से सम्बन्धित रहे - यह परिवार भी वैदिक विचारों से संपन्न था। इस तरह शेषरावजी ने जाति के बंन्धन को तोड़कर, विवाह सम्बन्ध स्थापित कर, समाज में प्रचलित जातिप्रथा के कृत्रिम भेदभाव के निर्मूलन करने में उल्लेखनीय कार्य किया है। साथ ही उन्होंने इस कार्य के माध्यम से वैदिक सिद्धान्त का प्रचार भी किया है। यह कार्य उनके परिवार तक ही सीमित न रहा - दामाद तथा पुत्र अगली पीढी भी इसी वैदिक सिद्धान्त के पालन करने में अग्रेसर रही है। शेषरावजी के प्रारम्भिक साथियों में, श्री बलीराम पाटील, पानचिंचोली के श्री नरसिंहराव मदनसुरे, श्री पहलवान आदि ने भी उन्ही से प्रेरणा प्राप्त कर जाति प्रथा के बन्धन को तोड़ा और उन्होंने अपने

पुत्र-पुत्रियोंका अन्तर्जातीय विवाह किया।

शेषरावजी अपने प्रारम्भिक पड़ाव में ही आर्य नेताओं से भलीभांति परिचित थे - पं. बन्सीलालजी, पं. श्यामलालजी, पं. महात्मा नारायण स्वामी, स्वतंत्रानंदजी के अतिरिक्त प्रारंभिक आर्यनेता, प. नरेन्द्रजी, श्री विनायकरावजी, पं. मनोहरलालजी, आदि के समीप आये, तत् पश्चात् पं. प्रकाश वीर शास्त्री, महात्मा आनन्द स्वामी, ओमप्रकाशजी त्यागी, रामगोपालजी शालवाले और अन्य नेतागणों के सानिध्य में वे आये। उनका कार्यक्षेत्र भी बढ़ता गयां। वे निलंगा तथा आसपास के आर्यसमाजों के कार्यक्रमों में आर्य विद्वानों को आमंत्रित कर, उनके साथ प्रचार कार्य में भी लगे रहे। मराठवाड़ा तथा हैदराबाद कर्नाटक का शायद कोई आर्यसमाज शेष नहीं रहा होगा, जहाँ वे न गये हों और आर्यसमाज के कार्यक्रमों - वार्षिक उत्सव, श्रावणी पर्व आदि विशेष अवसर पर आर्यसमाज का प्रचार न किया हो। वे इस बात को अच्छी तरह से जानते थे कि प्रचारकार्य में आर्य सिद्धान्तों का प्रतिपादन करना आवश्यक हो जाता है। अत: उन्होंने अपने घर में ही आर्य सिद्धांतो का एक छोटा सा ग्रन्थालय भी स्थापित किया था। विविध विषयों से सम्बन्धित ग्रन्थों से उनकी अलमारियाँ भरी रहती थी। वे जहाँ जहाँ जाते, अच्छे ग्रंथो को खरीदते रहे, और उनका स्वाध्याय भी करते रहें। स्वाध्याय का परिणाम निश्चित रूप से, उनके प्रचार व्याख्यानों, प्रवचनों में परिलक्षित होता रहा है।

शेषरावजी आर्य प्रतिनिधि सभा - हैदराबाद से जुड़े रहे। प्रथम वे सभा के अन्तरंग सदस्य, तत् पश्चात् उपप्रधान, मंत्री, प्रधानपद पर रहकर आर्यसमाज की गतिविधियों को बढ़ाते रहे। वे सार्वदेशिक सभा दिल्ली के अन्तरंग सवस्य भी बने और राष्ट्रीय स्तर पर आर्यजगत् के श्रेष्ठ कार्यकर्ता, विद्वान के रूप में गिने जाने लगे। हैदराबाद का आर्य महासम्मेलन (१९६८) अपने आप में एक अलग स्थान रखता है। इसी सम्मेलन में ओम् प्रकाशजी वर्मा, भजनोपदेशक, यमुनानगर तथा शेषरावजी वाघमारे के कारण ही स्वामी अग्निवेश तथा इन्द्रवेशजी प्रथम बार ही आर्य मंच पर आये। स्वामी अग्निवेशजी के प्रभावी वक्तृत्व के कारण ही शेषरावजी ने आर्य सिद्धान्त के प्रचार के लिए अपनी निजी जमीन उन्हें देने की घोषणा की थी ताकि अग्निवेशजी प्रचार का केन्द्र मराठवाड़ा में स्थापित कर

सकें। शेषरावजी वाघमारे और श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी ने मराठवाड़ा तथा कर्नाटक के आर्यसमाजों में स्वामी अग्निवेशजी के व्याख्यान आयोजित किये। अग्निवेशजी के आगामी जीवन की गतिविधियों को प्रतिपादित करने का यह स्थान नहीं है। पं. ओम् प्रकाशजी वर्मा के सस्मरण में कुछेक घटनाओं का उल्लेख जरूर है।

हैदराबाद का आर्य महासम्मेलन (१९६८), अलवर का महासम्मेलन (१९७२), अजमेर का स्वामी दयानन्द निर्वाण-शताब्दी समारोह (१९८३), दिल्ली का आर्यसम्मेलन ऐसे महासम्मेलन के मंच पर शेषरावजी बिराजित हुए और उन्होंने सम्मान पाया। दिल्ली के आर्य महासम्मेलन (१९७५), तथा मेरठ (१९७६) के आर्यसम्मेलन में शेषरावजी को हाथी पर बिठाकर, शोभा यात्रा निकाली गयी। पं. ओमप्रकाशजी वर्मा बतला रहे थे - दिल्ली के निवासी जो शोभा यात्रा में सम्मिलित हुए थे कह रहे थे ''हमने हाथी को देखा है, पर एक बाघ पर हाथी सवार है - यह देखा नहीं था''।

गुंजोटी (मराठवाड़ा) का आर्य महासम्मेलन सन् १९७१ में संपन्न हुआ। इस सम्मेलन के वे अध्यक्ष रहे।

इस सम्मेलन की तैयारी के लिए पं. नरेन्द्रजी, गुंजोटी पहुँचे थे। महात्मा आनंद स्वामीजी, स्वामी अग्निवेश, पं. ओमप्रकाश वर्मा, आचार्य कृष्णजी, राम गोपाल शालवाले, ओमप्रकाशजी त्यागी आदि आर्य विद्वान इस सम्मेलन में सम्मिलित हुए थे। मराठवाड़ा और अन्य प्रदेश के आर्यजन भी काफी संख्या में उपस्थित थे। सम्मेलन संपन्न होने के पश्चात् आर्य प्रतिनिधि सभा - हैदराबाद ने 'आर्य जीवन' विशेषांक पं. नरेन्द्रजी के सम्पादकीय में प्रकाशित किया। यह विशेषांक शेषरावजी के गौरवपूर्ण जीवन को अभिव्यक्त करता है। 'सम्मेलन के अवसर पर, श्री शेषरावजी की शोभायात्रा निकाली गयी। उसका वर्णन 'आर्य जीवन' ने इस प्रकार किया है 'आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष श्री शेषरावजी की शोभा यात्रा - उमरगा से गुंजोटी तक ३ मील की रही। शोभायात्रा के सम्मुख उष्ट्रा-रोही, अश्वा रोही और मोटर साइकलोंपर, आर्यजनों के दस्ते चल रहे थे। पीछे विभिन्न प्रदेशों से आये हुए आर्यसमाजी 'ओ३म्' का झंडा लिए, वैदिक जयघोषो से आकाश गुंजित करते हुए आगे बढ़ते रहे। सबसे पीछे पुष्पालकृंत जीप में आर्यनेता अध्यक्ष महोदय श्री शेषरावजी वाघमारे स्वागताध्यक्ष भास्कर

राव चालुक्य, स्वामी अग्निवेशजी बिराजमान थे। यह यात्रा ५ बजे सायं प्रारम्भ होकर रात्रि ८ बजे समाप्त हुई। मार्ग में माताओं ने शोभा यात्रा की आरती उतारी (''आर्य जीवन'' मराठवाड़ा आर्य महासम्मेलन विशेषांक 'मराठवाड़ा सम्मेलन एक झांकी - पृं १४)

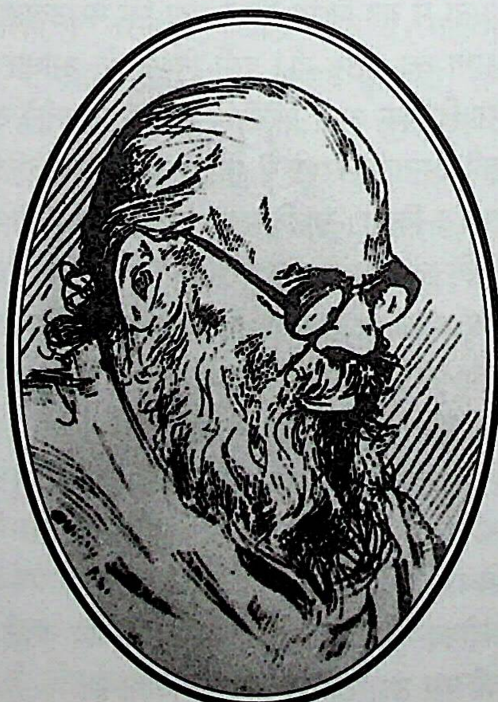
श्री शेषरावजी का अध्यक्षीय भाषण आर्यसमाज की गतिविधियों के विविध आयामों को स्पर्श करनेवाला रहा है। इस भाषण को अन्यत्र परिशिष्ट में स्थान दिया गया है।

१९५६ में, हैदराबाद राज्य.की भाषा के आधार पर पुनः रचना की गयी। मराठवाड़ा महाराष्ट्र राज्य में सम्मिलित हुआ। कुछ वर्ष बीतने के पश्चात् यह अनुभव किया जाने लगा कि स्वतंत्र रूप से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि का गठन हो। इसकी मांग जब बढ़ने लगी तब शेषरावजी आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद के सम्मानित अंग थे। फिर भी वे एक अलग से प्रतिनिधि सभा की मांग में सक्रिय रहे। आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद ने इस मांग को सकारात्मक दृष्टि से देखा और अन्त में यह निर्णय लिया गया कि मराठवाड़ा के लिए एक अलग आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन हो। इसी निर्णय के आधार आर्य जगत की सर्वोच्च संस्था - सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा - दिल्लीने अपने दि. १०, ११ जुलै १९७६ की अन्तरंग सभा में महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा स्थापन करने का प्रस्ताव पारित किया। सार्वदेशिक सभा की अनुमति मिलने पर दि. ५/३/१९७७ को विधिवत् महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन वाजेगाव नान्देड में किया गया। इस नवगठित सभा के प्रधान पद पर शेषरावजी का सर्वसम्मति से चुना जाना तय था - केवल घोषणा मात्र करनी थी, किन्तु डॉ. सुग्रीवजी काळे (वर्तमान में स्वामी ब्रह्ममुनि) ने प्रधान पद के लिए - अपना नया सूझाव प्रस्तुत किया कि इस पद के लिए किसी वानप्रस्थी, सन्यासी को ही चुना जाना चाहिए और यहीं परम्परा भविष्य में भी होनी चाहिए। श्री शेषरावजी ने इस प्रस्ताव का हृदय से स्वागत किया। स्वामी सदानन्दजी विदर्भ, तथा धर्मवीरजी पुणे को क्रमशः प्रधान और मंत्रीपद के लिए चुना गया। डॉ. सुग्रीव काळे ने अपने संस्मरण में श्री शेषरावजी की इस उदारता का उल्लेख किया है।



पं. शेषराव जी वाघमारे वानप्रस्थ दीक्षा समारोह। स्थान : आर्यसमाज धाराशिव (उस्मानाबाद)। पुरोहित - पं. वेद्कुमार वेदालंकार —

समीप खडे हुए - श्री. आर्यमुनि वानप्रस्थ श्रीमती सरलादेवी वानप्रस्थ



त्यागी, तपस्वी महात्मा आनंदमुनिजी

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के गठन के पश्चात् श्री शेषरावजी, बापूराव मास्तर (उस्मानाबाद) और दौलतराव गिरवलकर (परली वैजनाथ) हैदराबाद गये और वहाँ की सभा से महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आनेवाली सभी आर्यसमाजों की फाईले प्राप्त कर लीं। १०२ आर्यसमाजों की फाईले इस समय महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा, परली वैजनाथ में सुरक्षित रखी हैं। वे किसी इच्छुक अनुसंधाता को आर्यसमाज के इतिहास लेखन में सहायक सिद्ध हो सकती हैं।

इसी काल में शेषरावजी ने वैदिक धर्म को निभाते हुए आर्यसमाज उस्मानाबाद में वानप्रस्था श्रम की दीक्षा ली और उनका नामकरण हुआ महात्मा आनंद मुनि। (इस सस्मरण का बड़ा ही रोचक प्रसंग संस्मरण के अंश में अंकित है)। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा प्रारम्भिक अवस्था से नये युग मे प्रवेश कर, वैदिक सिद्धान्तों का केन्द्र बनी रही।

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का दि. २१/१२/१९८० में चुनाव सम्पन्न हुआ और इस चुनाव में सर्व संमति से महत्मा आनन्द मुनि और हरिश्चन्द्र गुरुजी, क्रमशः प्रधान तथा मंत्रीपद के लिए चुने गये। सभा के एक छोटे से कमरे में रहते हुए, शेषरावजी ने सभा को अपने प्रचार कार्य का प्रमुख केन्द्र बनाया। वहाँ के निवास काल में उन्हें काफी कष्ट उठाने पड़े। कभी शेषरावजी भोजन प्रिय रहे थे। यहाँ पर महात्मा आनन्द मुनि को भोजन के लाले पड़ने लगे। किसी तरह एक सहायक की मदद से अपनी क्षुधा पूर्ति करते रहे, किन्तु सभा के कार्य में किसी प्रकार की ढिलाई आने न दी। उस समय के सभा के भजनोपदेशक श्री चन्द्रशेखर लोखंडे अपने साक्षात्कार मे कहते हैं ''श्री आनन्द मुनि ने वेद प्रचार को प्राथमिकता देकर जिला स्तर पर आर्य प्रचार समिति का गठन किया और इस समिति के माध्यम से प्रचार कार्य को आगे बढ़ाया। वे स्वयं भी देहात देहातों में प्रचार कार्य के लिए कभी बैलगाड़ी पर, कभी घोडे पर सवार हो निकल पडते थे और वैदिक प्रचार में लगे रहते थे। ऐसे देहातों के नाम हैं - पानगांव, रेणापुर, कारेपुर, खरोळा, जानगांव, वडवल, आदि। इन दिनों में वे दिन में एक ही समय भोजन करते थे। भोजन न मिलने पर चिउडा.(महाराष्ट्रीयन खाद्य पदार्थ) बनाते, उसी से भोजन का काम चलाते रहते। रात्रि में रहने की व्यवस्था यदि न होती तो, गांव के मंदिर, चावड़ी में रात काटते थे पर प्रचार कार्य में कभी शिथिलता न आने देते थे। वे

विनोद प्रचुर व्याख्यानों में कुशल थे। सीधे साधे उदाहरण, चुटकुले आदि प्रस्तुत कर वे अपने व्याख्यान सारगर्भित करते थे। मैं भजनों द्वारा अपने मंतव्यो को रखता था। चार वर्ष तक, उनके साथ वैदिक प्रचार कार्य में लगा रहा। मैं आज जो कुछ भी हूँ उसका श्रेय पू. पिताजी शेषरावजी को ही है।''

महात्मा आनन्द मुनि के प्रधान पद के कार्यकाल में 'वैदिक गर्जना' के प्रकाशन का निर्णय, पं.नरेन्द्रजी के स्मरण में स्वामी सोमानन्द भवन निर्माण का निर्णय (अन्तरंग सभा दि. १९/७/८१), महाराष्ट्र आर्य महासम्मेलन, नान्देड में आयोजित करने का निर्णय (दि. ३/१२/१९८२ - सभा निर्णय) महर्षि दयानन्द सरस्वती - निर्वाण शताब्दी समारोह को सफल बनाने के लिए परोपकारिणी सभा अजमेर को सहयोग प्रदान करने का निर्णय (४ जुलै - १९८२ सभा निर्णय), सभा के अंतर्गत शिक्षा संस्थाओं की पूर्ण जानकारी प्राप्त करने का निर्णय (२१ नोव्हे. १९८२ गुंजाटी की सभा), संस्कार शिबिर और मानव संस्कार शिबिर के आयोजन का निर्णय, अजमेर के समारोह के लिए सोमानन्द ट्रेन की योजना का निर्णय (कमलाकर वकील, लातूर के निवास स्थान पर सभा दि. १ एप्रिल १९८३), पंजाब की विस्फोटक घटना पर चर्चा, इसके अन्तर्गत अमृतसर के गुरुद्वारा में छिपे हुए, हथियारों से लैस भिन्द्रनवाला और साथियों को गुरुद्वारा से बाहर निकालकर शांति का वातावरण बनाना - गुरुद्वारा की सुरक्षितता सम्बन्धित प्रस्ताव पारित कर पंजाब शासन को भेजने का निर्णय (उस्मानाबाद आर्यसमाज में आयोजित सभा दि. १८ सितम्बर १९८३) आदि प्रमुख निर्णय लिए गये - कार्यवाही की दृष्टि से सकारात्मक कदम भी उठाया गया।

महात्मा आनन्दमुनि के प्रधानपद के कार्यकाल में ही, वैदिक सेवाश्रम वाजेगांव, नान्देड में ही दि. २३, २४, २५ एप्रिल १९८२ को महाराष्ट्र प्रान्तीय प्रथम आर्यमहासम्मेलन आयोजित किया गया। इस सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष कॅप्टन देवरत्नजी थे और स्वामी ओमानन्द सरस्वती इस सम्मेलन के अध्यक्ष थे। आचार्य आर्य नरेशजी, स्वामी सत्यप्रकाशजी, वैद्यनाथजी शास्त्री, प्रा.राजेन्द्रजी जिज्ञासू आदि विद्वानों के इस सम्मेलन में सम्मिलित होने से, इस सम्मेलन की गरिमा बढ़ गयी। इस सम्मेलन में भारत के अतीत की गौरवमय संस्कृति, राष्ट्र उत्थान, वैदिक सिद्धांतो को प्रतिपादित किया गया। आर्य जगत के प्रसिद्ध नेता

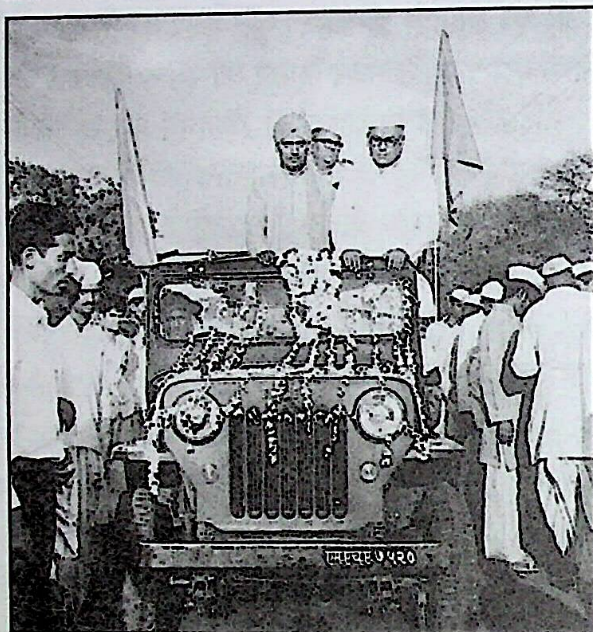
स्व. पं. नरेन्द्रजी (सोमानन्दजी) की स्मृति में सोमानन्द स्मृति भवन का शिलान्यास किया गया। आनन्द मुनि का सोमानन्द स्मृति भवन निर्माण का स्वप्न पूर्ति का यह प्रारम्भ था। इस अवसर पर वैदिक गर्जना विशेषांक का विमोचन प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु के करकमलों से हुआ। इस प्रकार यह महाराष्ट्रीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन अनेक विद्वानों की उपस्थिति में, तथा उनके वैदिक सिद्धान्तों के प्रतिपादन से आर्यजनों के सहयोग से बड़े ही धूम धाम से संपन्न हुआ। महात्मा आनन्द मुनि जी के प्रधान पद का यह एक उच्चतम कार्य रहा है, निश्चय ही मराठवाड़ा आर्य महासम्मेलन इतिहास का एक महत्वपूर्ण पृष्ठ रहा है।

महात्मा आनन्द मुनि के प्रधान पद के कार्यकाल में पारित किये गए प्रस्तावों में उनकी सूझबूझ का परिचय मिलता है। उस समय से आज तक 'वैदिक गर्जना' प्रकाशित होती है - इस मासिक पत्र के माध्यम से सभा की गतिविधियाँ, तथा वैदिक सिद्धांतो का परिचय आर्य जगत् को दिया जाता है। स्वयं आनन्द मुनि कई आर्यजनोंको लिए ऋषिवर निर्वाण शताब्दी महोत्सव अजमेर (१९८४) में सम्मिलित हो, महोत्सव की सफलता के लिए प्रयत्नशील रहे। सभा के निर्णयानुसार श्रीमती सुमित्रादेवी, भाई बापू साहब वाघमारे, बापूसाहब की धर्मपत्नी श्रीमती सिन्धु, बहनोई वानप्रस्थ आर्यमुनि और बहन श्रीमती सरलादेवी जी एक महीना पूर्व ही तथा आनन्दमुनि कुछ दिन पूर्व अजमेर पहुँचकर महोत्सव समिति के हर कार्य में अपना अमूल्य योगदान देते रहे। परोपकारिणी ने इस समारोह के विशेषांक में वाघमारे परिवार के योगदान की प्रशंसा की है।

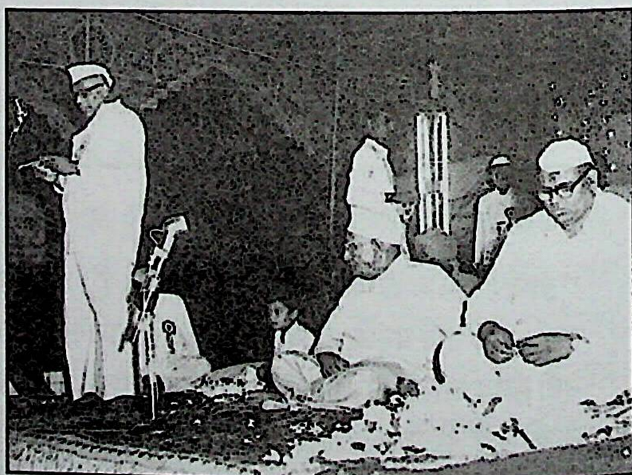
वेद कहते हैं -

''ईश्वर पुरुषार्थी मनुष्यपर कृपा करता है, आलस्य करने वाले पर नहीं। जब तक मनुष्य पुरुषार्थ नही करेगा तब तक ईश्वरी कृपाका भागी नही होगा और अपने किये कर्मोंसे प्राप्त पदार्थों की रक्षा करने में समर्थ कभी नहीं हो सकता। इस लिए हम सब मनुष्यों को पुरुषार्थी होकर ही ईश्वरकी कृपाका भागी होना चाहिए।

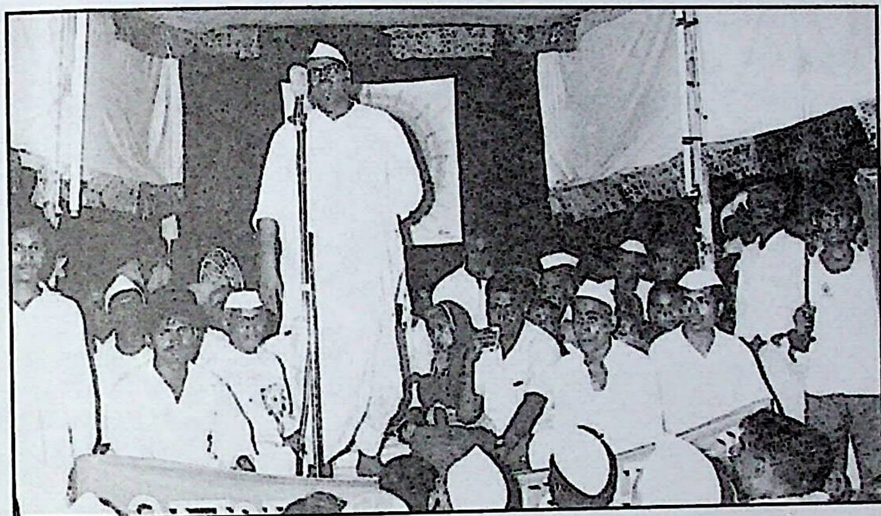
(ऋग्वेद - १-४-७)



आर्य महा सम्मेलन, गुंजोटी (१९७१) उमरगा से गुंजोटी शोभा-यात्रा (जीप पर आरूढ) स्वामी अग्निवेश जी, स्वागताध्यक्ष- श्री भास्करराव चालुक्य (पीछे) संमेलनाध्यक्ष - श्री शेषराव जी वाघमारे

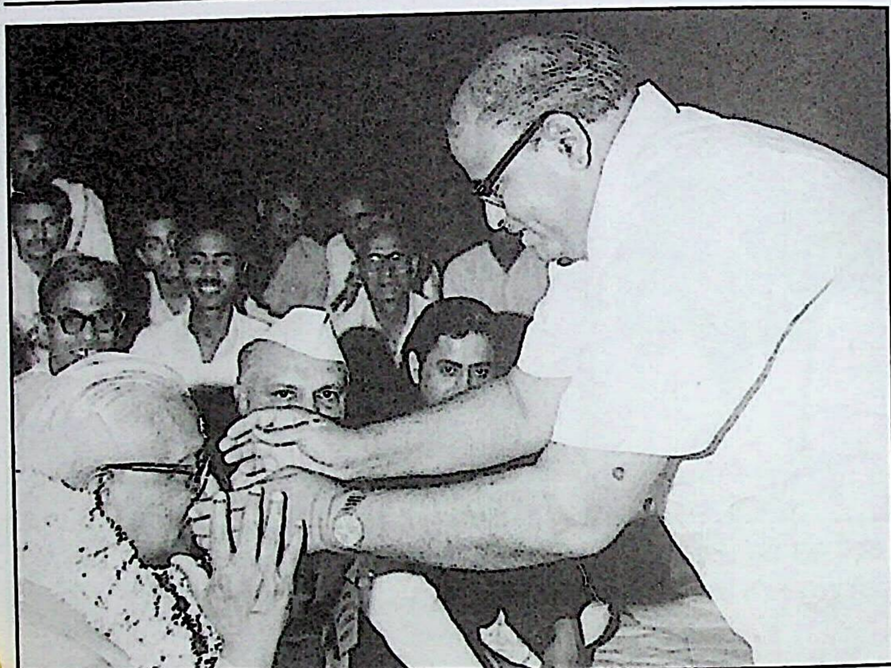


आर्य महासम्मेलन- गुंजोटी (१९७१) मंच पर, महात्मा आनन्द स्वामी जी और सम्मेलन के अध्यक्ष श्री. शेषराव जी। (भाषण करते हुए) श्री. भास्करराव जी चालुक्य, स्वागताध्यक्ष

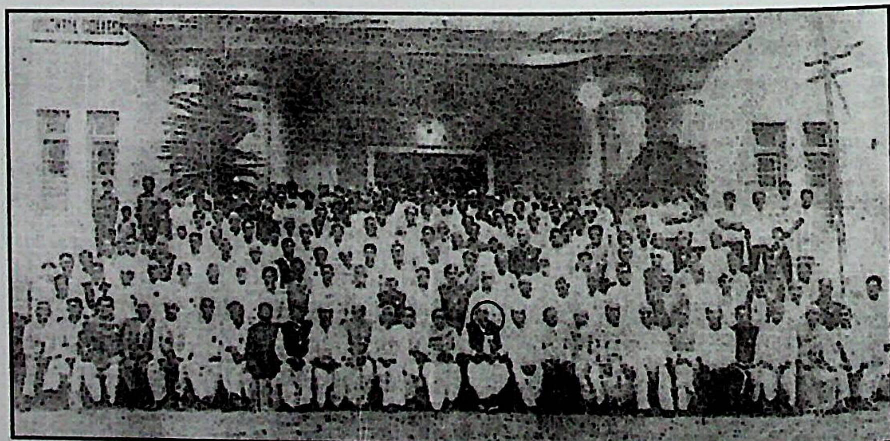


आर्य महा सम्मेलन गुंजोरी (१९७१) सम्मेलन के अध्यक्ष श्री. शेषरावजी वाघमारे (भाषण देते हुए) (मंच पर) पं. नरेन्द्र जी पं. गोपालदेव जी श्री लक्ष्मण राव गणुरे, बसव - कल्याण तथा अन्य कार्यकर्ता।

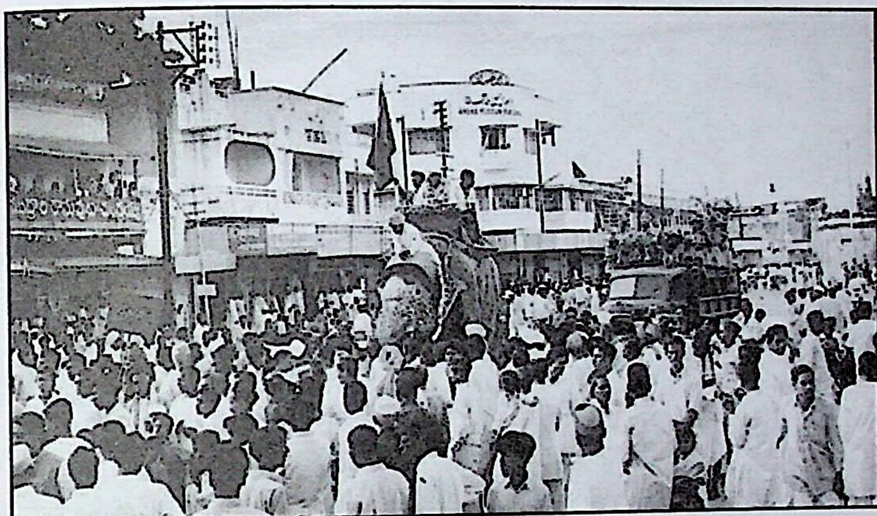
आर्य महा सम्मेलन गुंजोटी (१९७१) अध्यक्षीय भाषण करते हुए (मंच पर) श्री. संग्राम माकणीकर, श्री. भास्करराव जी चालुक्य, श्री. आचार्य कृष्ण जी।



आर्य महासम्मेलन, अलवर राजस्थान) (१९७२) मॉरीशस के प्रधानमंत्री मा. श्री.शिवसागर रामगुलाम का स्वागत करते हुए- श्री. शेषराव जी वाघमारे।



(२९ अक्तूबर १९४२) श्री. शेषराव जी (बैठी हुई पंक्ति के मध्य में) (गोलाकार में)
(आर्यजीवन स्वतंत्रता सैनिक विशेषांक मार्च एप्रिल १९७३ अंक में छपा चित्र)

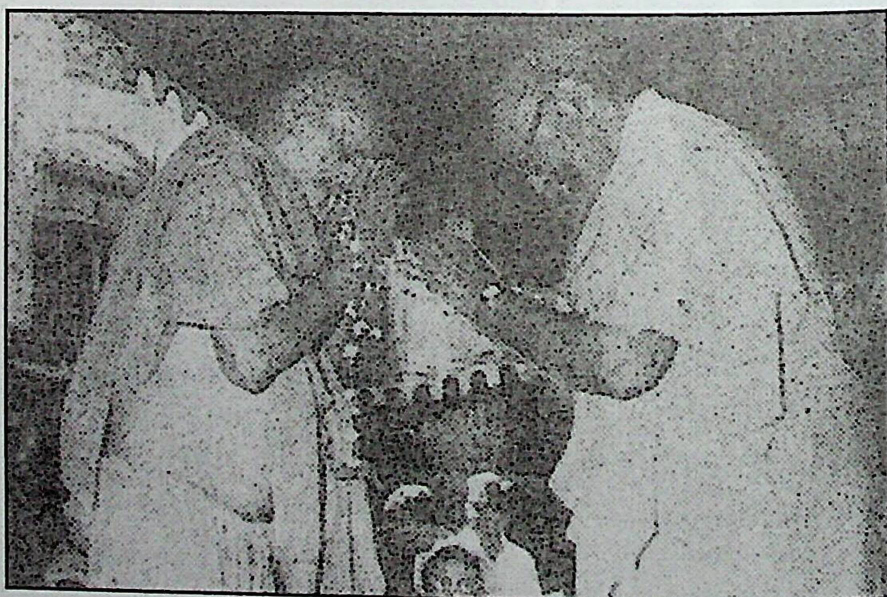


आर्य महासम्मेलन (१९७५) दिल्ली - शोभा यात्रा श्री. शेषरावजी वाघमारे (गजारूढ)।

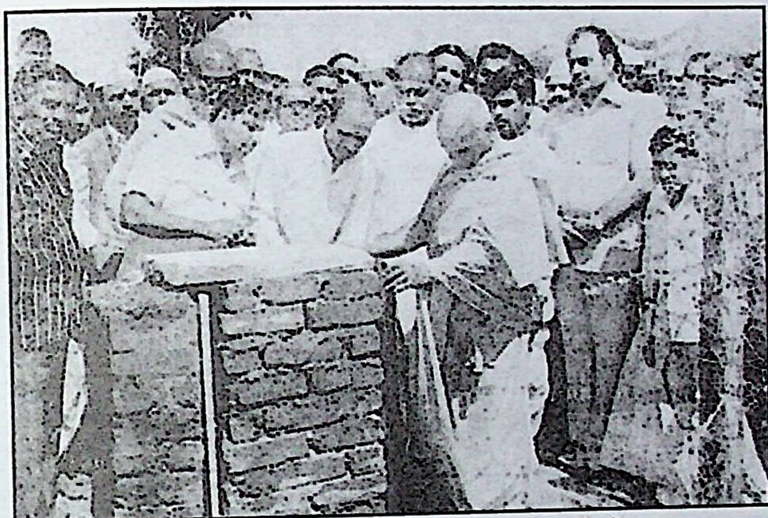
लातूर-आर्य समाज द्वारा आयोजित आर्य सम्मेलन (भाषण देते हुए) मा. श्री. अटलबिहारी वाजपेयीजी (मंच पर) श्री. शेषरावजी वाघमारे (गोलाकार में) (पीछे की ओर) श्री. ओमप्रकाश त्यागी (अंग्रिम पंक्ति में)।



महात्मा आर्य भिक्षुजी (भाषण देते हुए) (मंच पर बाँये से) श्री हरिश्चंद्र गुरुजी (मंत्री, महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा); श्री शिवमुनिजी वानप्रस्थ (संरक्षक सभा); महात्मा आनंदमुनिजी वानप्रस्थ एवं मराठी के प्रख्यात समीक्षक प्राचार्य श्री नरहर कुरुंदकर
स्थान :- कलामन्दिर, नांदेड (८/१२/१९८१)



महाराष्ट्र प्रान्तीय प्रथम आर्य महासम्मेलन, नांदेड के अध्यक्ष स्वामी ओमानन्दजी सरस्वती (बाँयें) स्वागत करते हुए महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान महात्मा आनन्द मुनिजी वानप्रस्थी (दाँयें) २३ एप्रिल १९८२



महाराष्ट्र प्रान्तीय प्रथम आर्य सम्मेलन नांदेड के अवसर पर स्वामी सोमानन्द भवन का शिल्यासन करते हुए स्वामी सत्य प्रकाश जी, भित्ति के पीछे - डॉ. शरदचंद्र वाघमारे (सुपुत्र श्री शेषराव जी) प्रा. वेदकुमार वेदालंकार; (उनके पीछे) महात्मा आनन्दमुनि जी, स्वागताध्यक्ष कॅप्टन देवरत्न जी (दाँयें कोने में)

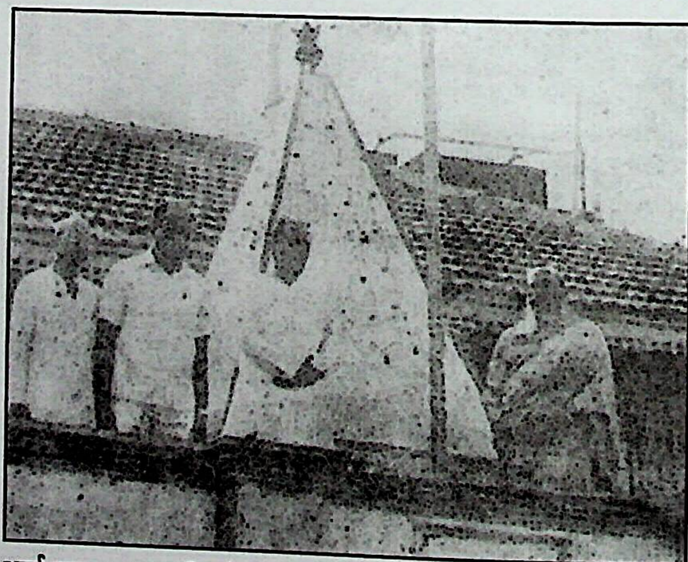


महाराष्ट्र प्रथम महासम्मेलन के नांदेड अवसर पर श्री. वासुदेव राव होळीकर को वानप्रस्थ धर्म की दीक्षा देते हुए महात्मा आनन्द मुनिजी वानप्रस्थी (१९८२)। आर्शिवाद दाता - पू. स्वामी ओमनंद जी महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा के उपप्रधान - श्री केशवराव जी होळीकर (माइक पर बोलते हुए); (दाँये कोने पर)- प्रा. ओमप्रकाश होळीकर, श्री आर्यमुनि वानप्रस्थ, (बाँयें कोने पर) श्रीमती सविता गर्जे; श्रीमती सुमति वाघमारे, श्रीमती वासंती शरदचंद्र वाघमारे, श्रीमती सुचेता वाघमारे।

महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण-शताब्दी - अजमेर (१९८३)
सामाजिक-क्रांन्ति सम्मेलन : ५ नवम्बर '८३



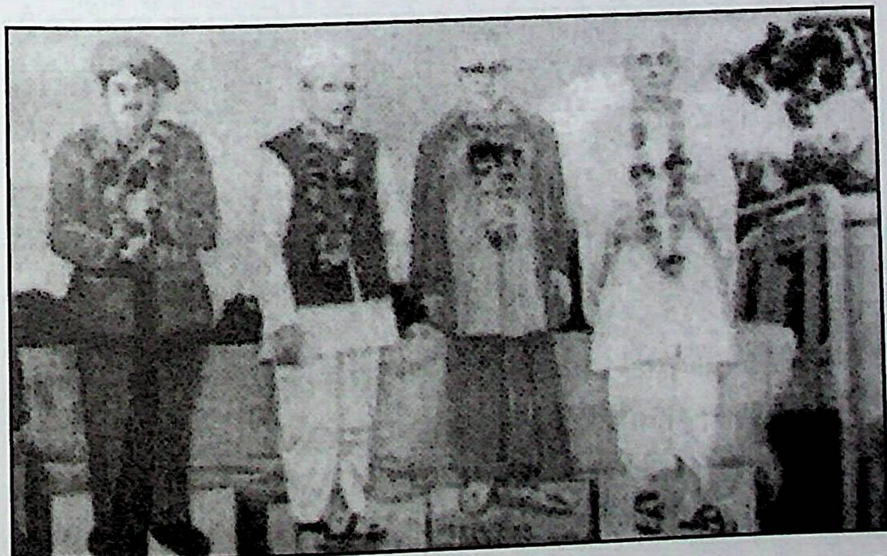
केन्द्रीय उद्योगमंत्री श्री नारायणदत्तजी तिवारी का मंच पर स्वागत : स्वागताध्यक्ष श्री छोटूसिंह एडवोकेट व संयोजक महात्मा आनन्दमुनि वानप्रसथी।



आर्य समाज स्थापन दिन के अवसर पर काकडवाडी (बम्बई) आर्य समाज में आ३म ध्वज फहराते हुए महात्मा आनन्द स्वामी (१९८३) (पं. देवदत्तजी शर्मा अमरावती, पं. कैलाश शास्त्री- मुंबई से प्राप्त चित्र)



आर्य समाज स्थापना दिन अवसर काकडवाडी बम्बई आर्य समाज में ऋषिवद दयानन्द का ग्रंथ ऋग्वेद भाष्य भूमिका, द्वितीय संस्करण का विमोचन करते हुए म. आनन्द मुनिजी, साथ में कॅप्टन देव रत्नजी। (पं. देवदत्त जी शर्मा अमरावती, पं. कैलाश शास्त्री, मुंबई से प्राप्त चित्र)।



हैदराबाद मुक्ति संग्राम के वीर सेनानी श्री शेषरावजी वाघमारे, बाबासाहब परांजपें, स्वामी रामानन्द तीर्थ और स्वतंत्र भारत के लोह पुरुष वल्लभभाई की चित्र रथ पर आरूढ़ प्रतिमा। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के ५०वीं वर्षगाठ के अवसर पर लातूर के नागरिकों ने संघर्षपूर्ण इतिहास को जागृत किया (१९९८)।

२५ श्री शेषरावजी के व्यक्तित्व के अन्य पहलू

सनातनी वैष्णव ब्राह्मण परिवार में जन्म, सनातनी वातावरण में लालन पालन और १४, १५ वर्ष की आयु में एक नये क्रान्तिकारी मार्ग का यात्री बनना, यह शेषरावजी के जीवन की महत्वपूर्ण यात्रा रही है। एक ओर निज़ाम के विरुद्ध सशस्त्र संघर्ष करते हुए हैदराबाद मुक्ति संग्राम में कूद पड़ते है, तो दूसरी ओर सनातनी मातापिता और स्वजन से दुर्व्यवहार तथा ब्राह्मण समाज के वैरत्व का भी सामना करते रहे। इस दोहरे तिहरे संघर्ष की परीक्षा में वे तपते रहे और वे सच्चे आर्य की प्रतीमा बनाने में सफल भी हुए।

उनका लम्बा कद, भव्य मूर्ति, कसा हुआ गठीला शरीर उनके आकर्षक व्यक्तित्व की एक पहचानत थी। उनके शरीर की सम्पदा खाने से नहीं, अपितु संयम और व्यायाम के कारण थी। चेहरे पर कभी उदासी नहीं रही, न हीं किसी प्रकार के कष्ट का भाव रहा। व्यक्तिगत परिस्थितियाँ हो या पारिवारिक, सामाजिक हो या अन्य हर परिस्थिति में जूझने की प्रवृति उनके व्यक्तित्व का पहलू रहा है। उनका स्वाध्याय भी गहन था। उनकी बैठक का कमरा वकालत की पुस्तकों से उतना भरा नहीं रहता था जितना कि सामाजिक, धार्मिक विषयों से सम्बन्धित ग्रंथों से भरा रहता था।

वे एक निश्चयी प्रवृति के धनी, संकल्पशील थे। वे संकल्प के महत्व को जानते थे। संकल्प के अनुरूप ही अच्छा कार्य करने मे भी वे सदैव तत्पर रहते थे।

आकुर्तिं देवी सुभगां पुरोदधे
चितस्यमाता सुहवानो अस्तु।
यामा शामे केदली सामे अस्तु
विदेय मे ना मनसि प्रविष्ठाम् (अथर्व वेद. १९/४/२)

संकल्प चित्त को शक्ति प्रदान करता है, मन में जैसा संकल्प वैसा ही विचार होता है। संकल्प जिस दिशा, जिस क्षेत्र में काम करता है, उसमें वैसे ही सिद्धि प्राप्त होती है। इसी लिए जिस समय संकल्प उठे, उसी समय उसे शुभ बनाना चाहिए

तभी मनुष्य की उन्नति होती है। अथर्ववेद का यह सन्देश, शेषराव के जीवन का अभिन्न अंग बना हुआ था। उनकी संकल्प वृत्ति, चरित्र के निर्माण में, सुदृढ़ शरीर संपदा कमाने में, शरीर अन्याय - अत्याचार के विरोध संघर्ष में, हर परिस्थिति से जूझने में, वैदिक धर्म के प्रचार करने में, सामाजिक सेवा में दीख पड़ती है। **''अन्यायकारी बलवान से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे''** ऋषिवर दयानन्द के इस मंतव्य से वे भली भांति परिचित थे।

वे एक उत्कृष्ट वक्ता थे। उनके व्याख्यानों मे, विषय सम्बन्धित कथाओ का कथन भी होता था, विनोद की प्रचुरता और वैचारिकता भी रहती थी, जिसके कारण उनके व्याख्यानों से श्रोतागण मुग्ध हो उठता था। उनकी ओजस्वी वाणी श्रोताओँ को कार्यक्रम के अंत तक बैठने के लिए बाध्य करती थी। इन्ही विशेषताओं के कारण, पं. नरेन्द्रजी जैसे वक्ता भी श्री शेषरावजी का व्याख्यान अंत में रखते थे, ताकि श्रोता वर्ग कार्यक्रम के अंत तक बैठे रहे।

उन्होंने संवेदनशील मन भी पाया था। 'निष्पाप' जीवों को मारने नहीं दूगाँ'' हौशंगाबाद - नर्मदा किनारे एक व्यक्ति द्वारा मछलियों की हत्या करते समय देखकर उनके उद्गार इसी संवेदनशीलता को व्यक्त करते हैं। (इस घटना का विवरण - संस्मरण में दिया गया है) श्रीधर वर्तक के बलिदान पर, पं. नरेन्द्रजी के निधन पर वे अश्रुओं की धारा को रोक नहीं पाये थे।

गोदावरी (आंध्र प्रदेश) बाढ़ पीडितों के सहयातार्थ विधायक श्री शेषराव जी मुख्यमंत्री X विरुद्ध सभापति XI के बीच खेले गये फुटबॉल मॅच में खिलाड़ी भी बने थे। १९६२ के चीन-भारत युद्ध में सीमा पर लड़ते हुए जवानों के लिए अपना खून भी दिया था।

वे अपने मित्रों, साथियों में प्रिय थे हीं, अपने शत्रुओं के मन की कड़ुवाहट को किस तरह समाप्त करना चाहिए, इस कार्य में भी वे चतुर थे। **'बीती ताहि बिसार दे - आगे की सुधि ले'** यह उनकी नीतिमत्ता रही है। वे औदार्य की नीति अपनाकर, शत्रु के विरोध को रोकने में समर्थ थे। समय पड़ने पर शत्रू का भी सन्मान करना, उनका स्वभाव था।

प. शिवकुमार शास्त्री श्री शेषरावजी के सामने हाथ जोड़ कर खड़े रहते थे। शेषरावजी मना करते और कहते "आप वेद के विद्वान हैं - मैं सामान्य आदमी हूँ"। पं. शिवकुमार शास्त्रीजी कहा करते 'आप कृति से श्रेष्ठ हैं - आपका जीवन कर्ममय है'

किं तेन हेमगिरिणा रजताद्रिणा वा
यत्र स्थितास्तु तरवः तरवस्त एव।

मन्यामहे मलयमेव यदाश्रयेण
कङ्कोल निम्बकुटजा अपि चन्दनाः स्युः।।

- भर्तृहरि।।

सुनते हैं कि सुमेरु पर्वत सोने का है और कैलाश पर्वत चांदी का है। होगा, किन्तु हम इन पर्वतों को सम्मान या महत्व नहीं देना चाहते। क्योंकि इन पर्वतों पर उगनेवाले वृक्ष उस उस जाति के ही बने रहते हैं। हम महत्व देते हैं मलय पर्वत को, क्योंकि वहाँ उगनेवाले कंकोल, नीम और कुटकी के कडवे वृक्ष भी चन्दनों के सहवास के कारण चंदन बन जाते हैं।

मनसि वचसि काये पुण्यपीयूषपूर्णा
स्त्रिभुवनमुपकार श्रेणिभिः प्रीणयन्तः।

परगुण पर माणून्पर्वतीकृत्य नित्यम्
निजहृदि विकसन्तः सन्तिः कियन्तः।।

- भर्तृहरि

जिनके मन, वचन और तन में केवल अमृत ही भरा है, जो तीनों लोकों को अपने उपकारों द्वारा आनन्दित करते हैं, तथा जो दूसरों के परमाणु के समान लघु गुण को भी पर्वत के समान विशाल बनाकर अपने स्वभाव का अंग बना लेते हैं, ऐसे महापुरुष, ऐसे सज्जन इस संसार में कितने होंगे? अर्थात अत्यंन्त कम ही होंगे।। श्री शेषरावजी इन्ही सज्जनों की श्रेणी में आते हैं।

श्री. शेषराव जी वाघमारे भी मलय पर्वत के समान ही थे। उनके सहवास के कारण अनेक लोग दुर्गुण, दुर्व्यसन त्यागकर सद्गुणी और सदाचारी बन गये थे।

उनके व्यक्तित्व में एक निराला बांकपन था और था राजस्वी स्वभाव का एक अनोखा अन्दाज। उनमें किसी तरह की मलिनता न थी, न किसी व्यक्ति के प्रति द्वेष भावना। हमेशा मिलनसार, सदा सुखी, सदा प्रसन्नता का एक अनोखा मिश्रण - यह उनकी पहचान थी।

''मीर'' साहब गर फरिश्ता हो तो हो
आदमी होना मगर दुश्वार है।



''मनुष्य अपने पराक्रम से दुःख से पार होता है,
और अपनी प्रज्ञा से परिशुद्ध होता है''

१ श्री शेषरावजी परिवार के पिताजी

प्रारम्भिक अध्याय में 'शेषरावजी के पूर्वज - प्रारम्भिक परिचय' में उनके पूर्वज, उनका विवाह, शिक्षा आदि के द्वारा उनके प्रारंम्भिक जीवन पहलू का दर्शन किया गया है। शिक्षा प्राप्त करने के पूर्व ही वे गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर चुके थे। उनकी समूची ग्रहस्थी यात्रा को देखा जाये, तो उनकी गृहस्थी का एक पहलू भी हमारे सम्मुख उपस्थित होता है। शेषरावजी को तीन पुत्र और चार पुत्रियाँ हुई। उनके बन्धु बापू साहब वाघमारे (नरसिंहराव माधवराव) के चार पुत्रियाँ हुईं। परिवार का विवरण परिशिष्ट में दिया गया है। इस प्रकार दोनों बन्धुओं का यह एक भरापूरा संयुक्त आदर्श परिवार था।

पिताजी माधवराव की दृष्टि में पुत्र शेषराव ही थे, माताजी की दृष्टि में वे 'शेषा' थे, बहनों की दृष्टि में वे 'तात्या' थे। वे अपने पुत्र-पुत्रियों की दृष्टि से 'पिताजी' रहे - यह स्वाभाविक है। किन्तु बापू साहब की पुत्रियाँ अपने पिता बापूसाहब को पिताजी न कहकर 'काका' (चाचा) कहती रहीं और अपने ताऊ श्री शेषरावजी को पिताजी कहती रहीं। बापूसाहब की पत्नी श्रीमती सिन्धुबाई भी उन्हे 'पिताजी' कहती रहीं। बन्धु बापूने अपने अग्रज भ्राता को कभी भाई न कहा, वे उन्हे पिताजी ही कहते रहे। इतना ही नही, वे उन्हें गुरुजी का सम्मान भी देते रहे। एक प्रसंग ऐसा है - श्री शेषरावजी के ६१ वर्ष में पदार्पण के अवसर पर आयोजित समारोह मे कईयों ने मनोगत व्यक्त किये। जब बन्धुबापू बोलने के लिए खड़े हुए उनके शब्द थे 'मै दीपक हूँ, इस दीपक में लौं तो है, तेल के कारण इस दीपक के तेल हैं 'पिताजी'। यह एक ही वाक्य का उनका मनोगत सारी सभा को उद्वेलित कर गया। उनके सभी दामाद भी उन्हें 'पिताजी' ही कहते रहे। हर ग्रीष्मावकाश में सभी पुत्रियाँ, दामाद निलंगा पहुँचते थे। दामाद-श्वसुर के रिश्ते की अपेक्षा पुत्र-पिताजी का एक अनोखा दृश्य उपस्थित हो जाता था। सच्चे रिश्ते को भूलकर एक दूसरे से हँसी-मज़ाक करना, टहाके लगाना, आमरस से भरी कटोरियाँ पी जाना, यह आम दृश्य रहा करता था। वे दिन कभी भूल न सकेंगे। **'वाघमारे परिवार के वे दिन भी क्या थे'।**

परिवार के 'पिताजी' का स्वरूप जानने के लिए, उस समय के छोटे किन्तु

वर्तमान के ज्येष्ठ कनिष्ठ पुत्र-पुत्रियों, बन्धुओं, दामादों से इन पंक्तियों के लेखक ने व्यक्तिगत, सामूहिक चर्चा की। सबके अपने अपने संस्मरण हैं जो परिशिष्ट में दिये गये हैं। यहाँ कुछ सामूहिक अनुभव, संस्मरण व्यक्त हैं। पिताजी के साथ घरके सभी सदस्य घर में संध्या हवन करते थे, भजन गाते थे। पूरा परिवार साप्तहिक सत्संग के लिए आर्यसमाज मंदिर जाता था। निलंगा के आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव हो या दशहरेका जलूस हो, पिताजी इस कार्य में सबसे अग्रणी रहते थे। दशहरे के जलूस के अवसर पर तो शस्त्र-पिस्तौल से धमाके करते थे। इस प्रकार वातावरण में एक नया जोश भरते थे। इस जोश से बच्चे भी संचरित हो उठते थे। अन्य समाजों के उत्सवों सम्मेलनों में पिताजी सपरिवार पहुँचते थे, ताकि विद्वानों के प्रवचन, व्याख्यानों को सब सुन सके, जिससे जीवन आदर्शवत् हो।

किसी अवकाश में सब पुत्र-पुत्रियाँ, दामाद एकत्रित होते तो, सभी पिताजी से आग्रह करते और पूछते ''पिताजी आपने बाघको कैसे मारा? निज़ाम से कैसे लड़े? जेल की यातनाएँ किस तरह सहीं?'' तो पिताजी सबको विगत काल में ले जाते और विगत की अपनी घटनाएँ एक एक कर विगत में सुनाते थे, तब वे स्वयं तो रममाण होते ही थे, सब को भी मग्न कर देते थे।

पिताजी सुदृढ़ थे और चाहते थे कि सब भी सुदृढ़ बनें। घर पर ही वे वर्जिश करते थे, आसन, प्राणायाम आदि किया करते थे। घर के आँगन में ही सिंगलबार, डबल बार था, मुदगल, मलखांब था। घर का भीतरी आंगन एक छोटा सा अखाड़ा ही था। पिताजी चाहते थे कि पुत्र भी वर्जिश करे, अखाडे में उतरे। पुत्रियाँ लाठी चलाएँ, लेज़िम खेले और वे सब करती भी थी। पुत्र पुत्रियों को तैरने के लिए नदी या कुएँ की ओर ले जाते। तैरना सिखाते थे वह भी बिना किसी सहारे के। कुएँ में ऊपरी हिस्से से ही पानी में कूदने के लिए कहते थे, बच्चे कूद भी जाते थे। कभी डुबकियाँ भी लगाते, तो पिताजी देखते ही रहते। वे चाहते थे, डुबकियों से बचने के लिए तैरने का प्रयास करें, हिम्मत देते थे और बच्चों का तैरने का प्रयास चलता ही था।

पिताजी अपने पुत्र-पुत्रियों की पढ़ाई का ध्यान भी रखते थे। पुत्र विजयकुमार L.L.B. कर वकील बने, शरद - M.B.B.S. DHO पदवी धारण, डॉक्टर बने। वे महाराष्ट्र राज्य के स्वास्थ्य विभाग के सह संचालक पद पर आसीन रहे,

दुर्भाग्यवश उन्हे अकाल ही मृत्यु ने आ घेरा। तीसरे पुत्र - भरत ने M.Sc. कृषि पदवी धारण की। अब वे मध्य प्रदेश में दुग्ध-विभाग के उच्च पदाधिकारी हैं। पिताजी ने अपनी ज्येष्ट पुत्री सत्यवती तथा द्वितीय पुत्री प्रतिभा को गुरुकुल की पढ़ाई के लिए बडौदा - गुरुकुल भेजा। वे दोनों बडौदा स्वयं गयीं, गुरुकुल की शिक्षा पायी और भविष्य में आदर्श गृहिणी बनी। पुत्री सविता और उर्मिला - शिक्षा - पाते समय हीं गृहस्थाश्रम में प्रवेश कर गयी, अपनी गृहस्थी को सँवारने में, उसे आदर्श बनाने में लगी रहीं। पुत्र पुत्रियाँ अपने पिताजी के संस्कार से संस्कारित रहीं और आज भी वे सब उसी भांति अपने कर्तव्य पालन में व्यस्त हैं।

पिताजी आदर्श चरित्र के हिमायती रहे और पुत्र-पुत्रियों को चरित्र का पाठ पढ़ाया करते थे। अपने परिवार में चारित्र्य में किसी तरह का धब्बा लगे, पिताजी के लिए असहनीय बात थी। उनके घर के सामने मुस्लिम मुन्सिफ (जज) रहा करते थे। उनके सालेसाहब ने पुत्री प्रतिभा को चिठ्ठी भेजकर अपने मुहब्बत का इजहार किया। पता चलने पर पिताजी मुन्सिफ के यहाँ पहुँचे, सालेसाहब की करतूत का बयान किया। मुन्सिफ साहब के कहने पर ही उनके साले साहब को उन्होंने अच्छा सबक सिखाया। सबक सिखाने में कारण चिठ्ठी भेजने का ही नहीं था, चरित्र की महत्ता की जानकारी भी देना था। शेषरावजी की यह निश्चित धारणा थी कि **'राष्ट्र बनता है - विकासशील - चरित्रवान नौजवान से ही'**

घर पर वे सब के पिताजी थे, पर एक व्यक्ति है - उनकी धर्मपत्नी - श्रीमती सुमित्राजी। श्रीमती सुमित्रा के लिए पति शेषरावजी - पतिदेव ही थे और अंत तक रहे भी। पूर्व का नाम नागिणबाई, पौराणिक परिवार में जन्मी, पौराणिक परिवार में ब्याही भी गयी - वह भी बचपन में ही। पति शेषरावजी के प्रारंभिक जीवन में आये नये मोड पर चलना नागिणबाई के लिए कठिन कार्य था। एक ओर सास ससुर पौराणिक थे तो दूसरी ओर पतिदेव ''आर्यसमाज'' की ओर आकर्षित थे। कैंची की दो धारों में फंसी रहती थी - नागिणबाई। सास की आज्ञा से पौराणिक रीति रिवाज निभाने का कर्तव्य सदा पूर्ण करना पड़ता था। शेषरावजी की राह पर चलने के लिए - भीतर ही भीतर चलते हुए संघर्ष के कारण संघर्ष, कभी चोरी - चुपके पतिदेव के साथ आर्यसमाज में जाना भी हुआ करता था। यह बात छिपी रहती नहीं थी। ऐसे समय घर के दरवाजे उनके लिए बंद रहा करते थे। फिर से

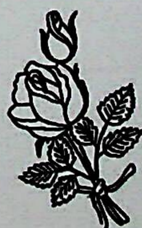
आर्यसमाज में न जाने के निश्चय को सास के सम्मुख रखना होता था, तब कहीं दरवाजा खुलता, ठंडे पानी से नहाकर ही नागिणबाई को घर में प्रवेश मिलता था। कई वर्षों तक यह सिलसिला चलता रहा और इस सिलसिले का अंत हुआ सास की मृत्यु के साथ। तब से नागिणबाई अर्थात श्रीमती सुमित्रादेवी पति के कदमों पर चलते हुए आर्य गृहिणी बनी रहीं। पति के सामाजिक कार्य, संघर्ष में पति का साथ देती रही, पतिके आदर्श अपनाती रही। इस सुमित्रा देवीका जहाँ हरा भरा संसार रहा, संघर्ष, वेदनाओं का समंदर भी रहा। श्रीमती सुमित्राजी की इस समय की आयु है - ९२ वर्ष की। अडिग रहती हुई, अनेक संस्मरणों को संजोए, निलंगा में ही - पुत्र - बहू - पौत्र - पौत्रियों के साथ ईश्वर का स्मरण करते हुए, पति की मधुर स्मृतियों के साथ आनन्दपूर्वक जीवन बिता रही हैं।

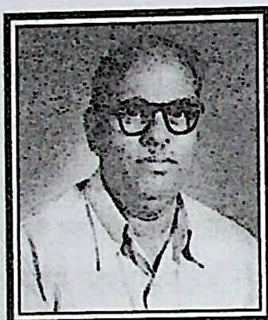


क्रोधाद्भवति संमोह: संमोहात्स्मृतिविभ्रम:
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति

क्रोध से अविवेक अर्थात् मूढ़भाव उत्पन्न होता है और अविवेक से स्मरणशक्ति भ्रमित हो जाती है और स्मृतिके भ्रमित हो जानेसे बुद्धि अर्थात् ज्ञानशक्ति का नाश हो जाता है और बुद्धि के नाश होनेसे यह पुरुष अपने श्रेयसाधन से गिर जाता है ।।

(भगवद्गीता - अध्याय २, श्लोक ६३)



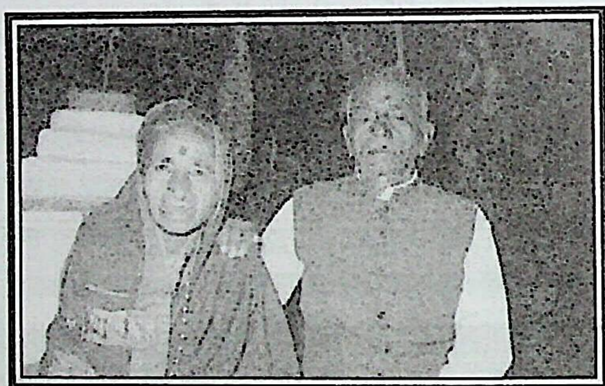


श्री. शेषरावजी वाघमारे एक सफल गृहस्थी

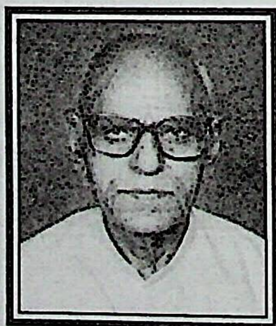


श्री शेषरावजी की धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी एक सफल गृहिणी

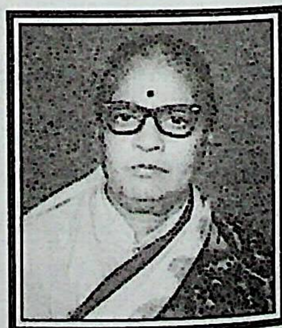




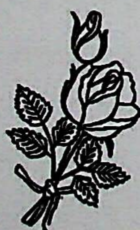
श्री शेषरावजी के समधी श्री विश्वनाथराव गर्जे: (स्वतंत्रता सेनानी), श्रीमती मंजुला देवी (लेखक के माता-पिता)



श्री. शेषरावजी बहनोई श्री आर्यमुनिजी (वामनराव येळणुरकर) एक कर्मठ आर्य कार्यकर्ता

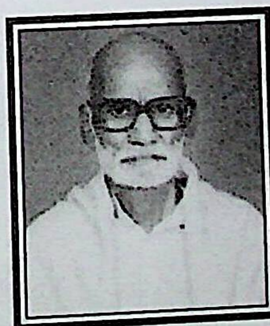


श्री. शेषरावजी की बहन श्रीमती सरलादेवीजी एक आर्य विदुषी।

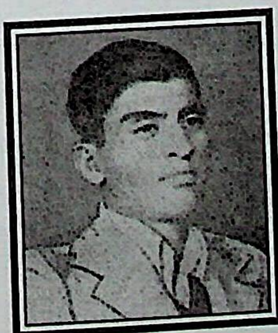




एक विशेष प्रसंग पर म. आनन्द मुनि वानप्रस्थ
बायें से श्रीमती सुमित्रा वाघमारे, म. आनन्दमुनि, बहन सरलादेवी, बहनोइ वामनराव येळणूरकर, पिछली पंक्ति में अॅड. विजयकुमार वाघमारे और बापूसाहब वाघमारे



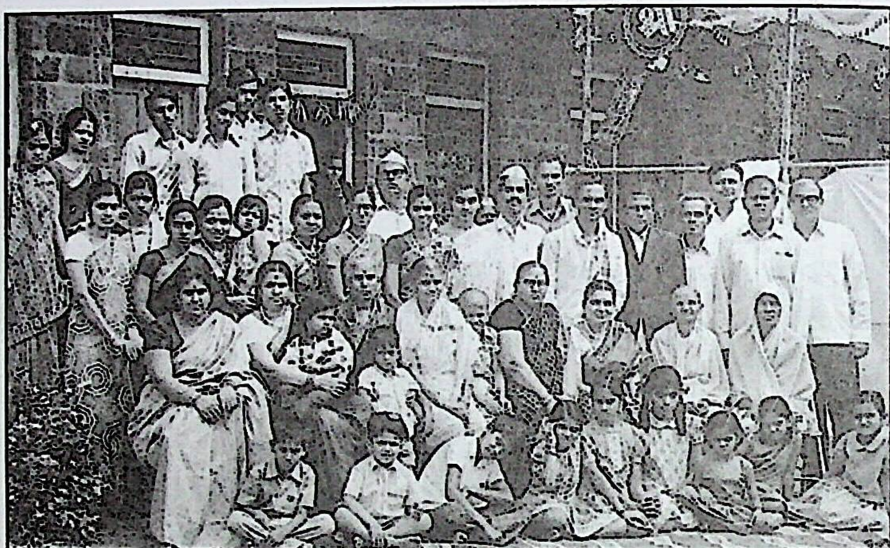
श्री. शेषराव जी के समधी श्री. उत्तम मुनिजी (डॉ. डी.आर.दास) एक ख्याति प्राप्त - आर्य कार्यकर्ता



नरसिंह माधवराव वाघमारे पुलिस सेवा के प्रारंभिक चरण में (१९५०)



बापू साहब (नरसिंहराव) धर्मपत्नी श्रीमती सिंधू वाघमारे- ग्रहस्थजीवन का प्रारंभ।



श्री. शेषरावजी, परिवार के पिताजी

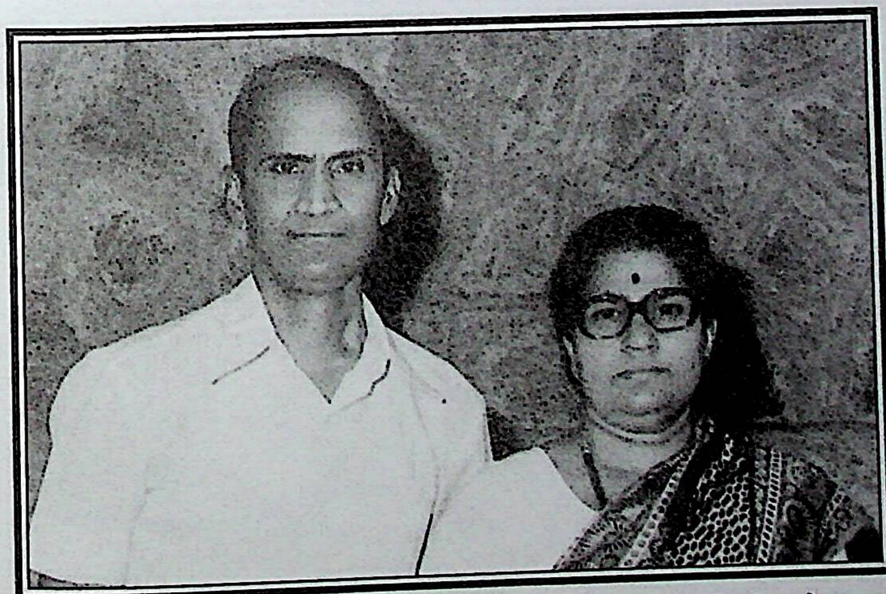
यह पारिवारिक चित्र ८ अगस्त १९७५ को तुलजापुर में लिया गया। प्रसंग था - चि. सुमंत वेदालंकार के उपनयन- संस्कार का।

श्री. शेषराव जी (पिताजी) सबके पीछे; कुर्सीपर: (बाँये से) श्रीमती सत्यवती रेणापूरकर; श्रीमती प्रतिभा वेदालंकार (गोद में कु. अदिति वेदालंकार) श्रीमती आनंदीबाई पेशवे, श्रीमती सुमित्रादेवी शेषराव, श्रीमती सिंधुबाई नरसिंगराव, पूं. तान्हुबाई (ताई डुमणे), श्रीमती साळुबाई पिंपळे।

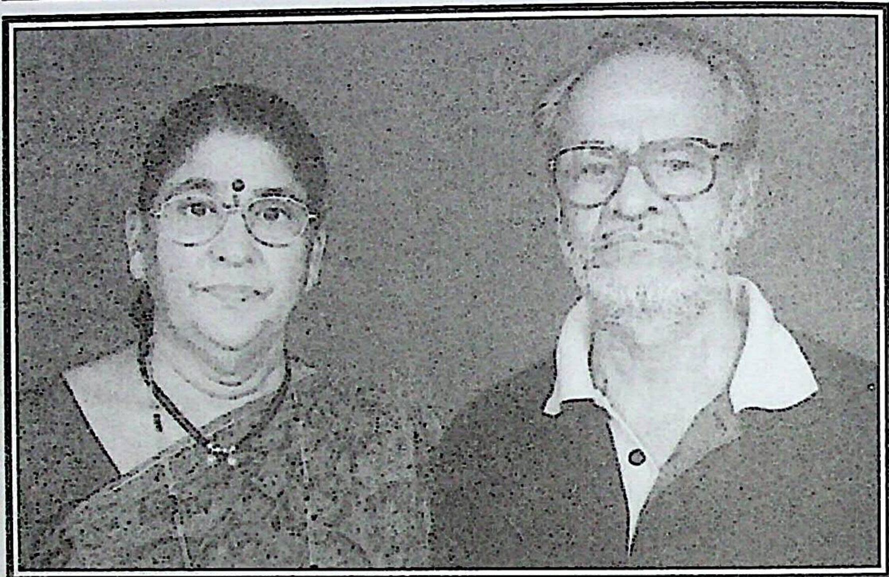
पू. ताई- शेषरावजी की बडी बहन) दूसरी पंक्ति (खडे हुए) श्रीमती शकुंतला धीरेन्द्र; श्रीमती पेशवे; कु. अलका पेशवे; श्रीमती वासंती शरदचंद्र (गोद में बालिका- कु. स्वाती वाघमारे) श्रीमती सुमति विजयकुमार; श्रीमती सविता बळवंतराव; श्रीमती ललिता मारुतीराव, सनीता तेरकर (बापूसाहब की पुत्री) श्री अर्जुनराव सोमवंशी, श्री शीतलचंद्र डुमणे; प्राचार्य वेद्कुमार वेदालंकार, ऍड. गणपतराव पेशवे, प्राचार्य हरिश्चन्द्र रेणापुरकर, श्री. मोहनराव, श्री. वासुदेव पिंपले, श्री बापूसाहब वाघमारे, (पीछे खडे) कु. पुष्पा जाधव, कु. पेशवे, चि. अरुण पेशवे, चि. सुधीर रेणापूरकर, चि. अविनाश पेशवे, (नीचे बैठे हुए) चि. अभय चिद्री, चि. प्रशांत वाघमारे, चि. विनय चिद्री, चि. ऋता चिद्री, चि. सुजाता चिद्री, कु. रश्मी वाघमारे, चि. अंजली वाघमारे, चि. विद्या वाघमारे एवं कु. माधुरी वाघमारे।



श्री. शेषराव जी के ज्येष्ठ दामाद- संस्कृत के महान कवि प्राचार्य हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर, पुत्री श्रीमती सत्यवती हरिश्चन्द्र रेणापुरकर (श्री. शेषराव वाघमारेजी की ज्येष्ठ पुत्री)।



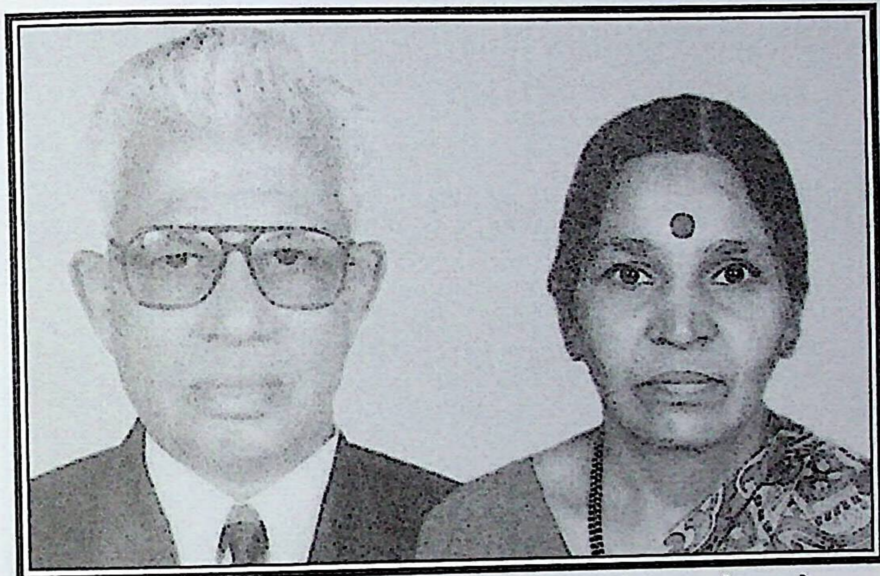
श्री. शेषरावजी के द्वितीय दामाद प्राचार्य वेद्कुमारजी वेदालंकार पुत्री श्रीमती प्रतिभा वेद्कुमार (श्री. शेषरावजी की द्वितीय पुत्री)।



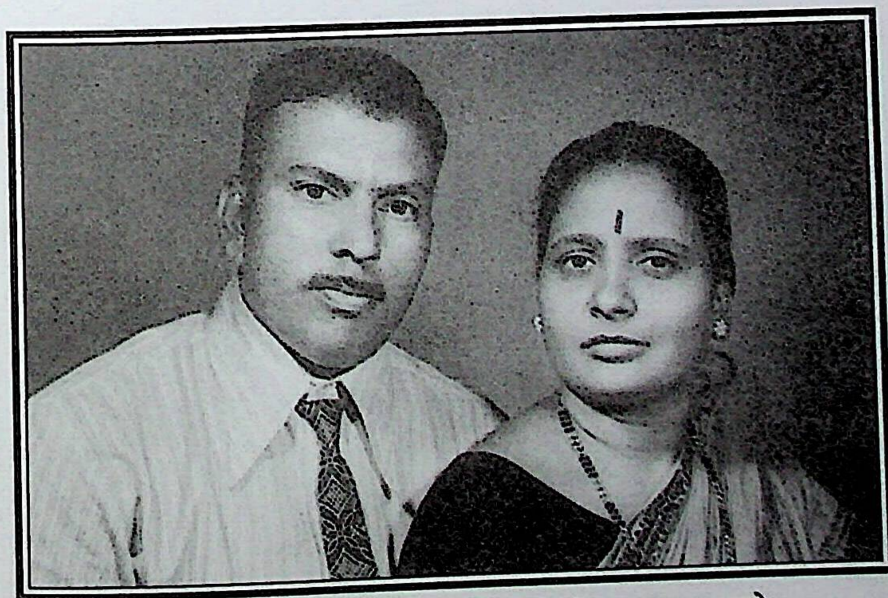
श्री. शेषरावजी के तृतीय दामाम प्राचार्य, डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे और श्रीमती सविता गर्जे (श्री. शेषरावजी की तृतीय पुत्री)।



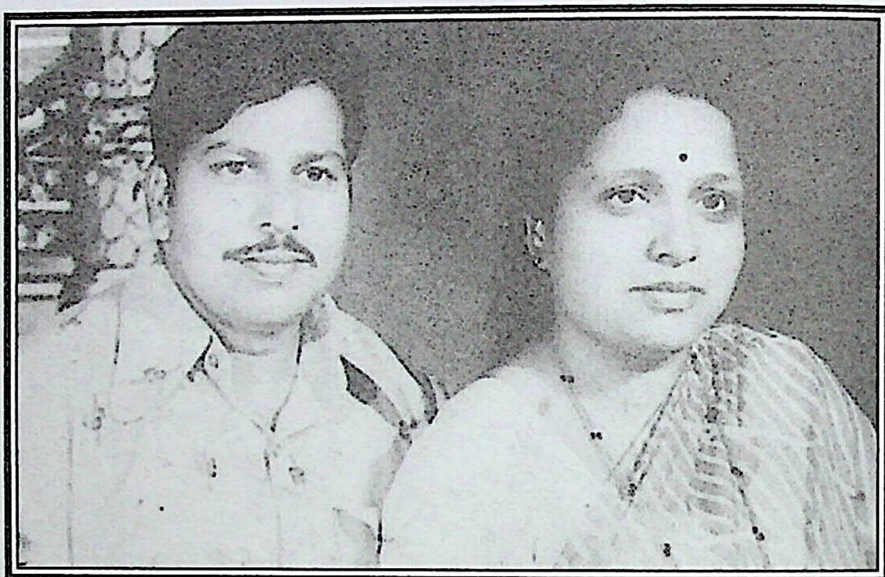
श्री. शेषराव जी के (कनिष्ट) चौथे दामाद प्रा. अर्जुनराव जी सोमवंशी तथा श्रीमती उर्मिलादेवी (श्री शेषरावजी की कनिष्ट पुत्री)।



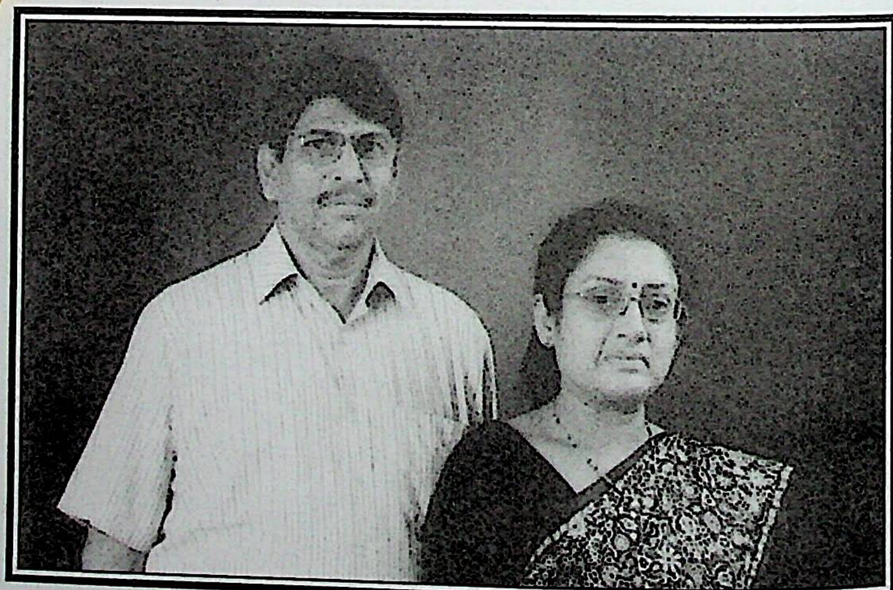
श्रीमती सुमित्रा वाघमारे के भाई श्री. सुरेश। केशवराव डुमणे के पुत्र सुरेश डुमणे, श्रीमती सुनीति सुरेश डुमणे।



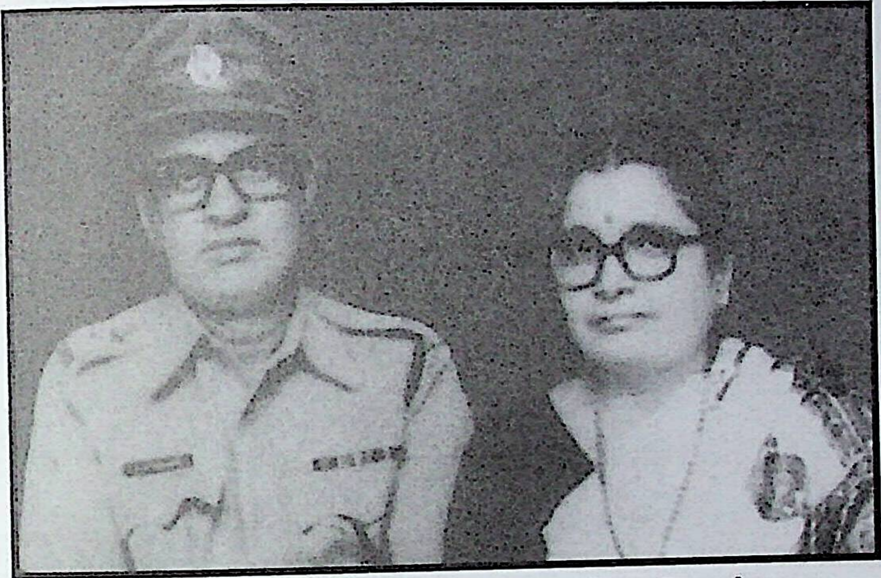
श्री. शेषराव जी के ज्येष्ठ पुत्र ॲडवोकेट श्री. विजयकुमार वाघमारे (पुत्र वधू) श्रीमती सुमन्ति देवी।



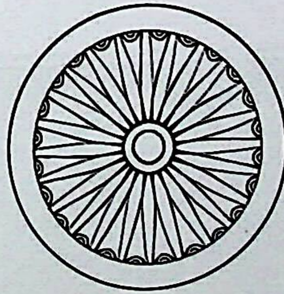
श्री. शेषराव जी वाघमारे के द्वितीय पुत्र डॉ. शरद वाघमारे
(पुत्र वधू) श्रीमती वासंती वाघमारे।



शेषराव जी के तृतीय पुत्र भरत वाघमारे और
श्रीमती सुचेता वाघमारे (पुत्र वधू)



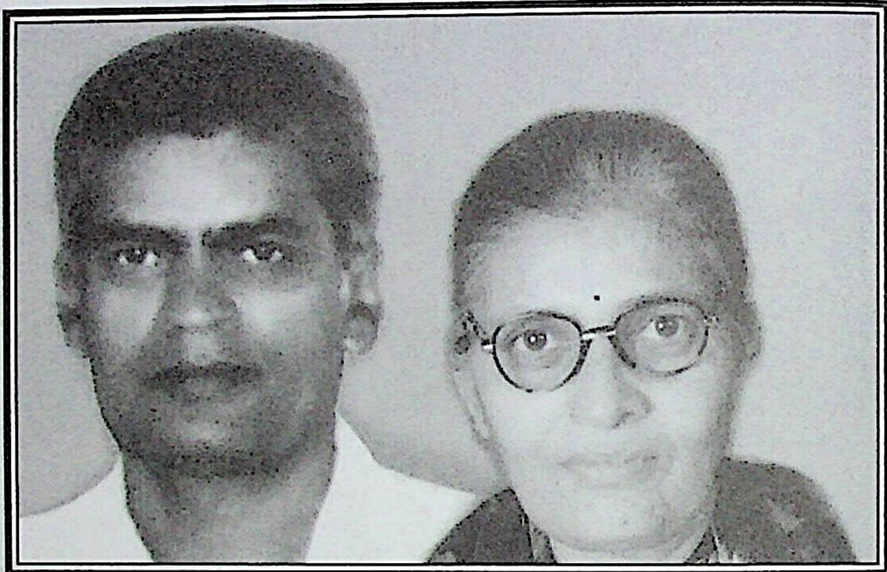
श्री. शेषरावजी के अनुज श्री. नरसिंहराव (बापू साहब) वाघमारे राष्ट्रपति सुवर्णपदक पुरस्कार से पुरस्कृत पुलिस अधिकारी और धर्मपत्नी श्रीमती सिन्धु वाघमारे



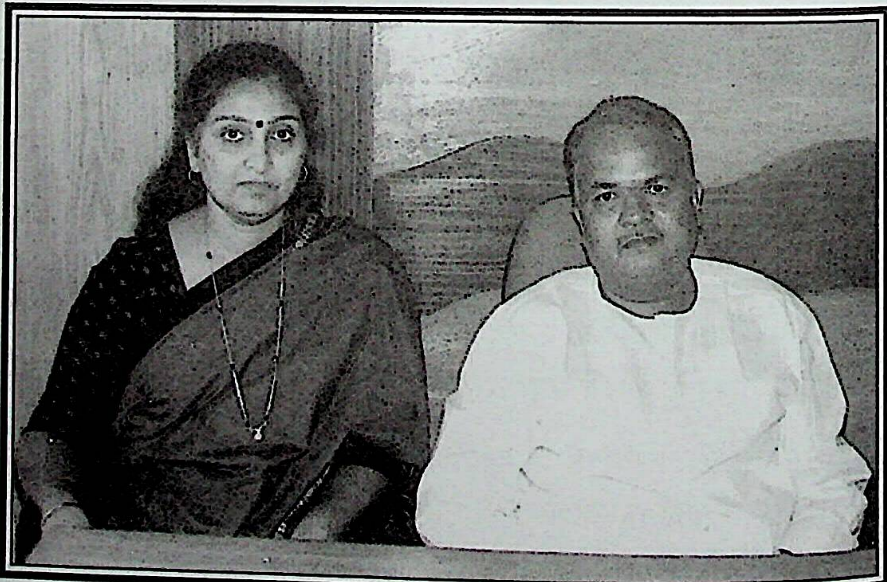
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

तेरा कर्म करने मात्र में ही अधिकार होवे, फलमें कभी नहीं और तूं कर्मोंकि फलकी वासनावाला भी मत हो तथा तेरी कर्म न करने में भी प्रीति न होवे ।।

(भगवद्गीता - अध्याय २, श्लोक ४७)



श्री. नरसिंहराव वाघमारे (बापू साहब) के ज्येष्ट दामाद डॉ. धीरेन्द्र येळणूरकर और श्रीमती श्रद्धा धीरेन्द्र (श्री बापूसाहब की ज्येष्ठ पुत्री)



श्री. नरसिंहराव (बापू साहब) के द्वितीय दामाद श्री. अशोक राव पांडुरंगराव तेरकर और श्रीमती सुनिता अशोक (श्री बापू साहब की द्वितीय पुत्री)।



श्री. नरसिंहराव (बापू साहब) के तृतीय दामाद श्री. आमोदराव कुलकर्णी और सुषमा आमोदराव (श्री. बापू साहब की तृतीय पुत्री)



श्री. नरसिंहराव (बापू साहब) के चतुर्थ दामाद डॉ. रत्नाकर राव कुलकर्णी और श्रीमती माधुरी रत्नाकरराव (श्री. बापू साहब की कनिष्ठ पुत्री)

२ पिताजी समाज के

शेषरावजी के सामाजिक जीवन का प्रारम्भ अपने घर में प्रचलित सनातन रुढियों के विरुद्ध किये गये संघर्ष से होता है। सन १९३०-१९४८ तक का काल निज़ाम शासन की नृशंसता के विरोध में संघर्ष करने का काल रहा। इसी काल में वे सामाजिक अन्याय के विरोध में अन्यायियों से जूझते रहे। स्वतंत्रता के पश्चात् कर्मठ आर्य कार्यकर्ता के रूप में विचरण करते हुए, वे समाज की सेवा में लगे रहे। शेषरावजी गरीबों के घर स्वयं पहुँचते, उनकी हालचल पूछते थे। समाज का छोटा वर्ग हो या बड़ा, गरीब हो या धनवान्, समाज के हर वर्ग से उनका सम्पर्क बना रहता था। यहाँ तक कि वे साधारण तबके के मुसलमानों से भी सम्पर्क रखते थे। यह भी उनके सामाजिक मिलनसार व्यक्तित्व की एक झलक है। सामाजिक मिलनसार व्यक्तित्व के कारण वे समाज के 'पिताजी' बने थे। निलंगा और परिसर के सारे क्षेत्र में कोई वकील हो या शासन का कोई अधिकारी सभी अधिकत: शेषरावजी को 'पिताजी' कहकर ही संबोधित करते थे।

यहाँ दो एक व्यक्तियों के पिताजी शेषरावजी से सम्बन्धित धारणाओँ को अभिव्यक्त करना असंगत न होगा। प्रसंग है शेषरावजी के वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश करने के बाद आयोजित एक समारोह का। श्री विश्वनाथ दलित का एक मंतव्य है "वर्तमान में हम स्वतंत्रता के युग में जी रहे हैं। हमें कोई समता का पाठ न पढ़ाएँ। डॉ. बाबासाहब ने हमें जगाया। अब उपदेश करने का किसी को अधिकार है, तो केवल पिताजी शेषरावजी (आनन्द मुनि) को है, जिन्होंने जिस समय हम सोये हुए थे उस समय हमारा द्वार खटखटाकर, हमें जगाया, न केवल जगाया, हमें अपने नजदीक भी ले लिया। इस कारण समाज ने उन्हे बहिष्कृत किया, यहाँ तक कि उन पर विष प्रयोग भी किया गया, पर वे निर्भय होकर समाज की सेवा में लगे रहे।"

साक्षात्कार के समय श्री बलीराम पाटील ने शेषरावजी के प्रारंभिक जीवन की और एक ऐसी ही घटना को सम्मुख रखा। एक दलित स्त्री के साथ संवाद इस तरह का है "हमे कोई स्पर्श तक करता नहीं है, यदि स्पर्श होता है तो गोमूत्र से नहाते हैं - गंगा पानी से भी हाथ धो डालते है" तब शेषरावजी ने कहा "स्पर्श ही

क्या, तुम्हे गले भी लगाता हूँ''। स्त्री ने कहा ''आप करेगें, पर दूसरे नहीं''। शेषरावजी, ''दूसरे भी करेगें - चल अभी मुझे भोजन परोस दे''। शेषरावजी चल पड़े - उस दलित स्त्री के घर - स्त्री परोसती रहीं, शेषरावजी बड़े आनन्द से भोजन करते रहे।

उपर्युक्त मन्तव्य, संवाद प्रतिनिधिक स्वरूप के हैं - अन्य घटनाएँ भी है : जिनमें शेषरावजी की सामाजिक समता की भावनाएँ अभिव्यक्त होती हैं।

श्री अनन्तराव सबनीस अॅडवोकेट हैं। शेषरावजी के करीब के रिश्तेदार हैं। आयु में उनसे छोटे हैं, ज्युनियर वकील हैं, पर वे शेषरावजी को करीब से जानने वाले निलंगा निवासी हैं। उन्होंने अपने साक्षात्कार में शेषरावजी के व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं को उद्घाटित किया। वे शेषरावजी को समाजसेवी तो मानते ही हैं, अजातशत्रु भी मानते हैं। राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में एक ओर कार्यकर्ता निलंगा मे थे - श्रीपतराव साळुंके - अॅडवोकेट। दोनों का दृष्टिकोण तथा राजनीतिक-मत भिन्न भिन्न था। श्रीपतराव साळुके शेषरावजी का विरोध करने का कोई सार्वजनिक अवसर छोडते नहीं थे, पर शेषरावजी उनके कडवे विरोध को उतना ही सहज रूप में लेते और विरोध को भूल कर, उतने ही स्वाभाविक रूप में कोर्ट में बडे ही सम्मान के साथ श्रीपतराव के सम्मुख उपस्थित हो - नमस्ते नमस्कार कहते मानो कुछ हुआ ही नहीं। श्रीपतराव शमित भी होते। शत्रुत्व की भावना मित्रता में परिवर्तित करने में शेषरावजी कुशल थे। शेषरावजी और श्रीपंतराव में साँप - नेवले का खेल अंत तक चलता रहा परंतु भिन्नता के साथ साथ मित्रता भी निभती गयी।

श्री अनंतराव सबनीस ने दोनों के अनोखे व्यक्तित्व को दर्शाते हुए एक घटना सुनाई। श्रीपतराव के यहाँ कोई कार्यक्रम था। कई व्यक्ति भोजन के लिए आमंत्रित थे, शेषरावजी भी आमंत्रित थे। श्रीपतराव को आशंका थी कि शेषरावजी उनके घर पर पहुँचेगें या नहीं। संभवत: नहीं पहुँचेगे। शेषरावजी के मन में किसी प्रकार की मलिनता न थी। शेषरावजी उनके घर पहुँचे। वे भोजन के लिए बैठ भी गये। श्रीपतरावने अपने छोटे बच्चे को शेषरावजी की पत्तल में ही भोजन परोसा - दोनों साथ साथ भोजन करेंगे ताकि शेषरावजी को यह न लगे कि भोजन में कुछ

मिलावट है। पूर्व का अनुभव था - शेषरावजी पर विष का प्रयोग, पर शेषरावजी इस बात में विश्वास न रखनेवाले थे। शत्रु अंत तक शत्रु नहीं रहता है, मित्र भी बन सकता है। यह एक आदर्श व्यक्तित्व का उदाहरण है।

समाज के अध्वर्यु और योद्धा शेषरावजी के ऐसे अनेक प्रसंग हैं। मनुष्य को मानव जाति के सौहार्द भरे धागे में गूंथने तथा समाजसेवा का असिधारा व्रत धारण करने के कारण तथा तन्मयता, निस्पृहता, निर्भयता से समाज की सेवा तथा मार्गदर्शन करने के कारण शेषरावजी निश्चय ही समाज के पिताजी रहे।

"धृति क्षमा का मूल है, जीवन का सार
की जिसने धारण धृति, वह पाये फल चार।
ध्रुवता धरणी पर धरे, पाँव निश्चल के जो
उसके किसी कार्य में, भय, संकट न हो"

इस तरह धृति - ध्रुवता के साक्षात प्रतीक थे - शेषरावजी वाघमारे।

सबका भला करो भगवान

सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया:।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दु:खभाग् भवेत्
सबका भला करो भगवान् सब पर दया करो भगवान्।
सब पर कृपा करो भगवान सबका सब विधि हो कल्याण।।
हे ईश सब सुखी हों कोई न हो दुखारी।
सब हों निरोग भगवन् धन धान्य के भण्डारी।।
सब भद्र भाव देखें, सन्मार्ग के पथिक हों।
दुखिया न कोई होवे सृष्टि में प्राणधारी।।

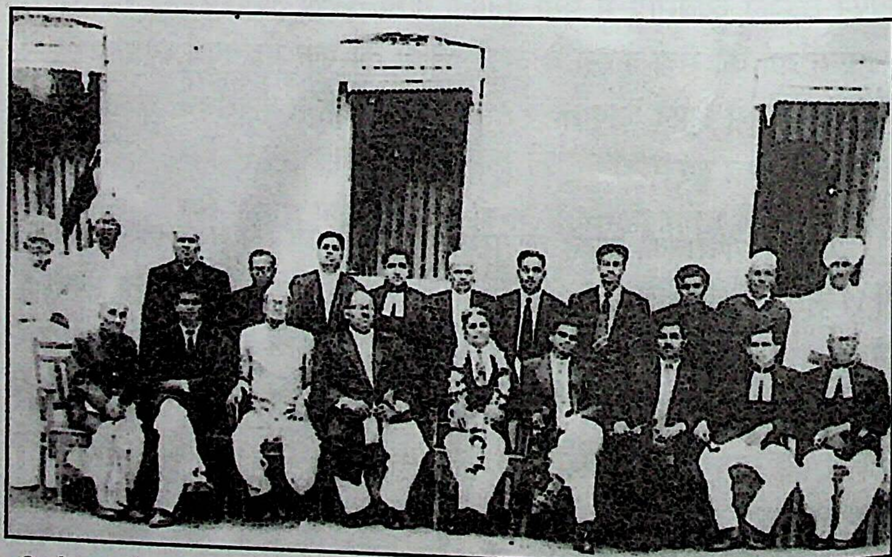
वकील श्री शेषरावजी

'श्री शेषरावजी के पूर्वज और प्रारम्भिक परिचय' अध्याय में श्री शेषरावजी के पूर्वज श्री भवानीपंत कुलकर्णी की चौथी पीढ़ी का नेतृत्व करनेवाले - श्री माधवराव कुलकर्णी का परिचय हम दे चुके हैं। श्री माधवरावने अपने पुजारी, तथा खेती व्यवसाय से हटकर वकालत की परीक्षा दी और वे परीक्षा में उत्तीर्ण भी हुए थे। वकालत करने की दृष्टि से अपने गौर नामक ग्राम से निलंगा आ बसे थे। वकील माधवराव की इच्छा थी कि पुत्र भी वकील परम्परा को निभाये। उनके ज्येष्ट पुत्र श्री रामचन्द्र ने उन्हे काफी निराश किया था। किन्तु दूसरे पुत्र श्री शेषरावजी ने वकालत की परीक्षा में ९९% अंक प्राप्त किये और अपने पिता के इच्छानुसार अव्वल दर्जे के वकील बने। निलंगा कोर्ट में ही उन्होंने वकालत शुरू की और थोड़े ही दिनों में फौजदारी मुकदमे चलाने में वे निष्णात हुए थे। वकील शेषरावजी के व्यक्तित्व का अन्य पहलू यह भी रहा कि वे समाज के सामान्य वर्ग के प्रति सदा समानता का व्यवहार करते रहे। उनके यहाँ दीन, अस्पृश्य व्यक्ति अपनी समस्याएँ लिए पहुँचते, तो उनकी सहायता के लिए वे सदैव तत्पर रहा करते थे। अपने वकील व्यवसाय में पैसा कमाना कभी उनका उद्देश्य नहीं रहा, अपितु सामान्य वर्ग की सेवा करना वे अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण ध्येय मानते थे। इन्हीं कारणों से अपने आयु के १८ वर्ष में ही, वकील शेषरावजी कुलकर्णी नाम से ख्याति प्राप्त हुए।

वकील शेषरावजी चाहते तो परम्परा से चली आ रही वकालत - व्यवसाय में ही लगे रहते और धन की कमाई कर, आराम से अपना जीवन बिता सकते थे, किन्तु संभवत: नियति कुछ दूसरा ही चाहती थी। वकील शेषरावजी के जीवन में एक नया मोड़ आया। वकील शेषरावजी वकील बन्सीलालजी के सम्पर्क में आये। यह सम्पर्क एक वकील का दूसरे वकील से नहीं था, अपितु यह सम्पर्क एक नवयुवक तथा वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारक के बीच का सम्पर्क था। वकील शेषरावजी आर्यसमाज की ओर मुड़ गये और वैदिक सिद्धान्तों के प्रसारक और प्रचारक बने। पूर्व के अध्याय में इसका विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।



वकील श्री शेषरावजी वाघमारे



श्री. शेषरावजी वकील अन्य वकील वर्ग के साथ (बाँये से चौथे) उनके पीछे खडे ऍड अनंतराव सबनीस (दाँयें से तीसरे) ऍड शिवाजीराव पाटील निलंगेकर (बाँये से तीसरे) ऍड रामराव शाहिर।

इस नये रास्ते पर चलते हुए भी, शेषरावजी अपनी वकालत से हट नहीं पाये। वकालत ही उनके जीवन चरितार्थ का एक मात्र साधन था।

निलंगा आर्यसमाज का भवन, जब ध्वंस किया गया तब वकील शेषरावजी, वकिल बन्सीलालजी के दाहिने हाथ बनकर सम्बन्धितों पर फौजदारी मुकदमा चलाने में साथ देते रहे। मुकदमा चलाने में उन्होंने किसी प्रकार की कसर नहीं छोड़ी। अन्त में इस मुकदमें का फैसला निलंगा आर्यसमाज के पक्ष में हुआ।

सन् १९४० का एक प्रसंग है। 'इत्तेहादुल त्ते मुसलमीन' मुसलमान संगठन हैदराबाद रियासत में आतंक मचाये हुए था। औराद शहाजनी के पं. देशबन्धु इस आतंक के विरोध में खड़े हुए तो शासन के रोष का सामना करना पड़ा। उनपर झूठे आरोप लगाकर उन्हें निलंगा के पुलिस कस्टडी में रखा गया। वकील शेषरावजीने यह मुकदमा भी अपने हाथ में लिया और पं. देशबन्धुजी पुलिस कस्टडी से छूट गये। औराद अग्निकाण्ड के पश्चात् पं. देशबन्धु तथा उनके साथियों पर झूठा मुकदमा दायर किया गया था। बीदर के कोर्ट में इस मुकदमे की पैरवी वकील कासीम रजवी कर रहे थे। वकील कासिम रज़वी के विरोध में वकील शेषरावजी खड़े हुए और मुकदमा चलाते रहे। परिस्थितियाँ विपरीत थी, और वकील शेषरावजी को इस मुकदमें में सफलता प्राप्त नहीं हुई। किन्तु वे अन्याय और झूट के विरोध में निर्भय होकर लड़ते रहे।

लातूर में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच दंगा फसाद हुआ। दोनों एक दूसरें पर टूट पड़े। उस दंगे में श्री विश्वनाथप्पा सोलापुरे को चारों ओर से घेरकर मुस्लिमों ने उन पर वार किये थे। श्री सोलापुरे ने भी आंव देखा न तांव, गोलियाँ चलाईं, जिससे एक मुसलमान मर गया। श्री विश्वनाथप्पा सोलापुरे पर खून करने के अपराध में कोर्ट में मुकदमा दायर किया गया - मुकदमा दायर करनेवाले वकील थे - कासिम रजवी। वकील शेषरावजी श्री सोलापुरें की ओर से कोर्ट में वकिल कासीम रजवी के विरोध में खडे हुए। वकिल शेषरावजी की वाक्चतुराई तथा तार्किकता के सामने वकील रजवी टिक नहीं पाये। अंततः कोर्ट को वकील शेषरावजी की बात माननी पड़ी कि श्री सोलापुरेने आत्मरक्षण के लिए गोली चलाई थी। श्री सोलापुरे निर्दोष छूट गये।

श्री पढ़रीनाथ पाटील मुशीराबाद ने एक ऐसे ही प्रसंग को सम्मुख रखा। उस्मानाबाद जिले के अन्तर्गत लातूर के समीप ही बोरी नामक जहागीरदारी और तहसील थी। बोरी के कोर्ट में, आपसी दंगों के कारण, हिन्दुओं पर मुकदमा दायर किया जाता था। ऐसे समय, अन्याय, असत्य के विरोध में संघर्ष करने के लिए वकील शेषरावजी निलंगा से घोड़े पर संवार हो, कंधे पर कराबीन धारण किये, बोरी पहुँचते थे और मुकदमा लड़ते थे। यहाँ तक कि रास्ते में मुसलमान उनपर वार करने की तैयारी में लगे रहते थे किन्तु शेषरावजी की भव्यमूर्ति देख, वही थमे रह जाते थे।

निलंगा कोर्ट में कुछ अलग सा मुकदमा चला था। विरोधी पक्ष की ओर से काजी वकील थे। काज़ी वकील 'बैगन' से डरा करते थे। जैसे ही उनके सामने 'बैगन' रखा जाता था, वे सहम से जाते थे, उनकी घिग्गी बंद हो जाती थी। वकिल शेषरावजी काज़ी वकील की इस कमजोरी को भलीभांति जानते थे। काज़ी वकील कोर्ट में बहस के लिए खड़े रहते, तब वकील शेषरावजी छिपाये हुए बैंगन को बाहर निकालते और काज़ी वकील का ध्यान बैंगन की ओर आकर्षित करते थे, तब काज़ी वकील बहस ही नहीं कर पाते थे। वकील शेषरावजी की वकालत भी हास्य विनोद की रहती थी - यहाँ यह एक उदाहरण प्रस्तुत है।

सन १९४७ में हैदराबाद रियासत में हैदराबाद वकील संगठन भी हैदराबाद की मुक्ति के लिए सक्रीय था। श्री विनायक राव विद्यालंकार के मार्गदर्शन में Pleader's Protest Committee स्थापित हुई थी, जिसके अध्यक्ष स्वयं वे थे, उपाध्यक्ष थे श्री गोपालराव एकबोटे - ॲडवोकेट, मंत्री थे श्री धरणीधर संघी और कोषाध्यक्ष थे - श्री जे.व्ही. नरसिंहराव। रियासत की हिन्दू जनता पर असंख्य अत्याचार, अन्याय किये गये थे। 'ॲन इनफार्मो आपरेटर ॲड ॲट्रो सिटीज' इस पुस्तक में भीषण अत्याचार का विवरण प्रस्तुत किया गया है। ''रियासत में १४४० देहातों से १७ करोड़, ८५ लाख १८ हजार रुपयें लूटे गये। १३३३ देहातों के ८७८८ घरों को आग लगा दी गयी। इस आगजनी में ६२ लाख, ६४ हजार रुपयों की हानि हुई। ९२१ व्यक्तियों का खून किया गया और ११६० स्त्रियों पर बलात्कार किया गया।''

Pleader's Protest Committee ने हिन्दुओं पर हुए अत्याचार की जाँच के लिए हायकोर्ट के जज श्री खलिलुज्जमा सिद्दिकी को अपना निवेदन प्रस्तुत किया था। यह समिति अपना निवेदन प्रस्तुत कर नहीं सकी उसने रियासत में कोर्ट की कार्यवाही पर बहिष्कार की घोषणा की। इस घोषणा के अनुसार रियासत के दस हजार वकीलों ने २५ फरवरी - १९४८ को कोर्ट की कार्यवाही पर बहिष्कार घोषित कर कोर्ट की कार्यवाही बन्द कर दी थी। ऐसे समय वकील शेषरावजी चुप्पी साधे कैसे बैठ सकते थे? यद्यपि वे उन दिनों 'बार्शी कँप' में विस्थापितों की व्यवस्था में लगे थे, फिर भी निलंगा कोर्ट की कार्यवाही बन्द कराने में आगे रहे। (संदर्भ ग्रन्थ -१) हैदराबाद मुक्ति संग्रामातील चित्त थरारक आठवणी - लेखक - ॲड. लक्ष्मणराव कापसे, २) हैदराबाद मुक्ति संग्राम के कुछ अध्याय लेखक-यशवंतराव सायगांवकर)

शेषरावजी के वकालत सम्बधित एक प्रसंग वाघमारे परिवार से सुनने को मिला। एक कसाई व्यक्तिपर हत्या का आरोप था। शेषरावजी के पास वह व्यक्ति पहुँचा और गिड़गिड़ाता रहा कि वकील साहब उसका मुकदमा चलाएँ। वकील साहब बारबार पूछते रहे कि सचाई क्या हैं, वह व्यक्ति अपने आपको निर्दोष ही कहता रहा। मुकदमा चला और शेषरावजी वकील उस व्यक्ति को निर्दोष सिद्ध करने में सफल हुए। उस व्यक्ति ने वकील साहब को उस जमाने २०००/- रु. दिये। उस समय इस धनराशि का महत्व अत्याधिक था। इन रुपयों से उन्होंने बहुत अच्छे दो बैल खरीदे। पर ये दोनों बैल आठ दिन के भीतर ही मर गये। शेषरावजी ने उस व्यक्ति कों बुलाया और सचाई जानने का प्रयास किया। स्पष्ट हुआ कि वह व्यक्ति हत्यारा ही था। सचाई जाननेके बाद शेषरावजी काफी दु:खी हुए। उन्होंने अपने जीवन में कोई झूठी वकालत नहीं की थी।

हैदराबाद स्वतंत्र भारत में विलीन होने के पश्चात् श्री शेषरावजी १९५२ से १९५७ तक काँग्रेस के विधायक रहे। वकीलसाहब वकालत से दूर होते गये। जब विधायक का पद समाप्त हुआ, तब समाजसेवा तथा आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगे रहे। आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव, सम्मेलनों में सक्रिय रूप से सम्मिलित होते रहे, आर्य प्रतिनिधि सभा, हैदराबाद, सार्वदेशिक सभा दिल्ली से जुड़े रहे। उनकी वकालत चलती रही पर अपने हिसाब से। वकिल शेषरावजी

अपने घर से कोर्ट जाते थे, उनकी चाल में एक वकील की शान निश्चित रुप से झलकती थी। रास्ते में- बच्चे, बूढ़े सभी 'सलाम, नमस्ते, नमस्कार - वकील साहेब' कहते थे, वकील शेषरावजी उतनी नम्रता से अभिवादन स्वीकार कर, कोर्ट पहुँचते थे। जब कोर्ट पहुँचते तब कोर्ट भरा हुआ सा लगता - एक अलग सा आल्हादपूर्ण वातावरण छाया रहता था।

वकील शेषरावजी वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश के पूर्व तक अपनी वकालत में कार्यरत रहे। वकालत करते समय उन्होंने कभी सच्चाई का साथ नहीं छोड़ा, न किसी पर अन्याय होते देखा, न किसी अन्यायी से भयभीत रहे, ऐसे थे वकील शेषरावजी।

वेद सन्देश

ओ३म् उतस्या तो दिवा मतिरदिति रुत्या गमत्।
सा शान्ताता मयस्करदप स्त्रिधः।।

(सामवेद)

हम विचारशील बने ताकि शान्ति व सुख का लाभ करते हुए घृणाकी वृत्ति से दूर रहे।

ओ३म् अनमित्रं नो अधरादन मित्रं न उत्तरात्।
इन्द्रान मित्रं नः षश्चावन पुरस्कृधि।।

(अथर्ववेद)

मनुष्य सब स्थान और सब काल में शान्तिदायक कर्म करें।

कृषक श्री शेषरावजी

शेषरावजी अपने प्रारंभिक जीवन में वकालत के क्षेत्र में प्रवेश कर गये। शेषरावजी के समग्र जीवन पर दृष्टिपात करने के पश्चात् यह स्पष्ट होता है कि वे वकालत की क्षेत्र से ही जुड़े नहीं रहे, सामाजिक, राजनीतिक, क्षेत्र के साथ हैदराबाद मुक्ति संग्राम के वे वीराग्रणी तथा आर्यनेता भी रहे। एक अलग सा क्षेत्र, कृषि भी, उनके जीवन से जुड़ी रही है।

सन १९४८ तक निलंगा शहर में, उनका अपना घर नहीं था, न हीं अपनी खेती। वकील पाशामियाँने अपने मित्र वकील शेषरावजी को, कम कींमत में, किश्तों में अपना घर बेचा। घर बेचने में व्यवहार कम था, मित्रता अधिक रही। शेषरावजी को रहने के लिए अपना निजी निवास हुआ। उनकी इच्छा थी कि वकालत पेशे के साथ जुडा हुआ व्यवसाय भी होना चाहिए। वह व्यवसाय था - कृषि का। वे भलीभांति जानते थे कि अपने भरे पूरे परिवार के लिए मात्र वकालत का सहारा काफी न होगा, सहारे के लिए खेती भी होनी चाहिए। उन्होंने प्रथम निलंगा के समीप 'सतीमळा' खेती खरेदी, उसके बाद अपने घर के पीछे - रही खेती खरीदी, उसीके समीप श्री गोविंदाचार्य की खेती भी खरीदी। निलंगा से दस की.मी. दूरी पर 'गुन्हाळ' नामक ग्राम में खेती ली। उन्होंने हर खेत परिवार के किसी न किसी नाम से करवा दिया ताकि भविष्य में कोई झंझट उपस्थित न हो सके। इस खेती के व्यवहार में, शेषरावजी अपने छोटे बन्धू-बापू से जरूर सलाह लेते रहे और बापू खेती के व्यवसाय को अपनाने में, अपने अग्रज बन्धू शेषरावजी को अपनी सम्मति तथा साथ देते रहे। वे दोनों बन्धु जानते थे कि अपने हरे भरे परिवार के लिए, हरी भरी खेती आवश्यक है। इस व्यवहारिक दृष्टि को अपनाये, वे इस व्यवसाय से भी जुड़े रहे।

खेती, मालिक के पैरों का स्पर्श चाहती है, यदि मालिक का स्पर्श न हो, वह अपने आपको बेसहारा समझती है। शेषरावजी सूर्योदय के पूर्व ही अपने खेत की ओर निकलते थे, खेत की चारों ओर चक्कर काटते रहते थे। कहाँ अनावश्यक घांस है, कहाँ कंकड हैं, उन्हें स्वयं निकालते रहते थे और नौकरों को आवश्यक निर्देश भी देते रहते थे। उस्मानाबाद जिला - अन-उपजाऊँ रहा है, इसका कारण

रहा है - आवश्यक वर्षा का न होना। वर्षा के अभाव में, कई खेत बंजर हुआ करते थे। शेषरावजीने कृषि का अध्ययन कर, हर खेत में कुएँ खुदवाये थे, इलेक्ट्रीक मोटर बिठाई थी, ताकि खेत को समय समय पर पानी से सिंचित किया जा सके। यह सिंचन प्रक्रिया ही कृषि को उर्वरा बना सकती है, इस बात को वे अच्छी तरह से समझ चुके थे। कृषि के लिए आवश्यक बातों से परिचित हो, वे अपने नौकरों को भी सूचना देते रहते थे।

शेषरावजी अपने खेत में हर तरह का अनाज उपजाते रहे। मूँगफली, जवार, गेहू, मकई, ईख - सब तरह की उपज में वे दक्ष रहा करते थे। उन दिनों फलों की खेती कम ही हुआ करती थी। शेषरावजी 'फलोद्यान' की ओर आकृष्ट हुए। खेत के थोड़े से हिस्से में - आम, अमरुद, अनार, संतरी, मोसंबी, नींबू के बगीचे तैयार करने में वे सफल हुए। अपने परिवार के लिए फल की उपज का कुछ भाग अवश्य ही रखते रहें। फल परिवार तक पहुँचते थे, फल की टोकरियाँ दामादों और बापू के यहाँ भी पहुँच जाती थी। वे मित्रों को आमंत्रित कर, उन्हे फल चखने का अवसर प्रदान करते थे। उनके खेत में, मकई, मूँगफली, 'हुरडा' आदि की पार्टीयों के अनोखे दृश्य उनके पुरानी साथी, अभी भी भूले हुए नहीं हैं।

अन्य कृषकों की तरह, शेषरावजी कृषक तो जरूर रहे पर, वे कुछ बढे-चढे या प्रगतिशील कृषक भी रहे हैं। धान उपज की स्पर्धा में, उन्होंने दो बार बाजी मार ली थी, सर्वाधिक धान उपज में वे प्रथम रहे थे। शासन की ओर से, रेशम का शमला (साफा) और चांदी का कड़ा (कंगन) प्रदान कर, उन्हें गौरवान्वित किया गया था। कई दिनों तक -रेशम का शमला और चांदी का कड़ा, घर की शोभा बढ़ाता रहा और एक सफल कृषक की कहानी भी कहता रहा है।

विधायक शेषरावजी कृषि तथा कृषक सम्बन्धित कई प्रश्नों को विधान सभा के पटल पर रखते रहे। हरिजनों को दी हुई जमीन, निलंगा की परम्पोक जमीन, पॅडी मिक्सर का हिसाब, Pending Tenancy cases, कृषि को उपजाऊ बनाने के लिए, निलंगा परिसर में तालाबों की आवश्यकता, खेती के लिए आमोनियम सल्फेट, आमोनियम नाईट्रेट जैसे रासायनिक खाद उपलब्ध करवाना, ट्रॅक्टरों की उपलब्धता आदि अनेक प्रश्नों को शासन के सम्मुख रखने का उनका

प्रयास सराहनीय रहा है। मराठवाड़ा में वर्षा की कमी के कारण, काश्तकारों की बेचैन से विधायक शेषरावजी भी बेचैन हुआ करते थे। काश्तकारों की जमीन, साहूकारों द्वारा हड़प जाने की दु:खदायक घटनाओं से वे चिन्तित हुआ करते थे। भारतीय कृषि के क्षेत्र में, पशु महत्वपूर्ण साधन रहा है। उसे भी नियमित रूप से चारा उपलब्ध होना चाहिए, उपलब्ध न होने के कारण, वे अपनी चिन्ता को सदन में रखने से नही चूकते थे।

Hyderabad Tenancy and Agricultural Land, Amendment Bill - 8th April 1953, सदन में सादर होने पर, उनका कृषि, कृषक सम्बन्धित चिन्तन परख उनका वक्तव्य उनके कृषि विषयक गहराई को व्यक्त करता है। ''इस बिल के सम्बंध में, सदन मे उनके मंतव्य के शब्द हैं ''इस बिल की असल यह हैं - सिलींग Ceiling. शासन का यह स्टेप काफी प्रोग्रेसिव्ह है, इसका क्रेडिट शासन को देना चाहिए। 'Land to the tiller' यानी जमीन जो काश्त करेगा, उसकी ही जमीन होगी'' - विधायक शेषरावजी इस तत्व के हिमायती रहे हैं। अपने मंतव्य की पुष्टि के लिए, चायना, अमेरिका के कायदे-कानून को भी उन्होंने स्पष्ट किया है। सिलींग के निर्धारण में उपजाऊ, अनउपजाऊ जमीन, उसकी आमदनी का ख्याल जरूर रखना चाहिए, इस बात को वे बार बार दुहराते रहे हैं। शेषरावजी की यह मान्यता रही है कि शासन का सिलिंग संबंधित कदम, एक क्रान्तिकारी कदम रहा है।

तकावी माफी के संदर्भ में, शेषरावजी का विधान सभा में प्रस्तुत मन्तव्य भी महत्वपूर्ण रहा है। ''गरीब काश्तकारों को राहत मिलनी चाहिए।'' Land Reform के सम्बंध में, उन्होंने सदन को अवगत किया था, ''मराठवाड़ा में, गवर्नमेंट ने पहले जो Land Reform जाहिर किया था, उस वक्त ऐसा मालूम हुआ कि जमीन का मसला हल होनेवाला है। लेकिन जैसे जैसे दिन निकलते गये, हमे तजुरबा होने लगा कि मराठवाड़ा में बड़े काश्तकार नही के बराबर हैं। इस Tenancy Act का मराठवाड़ा के छोटे काश्तकारों पर अच्छा असर नहीं हुआ है।''

राष्ट्र प्रमुख के संभाषण के प्रत्युतर में, शेषरावजी का कहना यह रहा है ''इस

अड्रेस में एक चीज की कमी में महसूस कर रहा हूँ। बीदर जिले में बरसात की ज्यादती की वजह से, जो नुकसान हुआ है - वह काफी हुआ है। इसका जिक्र नहीं है। ...... वहाँ हालत इतनी खराब हुई है कि रबी सूखी है, लोग भूखे मर रहे हैं, मजदूरों को मजदूरी भी नहीं मिलती''।

Tenancy Act, Land Reform Act सम्बन्धित उनका मन्तव्य परिशिष्ट में विस्तृत रुप से प्रस्तुत है। विधान सभा में, उनके मन्तव्य कृषक की व्यथा, कृषि की दुरअवस्था को अभिव्यक्त तो करते ही है, साथ ही, उससे उभरने की उनकी मनोकामना भी अभिव्यक्त होती है।

ऐसे थे कृपया शेषरावजी

ईश्वर: सर्वभूतानां हृद्देशेऽर्जुन तिष्ठति ।
भ्रामयन्सर्वभूतानि यन्त्रारूढानि मायया ।।

शरीररूप यन्त्र में आरूढ़ हुए संपूर्ण प्राणियोंको, अन्तर्यामी परमेश्वर अपनी मायासे उनके कर्मों अनुसार भ्रमाता हुआ सब भूतप्राणियोंके हृदयमें स्थित है ।।

(भगवद्गीता - अध्याय १८, श्लोक ६१)



श्री शेषरावजी की विनोद-प्रियता

इन पंक्तियों के लेखक के गुरुदेव डॉ. रामकुमारजी वर्मा जीवन की व्याख्या इन शब्दों में करते थे। 'जीवन क्या है? दो आँसू, एक हँसी और आधा चुंबन।' यह व्याख्या सहज और सरल शब्दों में जीवन को अभिव्यक्त करती है। हम अनुभव करते हैं कि जीवन में दु:ख का प्रमाण अधिक होता है, और सुख का प्रमाण कम होता है। जीवन में दु:ख ही दु:ख है, ऐसी बात नहीं, सुख भी है, भले ही उसका प्रमाण कम क्यों न हो। दु:ख और सुख से भरा खट्टा-मीठा यह जीवन है।

शेषरावजी के जीवन की विशेषता यह रही है कि कठिन से कठिन प्रसंग में भी हँसी और विनोद उनके जीवन के संगी रहे हैं। श्री क्षितीशकुमारने अपने कारावास के अनुभव व्यक्त करते समय, शेषरावजी की विनोद प्रियता को व्यक्त किया है। शेषरावजी की बातों से हँसी की फंव्वारे उडते थे और इन फंव्वारों से कारावास की कठोरता छुमंतर हो जाती थी।

विनोद शेषरावजी का अभिन्न साथी रहा है। विनोद हृदय को शान्ति प्रदान करता है, विनोद के इस रहस्य से वे भलीभांति परिचित थे। आर्यसमाज के प्रचार में भी, वे हँसी और विनोद से अपने आपको अलग नहीं कर पाये। उनके व्याख्यानों में छोटे छोटे चुटकुले श्रोताओं को गुद्गुदा जाते थे। 'शूर्पणखाकी नाक कटी, कैसी कटी? फिर जुड़ेगी कैसे? नबीने चांद के टुकडे किये, कैसे किये? किस शस्त्र से किये? वह कैसा शस्त्र था?, इन चुटकुलों में एक व्यंग्य भी रहता था - एक सिद्धान्त भी छिपा रहता था। सनातनी भोजन करते समय, एक दायरा कर, बीच में बैठ जाते थे। दायरे के बाहर, अपना बाँया हाथ रखते थे, इसलिए कि बाँया हाथ गंदा काम करता है, अत: वह गंदा है, गंदगी को बाहर ही रखना चाहिए। पर वे भूल जाते हैं कि जिसमें गंदगी भरी है, वह तो दायरे के बीचोंबीच बैठा है। ऐसे चुटकुले भरे व्याख्यानों से श्रोतावर्ग हँस हँसकर लोट पोट हो जाता था। ऐसे व्याख्यानों में उनकी तार्किक बुद्धि रहती थी, हँसी भी रहती थी और रहता था एक तीखा व्यंग्य।

अच्छा विनोद और अच्छी हँसी, शेषरावजी के जीवन की सफलता की चाबी रही है। हँसी और विनोद के टॉनिक से ही, उन्होंने अपने शरीर तथा मस्तिष्क को शान्ति प्रदान की थी। यही शांति, उनके परिवार को स्वर्ग बनाने में सहायक सिद्ध

हुई। शेषरावजी के रहते, उनका घर, परिवार कभी मायूसी में नहीं पड़ा। परिवार में हमेशा हास्य-विनोद चला ही करता था।

राजनीति क्षेत्र के उनके हँसी और व्यंग्य युक्त व्याख्यानों से प्रतिस्पर्धक धाराशायी हो जाता था। एक चुनाव में, काँग्रेस का उमेदवार जीत गया, प्रतिस्पर्धी की हार हुई। हारा हुआ प्रतिस्पर्धक अपने घमंड से बाज़ नहीं आया। ऐसे समय, श्री शेषरावजी विजयी उमेदवार के विजयोत्सव में शामिल होते, प्रतिस्पर्धक की खिल्ली उड़ाते रहते। उनके ऐसे ही व्याख्यान का एक नमूना यहाँ प्रस्तुत है। कुछ शरारती बच्चे हनुमान के मन्दिर में खेल रहे थे। खेल खेल में एक नटखट बच्चे ने हनुमान की नाभि में अपनी उंगली डाली, जैसे ही नाभि में उंगली डाली, वैसे ही तुरन्त ही, उसने अपनी उंगली नाभि से निकाल ली। वह कहता रहा - अ-हा–हा कितनी ठंडक है यहाँ। फिर दूसरे, तीसरे बच्चों ने भी यह क्रम चालू रखा। अन्त में एक ने नाभि में उंगली ज्यों ही डाली, त्यों ही उसने चिल्लाना प्रारम्भ किया। नाभि में बिच्छू बैठा था, वह हर बच्चे को डंक मारता रहा। किसी ने उफ तक नहीं कहा - और एक बच्चेने चिल्लाहट की। इस व्याख्यान की उंगली प्रतिस्पर्धक की ओर उठती थी। 'मैं हार गया', अन्य भी क्यों जीतें, वे भी हारे। हार के डंक से स्वयं दुःखी तो रहे, दूसरे भी डंक से दुःखी रहे। शेषरावजी मानसिक रोगियों के तज्ञ भी थे।

शेषरावजी का हँसी और व्यंग्य से भरा और एक व्याख्यान का नमूना यहाँ प्रस्तुत है। राजनीति के मंच से श्री शेषरावजी व्याख्यान दे रहे थे। बीच में ही किसी ने उनके हाथ एक चिट्ठी थमाई। पता नहीं उस चिट्ठी मे क्या लिखा था? श्रोतावर्ग में भी उत्सुकता बढी। उस चिट्ठी को पढ़ते - न पढ़ते शेषरावजी ने अपने व्याख्यान को पूर्ववत् चालू रखते हुए कहा "अभी अभी जो चिठ्ठी आयी है, मेरे स्पर्धक मित्र की है। उन्होंने लिखा है - आज से उन्होंने शराब छोड दी है। इसे सुनते ही सभी श्रोता ठहाके लगाते रहे।

शेषरावजी जिस जिस क्षेत्र में जाते, उनके साथ उनका विनोद-व्यंग्य भी उनका हमसफर हो, चलता रहता। दुःखद प्रसंग में भी, उनका विनोदभरा स्वभाव खुलकर सामने आ जाता था। परिवार में घटित एक ऐसा ही दुःखद प्रसंग। इस प्रसंग से वाघमारे परिवार के सदस्य, सम्बन्धी भली भांति परिचित हैं। पाठक भी

इस प्रसंग से परिचित हो, इस प्रसंग को पुनः दुहराया गया है।

शेषरावजी की बड़ी बहन श्रीमती सालूबाई के पतिदेव बप्पाचार्य का देहावसान हुआ। सारे सम्बन्धी दु:खी हुए। बहन पर तो दु:ख का पहाड़ ही टूट पड़ा। पतिदेव के वियोग में उन्होंने घाँय-घाँय रोना शुरू किया। बहन का क्रंदन वातावरण को और भी गंभीर बनाये हुए था। सम्बन्धियों ने बहन को समझाने का प्रयास किया, किन्तु उनका क्रंदन थमा नहीं। शेषरावजी बहन को समझाते रहे। वे अपने बहन के पास बैठ गये। बहन से कहा 'क्या तुम अपने पति से प्रेम करती हो? बहन ने 'हाँ' कहा। शेषरावजी का अगला प्रश्न था 'क्या तुम अगले जन्म में उन्ही की पत्नी बनना चाहती हो? पति को पतिदेव माननेवाली, अगले सात जन्म में भी अपना पति, पति ही बने, इस सनातनी विश्वास की बहन ने कहा 'हां! वही पति मिले, कई जन्म में मिले'। शेषरावजी का अगला प्रश्न था - 'तू अगले जन्म में, उन्ही से विवाह करना चाहती हो, उन्ही को पति बनाना चाहती हो, तो उन्हे तुझ से पहिले जाना चाहिए या नहीं? यह सुनते ही, बहन क्रंदन से बाहर आयी, दु:खद प्रसंग में भी हँस पड़ी, सम्बन्धी भी हँस पड़े। यह केवल विनोद ही नहीं था, अपितु इस विनोद में भी वैदिक सिद्धान्त छिपा हुआ था। पति और पत्नी में एक निश्चित आयु का अन्तर होना चाहिए।

शेषरावजी को अन्यत्र कहीं जाना था। वे बस स्टॅंड पर पहुँचे, बस चलने के लिए तैयार थी। शेषरावजी जैसे ही बस में चढ़े, उनके भारी-भरकम शरीर के कारण, बस हिल गयी। सब यात्री मुड़कर देखते रहे, कण्डक्टर भी, आश्चर्य तथा क्रुद्ध हो, उनकी तरफ देखने लगा। शेषरावजी ने कहा 'कण्डक्टर साहब इतने गुस्से में क्यों देखते हो - 'मुझे डबल टिकिट देना'। इतना कहना ही था कि बस के सब लोग हँसने लगे और कण्डक्टर भी हँसता रहा।

प. प्रियदत्तजी शास्त्री ने सुनाया एक ऐसा ही विनोदी प्रसंग है। शेषरावजी गुंजोटी - आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव के अवसर पर गुंजोटी पधारे थे। उनके व्याख्यान को सुनने के लिए गुंजोटी और आसपास के लोग आर्यसमाज में पधारे थे। कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। रात्रि के समय कुछ लोग समाज के बाहर के मैदान में सोये रहे, शेषरावजी ने भी मैदान में ही अपना बिस्तरा लगा रखा था। अचानक

वर्षा शुरु हुई। लोगों के साथ शेषरावजी भी आर्यसमाज के हॉल में पहुँचे। हॉल भी टपकने लगा। वहाँ से, शेषरावजी यज्ञवेदी पर पहुँचे। किसी ने शेषरावजी को आवाज़ दी, शेषरावजी कहाँ हो'। शेषरावजी का उत्तर था - 'मैं यज्ञ वेदी पर पहुँच चुका हूँ। पहले मैदान में सोया था, बाद में हॉल में पहुँचा, फिर यज्ञवेदी पर पहुँचना पड़ा। यहाँ मेरा प्रमोशन हो चुका है। अब यहाँ से कहाँ जाऊगाँ - भगवान ही जाने?' यह सुनते ही सब लोग हँसते रहे। रातभर वर्षा होती रही - समाज के बाहर, भीतर पानी ही पानी - पर शेषरावजी के विनोद के किस्से चलते ही रहे। रात कैसे बीत गयी - पता ही नहीं चला।

अच्छा विनोद आत्मा की संजीवनी है, चिन्ता उसका विष है - यह मन्तव्य शेषरावजी के सफल जीवन को व्यक्त करता है। शेषरावजी को, हंसाने की कला में निपुणता और निश्छल हँसी, प्रभु से प्राप्त हुई थी। उनके समकालीन मित्र, कोई सामान्य व्यक्ति, वकील, शासकीय अधिकारी यदि संयोग से मिल जाए, तो अवश्य ही, शेषरावजी के व्यक्तित्व के इस पहलू को जरूर सुनाएँगे। शेषरावजी के जीवन में हँसी और विनोद के कई किस्से समाये हुए है, केवल कुछेक की प्रस्तुति ही यहाँ पर की गयी है।



काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः ।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम् ।।

रजोगुणसे उत्पन्न हुआ यह काम ही क्रोध है, यह ही महाअशन अर्थात् अग्निके सदृश भोगों से न तृप्त होनेवाला और बड़ा पापी है, इस विषयमें इसको ही तूं बैरी जान ।।

(भगवद्गीता - अध्याय ३, श्लोक ३७)

श्री शेषरावजी और श्री नरसिंह राव (बापूसाहब) आदर्श भाई-भाई

प्रारम्भिक अध्याय में, श्री माधवराव कुलकर्णी की सन्तान श्री शेषरावजी तथा उनके छोटे भाई श्री नरसिंहराव का प्रारम्भिक परिचय हम दे चुके हैं। उन दो भाईयों का बाल्यकाल अपने पिताजी के संस्कार के अनुकूल ही सनातनी वातावरण में ही व्यतीत हुआ। यह कोई अस्वाभाविक बात नहीं थी। अस्वाभाविक बात उस समय होती जिस समय बाल्यकाल में ही वैदिक ज्योति प्रज्वलित करनेवाले भाई बन्सीलालजी तथा भाई श्यामलालजी के सम्पर्क में वे न आते। उन्हीके व्याख्यानों और सामाजिक सुधार के आर्यसमाज के कार्य से प्रथम शेषरावजी प्रभावित रहे और वे वैदिक धर्म तथा आर्यसमाज के निकट आये तथा उन्होंने निलंगा में आर्यसमाज की स्थापना की। छोटे भाई नरसिंहराव ने भी, अग्रज भ्राता शेषरावजी का अनुगमन किया और उन्होंने उन्हीसे वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

भारत स्वतंत्र हुआ, पर निज़ाम अपनी रियासत को स्वतंत्र भारत में विलीन करने के विरोध में खड़ा रहा। अपने स्वतंत्र अस्तित्व के लिए, उसने कठोर कदम उठाने शुरु किये, भारत के साथ युद्ध करने की हठधर्मिता पर वह अड़ा रहा। परिणामत: आर्यसमाज को भी शस्त्रों का सहारा लेना पड़ा। शस्त्रों की निर्मिती और प्राप्ति के लिए शेषरावजी और अन्य प्रथम सोलापुर, बाद में पुणे पहुँचे। बापूसाहब B.A. की पढ़ाई बीच में ही छोड़कर, पुणे पहुँचे। शस्त्रों की प्राप्ति के प्रयत्न में, वे नागपुर भी पहुँचे और शस्त्र प्राप्ति में सफल भी हुए। बार्शी के विस्थापितों के कॅम्प में, अपने अग्रज भाई शेषरावजी का कंधे से कंधा मिलाकर साथ देते रहे। दोनों भाईयों की एक मात्र इच्छा थी कि हैदराबाद रियासत की हिन्दू जनता नृशंस निज़ाम के चंगुल से मुक्त हो। इस संग्राम में, अन्त में निज़ाम को हार माननी पड़ी। इस मुक्ति संग्राम के इतिहास में इन दो भाईयों का कार्य सराहनीय रहा है।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम की सफल समाप्ति के पश्चात्, शेषरावजी के सम्मुख पूर्व से चली आ रही, वकालत थी, वकालत में लगे रहे। इससे भी महत्व का था - आर्यसमाज का प्रचार प्रसार का कार्य। प्रश्न था, श्री नरसिंहराव (बापूसाहब) के

जीवन की दिशा क्या हो? उन्होंने निर्णय लिया और चुना पुलिस विभाग। वे आसानी से पुलिस उपनिरीक्षक पद पर नियुक्त हुए। कुछ ही समय में, उनकी लगन, प्रामाणिकता तथा सच्चरित्रता के कारण पुलिस निरीक्षक पद पर पदोन्नत हुए। यह क्रम जारी रहा, वे अपने जीवन में पुलिस अधीक्षक पद तक पहुँचे। शेषरावजी ने अपनी वकालत को महत्व नहीं दिया, अपितु वे अपना अधिकतम समय आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगाते रहे, किन्तु बापू साहब पुलिस विभाग की सेवा में निरंतर कार्यरत रहते हुए भी, समय निकाल-निकालकर आर्यसमाजों में प्रवचन देते रहे। इतना ही नहीं, पाठशाला, महाविद्यालय जैसे शैक्षिक संस्थाओं में स्वयं पहुँचकर विद्यार्थियों को सम्बोंधित करते रहे। 'उतिष्ठत संनह्यध्वम्' वीरो उठो, कमर कसलो, 'आरोह तमसो ज्योति' 'अंधकार से प्रकाश की ओर चलो, 'उद्यानं ते पुरुष नावयाम्' तेराउत्थतन हो, 'मनुर्भव' - 'मनुष्यबन' 'पदतभतिष्ट तपुषिम्' सताने वालोंको पाँवसे कुचल दो। इस प्रकार विद्यार्थियों के समुख - वैदिक सन्देश देते रहते थे। उनके सम्बोधन से विद्यार्थी ऐसे प्रभावित रहते मानो वे बच्चों के जदूगर हो। वे विद्यार्थियों को अच्छे कार्य की प्रेरणा देते रहे ताकि अपने माँ-बाप का नाम रोशन कर सकें और देश का माथा ऊंचा कर सकें। अन्य संस्थाएँ - क्लबों, सम्मेलनों, संगठनाओं के समारोह में पहुँचते रहे। धर्म, अध्यात्म, विज्ञान, आत्मा-परमात्मा जैसे गहन विषय सम्बन्धित अपने विद्वतप्रचुर विचार रखते रहे। श्रोतागण उनकी विद्वता से प्रभावित होते और साथ ही आश्चर्य भी व्यक्त करते कि एक पुलिस का अधिकारी अध्यात्म जैसे गहन विषयों का अध्येता है। बापूसाहब की एक और बात आश्चर्य की ही नहीं, सराहनीय भी है कि उनका प्रण था, 'जब तक व्याख्यान नहीं दूगाँ, भोजन नहीं करूगाँ।' अन्त तक, यह प्रण बड़े ही लगन से वे निभाते रहे। बापूसाहब की कर्तव्यपरायणता तथा ध्येयासक्ति भी अवर्णनीय रही है।

वे एक लंबी अवधि तक शासकीय सेवा सें जुड़े रहे, पर कभी अपने कर्तव्य से च्युत नहीं हुए। भ्रष्टाचार, दुराचार का एक भी काला धब्बा उनकी पुलिस की वर्दी पर लग नहीं पाया। पुलिस की वर्दी पवित्र ही रही, तभी तो उन्हे राष्ट्रपति सुवर्णपदक प्रदान कर सम्मानित किया गया। पुलिस की सेवा में रत रहते, उनकी अनेक घटनाओं का विवरण प्रस्तुत किया जा सकता है, जिनमें उनकी कर्तव्य

परायणता देखी जा सकती है। यहाँ एक ही घटना - 'मानवत हत्याकाण्ड' प्रस्तुत है। परभणी जिले के मानवत शहर में एक के बाद एक, लगातार १२ कुमारियों की हत्या की गयी। इस कुमारियों की हत्या में शायद किसी की अवांच्छित मनोकामना पूर्ण करने का क्रूर मानस रहा हो। पुलिस इस हत्याकाण्ड के अपराधी को खोज निकालने में जब असफल रही, तब बापूसाहब ने बड़े कष्ट और परिश्रम पूर्वक हत्यारे को खोज निकाला। वे अन्तिम निर्णय तक पहुँचे थे। अपने निर्णय पर अटल थे। किन्तु राजनीति के क्षेत्र में, इस हत्यारे का बोलबाला था, परिणामत: बापू साहब का स्थानातरण अन्यत्र किया गया। अपराधी की खोज के लिए मुम्बई पुलिस को बुलवाया गया। मुम्बई पुलिस अपराधी की खोज में लगी रही, उन्हे भी उसी अपराधी की ओर उंगली उठानी पड़ी, जिनकी तरफ बापूसाहब ने उंगली उठायी थी। पुलिस विभाग को 'मानवत हत्याकाण्ड' के प्रमुख अपराधी को खोज निकालने का काम - बापूसाहब को ही सौंपना पड़ा। बापूसाहब, इसके पूर्व अन्तिम निर्णय तक पूर्णत: जब पहुँचे थे, तब तीन कुमारीयों की हत्या की गयी थी, समय बढ़ता गया, बढ़ते समय में अन्य नौ कुमारीकाएँ शिकार बनी - ऐसे कुल १२ कन्याओंकी हत्या हुई। बापूसाहब अपने पूर्व खोज के सूत्र को ही पकड़कर अन्ततः प्रमुख अपराधी तक पहुँच गये और अपराधी को खोज निकालने में वे सफल हुए। पुलिस के इतिहास में 'मानवत हत्याकाण्ड' के नाम से यह घटना ख्याति प्राप्त हुई।

श्रीमती सिन्धु, बापूसाहब की धर्मपत्नी और वाघमारे परिवार की आदर्श गृहिणी - विगत ६० वर्ष से अपने परिवार से जुड़ी रही हैं। उनके साथ हुई वार्तालाप में दो भाईयों के सुदृढ-संस्मरण इन पंक्तियों के लेखक के सम्मुख आये। शेषरावजी अपनी वकालत से उतने जुड़े नहीं रहे, जितना कि जुड़ जाना चाहिए था। उनका पुत्र-पुत्रियों से भरा पूरा परिवार, पंडितों, विद्वानों, अतिथियों का आना-जाना इन कारणों से जब आर्थिक समस्या खड़ी होती रही, तब छोटे भाई बापूसाहब इन समस्याओं का हल करते रहे। शेषरावजी के पुत्रों की पढ़ाई का पर्याप्त उत्तरदायित्व भी वे निभाते रहे। बापूसाहब शेषरावजी को अग्रज भाई से अधिक पिताजी मानते रहे, उससे भी अधिक गुरु मानते रहे। बापूसाहबने अपने गुरु की आज्ञा को सदा शिरोधार्थ ही माना। जब कभी परिवार में गम्भीर प्रश्न

उपस्थित होते, तब उनके बीच उर्दू भाषा में पत्र व्यवहार होता था, इस लिए कि प्रश्न की गंभीरता से अन्य कोई सदस्य परिचित न हो। बात बड़ों में ही रहनी चाहिए - परिवार के अन्य छोटों में नहीं। और दोनों ही, बड़ी समंजसता के साथ, गंभीरता की गुत्थियों को सुलझाते थे। ऐसे समय शेषरावजी अपने परिवार के ज्येष्ट पुरुष तथा बापूसाहब, अपने पुलिस वर्दी से हटे हुए - परिवार संगठन कुशल के रूप में दिखाई देते है।

इन दो भाईयों का सबसे मेल मिलाप और सदाचार का आचरण भी प्रशंसनीय था। मधुरवाणी, विनोद और व्यंगपूर्ण बातचीत, हँसना और हँसाना - उनकी विशेषता रही है। इन्ही विशेषताओं के कारण वे समाज प्रिय भी बने।

शासकीय सेवा से निवृत्त होकर, बापूसाहब अपने बन्धु - शेषरावजी की तरह आर्यसमाज के प्रचार, प्रसार में लगे रहे। प्रचार कार्य में बापू साहब और उनकी धर्मपत्नी श्रीमती सिन्धुजीने, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश, कर्नाटक, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, दिल्ली, हिमाचल, पंजाब और जम्मू का भ्रमण किया। अपने योग्य व्यवस्था हो या न हो, अपने अनुकूल वातावरण हो या न हो, कभी जीप से, कभी बस, ट्रेन से, जो भी साधन उपलब्ध हो, भ्रमण करते रहे और ऋषिवर स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों को सामान्य लोगों तक पहुँचाते रहे। अपने प्रचार कार्य में वे किसी पर निर्भर नहीं रहते थे। न किसी से धन की अपेक्षा की, न ही विशेष व्यवस्था की इच्छा।

महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी (१९८३) समारोह संपन्न कराने के लिए बापू साहब अपनी पत्नी के साथ एक महीना पूर्व ही अजमेर पहुँचे थे। 'परोपकारिणी सभा' के हर व्यवस्थापन कार्य में अपना योगदान देते रहे। इस समारोह को सफल बनाने में जिन जिन अधिकारी, कार्यकर्ताओं ने योगदान दिया, उनकी सूची 'परोपकारी - विशेषांक में प्रकाशित की गयी है। इस अंक में महात्मा आनन्दमुनि तथा बापूसाहब के नामों का उल्लेख है। उनके चित्र भी हैं। (संदर्भ - 'परोपकारी - विशेषांक' (दिसेंबर १९८३) पृ.१०३, क्रमांक-१८ तथा पृ. १०४)। इस समारोह के अवसर पर, आर्यजनों द्वारा एक शिव संकल्प एवम् प्रतिज्ञा लेनी थी, उसका प्रारुप बनाने के लिए एक समिति स्थापित की गयी थी। समिति के संयोजन अधिष्ठता थे, स्वामी सत्यप्रकाशजी सरस्वती और बापूसाहब संयोजक थे।

शिव संकल्प और प्रतिज्ञा पत्र :

(१) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सृष्टिकर्ता परमात्मा उसकी सृष्टि और ईश्वरीय ज्ञान में - हमारी निरंतर आस्था रहेगी।

(२) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि - जीवन के उदात्त मानव मूल्यों की रक्षा करते हुए, हम बराबर स्नेह और सौमनस्य का प्रसार करेगें और किसी ऐसी प्रवृति को प्रोत्साहन नहीं देंगे, जिस से आपस में द्वेष और ईर्ष्या की भावना बढे।

(३) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि सत्य को ग्रहण करने और असत्य को त्यागने में सदा उद्यत रहेंगे।

(४) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि बिना जातिभेद, वर्णभेद या वर्गभेद के हम दीन, हीन, पीड़ितों, असहायों, रोगियों और अशक्तों को यथाशक्ति निष्काम भाव और निस्वार्थता से सेवा करेंगे।

(५) हम प्रतिज्ञा करते हैं कि - साम्प्रदायिक मतमतान्तरों में, जो अनैतिक तत्व, अंधविश्वासमूलक, अवैज्ञानिक आस्थाएँ और कुरीतियाँ प्रविष्ट हो गयी हैं - उनका हम निर्भयता से प्रतिज्ञापूर्वक प्रतिवाद करेगें और इन रुढ़ियों के समर्थन में हम किसी के साथ किसी भी स्थिति में समझौता करने के लिए तैयार नहीं होंगे (संदर्भ - 'परोपकारी विशेषांक - दिसंबर १९८३ - पृ. ६४)। इस सम्मेलन में सम्मिलित हजारों आर्यजनो नें ५ नोव्हेंबर १९८३ को बड़ी ऊची आवाज में यह प्रतिज्ञा ली थी, इन पंक्तियों के लेखक की आवाज भी उसमें समाई हुई थी।

बापूसाहब, अपने अन्तिम समय, नान्देड में नव स्थापित महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा से जुड़े रहे। इस नये संस्था से उनका जुड़े रहना मात्र अल्प काल का सिद्ध हुआ।

महात्मा आनन्द मुनिजी को यह अनुभूति हुई कि 'वस्त्र बदलने का समय आ गया है' वे ४ मार्च १९८४ को काल कराल के गाल में समा गये। अपने अग्रज

बन्धु, पिता, गुरु - महात्मा आनंदमुनि के देहावसान के कारण - बापूसाहब को गहरा आघात लगा, वे इस आघात से बाहर आ नहीं सकें। उनकी हिम्मत टूट गयी। भाई के स्मरण कर रात्रि रात्रि में रोते रहते थे। बापूसाहब को भी लगा 'अपने जीवन का अकाऊँट समाप्ति पर है।' उन्होंने अपने प्रियजनों को अपने अकाऊँट समाप्ति की सूचना भी - पत्र भेज कर दी। बापूसाहब ने अपनी जीवन लीला २२ मई १९८५ मुंबई में समाप्त की। महात्मा आनन्दमुनि तो चल बसे, पर, उनके छोटे भाई, पुत्र, शिष्य, बापूसाहब का इस आर्यजगत् को छोड़ जाना नही चाहिए था। महाराष्ट्र ही नहीं, वरन् भारत की आर्य जनता को लगा था कि १५/२०वर्ष बापूसाहब स्वस्थ रहेंगे और वैदिक सिद्धान्तों तथा ऋषिवर दयानन्द के विचारों का प्रचार प्रसार करते रहेंगे पर विधाता को यह स्वीकार नहीं था। दोनों बन्धु चले गये - मानो रौनक ही चली गयी।

'चला जाऊगाँ छोड़कर, जब इस आशियाने को।
वफाएँ तब याद आयेंगी मेरी इस जमाने को ।।'

अनाश्रित: कर्मफलं कार्यं कर्म करोति य: ।
स संन्यासी च योगी च न निरग्निर्नचाक्रिय: ।।

जो पुरुष कर्मके फलको न चाहता हुआ करने योग्य कर्म करता है, वह संन्यासी और योगी है और केवल अग्निको त्यागनेवाला संन्यासी, योगी नहीं है तथा केवल क्रियाओं को त्यागनेवाला भी संन्यासी, योगी नहीं है ।।

(भगवद्गीता - अध्याय ६, श्लोक १)



श्री. शेषरावजी और धर्मपत्नी श्रीमती सुमित्रा देवी (एक प्रसन्न मुद्रा में)



श्री. शेषराव जी के बन्धु श्री नरसिंहराव (बापू साहेब वाघमारे) पत्नी श्रीमती सिन्धू के साथ (प्रसन्न मुद्रा में)।

महात्मा आनन्दमुनि काल की ओट में

महर्षि स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर - समारोह में सम्मिलित हो, महात्मा आनन्दमुनिजी नवंम्बर मास १९८३ के मध्य में नान्देड पहुँचे। वाजेगांव (नांदेड) स्थित महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अपने इस पूर्व कार्यकेन्द्र से ही पुन: आर्यसमाज के कार्य में वे जुट गये। १९८४ वर्ष के प्रारम्भ में, प्रचार कार्य के लिए, अपने चुने हुए साथियों के साथ, वे बस से उस्मानाबाद जिले के अहमदपुर तहसील पहुँचे। अहमदपुर से कुछ दूरी पर, यलदरी नामक ग्राम में उन्हें पहुँचना था। इस यलदरी में प्र. उत्तम मुनिजी वानप्रस्थ रहते थे। पू. आनंदमुनिजी उनसे मिलने के लिए यलदरी जा रहे थे। उस समय देहात में पहुँचने के लिए बैलगाडी या घोड़े का ही, साधन उपलब्ध हुआ करता था। म. आनन्दमुनि घोडे पर ही सवार हुए, यलदरी ग्राम के लिए निकल पड़े। अन्य साथी, पैदल चलकर, उनका साथ देते रहे। संभवत: घोड़ा महात्मा आनन्दमुनि के भारी भरकम शरीर के बोझ को सहन कर नहीं सका। निश्चित कुछ कहा नहीं जा सकता। म. आनन्दमुनि घोडे पर से गिर पड़े। उनके मस्तिष्क को गहरा आघात पहुँचा। इस आघात का परिणाम शरीर पर हुआ - और आत्मिक शक्ति भी क्षीण होती रही - मस्तिष्क भी निष्क्रिय होता रहा, म. आनन्दमुनि क्षीण होते गये। ऐसी अवस्था में, उन्हे उदगीर - उनकी पुत्री श्रीमती उर्मिला के यहाँ ले जाया गया। किसी समय, निलंगा में शासकीय स्वास्थ्य सेवा में रहे, डॉ. मुंगीकर के उदगीर स्थित अस्पताल में, उन्हें दाखल किया गया। डॉ. मुंगीकर ने म. आनन्दमुनि के स्वास्थ्य की जाँच की और प्राथमिक औषधोपचार भी किया। उन्होंने सलाह दी कि म. आनन्दमुनि को तुरंन्त लातूर के ख्याति प्राप्त विवेकानन्द अस्पताल ले जाएँ। उन्ही की सलाह से, म. आनन्दमुनि को विवेकानन्द अस्पताल में दाखिल किया गया। मं. आनन्दमुनि के स्वास्थ्य का समाचार सुनते ही, समकालीन उनके मित्र - अन्य साथी, उनपर श्रद्धा रखनेवाले व्यक्ति, उनके परिवार तथा संबंधियों का तांता शुरू हुआ। विवेकानन्द अस्पताल लातूर तथा उसके परिसर में ख्याति प्राप्त अस्पताल रहा है। अस्पताल के तज्ञ डॉक्टर तथा अन्य सुविधाएँ भी वहाँ पर उपलब्ध थीं। महात्मा आनन्दमुनि के स्वास्थ्य को देखते हुए, वहाँ की डॉक्टरों की तत्परता तथा आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध होनी चाहिए थी, उपलब्ध नहीं हो पायीं। उनका स्वास्थ्य गिरता ही गया।

तब उन्हें डॉ. सारडा के 'सदा सुख अस्पताल' में दाखिल किया गया। म. आनन्दमुनि के निलंगा निवासी पुराने साथी, मित्र श्री गोविन्दलालजी बाहेती के पुत्र डॉ. हंसराज बाहेती, विशेषज्ञ के रूप में, उसी अस्पताल में कार्यरत थे। डॉ. हंसराज बाहेती पुत्रवत्: म. आनन्दमुनि की सेवा में अहर्निश लगे रहे। पिताजी के स्वास्थ्य को पूर्ववत: बनाए रखने में, उन्होंने कोई कसर नहीं छोडी। उनके प्रयास में, स्वस्थ पिताजी को देखने की उनकी अभिलाषा दीख पडती रही। कोष्ठबद्धता के कारण शौच के समय अतीव कष्ट होता था। तब डॉ. बाहेती स्वयं विविध उपचारों के द्वारा (एनीमा आदि) उन्हें कष्ट से मुक्त कराते थे। म. आनन्दमुनि शरीररुपी वस्त्र बदलने की बात करते रहे, पर डॉ. हंसराज वस्त्र बदलने की मानसिकता से उन्हें उभारना चाहते थे।

म. आनन्दमुनि का स्वास्थ्य सुधरने की बजाय और अधिक गिरता गया, उन्हें भोजन करवाने में भी दिक्कत आने लगी। मुँह में नलिका द्वारा - फल का रस दिया जाता रहा। मुँह में नलिका, नाक में नलिका के कारण उनका चेहरा भयानक दीख पडता था। ऐसी अवस्था में भी, महात्मा आनन्दमुनि तथा उनके छोटे भाई बापूसाहब के बीच का मौन वार्तालाप वातावरण की गंभीरता को आल्हाद में परिवर्तित करता था। बापूसाहब ने अपने अग्रज बन्धु के नाक, मुंह में डाली हुई नलिकाओं की ओर इशारा करते हुए, कहा 'बीन बजाइए', बापू से भी अधिक विनोदप्रिय - म. आनन्दमुनि ने इशारे से कहा, 'मैं यूँ ही फुकट में बीन नही बजाऊगाँ, रु. ५ (पांच), देने पडेंगे।' ऐसे दर्दभरे वातावरण में म. आनन्दमुनि की हँसी, विनोद उनका साथ निभाती रही।

संभवत: नियति म. आनन्दमुनिजी के पक्ष में नही थी। अन्त में वही हुआ - उनकी हृदय की गति थम सी गयी। डॉ. हंसराज हृदय गतिमान रखने के लिए, उनकी छाती को दबाते रहे। म. आनन्दमुनि के शरीर का बोझ, और ऊपर से छाती दबाने की प्रक्रियासे पलंग भी झुक गया, जिस पर म. आनन्दमुनि की देह थी। उनका हृदय गतिमान हो ही नहीं सका। ईश्वर ने इस महापुरुष को असीम उर्जा प्रदान की थी। अन्त में यह असीम उर्जा थमते थमते थम गयी, यह उर्जा ज्योत शमते शमते शम गयी। म. आनन्द मुनि काल की ओट में चले गये। इस महात्मा को विदा देने के लिए, अन्त्य विधि के समय जन सागर उमड पड़ा, अश्रु थमते

नहीं थे, प्रकृति भी बूंदे बरसाती रही और आकाश में स्थित सूर्यदेवता भी काले बादलों में आबद्ध हुए।

'ऐ' गर्दिशे' अय्याम तेरा शुक्रिया।
हमने दुनियाँ की हर पहलू देखली।।
(सेतु माधवराव पगडी)

कवि के सार्थक शब्द:
''अपनी आहुतियाँ देकर
स्वयं प्रकाशित रहना सीखों।
यश, अपयश, जो भी मिल जाये
उसको हँसकर सहना सीखों,
थकना, झुकना, चुकना, फुकना
ये जीवन का काम नहीं है,
सच पूछो तो गति के आगे
लगना पूर्ण विराम नहीं है।''
(बालकवि वैरागी)

आर्य समाजियों दौड लगाओ:

आर्य समाजियो दौड लगाओ
जब आर्यसमाजी दौड लगायेंगे,
तो ये हिन्दू खडे होंगे।
जब आर्यसमाजी खडे रहेगें
तो ये हिन्दू बैठ जायेंगे।
जब आर्यसमाजी बैठ जायेंगे,
तो ये हिन्दू लेट जायेंगे।
आर्यसमाजी लेट जायेंगे,
तो इन हिन्दुओं का काम
तमाम ही हो जायेगा।
इसलिए ऐ आर्यसमाजी लोगों - दौड़ लगाओ
ताकि हिन्दू खडा रहे।
(पं. मदन मोहन मालवीय)

मृत्यु के-२१ दिन पूर्व, म. आनन्दमुनि का पौत्र - सुशील गर्जे के नाम लिखा गया पत्र।



महात्मा आनन्दमुनिजी : चिरनिद्रा में

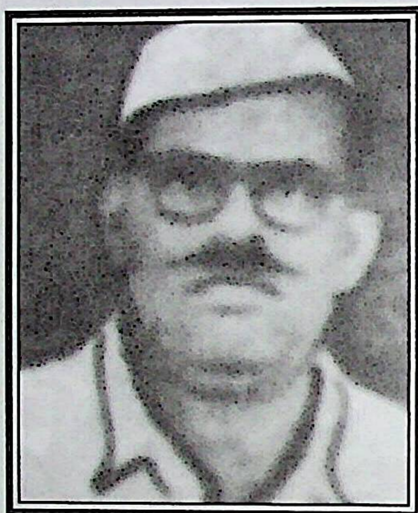


महात्मा आनन्दमुनिजी - काल की ओट में (दि. ४ मार्च १९८४)

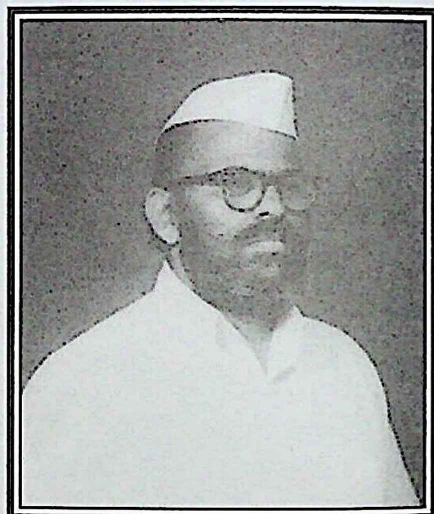


महात्मा आनन्दमुनिजी - चिरनिद्रामें (दि. ४ मार्च १९८४)

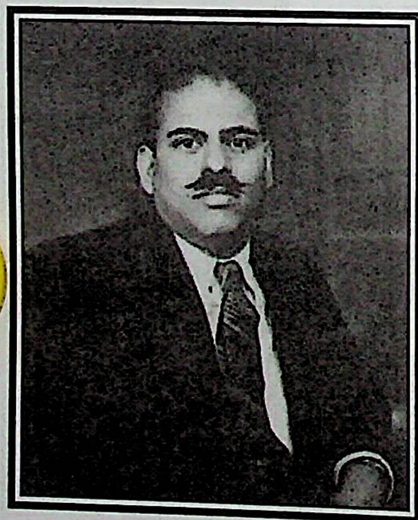
श्री शेषरावजी विभिन्न मुद्राओं में



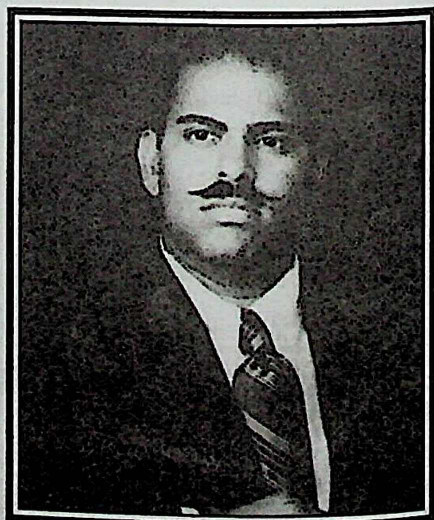
श्री शेषराव वाघमारे
स्वयंसेवक-दलपति



सत्याग्रही श्री शेषरावजी

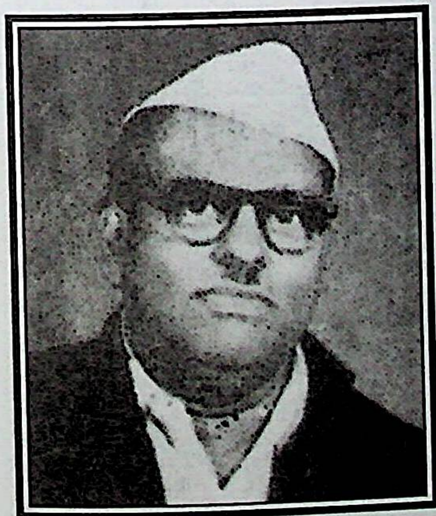


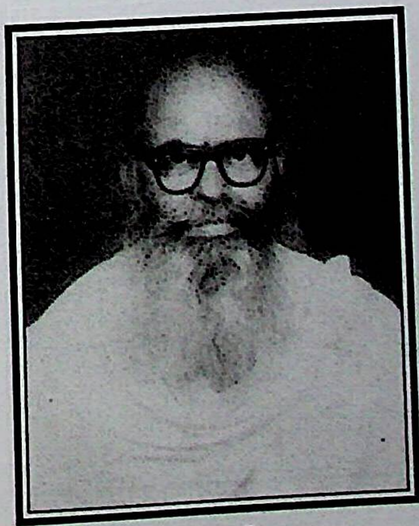
वकील



वकील


पंडित श्री शेषरावजी


पिताजी

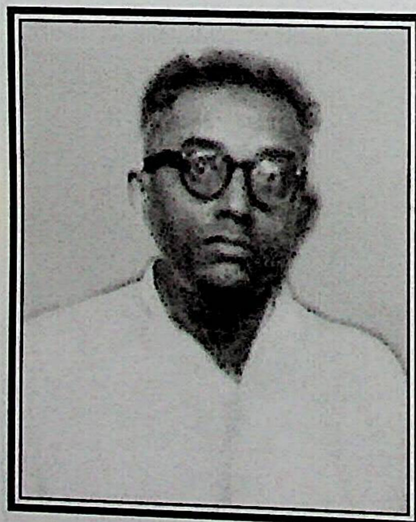

महात्मा आनन्दमुनि वानप्रस्थ

अजात शत्रू श्री शेषरावजी वाघमारे का मित्र परिवार

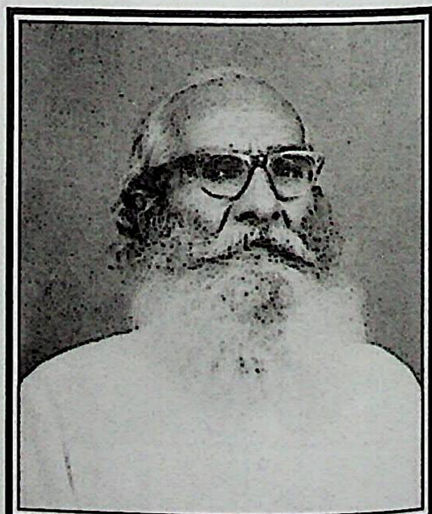


श्री शेषरावजी माघमारे

"जिन्दगी एक गणित है, दोस्तों का जोड़ करो।
खुशियों का गुणा करों दुश्मनों का घाटा करो।।
दु:ख से भाग दो, पर कभी निराश नही।
जिन्दगी का वर्गमूल निष्फल आयेगा।।"



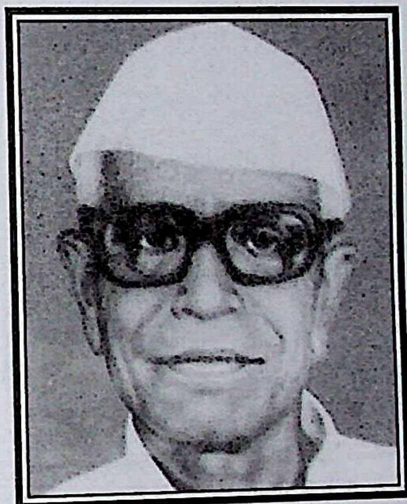
पं. वीरभद्रजी देशबन्धू (औराद श.)
स्वतंत्रता सेनानी



स्वतंत्रता सेनानी श्री नांगप्पाजी शरणंप्पाजी
धर्म शेट्टी, निलंगा



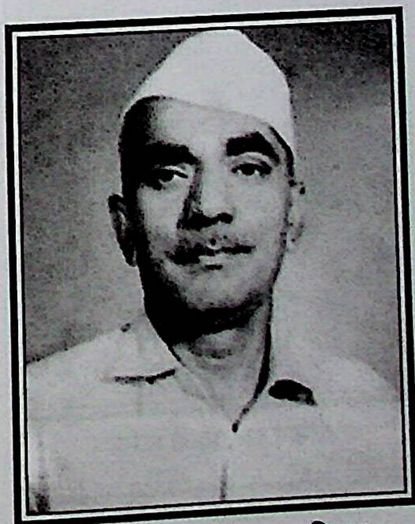
स्वतंत्रता सेनानी
श्री. गोविन्दलालजी बाहेती - निलंगा



श्री गणपतराव नारायणराव निंबालकर
स्वतंत्रता सेनानी (निलंगा)



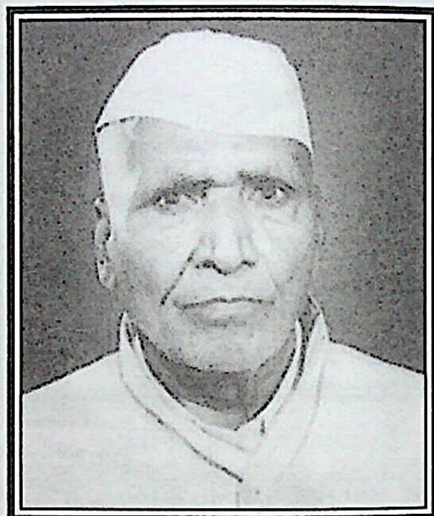
श्री. गोविन्दराव नाईक (हैदराबाद मुक्ति संग्राम में श्री शेषरावजी के साथ एक छाया की तरह रहे)



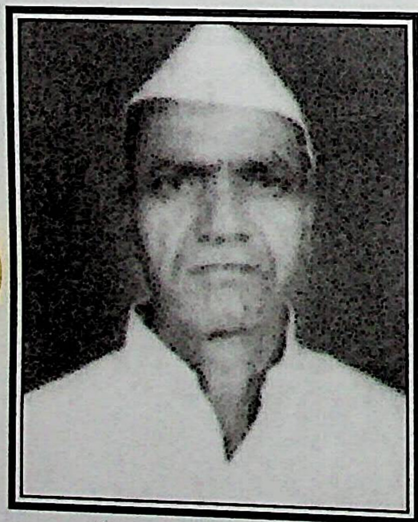
श्री नारायणराव व्यंकटराव हिरास



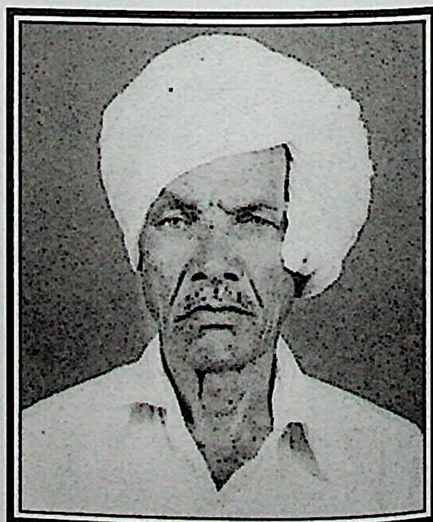
श्री निवासराव व्यंकट राव कुमठेकर
स्वतंत्रता सैनिक अबुलगा (बु.)



श्री रामराव शाहीर



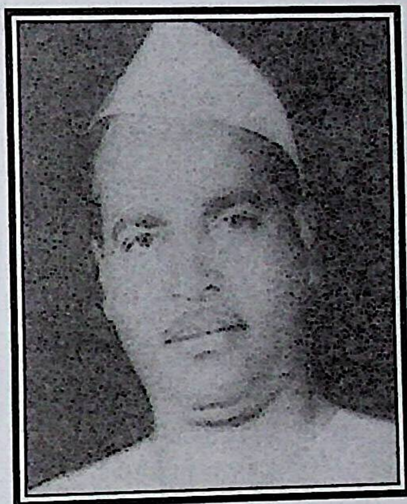
श्रीमान बाबुरावजी शेटकार



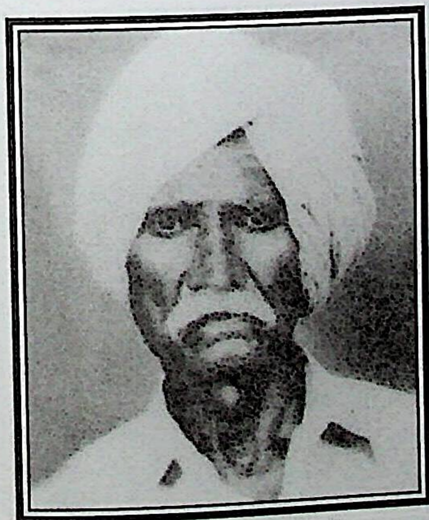
श्री ज्ञानोबाजी पंडित, निलंगा



श्री लक्ष्मणराव धुमाळ मास्तर
मौजे हणमंतवाडी



श्री बाबूराव जी पहलवान



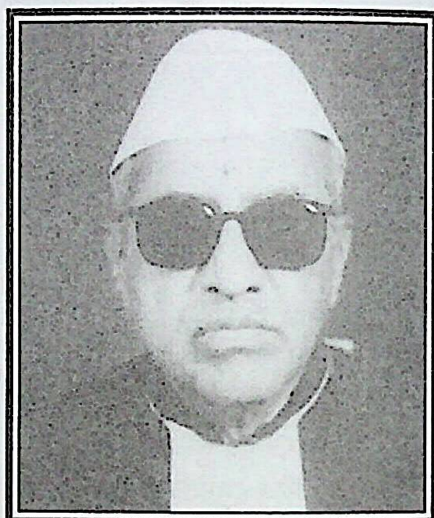
श्री गुंडाजी मामा शिगांडे, पेठ



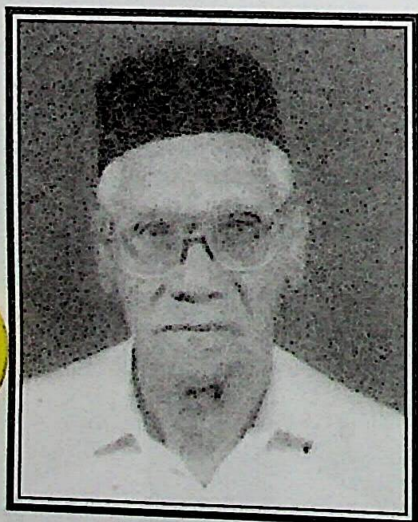
श्री गणपतराव तुकाराम बिराजदार



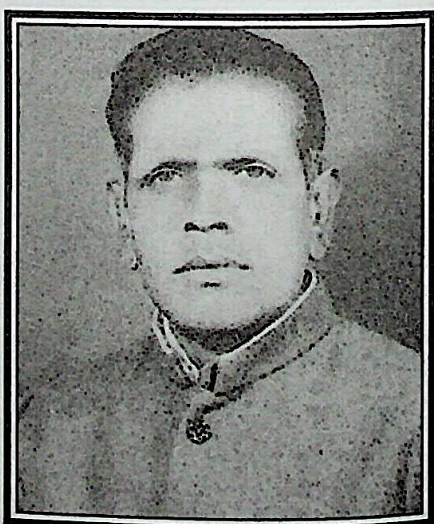
स्वतंत्रता सेनानी
श्री बलीरामजी पाटील
(शेषरावजी के अभिन्न साथी, निलंगा)



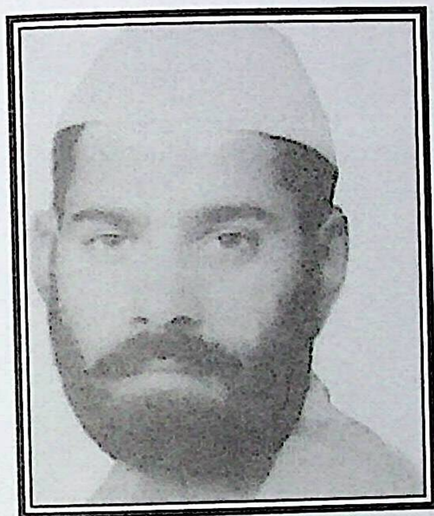
श्री अनन्त रावबाबा साहब सबनिस
ॲडवोकेट, निलंगा



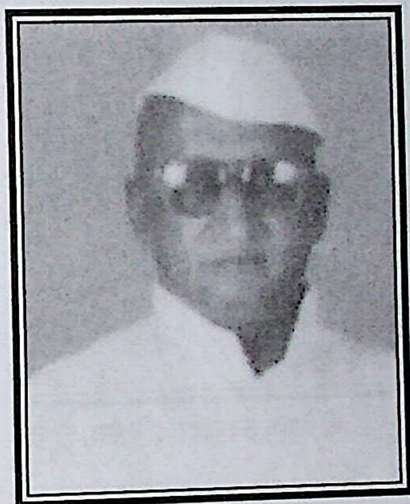
श्री मदनलालजी अट्टल
निलंगा



श्री वासुदेवराव बाप्पाचार्य पिम्पळे
(श्री शेषरावजी के भांजे)
बार्शी कॅम्प के साथी - निलंगा



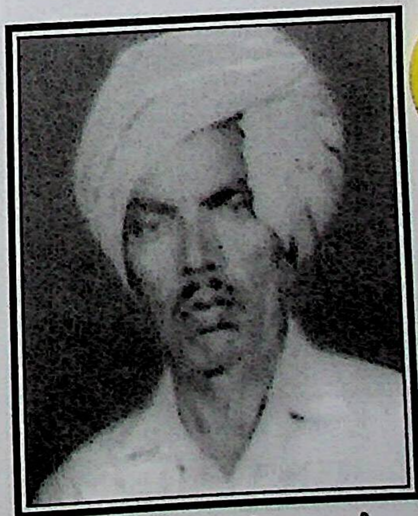
श्री हिरामण बळीराम डोईजोडे
(औराद शहाजनी)
(हिन्दी रक्षा आन्दोलन १९५७,
श्री शेषरावजी के जत्थे में)



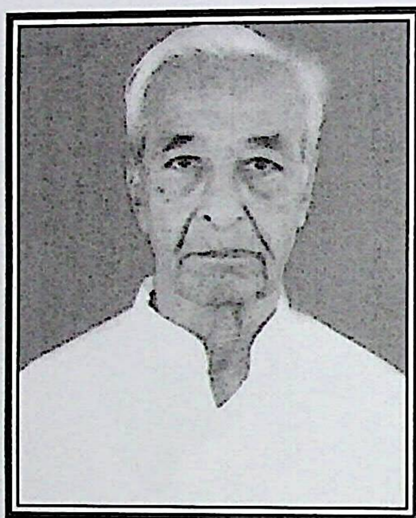
श्री यशवंतराव सायगांवकर
स्वतंत्रता सेनानी



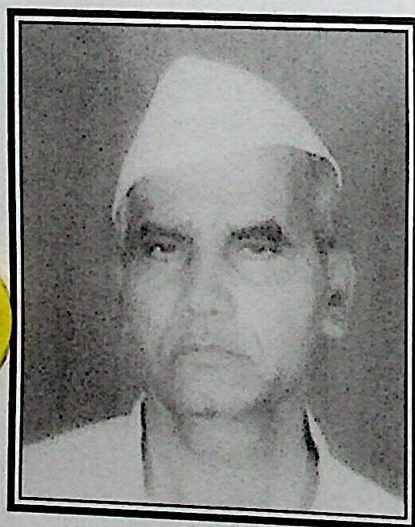
श्री रामलाल रामचंद्र बाहेती
स्वतंत्रता सेनानी, निलंगा

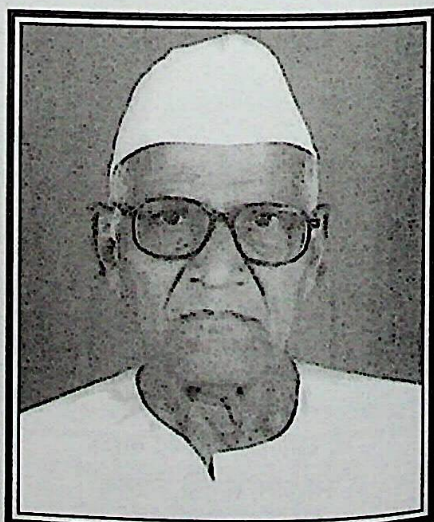


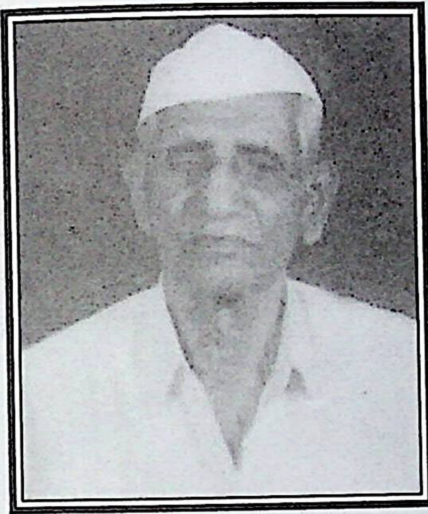
श्री. ज्ञानोबाराव नामदेवराव आर्य


श्री माधवराव नाईक (निलंगा)

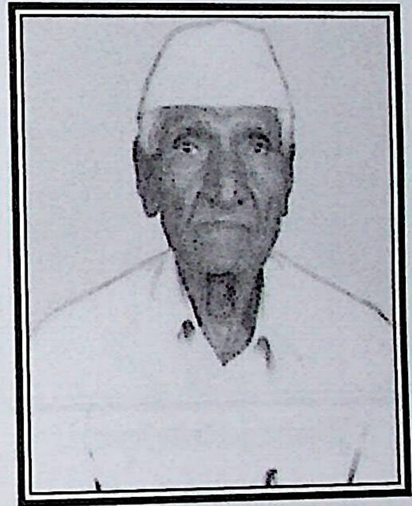

श्री नरसिंह माधवराव वाघमारे (बापूसाहब)


श्री विजयकुमार शेटकार, निलंगा
आर्य समाज के कट्टर कार्यकर्ता


श्री मल्हारराव होळकर



स्वतंत्रता सेनानी
श्री भीमरावजी देशमुख
(निलंगा)



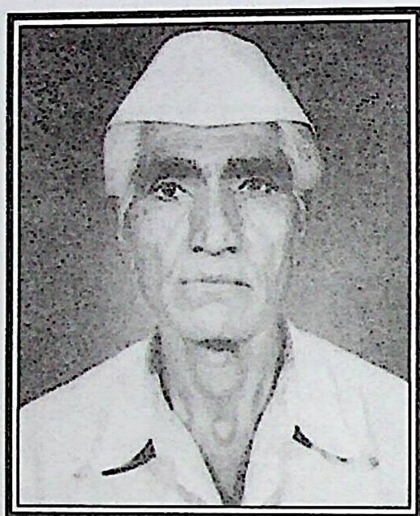
पंढरीनाथ शिंदे भुतावळे



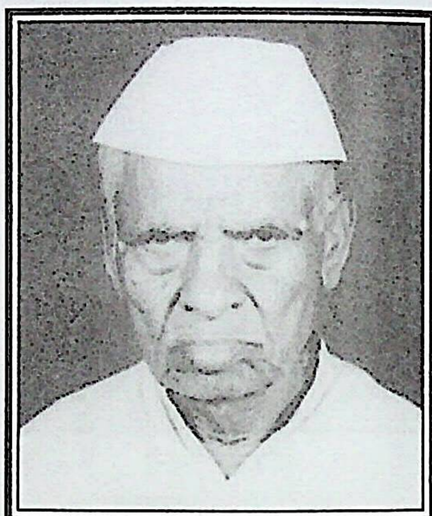
श्री नामदेवराव पाखरसांगवे



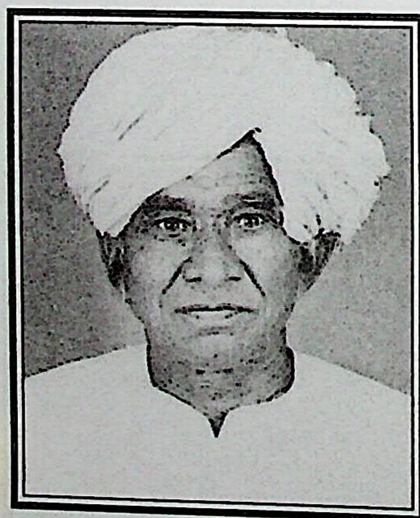
श्री नामदेव लक्ष्मण राव चोपणे



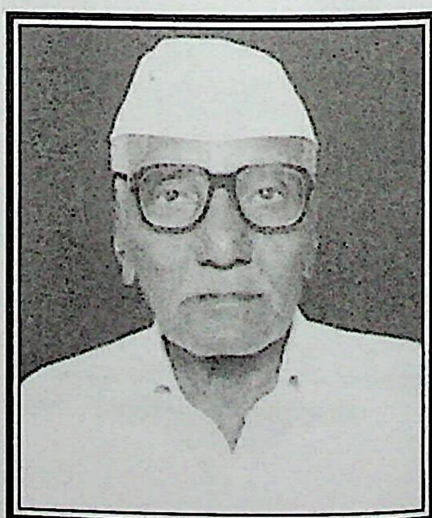
श्री पंढरीनाथजी शिंदे (निलंगा)



स्वतंत्रता सेनानी श्री. पुडंलिकराव आर्य, निलंगा



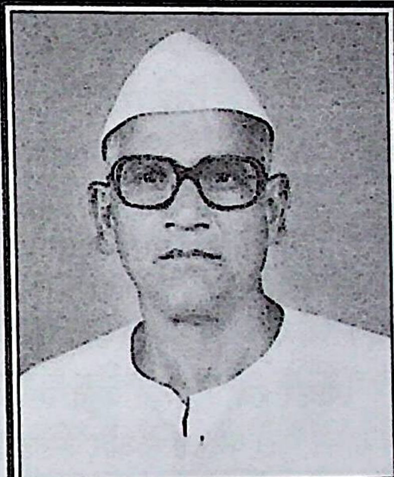
श्री रामजी चिमाजी शिंगाडे (निलंगा)



श्री भिवाजीराव सुरवसे

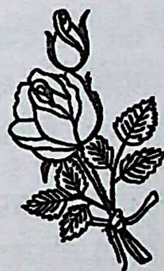


राम लक्ष्मण भंडे, निलंगा



स्वतंत्रता सेनानी मल्हारी होळकर (निलंगा)





अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्। अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।।

-अथर्व० १९।१५।६

हे प्रभू, आपकी कृपा से मित्र से अभय हो। शत्रू से भी भय न करे। प्रत्यक्ष में अभय हो। परोक्ष में अभय हो। रात्रिकाल, दिवसकाल में अभय प्राप्त हो। सब दिशाएँ मेरी मित्र स्नेहयुक्त, हानि रहित हो जाएँ। आप की कृपा से हम सब ओर से, हर समय में अभय प्राप्त हो। इस प्रकार हम सुख:शांति पूर्वक जीवन व्यतीत करें।

परिशिष्ट - १

विधायक श्री शेषराव वाघमारे

(विधान-सभा में व्यक्त मतव्य)

Bill No. 1 of 1953 The Hyderabad Tenancy and Agricultural Land (Amendment Bill) 8th April 1953.

(१) श्री शेषराव मधवराव वाघमारे :- (निलंगा)

स्पीकर सर, मेरे पूर्व बहुत सारे व्यक्तियोंने, यह जो मसविदा बिल ह्युउस के सामने बिल के पक्ष मे ओर उसके खिलाफ अपनी राय का इजहार किया है। हाउस का ज्यादा वक्त नहीं लूंगा, ओर घंटी बजने से पहले ही अपनी तकरीर खतम करूंगा । हमारी बातोंपर यहां ऐतराज किया गया, और उसका जवाब भी काफी अच्छी तौर पर दिया । अब उस पर ज्यादा वक्त जाया करने की मै जरूरत नहीं समझता हूँ । यह जो किया गया है, उसकी खास खास चीजों पर इस हाउस की तबज्जे मै मबजूल करना चाहता हूँ।

यह बिल जो हमारे सामने पेश है इसके लिए, हमने और कॉग्रेसने इस तक पहुंचने के लिये, जो जद्दोजहद की, उसका ही यह नतीजा है कि आज यह बिल यहां लाया गया है । इस बिल की जो असल रूह है वह हैं सिलिंग (Ceiling) । यह जो कदम गव्हर्नमेंट ने बढाया है, उससे हम यह कह सकते हैं कि दूसरे सूबों के मुकाबले में हमारा यह कदम आगे ही है । हमारा यह एक स्टेप (Step) काफी प्रोग्रेसिव्ह (Progressive) है। आपको भी मानना पड़ेगा, और उसका क्रेड़िट (Credit) भी हमको देना होगा।

अभी अभी एक आनरेबल मेंबर ने अपनी तकरीर मे अमेरीका के लॉ (Law) को Quote किया और हमारे सामने पेश किया । तो अपोजिशन बेंचस से यह कहा गया कि यह अमेरीका का लॉ है । खैर उसको जाने दीजिये। मै आपके सामने उस सुर्ख चीन का Law पेश करूंगा जिसके प्रति आपके दिलों में बहुत ज्यादा भक्ति है । यह जो कानून है वह कम्युनिस्ट चायना ने पास किया हुआ है, और यह जो कानून पास किया गया है हम एक कदम आगे है,

या १० कदम पीछे है, यह आप ही तय कीजिए। हम यह मानते हैं कि कसेल त्याची जमीन'' याने जो खुद कास्त करता है उसकी जमीन होनी चाहिए। यही तत्व हमने सुना है। क्या अपने कानून बनाते समय सुर्ख चीन ने यह तत्व माना है कि लँन्ड टू दी टिल्लर (Land to the Tiller) यानी जो जमीन कास्त करेगा उसकी जमीन होगी? चायना ने जो कानून ३० जून, १९५० को पास किया है उसकी दफे ७ की तरफ मैं हाउस को मबजूल कराना चाहता हूँ। उन्होने यह कहा है कि वह कास्तकार हो, यह बागायीत हो, वह अपने पास जमीन रक सकता है, याने उन्होने अपने कानून में यह तत्व नहीं माना जो खुद कास्त करता है उसी को जमीन मिलनी चाहिए। उनके कानून में दूसरों को भी जमीन मिल सकती है। गर्ज अमरिका हो या चायना हो, हमने जो कदम उठाया है और आज हमारे सामने जिस कानून के बनाने का सवाल है वह शायद आपकी राय में तशफ्फी बख्श न हो लेकिन हम यदि दूसरे देशोंसे आगे नहीं हैं तो कम सें कम उनके बराबर तो हैं। यह आपको भी मानना पडेगा। उस कानून में ऐसी कोई चीजे हैं जो प्रोग्रेसिव्ह हैं लेकिन जरूरत इस बात की है कि हम एक दूसरे के नजरिये को समझने की कोशिश करें। बात यह है कि हम और आपमे कुछ बुनियादी एखतलाफात हैं। हमारा रवैया इस बात को हल करने का अलग है और आपका अलग है। तो खाली मुखालिफत करने से काम नहीं चलनेवाला है। हमको एक दूसरे के साथ बैठकर ठंडे दिल से इसपर सोंचना चाहिए।

हमने यह जो आज लिमिट मुकर्रर की है कि इससे ज्यादा जमीन किसी के पास नहीं रह सकती है यह एक इनकलाबी कदम है और मैं समझता हूं कि इसकी वजह से ही यह विरोध हो रहा है। मुखालिफत जो हो रही है इसकी भी चंद वजूहात हैं वह मै बाद में आपके सामने रखूंगा। लेकिन आज जो यह सिलिंग रखने की बात इसमें कही गयी है वह कोई मामूली बात नहीं है। यह एक बहुत बडी और इनकलाबी चीज है। कमसे कम इसका तो स्वागत आप लोगों को करना चाहिए था। लेकिन आपने तो वह भी नहीं किया यह एक अफसोस की बात है।

कुछ ऑनरेबल मेम्बर्स ने तो इस चीज को माना है कि हमने जो सिलिंग रखा है वह तो अच्छा किया है, लेकिन जो सिलिंग रखा गया है वह बहुत ज्यादा है, वह ठीक नहीं है। सिलिंग इससे कम होना चाहिए। यह सजेस्ट (Suggest) करते

समय उनके सामने कुछ और मकसद होगा किंतु हमारे सामने कुछ और मकसद है। बात यह है कि हम गैरजिम्मेदाराना तरीके पर कुछ काम नहीं करना चाहते हैं। हमें सब बातों के बारेमें सोचना पडता है। हमने ३६०० रुपये की आमदनी का सिलिंग रखा था वह काफी है ऐसा हमारा खियाल है। लेकिन कुछ आनरेबल मेंबर्स ने यह सजेस्ट किया कि ३६०० रुपये के बजाय २००० रुपये करना चाहिए। लेकिन यह २००० रूपये क्यों करने चाहिए इसकी वजह तो एक ने भी नहीं बतलाई। मैं काफी ध्यान से भाषण सुन रहा था। लेकिन इसका जवाब मुझे कहीं न मिला। और यह जो २००० रूपये का सजेशन रखा गया है उसमें और ३६०० रुपये का जो सीलिंग हमने रखा है उसमें ऐसा कौन-सा बडा फरक है कि जिससे आपके २००० रूपये को हम तसलीम करे? एक ऑनरेबल मेंबर को मैंने पूछा कि यह आपने कैसे सजेस्ट किया तो उन्होंने कहा कि यदि हम आपकी बात मान लें तो फिर हमारा अपोजिशन में रहने का क्या मतलब है? हमें तो आपके हर बात का विरोध करना चाहिए, इसलिए हमने २००० रूपये सजेस्ट किये। मुखालिफत करना तो हमारा फर्ज है इसलिए २००० रुपये सजेस्ट किये।

श्री अण्णाजीराव गव्हाणें :- क्या आप उस मेंबर का नाम बता सकते हैं?

श्री शेषराव माधवराव वाघमारे :- हाउस में नाम नहीं बताया जाता है। आपको मै हाउस के बाहर नाम बताने के लिये तैयार हूँ।

दूसरे एक ऑनरेबल मेंबर को मैंने पूछा कि आपने २००० रूपये की आमदनी कैसे सजेस्ट की तो उन्होंने कहा कि हमें २०० रूपया माहवार मिलते हैं। याने हमारे सालके २४०० रूपये होते हैं। और आपके कहने के मुताबिक हम यदि ३६०० रुपया आमदनी रखते हैं तो यह हमारे माहवार से ज्यादा है। हमारे से उनकी आमदनी बढे यह हम नहीं चाहते हैं। यदि उनकी आमदनी ज्यादा बढ़ी तो फिर हमारा कैसे चलेगा? इसलिए हम ३६०० रुपया नहीं रखना चाहते है। आमदनी तो हमारे से कम ही रहनी चाहिए। अपोजिशन बेंचेस तो इस तरह कहते ही रहेंगे। हमको इसकी तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये, और मैं ट्रेजरी बेंचेस से अपील करूंगा कि हमने जो यह कदम आगे उठाया है और हम जो आगे जा रहे हैं हमें पोजीशन की कुछ परवाह नहीं करनी चाहिये और हमारा काम बराबर करते रहना चाहिए और हमारे मकसद तक हमें पहुंचना चाहिये।

हमने जो सिलिंग मुकर्रर की है वह आमदनी पर की है। और हमने मुकर्रर की है वह ८०० रुपये के इनकम (income) पर रखी है। लेकिन मेम्बरों का यह सुझाव है कि यह फॅमिली होल्डिंग बजाय आमदनी के एकरेज (Acreage) के आधार पर हो। मैं यह मानता हूं कि लँड कमिशन (Land commission) मुकर्रर होगा तो एकरेज का ताउन करेगा। लेकिन एकरेज का भी ताउन करना सरल काम नहीं है। काफी दुशवारियाँ हैं। मैं कह सकता हूं कि सब जमीनों की पैदावार की सकत नहीं होती। तेलंगाना की जमीन के बारे में मुझे ज्यादा जानकारी नहीं है। वहां आमदनी एक सी होती होगी, इसलिए वहाँ पर शायद एकरेज करना मुमकिन होगा। लेकिन मैं मराठवाडा और कर्नाटक की हदतक तो यह कह सकता हूँ कि वहां की जमीनों के किसम में काफी फरक है और वहाँ एकरेज का ताऊन करना होता है।

ऑनरेबल मेंबर ने यह फरमाया कि कर्नाटक और मराठवाडे में हर फॅमिली को ३० एकर सिलींग रखी जाय। मुझे शुबाह होता है कि इसमें भी कुछ न कुछ राज जरूर होगा। कि मराठवाडा और कर्नाटक की दृष्टि से यह फॅमिली होल्डिंग किस तरह काफी हो । मुझको तो मालूम होता है कि इस तरह ३० एकर का सजेशन देने में भी कुछ न कुछ मकसद है। और इस सियासी मकसद को हासिल करने के लिए यह चीज कही गयी है। बात यह है कि तेलंगाने में जो स्ट्रगल (struggle) चल रहा था जिसे आप स्ट्रगल कहा करते हैं, जो कि वहां के बडे बडे जमीनदारों के खिलाफ था, वह अब ठंडा हुआ है। यह स्ट्रगल वहां बढने की वजह यह थी कि वहां बडे बडे जमीनदार थे जिनके पास कई एकर ज्यादा जमीन थी ओर वहीं पर दूसरी तरफ बहुत बडी तादाद में गरीब मजदूर थे जो कम दाम पर काम किया करते थे, जिन्हें पेटभर खाने के लिए भी नहीं मिलता था। यह जो तफावत थीं इसकी वजह से वहां का मुव्हमेंट (movement) बढा। लेकिन बात यह हैं कि कम्युनिस्ट स्ट्रगल के चिराग की रोशनी कम होती जा रही है। और यह चिराग गुल हो रहा है। और यह जो चिराग था वह अब आप मराठवाडे में जलाना अब तक इस के लिए उनको मराठवाडे में कोई स्थान नहीं मिला। आपको मराठवाडे में एक भी उमीदवार नहीं मिला।

श्री शेषराव माधवराव वाघमारे : हिंदुस्तान के आदमी का सरासरी उत्पन्न

६ पाई होता है। पाई के हिसाब के हर बशर पर इन्कम लगाये तो बहुत जुल्म होगा। हमारे ऑनरेबल मेम्बर कहते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी को गये इलेक्शन में जो वोट (vote) पडे हैं वे बमुकाबले पार्टियों के बहुत ज्यादा है। एवरेज पर सारी बाते होती हैं। इस दृष्टि से उनका कहना सही है। लेकिन असलियत में क्या हुआ है? दूसरी पार्टी की गव्हर्नमेंट आयी और उनके ऊपर ही ताज है। उनके एवरेज के हिसाब में उनको बहुत ज्यादा वोट पडने से वे ट्रेजरी बेंचेस पर नहीं आ सके। मेरे कहने का मतलब यह है कि एवरेज का मामला ही ऐसा होता है। उससे बातें उलटी हो जाती है। प्रेक्टिकली उसका कोई फायदा नहीं होता। कागजात पर फायदा हो सकता हैं। मुझे यह सजेशन देना था कि बजाये इसके कि एवरेज-एकरेज आमदनी पर सीलिंग मुकर्रर की जाय, मालगुजारी पर मुकर्रर किया जाना चाहिए। क्योंकि मालगुजारी जो तायुन होती है वह जमीन की हैसियत से होती है। जो दस एकड जमीन है, इसमें जितना उत्पन्न निकलता है उतना खराब जमीन के सौ एकड में नहीं निकलता। कर्नाटक और मराठवाडे में तीन रुपये एक एकड पर लगान है। तेलंगाने का मुझे मालूम नहीं है। वहां दूसरा हो सकता हैं। और खराब जमीन के लिए मराठवाडे में ४ एकड मालगुजारी में लगान मुकर्रर होता है। मालगुजारी पर सीलिंग करने से हर शख्स के साथ इन्साफ होगा। इसलिए गव्हर्नमेंट से मेरी प्रार्थना है कि इस चीज को अपने पेशेनजर रखकर आमदनी पर जो सीलिंग मुकर्रर किया है और जो एक सजेशन दिया गया है कि एकरेज पर सीलिंग मुकर्रर किया जाय, दौनों से बेहतर होगा कि मालगुजारी पर सीलिंग मुकर्रर किया जाये। अपोजिशन बेंचेस से हमेंशा बहुत एतराजात होते हैं। उसके निस्बत मुझे यह कहना है कि इमानदारी से एतराज किये जाते तो ट्रेजरी बेंचेस इसका स्वागत करते। लेकिन किसी पार्टी का यह ध्येय हो जाता है, कोई भी अच्छी चीज आये तो भी उसका विरोध तो करना ही चाहिए। मुझे अब एक बात याद आई कि जब जबरिया तालीम का बिल आया था उस वक्त वह बिल पेश होते है। अपोजिशन की तरफ से हमेंशा कहा जाता था कि ऐसा बिल आना चाहिए लेकिन उन्होंने विरोध करना शुरू कर दिया। उस्मानाबाद के ऑनरेबल मेंबरने कहा कि बच्चों को तालिम देने का बिल अगर आप पास करेंगे तो उनके मां बाप को जो कि उनके बच्चों के लिए आमदनी होती है वह डूब जायगी, इसलिए जबरिया तालिम नहीं होनी चाहिये। इस

तरह भी हम कहते हैं उसकी मुखालिफत की जाती है। हमने कहा कि सॅलरी १५० रुपये की चाहिये तो उन्होंने कहा कि नहीं, दो सौ रुपये होनी चाहिए। हमने कहा कि ३६०० की सीलिंग मुकर्रर किया जाय तो वे कहते हैं दो हजार कीजिये। हर बात में एख्तेलाफ है। जो जिम्मेदार लोग होते हैं वे अच्छी बातों में एख्तेलाफ नहीं करते, लेकिन जिनपर जिम्मेदारी नहीं होती वे कभी बैठते हैं, कभी वाकऔट (walkout) करते हैं, कभी रहते ही जाते हैं, ऐसा ही चलता रहता हैं, क्योंकि इनपर कोई जिम्मेदारी नहीं है। साल से जिस बिल को लाने के लिए आपने वादा किया, अभी तक नहीं लाया गया। देरी हो गयी है। यह मैं भी मानता हूं। लेकिन जब बिल करते है तो कहते हैं कि अभी उसको पास न किया जाय। इसको सिलेक्ट कमिटी (select committee) की तरफ जाने दीजिए। हालांकि इसके लिए मांग थी, जद्दोजहद करते थे। अविश्वास का प्रस्ताव भी लाया गया था। लेकिन जब बिल लाते हैं तो कहते है कि इसको अभी रहने दीजिए। ऐसे ही जब कि हम चाहते हैं कि इसी सेशन में पास किया जाय......

विरोधी दल से एक माननीय सदस्य : फिर जैसा है वैसा ही उसको पास कर लो।

श्री शेषराव माधवराव वाघमारे : वे कहते हैं कि हम काश्तकारों के पास जायेंगे, उनसे पूछेगें कि उनकी आमदनी क्या है, किस तरह से उनको फायदा होगा या नुकसान होगा। किसान और मजदूरों के नेता हैं, और आप इससे भी नावाकिफ हैं कि एक किसान की क्या आमदनी होती है। उनका कहना है कि हम अपनी अपनी कान्स्टीट्युएन्सी (Constituency) में जायेंगे, लोगों से पूछेंगे और उसके बाद, उसको हाउस में पेश करेंगे तब हम इसको पास करेंगे।

श्री व्ही.डी. देशपांडे : अभी पास कीजिए लेकिन दो हजार सीलिंग मुकर्रर कीजिए।

श्री शेषराव माधवराव वाघमारे : हम जाकर पूछेंगे और बाद में करेंगे इसमें कोई बात नहीं है। यह गलत है। असली बात तो यह है कि जैसे ही यह बिल पास होता है तो सब खतरा तेलंगाने की मुव्हमेंट (Movement) को है। अव्वल तो बिनोबा भावे जी के आन्दोलन की वजह से तेलंगाने की मुहमेंट को टारपेडो लग

गया है, और अब यह बिल पास हो तो कम्युनिस्ट पार्टी की यहां से जड ही उखड जाती है। इसलिए वे चाहते है कि किसी तरह से तवालत देना चाहिए, किसी तरह से आगे ढकेल दें, सप्टेंबर सेशन तक ले जायें, ताकि तब तक तेलंगाना के लोगों से कुछ न कुछ कहने के लिए हमको समय मिल सकेगा। इसलिए जहां तक हो सके वे इसको तवालत देने की कोशिश कर रहे हैं। इसलिए मैं हाउस से प्रार्थना करूंगा कि इसको जल्द से जल्द पास करना चाहिये। एतराजात तो होते ही हैं। जो गैरजिम्मेदार होते हैं वे हमेशा एतराजात करते रहते हैं। चीफ मिनीस्टर से पहले पूछा जा रहा था कि इस बिल को आपने क्यों नहीं पेश किया। जब अविश्वास के प्रस्ताव पर चर्चा हो रही थी तो एक ऑनरेबल मेंबर ने कहा था कि आप अगर इस बिल को नहीं लाते तो हम इस बिल का मसविदा तैयार कर रहे हैं, वह अखबारों में छापा करेंगे और पब्लिक को बतायेंगे कि हमारे ये ये उद्देश्य हैं। मैं उस ऑनरेबल मेंबर से पूछना चाहता हूं कि कहां है वह वादा जो आपने उस वक्त किया था? यह बात तो सही है कि आपको पूछनेवाला कौन है? आपने अब तक ऐसे कितने ही वादे किये हैं। वादे तो होते हैं क्योंकि जिम्मेदारी कोई नहीं है। कहते थे कि हम ऐसा रेजोल्यूशन (Resolution) लानेवाले हैं जिसमें हर शख्स को कितनी जमीन दी जायगी वह बतायेंगे। क्या आपने वह वादा पूरा किया है? क्या आपने कभी जाहीर किया है कि हर शख्स को कितनी जमीन रहनी चाहिये? उस रेझोल्यूशन को अब तक आपने जाहीर क्यों नहीं किया? वह इसलिए नहीं किया कि आपके साथियों ने आपको रोका। हमसे कहा जाता है कि हम सरमायेदारों के एजंट (Agent) हैं। लेकिन आप तो हमसे भी बडे बडे सरमायेदारों के एजंट हैं। देशमुख देशपांडों के एजंट हैं। शायद आपको साथियों ने उस वक्त आपको सलाह दी होगी कि हम अखबारों में इस तरह का बिल प्रकाशित करेंगे तो अपनी पार्टीका पोल खुलेगा और अपनी ही बदनामी हो जायगी और अपनी पार्टी को कोई नहीं पूछेगा। किसी अखबारों में यह बिल देने की आपको जुर्रत नहीं हुई। अविश्वास के प्रस्ताव पर तो काफी बोल दिया गया था लेकिन अब तक वह रेझोल्यूशन और बिल अखबारं में नहीं आये । जिन पर जिम्मेदारी होती है वे हमेशा जिम्मेदारी से ही बातें करते हैं। चूंकि अब समय ज्यादा नहीं है और स्पीकर महोदय घडी की तरफ देख रहे हैं, इसलिए मैं आखिर में इतना ही कहूँगा कि विरोधी दल के लोगों ने जो

एतराज किये हैं उनकी तरफ कोई ध्यान न दिया जाय और मैंने जो सुझाब रखे हैं उनके उपर गौर किया जाय। जो बिल हमारे सामने पेश है, पुरजोर ताआद करते हुए में हाउस से प्रार्थना करूंगा कि इस बिल को मंजूर किया जाय।

(२) तकावी - माफी और अन्य संदर्भ में विधायक शेषरावजी का मंतव्य :

तकावी के बारे में: मुझे कुछ सजेशन करना है। बहुत कुछ ऑनरेबल मेम्बर्स ने काफी एतराज किया है - गर्व्हर्नमेंट तकावी वसुल कर रही है, काफी रक्कम हो गयी है। तकाबी आधी माफ कर देनी चाहिए। मुझको अचंबा होता है , अपोजिशन बेंचेस यह नहीं कहता कि फला वक्त काश्तकारों को ज्यादा भाव आरहे है, इसलिए इस रक्कम में इजाफा करना चाहिए। ''लेकिन आज भाव कम हो रहे है तो यह कहा जा रहा है - तकावी की रक्कम आधी माफ होनी चाहिए। मैं कहना चाहता हूं कि इसके बारे में अभी अभी एक सरक्युलर सरकार की तरफ से जारी हुआ है । कुछ गरीब लोगों को, जो कि दिक्कतों में फँसे हैं उन्हें रिलीफ दिया जा सकता है, और ऐसा रिलीफ दिया जाना भी चाहिए। मैं कहना चाहता हूँ कि हमारी गव्हर्नमेंट किसी परिस्थिति की तरफ आँख मूंद कर नहीं बैठी है। और जो भी जरूरी बातें हैं, जो स्टेप लेना आवश्यक है, वह बराबर लिए जा रहे हैं। आप तो सिर्फ गव्हर्नमेंट की मुखालिफत ही करना चाहते हैं, और इसलिए जो भी काम गव्हर्नमेंट अच्छा करती है वह आपको दिखता ही नहीं। बात यह है कि गव्हर्नमेंट कोही सिर्फ हमें ही नहीं चलानी है। उसकी जिम्मेदारी तो आप और हम पर समान ही है, और दोनों को मिलकर ही गव्हर्नमेंट को चलाना है। अगर कुछ गलतियाँ गव्हर्नमेंट की है तो वह तो सुधारी जा सकती हैं। लेकिन होता यह है कि अच्छे काम को तो नहीं देखा जाता है, और जहाँ जादी है, उसे बढाचढाकर रखा जाता है। कोई कहता है कि काँग्रेस के मेंबर्स करप्ट होते हैं, सरकारी अफसर करप्ट होते हैं, गिरदावर और तहसिलदार तो सबसे ज्यादा करप्ट होते हैं। लेकिन इन तमाम बातों का जो अच्छा असर होना चाहिए वह तो नहीं पडता हैं, बल्कि इसके बिलकुल विपरीत असर होता है। इस तरह से जब आपोजीशन मेंबर्स कहते हैं, तब उसका अच्छा असर तो होता नहीं किन्तु जो काम होना चाहिए वह भी नहीं होता है, और ज्यादा तकलीफ होती है।

ऑनरेबल मेंबर्स ने कलेक्टर और दूसरे ओहदेदारों के दौरों के सिलसिलें में यह बताया कि जब मिनिस्टर या डिप्टि.-मिनिस्टर दौरों पर आते हैं तब इन्हें वहां हाजिर रहने की जरूरत नहीं है। और कई सजेशन्स भी दिये गये। उसमें के कुछ तो गौर करने के लायक थे, लेकिन दूसरी भी काफी बातें कही गयीं। मिनिस्टर साहब जो दौरा करते हैं उनके साथ हर वक्त वहां पर तमाम अफसर लोगों को हाजिर रहने की जरूरत नहीं है, यह बात मैं भी मानता हूं, लेकिन कई मर्तबा मिनिस्टर साहब जब दौरे पर आते हैं तब रिआया उनके सामने अपनी दिक्कतें पेश करती है और कई केसेस भी उनके सामने पेश किये जाते हैं। उस वक्त केसेस के जल्द डिसपोझल के लिये कलेक्टर वगैरा को वहां रहना जरूरी होता है। ताकि सब मिलकर केसेस को डिस्पोज ऑफ करे। लेकिन हर वक्त कलेक्टर या डिप्टि. कलेक्टर को रहने की जरूरत नहीं, इस बात को मैं तसलीम करता हूँ लेकिन उसके लिए खास एतराज उठाने की जरूरत नहीं है।

अब मैं ऑनरेबल मिनिस्टर साहब से यह दरखास्त करना चाहता हूं कि आज हमारे सामने जो तवसी आबादी का मसला है उसके तरफ ज्यादा तवजेह करने की जरूरत है। तवसी आबादी के लिए जब दरखास्त दी जाती है तो उसका तसफिया होने के लिए सालों गुजर जाते हैं - यह ठीक नहीं है। अगर आपके जमाने में कोई दरखास्त पेश हुई तो उसका तसफिया बेटे के जमाने में होता है। इसके बाद के तसफिये के लिए कोई न कोई इन्तजाम करने की जरूरत है। खासकर (हरिजनों) दलितों के बारे में जो इस तरह की कार्यवाही होती है, उसमें तो देरी नहीं होनी चाहिए। इनके लिए दरखास्त पेश होते ही उनकी सरसरी तहकिकात कर के उनके बारे में तसफिया करने का इन्तेजाम होना चाहिए। जिस तरह से तसफिया होता उसके लिहाज से क्या ऍक्शन लिया गया इसकी जानकारी भी उस शख्स को दी जानी चाहिए।

मैं आपका बहुत ममनूं हूँ। मैं अपने खियालत का हजेहार करना चाहता हूँ। मैं कुछ जवाब देना नहीं चाहता हूँ। आप करप्शन को रोकने के लिए बहुत सारे कानून किये हैं और उसे रोकने की कोशिश की जा रही है। आखिर में, मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि अपोजिशन की तरफ से कुछ अच्छे सजेशन आये हैं, उन्हे मिनिस्टर साहब सोचकर इंप्लिमेन्ट करने की कोशिश करे तो अच्छा होगा।

(३) राज प्रमुख के भाषण पर धन्यवाद - शेषरावजी का मंतव्य

तीन रोज से राजप्रमुख के अड्रेसपर चर्चा हो रही है और हम देख रहे है कि दोनों तरफ से अड्रेस के ऊपर अपने खयालत का इजहार हो रहा हैं और दोनो जानिब से कहा जा रहा है कि अॅड्रेस में गवर्नमेंट ने पूरी तरह से अपनी पॉलिसी का इजहार नहीं किया है। वह बहुत मुख्तसर है, जो चीजें अॅड्रेस में होनी चाहिए थीं वह नहीं है। एक हद तक यह सही है और सहीं होना भी चाहिए क्योंकि इससे और कोई दूसरी चीज हो भी नहीं सकती थी। वह इसलिए कि हम पांचवीं बार इस तरह से अॅड्रेस पर बहस कर रहे हैं। चार साल तक हमने उस पर बहस की और उस वक्त ऐसा मालूम होता था कि हाउस में बहुत चहलपहल है। हाउस में मेंबरों की संख्या काफी रहती थी और एतराजात भी काफी जोशखरोश के साथ होते थे, बहस में कभी बडी गरमागरमी भी होती थी। लेकिन अब हमे खुशी है कि गये चार साल में जितने जोर के एतराजात थे, उनमे अब उतनी कूव्वत नहीं रही है। इसका कारण सिर्फ राजप्रमुख का अॅड्रेस मुख्तसर होना ही नहीं है, बल्कि हम में एक तरह की उदासीनता का होना भी उसका एक कारण है। हमारी असेंब्ली का आयुष्य मुख्तसर है। हैदराबाद स्टेट का आयुष्य मुख्तसर है और मराठवाडा, कर्नाटक और तेलंगाना वालों की भी यही हालत है। महाराष्ट्र वाले यह कहते हैं कि ''ऐसा कैसे हुआ,'' इसलिए वे उदासीन हैं। तेलंगाना वाले इसलिए उदासीन हैं कि हमारा क्या बनेगा और कर्नाटकवाले कह रहे हैं कि हमारा यहां से सब कुछ खो गया है, अब हमारा यहां पर विशेष इंटरेस्ट नहीं रहा है। इसलिए उदासीन हैं। राजप्रमुख समझते हैं कि मेरा सब कुछ खो गया, इसलिए वे भी उदासीन है। इसलिए यह अॅड्रेस मुख्तसर है और यह भी बात है कि और छः महीने के लिए हमे यहां रहना है। हमारी असेंब्ली की हाजरी देखे तो मालूम होगा कि इस जानिब के क्या और उस जानिब के क्या, दोनों तरफ के लोगों में उतनी उत्सुकता नहीं रही है जितनी पिछले चार साल में दिखाई देती थी। हमारी यह खुशकिस्मती है कि हर साल जिस तरह से चर्चा होती थी इस साल उस तरह नहीं हुई। एज्युकेशन डिपार्टमेंट पर कोई एतराजात नहीं हुए, पुलिस पर सिवा रिश्वतसितानी के और कोई एतराजात नहीं हुए, पब्लिक हेल्थ डिपार्टमेंट के बारे में भी कोई एतराजात नहीं किये गये। जिराअत पर नहीं, सनअत हिरफत पर नहीं मतलब यह कि कई मोहकमें है जिनको स्पर्श तक नहीं किया गया .....

उसके बाद दो चार बातें इस अॅड्रेस के सिलसिले में मैं कह देना चाहता हूँ। दोनों जानिब के मेंबरान ने कहा कि आम तौर पर इस रियासात के जो तीन हिस्से मराठवाडा, कर्नाटक और तेलंगाना हैं उसमें खास तौर पर महाराष्ट्र पर कुछ नाइन्साफी हो रही है। यह एक हद तक सहीं भी है। हम महाराष्ट्रीयन्स हैं। रियासत की आबादी का एक तिहाइ हिस्सा हम लोगों का होने के बावजूद, हम लोगों की आबादी पचपन लाख होने के बावजूद हमें सिर्फ बीस करोड रुपये सौ करोड मे से दिये जाते है तो हमें कहना पडता है कि महाराष्ट्र की हद तक यह नाइन्साफी जरूर है। बीदर डिस्ट्रिक्ट में जो महाराष्ट्र के लोग है उनकी हालत तो और भी खराब है। इधर महाराष्ट्र के पांच अजला के लोग यह सोचते हैं कि हमको कुछ नहीं मिला और उधर बीदर डिस्ट्रिक्ट कर्नाटक में डाल दिया गया उसमे जो तीन तालुके महाराष्ट्र के हैं उसकी तरफ जरा भी ध्यान नहीं देते । जिस दिन एस.आर.सी. ने जाहिर किया कि पांच अजला मराठवाडे के बंबई स्टेट में मिला दिये जाये उस दिन से हम बीदर के महाराष्ट्रीय परेशान थें क्योंकि हमारी दुम इधर कर्नाटक में अटका दी गयी। जब बीदर में मराठवाड़ा के कोई एन.जी.एस. ब्लॉक वगैरह देने का मसला आता है तो हमारे बारे में समझा जाता है कि यह कर्नाटकवाले हैं और जब कर्नाटक को कुछ देने का सवाल आता है तो वे समझते है कि ये महाराष्ट्रीयन्स हैं। यानी हमारी हालत ऐसी हो गयी है जैसे मराठी में कहावत है कि ''माय वाढीना आणि बाप भीक मागू देईना''। बीदर डिस्ट्रिक्ट करके मराठवाडे की हालत ऐसी बना दी गयी है कि न इधर महाराष्ट्रवाले पूछते हैं न उधर कर्नाटकवाले पूछते हैं। दोनों के बीच में यह एक ऐसा प्रदेश हो गया है कि जिसके लिये ''स्वतंत्र करीमनगर'' की तरह एलान किया जाता तो अच्छा होता। इसलिए में गव्हर्नमेंट से प्रार्थना करूंगा कि जिस वक्त गव्हर्नमेंट की कोई पॉलिसी डिक्लेअर होती है या पैसा देने की नौबत आती है तो तीनों रीजन्स को उनके पोप्युलेशन के लिहाज से सम समान रूप से तकसीम की जानी चाहिये ताकि कोई शिकायत बाकी न रहे।

लँड रिफार्म्स की निस्बत में कल एम. नरसिंगराव साहब ने जो अपने विचार जाहिर किये उनसे मै सहमत हूँ। लेकिन एक चीज मुझे अरज करनी है। मराठवाडे में जो पहले लँड रिफार्म्स गव्हर्नमेंट ने जाहिर किये तो उस वक्त ऐसा मालूम हुआ कि जमीन का मसला हल होनेवाला है। लेकिन जैसे जैसे दिन बीतते गये और हमें तजरूबा होने लगा वैसे वैसे मालूम होने लगा कि मराठवाडे के छोटे काश्तकारों

को फायदा होने के बजाय नुकसान होने लगा है। और मैं हाउस पर यह वाजे करूंगा कि मराठवाडे में बडे बडे काश्तकार नहीं के बराबर हैं। इस टेनन्सी अॅक्ट का मराठवाडे के छोटे किसानों पर अच्छा असर नहीं हुआ है। एक फॅमिली होल्डिंग या उसके नीचे की जमीन के जो मालिक है उन पर खास तौर से बहुत बुरा असर हुआ है जिसकी वजह से छोटे छोटे काश्तकार आज परेशान है। एक धनगर जिसने दस हजार रुपये देकर आराजी खरीदी उसने उसके बैल वगैरह मर जाने की वजह से या और किसी वजहसे अपनी आराजी किसी को बता दी और ऐसा वाकया अगर १० जून १९५० से बाद एक दिन के लिए भी हुआ है तो जिसको जमीन दी जाती है और वह कानून के मुताबिक प्रोटेक्टेड टेनन्ट बन जाता है उसको निकाला नहीं जा सकता। निकालने में काफी मुश्किलात है । ऐसी कई मुश्किलात छोटे छोटे मालिके आराजी के लिये पैदा हो गयी हैं। इसके बारे में अगर गव्हर्नमेंट सोचे और ऐसे लोगों कि आराजी की प्रोटेक्टेड टेनन्ट के बनने से मुस्तस्ना करार दें तो कोई नाइन्साफी होनेवाली नहीं है, ऐसा मेरा मत है।

एक और चीज कही गयी कि रिश्वत सितानी का इन्सेदाद पूरी तरह से नहीं हुआ है। एक हद तक मैं उसको मानता हूं। लेकिन अमलन जो मुश्किलात आती है वे किस तरह से दूर की जाये उसको पेशेनजर नहीं रखा जाता। कल एक ऑनरेबल मेंबर ने बहुत सी बातें कहीं लेकिन उसका हल कैसे करना चाहिए उसके लिए सुझाव नहीं दिया। असली बात तो यह है कि इसमें रिश्वत देनेवाला और लेनेवाला दोनों राजी होते हैं। शहादत लेने जाते है तो दोनों गायब हो जाते हैं। इसलिए यह कहना पडता है कि जब तक हमारे मुल्क का कॅरेक्टर अच्छा नहीं बनता तब तक इसको रफादफा करना मुश्किल है। इसिलिए हमारे मोहकमे आज ठीक ढंग से काम नहीं कर सकते ।

इसके बाद, इस अॅड्रेस में एक चीज की कमी मैं महसूस कर रहा हूँ। बीदर डिस्ट्रिक्ट में बरसात की ज्यादती की वजह से जो नुकसान हुआ है, वह काफी हुआ है। इसका जिकर नहीं है। उदगीर, निलंगा और अहमदपूर में तो कहत के आसार नजर आ रहे है। मैंने सुना था कि वहाँ के खरीफ की मालगुजारी हकुमत ने मुल्तवी कर दी है। लेकिन अभी मुझे मालुम हुआ है कि किश्त रबी पर बहवाली है। वहाँ हालत इतनी खराब हो चुकी है कि इस जमाने में जब कि रबी सुखी है,

लोग भूखे मर रहे है। मजदूरों को मजदूरी नहीं मिल रहीं है, लोग काम करना चाहते हैं, लेकिन काम हीं नहीं मिलता क्योंकि काश्तकार खुद परेशान है तो नतीजन मजदूर भी परशान होनेवाले हैं। इसलिए मैं हुकूमत से अपील करूगाँ कि बीदर डिस्ट्रिक्ट को कहत का इलाका करार किया जाय तो मुनासिब होगा। मालगुजारी जो वसुल होनेवाली है उसको पोस्टपोन करके आयंदा साल लिया जाय तो फसल अच्छी आने के बाद उसको वसूल कर सकते हैं।''

(४) राज्य पुन:रचना सम्बंधी चर्चा और उसका प्रारुप :

(Discussion on the resolution on the draft-state reorganisation, dated 11th April, 1956.

श्री शेषराव वाघमारे : क्लाज ७ पर मुझे सिर्फ बीदर की हद तक कहना है। मैं अमेन्डमेंटस २३, २४, २५ की ताईद करता हूँ। इसलिए कि बीदर का जो इलाका भालकी, संतपुर तालुकात का है, उसमें मराठी पापूलेशन बहुत जादा है। संतपुर का पापुलेशन ९१,३५७ है, उसमें मराठी बोलने वाले है ३५०३६ यानी ३८ फीसदी है। और कन्नडी बोलनेवाले ३७,६३० यानी ४१ फीसदी है। इसी तरह से भालकी में मराठी पापुलेशन ३७ फीसदी और कनडा पापुलेशन ४८ फीसद है। इस पूरे तालुके को कर्नाटक में शरीक किया गया है, मैं इससे इस हद तक एखतेलाफ रखता हूँ । इनके जो इलाके मराठी में मेजोरिटी के हैं और जहाँ कनडी बोलनेवालो की तादाद कम है, उनका रिव्हिन्यू बेसिस पर तसफिया होना चाहिए। इसके लिए वहाँ काफी ॲजीटेशन पब्लिक में है। इससे मुत्तसेला इलाका उदगीर और निलंगा का है, जो महाराष्ट्र का है। इन तमाम हालात पर गौर करते हुए मैं बॉन्डरी कमीशन कायम करके जिसको हल करने की मैं ताजीद करता हूँ।

बडे अफसोस की बात है कि मराठी बोलने वाले को महाराष्ट्र से अलहिदा किया गया है। हम इस खुशी से महाराष्ट्र में शरीक हो रहे थे कि मराठवाड़ा के अहमदपूर, लिंबा और उदगीर के जो मराठी लोग, दूसरी भाषा के साथ रहने के वजह से मुश्किलात को महसूस करते थे, वह अब महाराष्ट्र में शरीक होने से दूर हो जायेंगे। जब हम महाराष्ट्र में पहुँचे तो देखा कि एक ऐसे शरीर के अवयव हम

बन रहे है, जिसको सर नहीं है, सिर्फ धड़ ही धड़ है। इससे सबसे ज्यादा नुकसान बीदर डिस्ट्रिक्ट के लोगों को होनेवाला है - इस तरह से हम पूरे महाराष्ट्र को नहीं पा रहे हैं। लेकिन फिर भी हम मायुस नहीं है। हमने जब हायकमांड का तरीका देखा। पहले विशाल आन्ध्र का मसला आया तो हम समझ रहे थे कि विशाल आन्ध्र नहीं हो सकता। और तेलंगाना होकर ही रहेगा। लेकिन जैसे दिन गुजरते गये, हमने देखा कि विशाल आन्ध्र बनकर ही रह गया। इसी तरीके से मैं भी नाउम्मीद नहीं हुआ हूँ। एक्कुम अक्तूबर १९५६ अभी काफी दूर है। मुझे यकीन है कि बम्बई महाराष्ट्र में शामिल की जायेगी। उसी उम्मीद के साथ मैं अपनी तकरीर खतम करता हूँ।

(5) The Hyderabad Abolition of Whipping Bill 1956, 31st July 1956

श्री शेषरावजी : मौजूदा जमाने में इस चीज़ को देख रहे है कि पहले जितने जरायम होते थे, उनके मुकाबले में 'जुरम' की तादाद अब बढ़ती जा रही है। पहले जमाने में अगर कोई जरायम होते थे तो कड़ी से कड़ी सजा दी जाती थी। यदि कोई शख्स चोरी करता था, उसके हाथ काट दिये जाते थे। उसका नतीजा हम देखते है उस जमाने में लोगो को अपने घरों को ताले तक नहीं लगाने पड़ते थे। उस जमाने में चोरियाँ आदि कम होती थी। आज सजा कम करके मूड (mood) में हैं - कड़ी सजा न दी जाये और ताजियाने की सजा बिलकुल खतम करे। जो लोग जरायम करते है उन्हे सुधारने की कोशिश की जानी चाहिए। मेरी जाति राय है कि कानून में सख्त से सख्त सजा का होना जरूरी है। लेकिन आज हमारे यहाँ, जेल की हालत यह है कि लोग जेल जाना ज्यादा पसन्द करते हैं, क्योंकि वहाँ सब तरह की सहुलते हैं। वहाँ रेडियो है, खेलने का इंतजाम है, लोग जेल को अपना घर समझ रहे हैं। चोरियाँ और दूसरे जरायम आज भी कम होते नजर नहीं आ रहे हैं। सजाये में कम करने से हम कहाँ तक कामियाब होंगे - इसके बारे में मुझे शक है। जमाना बदलता जाता है और जमाने का यह तक़ाजा है कि इसलिए यह बिल लाया जा रहा है। इसका क्या तजरुबा आता है, यह देखकर हम उसे बाद में यदि जरूरत हुई तो भी बदल भी सकते हैं। यह मेरी जाती राय है। हम चारों का साथ नहीं देना चाहते है। एक बड़ा अमीर आदमी है, और वह यदि चोरी करता हैं तो उसके लिए क्या किया जाए? मुझे आप ऐसा मुल्क बताईए जहाँ जेलखाना नहीं है!

परिशिष्ट - २

श्री शेषरावजी का लेखन कार्य

मराठवाडा आर्य सम्मेलन, गुंजोटी अध्यक्षीय भाषण (१९७१)

- शेषराव वाघमारे अडवोकेट

ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव।

यद्भद्रंतन्न आसुव।।

स्वागताध्यक्ष महाशय, पू. महात्मा आनन्द स्वामाजी महाराज पू. स्वा. अग्निवेशजी, सभा के अधिकारी गण, उपस्थित आर्य देवियों और सज्जनों!

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य दक्षिण हैदराबाद तथा स्वागत कार्यकारिणी ने मुझे जो इस सम्मेलन का अध्यक्षपद देकर सम्मानित किया है उसके लिए मैं बड़ा आभारी हूँ। मेरे चुनाव के औचित्य के सम्बन्ध मे मैं आशंकित हूँ। मुझसे कहीं अधिक योग्य विद्वान और महान त्यागी जिन्होंने मुझसे कहीं अधिक आर्यसमाज की सेवा की है और कर रहे हैं, प्रत्यक्ष इस सभा में भी उपस्थित हैं फिर भी आपने मुझ पर यह भार सौंप कर मुझे उपकृत ही किया है। मैं कहाँ तक इसका निर्वाह कर सकूँगा, नहीं जानता। फिर भी यह अवसर देकर आपने मुझे आगे बढ़ने का जो अवसर दिया है उसके लिए में आप सभी का आभारी हूँ।

आर्यसमाज और महाराष्ट्र

स्वामी दयानन्द ने सर्व प्रथम महाराष्ट्र की भूमि में ही आर्यसमाज का पौधा लगाया था पर उस पौधे को योग्य खाद पानी देकर विकसित करने का श्रेय हम न ले सके। हैदराबाद राज्य के बटवारे से भी मराठवाडे में आर्यसमाज के प्रचार को क्षति ही पहुँची। पहले सभी हिन्दी समझते थे पर महाराष्ट्र बनने के बाद उसका उपयोग कम हुआ और हिन्दी से दूरी बढ़ती गयी। इधर मराठी में आर्यसमाज सम्बन्धी साहित्य की कमी के कारण पूरे महाराष्ट्र को आर्यसमाज का वास्तविक परिचय न मिल सका।

सिंधी और पंजाबी धन्य हैं

आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से होनेवाला यह पहला मराठवाडा आर्य सम्मेलन है। आर्यसमाज की स्थापना के समय जनता रूढिवादिता और अंधविश्वासों की शिकार थी। विदेशी हम पर हँसते थे तो इस्लाम और इसाईयत का हम पर चहु ओर से आघात हो रहा था। हैदराबाद में तो प्रत्यक्ष इस्लामी हुकूमत थी। फिर भी हमने हिम्मत से उसका मुकाबला किया और निजाम को घुटने टेकने पडे। यदि हम भ्रम में होते तो हम पर भी वही संकट आता जो हमारे सिंधी और पंजाबी भाईयों पर आ पड़ा था। उनकी क्षति की हम कल्पना नहीं कर सकते। पर हमारे इन सिंधी और पंजाबी भाई धन्य हैं कि इतने आघात सहकर भी उन्होंने आर्यसमाज की प्रतिष्ठा पर आँच नहीं आने दिया। आज भी समाज का कार्य वे प्रेम और निष्ठा से आगे बढ़ाते जा रहे हैं। इस दिशा में हमे उनसे बहुत कुछ सीखना है। मराठवाडा महाराष्ट्र का अंग बनने के बाद वैदिक धर्म की दृष्टि से हमें अधिक सहयोग नहीं मिला। वस्तुस्थिति तो यह है कि यहाँ आर्यसमाज को पुराने विचार वालों की एक सांप्रदायिक संस्था समझा जाता है। इसका कारण आर्यसमाज के सम्बन्ध में फैला हुआ अज्ञान है। जिन्होंने आर्यसमाज के कुछ ही तत्वों का अनुकरण किया, ऐसे महात्मा भूले करे तो सभी जानते हैं पर दयानन्द का नाम उन्हें सुनाई नहीं देता। इसकी पूरी जिम्मेदारी हम पर है।

बलिदानी भूमि मराठवाड़ा

दक्षिण भारत में मराठवाडा आर्यो के बलिदान की भूमि रही है। जिन दिनों निजामी शासन की तानाशाही अपने मस्ती पर थी - तब न्यायमूर्ति केशवराव कोरटकर, भाई बन्सीलालजी, वकील तथा हुतात्मा शामलालजी आदि आर्य नेताओं ने कट्टर आततायी मुसलिम शासन को सुरंग लगाया। निजाम ने भी आर्यसमाज को समूल से उखाड़ फेंकने में कोई कसर न छोड़ी। उन दिनों हम हैदराबाद राज्य में थे। हमारे उस एकत्रित सामर्थ्य की आज भी याद आती है। निजामाबाद के राधाकृष्ण, अकुलगा सय्यद के महादेव, हुमनाबाद के शिवचन्द्र तथा, बसव कल्याण के धर्मप्रकाश, अंबुल बुजुर्ग के सत्यनारायण, उपला के भीमराव पटेल तथा इसी गुंजोटी के वेदप्रकाश आदि वीर पुरुषों के बलिदान के

कारण यह साध्य हो सका। वेदप्रकाश की बलिदान भूमि गुंजोटी में इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय यहाँ के कार्यकर्ता से श्री शिवराम पटल मुळजकर, भास्करराव चालूक्य, हरिश्चन्द्र गुरुजी, डॉ. पतंगे, दिनकरराव देशपांडे, दिगंबरराव देशमुख, रमेशजी ठाकुर तथा शंकरराव मयाचारी और उनके अनेक साथियों को है।

पूर्व नियोजित तिथियों में यदि यह सम्मेलन होता तो महात्मा आनंदस्वामीजी तथा अग्निवेशजी के मार्गदर्शन से हम वंचित रह जाते। अब गर्मी के कारण होनेवाला कष्ट इस लाभ की तुलना में नगण्य सा ही है।

धर्मराज का श्वान

सम्मेलन में महात्मा आनन्द स्वामीजी महाराज के आगमन की सूचना पाकर मुझे सर्वाधिक आनन्द हुआ पर उनकी उपस्थिति में मुझ जैसे अति सामान्य व्यक्ति का अध्यक्ष के नाते बोलना एक दुःसाहस ही है। स्वामीजी ने अनेकों को पावन किया है। मुझ जैसे अपात्र को भी वे उबार लेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है। क्योंकि महाराज युधिष्ठिर जब स्वर्ग के द्वार पर पहुँचे तो उनका श्वान भी साथ था। यमराज ने स्वर्ग में प्रविष्ट होने से कुत्ते को रोक दिया। युधिष्ठिर ने कहा कि इसे भी प्रवेश करने दीजिए। अन्यथा हम भी बाहर रहेंगे। बडों की हर बात बड़ी होती है। यह उक्ति अतिशयोक्ति पूर्ण हो सकती है किन्तु मुझ पर तो यह बात ठीक बैठती है।

जीवन देने वालों से वैचारिक क्रान्ति की अपेक्षा है

पूज्य स्वामीजी ने २७ वर्ष पूर्व देगलूर में जो बात कही थी वह आज भी मेरे कानों में गूँज रही है। ''यह जो सामने से भीमकाय पुरुष चला आ रहा है अगर सन्यासी बन जाए तो कितना अच्छा होगा।'' स्वार्थवश मैं अब तक स्वामीजी की इच्छा पूरी नहीं कर सका। स्वामीजी ने बाल-बच्चे-धन-दौलत सबको तिलांजलि दी और वे सन्यासी बन गए. आज आर्यसमाज के शैथिल्य का कारण तपस्वी जीवन की कमी है। कारण हम देख रहे हैं कि अकेले महात्मा आनन्द स्वामी जी जो कार्य करते हैं वह हम जैसे लाखों आदमी भी मिलकर नहीं कर सकते। अतः इस सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य जीवन दान देनेवाले आदमी निर्माण करना है। जो महात्मा आनन्द स्वामी, स्वामी विवेकानन्द तथा गुरु रामदास जैसे संत बन कर

वैचारिक क्रान्ति निर्माण करेंगे। जिससे समाज कार्य के लिए सच्चे लगन और धुन का निर्माण हो सके।

विज्ञानाधृत धर्म

सुशिक्षित वर्ग धर्म को अफीम की गोली समझने लगा है। यह संप्रदायों के संबंध में ठीक हो सकता है। कारण संप्रदाय तर्क और विज्ञान की कसोटी पर खरा उतर नहीं सकता। भ्रमवश सच्चे धर्म के प्रति अनास्था बढ रही है। महाराष्ट्र में आगरकर, सावरकर, फुले तथा अम्बेडकर ने समाज सुधार की चेष्टा की ,पर उन्हें पूर्ण सफलता न मिल सकी। दयानन्द ने तर्क और विज्ञान के आधार पर धर्म की बात प्रस्तुत की। मूर्तिपूजा, अवतारवाद, जातपात तथा मृतक श्रद्धादि धर्म विरुद्ध बातों का खंडन किया और सच्चे ईश्वरोपासना का मार्ग प्रशस्त कर दिया। वेद ज्ञान, कर्म और उपासना के समर्थक हैं, इसे बतलाया। इस प्रकार उन्होंने सच्चे सनातन वैदिक धर्म का स्वरूप प्रस्तुत किया। धर्म केवल परलोक से संबंध रखनेवाली बात है, इस धारणा को बदलना होगा। जिससे हमारा इहलोक और परलोक बनता है , वही सच्चा धर्म है।

आज हर वादों की बाढ-सी आयी है इसीलिए सुशिक्षितों के सामने सच्ची बात और वह भी तर्क संगत ढंग से पेश करने की आवश्यकता है। वैसे हमारे विद्वानों ने इस दिशा में प्रयास अवश्य किया है। पर्याप्त साहित्य भी निकल चुका है। जिसके लिए सार्वदेशिक सभा बधाई की पात्र है पर विरोधी प्रचार के मुकाबले में यह सब कुछ लगभग नहीं के बराबर है। इस दिशा में भगीरथ प्रयास की आवश्यकता है।

ऋषि दयानन्द और दूसरे सुधारकों में जो मौलिक अंतर है वह यह कि स्वामीजी ने वैदिक संस्कृति के जड़ों को सींचा है और दूसरों ने केवल पत्तों पर पानी छिडका है। आर्यो के संबंध में व्याप्त समस्त भ्रामक कल्पनाओं को उन्होंने निर्मूल कर दिया। ईश्वर और मानव के मध्य किसी भी माध्यम को उन्होंने व्यर्थ सिद्ध किया। ईश्वर, जीव, प्रकृति अनादि हैं। जीव कर्म करने में स्वतंत्र है पर फल प्राप्ति में नहीं है। मानव के सर्वांगीण विकास के लिए सच्चे वर्णाश्रम धर्म का

पालन अनिवार्य है। अतः आर्यसमाज द्वारा समर्थित धर्म के लक्षण से किसी को मतभेद हो नहीं सकता।

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

धैर्य रखना, सत्य बोलना, इन्द्रिय-दमन करना, चोरी न करना, स्वच्छता रखना, मन पर संयम रखना, विद्यारत रहना तथा क्रोध न करना, यह धर्म के दस लक्षण हैं।

आर्यसमाज गुण कर्मानुसार वर्ण व्यवस्था का समर्थक है। किसी भी समाज की स्थिति इसके सिवा हो नहीं सकती। सच तो यह है कि वर्गविहीन समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती। वैदिक अर्थ व्यवस्था की खूबियों को हमें दुनिया के सामने रखना होगा। अब तक केवल भौतिक आधार पर ही सभी अर्थ विषयक प्रयोग किए जा चुके हैं। अध्यात्म को उसमें कोई स्थान नहीं रहा। अब तक वर्गविहीन समाज-निर्माण करने के प्रयोगों में; कभी काम के अनुसार दाम, फिर आवश्यकता के अनुकूल दाम तो कभी योग्यता के अनुरूप दाम की बात रही है। परंतु वैदिक वर्ण व्यवस्था में भौतिक और आध्यात्मिक भित्ति पर ही परिश्रम का मूल्य आंका गया है।

ब्राह्मण को आवश्यकतानुसार, वैश्य को फलानुकूल तो शूद्र को श्रमानुसार प्रतिफल मिले।

किसी भी समाज में चार वर्गों का होना अनिवार्य सा है। उसके सिवा समाज स्थिर नहीं हो सकता। चारों वर्ग एक दूसरे के विरुद्ध नहीं अपितु अन्योन्य पोषक हैं। यह वर्गीकरण योग्यता पर आधारित है। अतः वह समाज विघातक कभी नहीं हो सकता। सभी मानव जन्मतः शूद्र हैं। संस्कारों के कारण वे द्विज होते हैं। "जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते"।

यह न भूलें कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि जाति नहीं, वर्ण हैं। वर्ण गुणकर्मानुसार बदलता है। अंबेडकर को अन्य लोग हरिजन मानते हैं पर आर्यसमाज ऐसा नहीं समझता। जन्म पर आधारित जात-पात को समूल नष्ट करने के लिए आर्यसमाज

ने अनेक बलिदान किये हैं। पंडित रामचन्द्र इसमें अग्रसर रहे। आर्यसमाज ने जात-पात को मिटाने के लिए जो कुछ किया है उसकी बराबरी अन्य कोई संस्था नहीं कर सकती। पर आज जातीयता राजकीय स्वार्थ के आधार पर फिर सर उठा रही है। इसके निर्मूलन के लिए हम सभी को कमर कसनी चाहिए।

सांप्रदायिकता के दो रूप प्रचलित हो गये हैं। एक सामाजिक और दूसरे राजनैतिक। आज राजनैतिक सांप्रदायिकता का रूप तो और भी घिनौना हो गया है। राजकीय पक्ष भी सांप्रदायिक रूप धारण कर चुके हैं। चुनाव में भाई, भाई का शत्रु बन जाता है। राजकीय पक्ष की यह जात बिरादरी और भी भयावह है।

भ्रष्टाचार का निराकरण

भ्रष्टाचार के अनेक कारण दिये जाते हैं। एक विचार यह है कि महँगाई इसका प्रमाण है। ज्योंही आर्थिक परिस्थिति सुधरेगी यह प्रश्न हल हो जायेगा। दूसरों के विचार में समाजवाद इसकी रामबाण दवा है। पर वास्तविकता यह है कि पैसे वाला ही अधिक पैसे खाता है। मैं यह नहीं कहता कि सभी अधिकारी भ्रष्ट है, लेकिन सचाई यह है कि ब्लैक मार्केटिंग और भ्रष्टाचार दिन-ब-दिन बढ़ रहा है। कानून से इसकी रोक-थाम न होगी, व्यक्तिगत चरित्र-निर्माण इसका उपचार है। व्यक्ति से ही समाज बनता है। अतः भ्रष्टाचार का कारण गरीबी नहीं, कारण है चरित्रहीनता. अतः यह समस्या आर्थिक से बढ़कर नैतिक है। निर्धन आयकर की चोरी नहीं करता, देश में इनकम टैक्स का बकाया करोडों में है। क्या यह सब गरीब आसामी हैं? भ्रष्टाचारी आदमी में पाप-पुण्य की भावना ही नहीं होती। स्वाभाविक ही प्रश्न होता है कि आखिर इसकी दवा क्या है? मेरे विचार में इसके लिए मनुष्य के नैतिक स्तर को ऊंचा उठाना है। और यह काम केवल धार्मिक संस्था ही कर सकती है। आर्यसमाज का यही कार्य है और इसी कारण आर्यसमाज की आज पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है।

इसी देश के आर्य राजा अश्वपतिने कभी गर्व के साथ कहा था :

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।

नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः।

मेरे राज्य में न मद्यप है और न ही दुराचारी। न चोर है, न चोरी। न अविद्वान है न अशिक्षित। दुराचारी पुरुष ही नहीं तो दुराचारिणी कहाँ होगी। आज कोई राजकीय पक्ष या शासन, इस प्रकार का दावा करने की हिम्मत भी कर सकेगा?

इसीलिए सज्जनो! आज भारतीय संस्कृति के परिपोषण की आवश्यकता है। अच्छा साहित्य जनता तक पहुंचाना है। इसके लिए पुस्तकालयों का विस्तार हो, आर्य विद्वानों के भाषण हों, शंका समाधान हो और विचार मंथन हो। इस दृष्टि से औराद का उदाहरण हमारे क्षेत्र में अनुकरणीय है। गांव में दो हजार लोग बसते हैं और पुस्तकालय में ग्रंथ भी दो हजार है। दैनिक इससे लाभान्वित होनेवालों की संख्या पांच सौ पांच है। सार्वजनिक कार्यों में सफाई तथा पानी भरने का कार्य भी यहां के सरपंच तथा अन्य सदस्य स्वयं करते है। इसके प्रेरणा स्रोत हैं हरिश्चन्द्र गुरुजी। उसी तरह से स्वा. अग्निवेशजी द्वारा संचालित नवयुवक परिषद का कार्य भी सफल होता जा रहा है। लातूर के वसंतराव जगताप गुरुजी का कार्य भी इस दिशा में उल्लेखनीय है।

मद्यनिषेध की विडम्बना

गांधीजी ने कहा था कि एक दिन के लिए भी उनके हाथ में हुकूमत आ जाए तो उनका पहला कार्य मद्यनिषेध होगा पर आज सत्तारुढ सरकार भी, गांधीजी के अनुयायियों ने मद्य के आगे घुटने टेक दिये है।

मैं स्वयं हैदराबाद और महाराष्ट्र विधान सभा का सदस्य रह चुका हूँ। उन दिनों पीने का इस कदर प्रचार नहीं था। आज किसी भी राज्य के मुख्यमंत्री या हमारे प्रधान मंत्री अश्वपति की तरह यह कहने का साहस नहीं करते कि यहाँ कोई शराबी नहीं। ऊपर से लेकर नीचे तक आज इसका बोलबाला है। विरले ही यत्र-तत्र कुछ अपवाद हों।

जब तक गांधीजी जीवित थे, उनका एक नैतिक दबदबा था। सभी उनके सामने नतमस्तक होते थे। बडे-से-बडे आदमी भी उनके दर्शन करना पुण्य समझते थे। आज किसी का किसी पर अंकुश नहीं है। अधिकार के साथ-साथ बोतल भी अनिवार्य सी हो गई है। वैसे श्री विनोबा भावेजी जीवित हैं पर उनका फोन से ही कुशल क्षेम पूछ लिया जाता है। जहाँ सभी पीने लग जाएँ वहाँ किस को कौन

पकडेगा। इस दिशा में पहल करके आर्यसमाज ने यह प्रश्न अपने हाथ में लिया तो देश का बड़ा उपकार हो सकता है।

गोरक्षा के संबंध में भी शासन उदासीन है। गांधीजी की जो दो अभिलाषाएँ थीं उनमें से एक थी गोवधबंदी और दूसरी अच्छूतोद्धार। कितने दुःख की बात है कि आज़ाद होकर लगभग तेईस वर्ष हो रहे हैं पर गांधीजी के रामराज्य की कल्पना को भारत सरकार साकार न कर सकी। इसका कारण सरकार की असमंजसता तथा संकोचशील वृत्ति के सिवा और कुछ नहीं है। गोरक्षा का प्रश्न सत्याग्रह से हल हो सकता है इसमें मुझे किंचित मात्र भी शंका नहीं।

भारत और आर्यसमाज

बंगला देश के संबंध में इस मंच से कुछ कहने की इसलिए आवश्यकता है कि भारत और आर्यसमाज में कोई विभाजन की रेखा नहीं खींची जा सकती। जब जब राष्ट्र पर कोई संकट आता है तो हर देशभक्त का यह कर्तव्य है कि वह सजग रहे और दूसरों को सचेत करे। बंगला देश कभी हमारा अंग रहा है। पर आज वह एक अलग देश बन गया है। जिस स्थिति में भारत है, वह बंगला देशवासियों के लिए खुश करने की अवस्था में नहीं है। हम पाकिस्तान के अत्याचारों का विरोध करते हैं और बंगला मुक्ति आंदोलन की बिना प्रशंसा किए नहीं रह सकते।

आर्यसमाज और उसका कार्यक्रम

आर्यसमाज व्यक्ति ओर समष्टि दोनों का विकास, दोनों की उन्नति चाहता है। इसके लिए स्वमीजी ने स्पष्ट शब्दों में निर्देष किया है। जिसे हमें सदैव ध्यान में रखना चाहिए कि ''प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट न रहना चाहिए। सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतंत्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र रहे।'' जब तक इन दोनों नियमों का हम पालन न करेंगे, उन्नति नहीं कर सकते। यह जनतंत्र का युग है। हमें हमारी प्रचार पद्धति में भी तदनुकूल परिवर्तन कर लेना चाहिए। कानून की मर्यादा में रहकर हम अन्य संप्रदायों के धर्म के साथ तुलना कर सकते हैं। आज सभी को बोलने और लिखने की स्वतंत्रता है इसका हमें अधिकाधिक उपयोग कर लेना चाहिए।

किसी भी संगठन के तीन रूप होते हैं और वे हैं विचार, प्रचार तथा आचार। स्वामीजी ने भारत को विचार दिये। आर्यसमाज ने लिखित और मौखिक साधनों से उनका प्रचार किया और परिणाम स्वरूप समस्त देश ने उसके सामाजिक कार्य की मान्यता प्रदान की। यही नहीं अपितु महत्व के धार्मिक सिद्धान्तों को भी जनता ने स्वीकार कर लिया। परिणामत: आज कोई भी यह नहीं कहता कि शुद्र और स्त्री को वेद पढ़ने का अधिकार नहीं। बाल विवाह का कोई समर्थन नहीं करता। विधवा विवाह हो ऐसा कोई नहीं कहता। अब बात-केवल आचरण की रह गयी है। अब लोग आर्य समाजियों के जीवन की ओर देख रहे हैं। जब तक हम धर्म का आचरण न करें तब तक आर्यसमाज आगे बढ़ नहीं सकता। आर्यसमाज एक जागृत संस्था है, उस की क्षमता पर मेरा पूर्ण विश्वास है। देश को आज़ाद करने के लिए आर्यसमाज ने अपने सर्वस्व की बाजी लगा दी थी यह कहने में मैं अत्यधिक गर्व अनुभव करता हूँ। देश के लिए जो फाँसी पर चढ गए उनमें पचास प्रतिशत से अधिक आर्यसमाजी वीर थे। आर्यसमाज ने हिन्दू जाति की भी महान सेवा की है। सच तो यह है कि हिन्दू जाति के सुधार के लिए ही आर्यसमाज का जन्म हुआ है। लोगोंने आर्यसमाज को ठीक-ठीक पहचाना नहीं। समाज के संबंध में लोगों को पर्याप्त भ्रम भी हुआ है।

पचास वर्ष पूर्व ज्ञानकोषकार केतकरजी ने लिखा है "आर्यसमाज अर्थात् हिन्दुत्वका निचोड।"

अज्ञानवश कतिपय लोग आर्यसमाज को गलत समझते हैं, पर जानकार उसके प्रशंसक हैं। अत: आर्यसमाज को योजनाबद्ध ढंग से अपने कार्य को आगे बढ़ाना चाहिए। स्वामी दयानन्द ने अकेले ही समस्त देश का विरोध सहकर भी तप, विद्या और बल के आधार पर वैदिक धर्म का सफल प्रचार किया था। आज तो हम स्वतंत्र हैं। केवल हमारी कार्यक्षमता का प्रश्न है। महात्मा आनन्द स्वामीजी जैसों का आशीर्वाद तथा आप जैसे नेता और कार्यकर्ता आर्यसमाज में होते हुए हमें निराश होने की कोई आवश्यकता नहीं है। जो शिथिलता दीखती है, उसे हमें अपने आचरण और पुरुषार्थ के माध्यम से करना चाहिए तथा एक आदर्श प्रस्तुत करना चाहिए। समाज में त्यागियों और तपस्वियों की कमी नहीं; और पैसों की भी

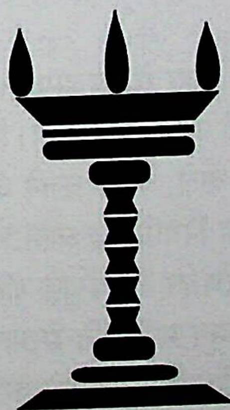
कमी नहीं है, इसका प्रत्यक्ष प्रमाण एक छोटे से ग्राम में होनेवाला यह सम्मेलन है, जिसपर हजारों रुपये व्यय हुए हैं।

सज्जनों! बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप यहाँ हम सोच समझकर ऐसा व्यवहारिक कार्यक्रम बनायें कि जिसके आधार पर समाज के कार्य को और आगे बढ़ा सकें। महात्माजी और अन्य विद्वानों के सामने बालने की मेरी क्षमता नहीं है, पर एक सिपाही के नाते मैंने आप सभी की आज्ञा का केवल पालन मात्र किया है। आपने शांति के साथ मेरी बातें सुनीं तथा अध्यक्ष होने का गौरव दिया है, इसके लिए मैं पुनः एक बार आप सबका आभार मान कर मेरा भाषण समाप्त करता हूँ।

(गुंजोटी-१९७१)

हे मनुष्यो! धर्मयुक्त पुरुषार्थ से जो धन प्राप्त हो उसी को अपना धन मानो, अन्याय से उपार्जित धन को अपना मत मानो। ज्ञानियों के मार्ग को पाखण्ड से मत दूषित करो जैसे धर्मयुक्त पुरुषार्थ से धन प्राप्त हो वैसे ही प्रयत्न करो। (ऋग्वेद, ७/४/७)

आर्य जीवन - आर्य सम्मेलन (१९७१) - गुँजोटी - अवसर पर प्रकाशित अंक



ईश्वरी विधान

– श्री शेषराव वाघमारे, निलंगा

जब आप किसी बुद्धिमान व्यक्ति से पूछेंगे कि विधान पहले या शासन? राज्य और विधान में पहले कौन हुआ? तो उत्तर मिलेगा कि, विधान पहले राज्य पीछे। क्योंकि किसी भी राज्य व्यवस्था को चलाने से पूर्व उसके संचालनार्थ विधान का बनाना परमावश्यक है। १५ अगस्त १९४७ से लेकर २५ जनवरी १९५० तक राज्य व्यवस्था का विधान बना। तब जाकर लोकशाही व्यवस्था का प्रारंभ हुआ। बिना विधान के कोई महाविद्यालय खोलना बुद्धिमत्ता का लक्षण नहीं है। रेलमार्ग को बनाने से पूर्व परिस्थिति और वातावरण का विचार करके समय-सारणी को बनाना आवश्यक है। ताकि आगे जहां दूसरे गाडी से मिलाना है वहां मिला सके और जहां से निकले हैं वहाँ आनेवाले गाडियों के मुसाफिरों को ले जा सके। सुंदर विधान के बिना सुयोग्य शासक भी राज्य करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकते। सृष्टि की रचना उस बुद्धिमान विधाता ने की है और यह सहहेतुक है तो प्रश्न यह पैदा होता है कि या इसने बिना पूर्व रचित विधान के अंधों के पाठशालाओं की तरह हमें इस सृष्टि में भेज दिया, नहीं , उस परमेश्वर ने जिस उद्देश्य से सृष्टि रचाई, सृष्टि के आदि में ''सूर्याच्चन्द्रमसो धाता यथा अपूर्वमकल्पयत'' यह सृष्टिक्रम अनादिकाल से होने से यह सूर्य-चन्द्र तारे की रचना ऐसी की गई जैसे इसके पूर्व की सृष्टि में थी। और सृष्टि में जीवात्मा की उन्नति कैसी हुई इसको लक्ष में रख कर इसका विधान हमें आरंभ अवस्था में दिया गया।

मेरे पास एक मोटर है। मैं शहर में इस इम्फाल मोटर को डेढ सौ मील के वेग से चलाना चाहता हूँ, और गाडी जा भी सकती है। किन्तु ज्यों ज्यों मैं मोटर भगाता हूँ। रास्ते में, रिक्षा वाले, टांगे वाले, पैदल चलने वाले, अंधे, लंगडे, बच्चे चलते हैं। उनको मोटरों के चलाने का नियमों का ध्यान भी नहीं होता, उनको बचाना है, और मुझे भी चलना है इस कारण हर समय मुझे गति को कम ज्यादा करना पड़ता है, ब्रेक लगाना पडता है, और मन मानी गति से भाग नहीं सकता। मुझे भी चलना है औरों को भी चलना है, चलो और चलने दो के तत्वों पर चलना पडेगा। बिन

विधान के समाज चल नहीं सकता। इस कारण हमने मोटर व्हेईकल एक्ट का विधान शहर की परिस्थिति, मोटर और ड्राइवरों के लक्षणों को ध्यान में रख कर एक विधान तैयार किया। उन नियमों का पालन करने से ही, समाज में हम जीवित रह सकते है, इन्हीं बन्धन में हम बंधित हैं।

इसका कारण यह है कि हम व्यक्तिगत उन्नति में हम सब स्वतंत्र हैं और सामाजिक हितकारक नियम पालने में परतंत्र हैं। क्योंकि मनुष्य को तीन प्रकार की उन्नति करना है (१) शारीरिक (२) आत्मिक और (३) सामाजिक। शारीरिक और मानसिक उन्नति में व्यक्तिगत है और सामाजिक उन्नति में हम परतंत्र है। आपको शहर में जागा है तो लायसन्स चलाने का लेना पडेगा, वेग मर्यादा से ही गाडी चलानी चाहिए। गाडी को आगे-पीछे लाईट और नंबर लगानी ही चाहिए। रोड पर लगाये हुए सिग्नल का पालन करना ही चाहिए, इत्यादि। इसको और स्पष्ट रूप से विचार करें —

श्री चरक ने इस शरीररूपी रथ को ठीक ढंग से चलने के लिए पहिले शरीर का स्वास्थ्य क्या है उसको पहचाना ''समदोषाः समअग्निश्च समधातु-मलक्रियाः'' .... इस तरह स्वास्थ्य क्या है, इसको जाना। तत्पश्चात् ऐसी अवस्था में चलते हुए इंजिन के (शरीर के) आवाज को नाडी के अभ्यास से पहचाना और जहां प्रकृति में विकृति आ गई, रोग पैदा हुआ तो शरीर को जो दोष हैं उसके लक्षण पर कफ, पित्त और वात के बढने से नाडी के आवाज से उसके लक्षणों को निकाला। इस विकृति को दूर करने के लिए उन माफक गुणवाले पदार्थों को ढूंढा। और इन तीनों का, प्रकृति, विकृति और औषधी का संयोजन करके आयुर्वेदिक शास्त्र का विधान तैयार किया और समाज के लिए निरोगी बनाने को दवाखाने खोले।

ठीक इसी प्रकार उस बुद्धिमान परमपिता ने सृष्टि के आरंभ में जीवात्मा के उन्नति के लिए, उसके लक्षण, उसमें होनेवाले रोग, विकृति, उसके लिए मार्ग. दवाई, औषधी और प्रतिबंधक उपाय के लिए पुष्टीदायक टॉनिक जिससे व्यक्ति और समाज की उन्नति हो, ऐसा विधान हमारे सम्मुख रखा।

जीवात्मा के लक्षण	विकृति (षटरिपु)	(उपाय) नियम (व्यक्तिगत)	यम– (सामाजिक उन्नति)
इच्छा	काम	शौच्य	अहिंसा
ज्ञान	मद	स्वाध्याय	सत्य
प्रयत्न	क्रोध	तप	अस्तेय
सुख-दुःख	लोभ-मोह	संतोष	ब्रह्मचर्य
द्वेष	अहंकर	ईश्वर-परीधान	अपरिग्रह

यम-नियम के बिना कोई भी अभ्यासी योग का अधिकारी नहीं हो सकता। यह न केवल अभ्यासियों के लिए भी आवश्यक है किंतु सारे समाज से घनिष्ठ संबंध होता है, इस कारण इसके पालन में सब मनुष्य परतंत्र हैं। जीवात्मा अज्ञानी होने के कारण प्रकृति को देख कर उसके मन में अभाव नजर आता है और वह इच्छा करने लगता है। उस इच्छा की पूर्ति के लिए प्रयत्न करता है, व इच्छा को प्रकट करता है। इसी अभाव के पूर्ति का नाम कर्म है। इस इच्छा में मनुष्य को - काम का रोग निर्माण होता है। मनुष्य कामांध बनकर अधोगति को जाता है। परमात्मा ने कोई वस्तु गलत नहीं बनाई। यही काम योग्य अवसर पर बहुत लाभदायक और उपयोगी भी है। यदि यह न होता तो संसार के मनुष्यों व पशुओं का अंत हो जाता। माता-पिता का प्रेम समाप्त हो जाता। संसार वीरान हो जाता। माता-पिता के मिलाप में केवल शिव-संतान के इच्छा के लिए पूरी तैयारी के बाद यह कामदेव धन्य है। इसमें घराने के नाम जीवित रहते हैं। इस कामदेव का दुरुपयोग ही रोग है। इसको दूर करने के लिए नियम में शौच शुद्धता का पालन करने से शुद्ध इच्छा करने से रोग निर्माण नहीं होते। सात्विक भोजन खाओ, सादा जीवन बनाओ। शुद्ध इच्छा रखो, धार्मिक सोसायटी का संबंध रखो, व्यायाम करके शरीर को निरोगी बनाओ और अपनी इच्छा पर प्रभुत्व पाओ। फिर देखो कामदेव आपका दास बनकर रहता है या नहीं। काम का भयानक दृश्य आप हमेंशा अखबार में पढते ही होंगे।

बंगाल की घटना अभी ठंडी होते नहीं पायी थी कि पूना रेल्वे स्टेशन के स्त्रियों

पर किया हुआ अत्याचार, रोंगटे खडे कर देता है। इससे बढकर पशुपन क्या हो सकता है? व्यक्तिगत इच्छा जहां होती है वहां शुद्धता का (शौच्य) संबंध होता है। 'अद्भिर्गात्रिणि शुद्धयन्ति '' .... और जहां समाज से संबंध आता है वहां यम के अहिंसा का पालन लगाया गया है। अहिंसा का अर्थ है शरीर, वाणी और मन से काम, क्रोध, लोभ, मोह, भय आदि की मनोवृत्तियों के साथ किसी प्राणी को शारीरिक, मानसिक, पीडा पहुँचाना अथवा पहुंचवाना या उसकी अनुमति देना या स्पष्ट अथवा अस्पष्ट रूप से उसका कारण बनना यह हिंसा है, इससे बचना यह अहिंसा है। जिस प्रकार सारे क्लेशों का मूल अविद्या है, उसी प्रकार यमों का मूल अहिंसा है। ''असूर्या नाम-ते-लोका-अंधेन तमसावृतः''।

शिक्षार्थ ताडना देना, रोग निवार्णार्थ औषधी देना अथवा आपरेशन करना, सुधारार्थ या प्रायश्चित के लिए दंड देना यह हिंसा नहीं है, यदि यह बिना द्वेष आदि के केवल प्रयोग से उनके कल्याणार्थ किया जाए।

२. ज्ञान

बच्चा जब आवश्यकता के लिए रोता है, इच्छा दर्शाता है, तत्पश्चात् उसको दूध पिलाने वाली माता का ज्ञान होता है, संभालने वाला मेरे घर का है। बच्चा नये आदमी के पास नहीं जाता है और इस प्रकार उसका ज्ञान बढते जाता है। इस ज्ञान में मनुष्य को षड्रिपु में बताये हुए अनुसार मद चढता है। नशा कोई भी हो उसका परिणाम अच्छा नहीं सुना जाता। हुकूमत का नशा, धन का नशा इत्यादि परिणाम ठीक नहीं। मनुष्य संतान को यह नशा (लोकैषणा, पुत्रैषणा, वित्तैषणा का मद) धुन की तरह खा रहा है। इस मद को दूर करने के लिए नियम में स्वाध्याय लगाया है।

स्वाध्याय कहते हैं - वेद, उपनिषद, आदि अध्यात्मिक संबंधी विवेक ज्ञान उत्पन्न करनेवाले योग और सांख्य के सत् शास्त्रों का नियमपूर्वक अध्ययन ही स्वाध्याय है।

ज्ञान अपार है, सत्य ज्ञान क्या है उसकी जिज्ञासा बढने से मनुष्य गर्व नहीं करता। सत्य का अर्थ है वस्तु का यथार्थ ज्ञान। उसको शरीर से काम में लाना शरीर का सत्य है, वाणी से कहना वाणी का सत्य है, और विचार में लाना मन का

सत्य है, अहिंसा तीनों काल में सत्य है। (सत्य ब्रुयात् प्रियमं ब्रुयात-ब्रुयात सत्यं प्रियं) सत्य बोले, प्रिय बोले, वह सत्य न बोले जो अप्रिय हो। अर्थात् सत्य को मीठा करके बोले, कटु करके न बोले।

३. प्रयत्न -

जीवात्मा को जब ज्ञान होने लगता है, तो उसको प्राप्त करने के लिए बच्चा प्रयत्न करने लगता है। माँ को देखकर हाथ ऊपर करने लगता है। करवट लेकर नजदीक आना चाहता है। किंतु जब प्रयत्न में यश जल्दी नहीं पाता उसमें क्रोध आने लगता है और यह एक चांडाल है। इसमें मनुष्य अंधा हो जाता है। इस कारण तपश्चर्या का महत्व समझना चाहिए। बार-बार प्रयत्न करके फल की प्राप्ति कर लेना चाहिए। निराशा नहीं आना चाहिए जो असफलता की जय हो। किंतु आहिस्ते से प्रयत्न करना चाहिए। अन्यायपूर्वक किसी से धन, द्रव्य अथवा अधिकार, आदि का हरण करना स्तेय है। शासन अधिकारों का प्रजा के नागरिक अधिकार दबाना, ऊंचे वर्ण वालों और या धनपतियों का। नीचे वर्ण वालों और निर्धनों के सामाजिक तथा धार्मिक अधिकार छीनना स्तेय है। अधिकारी गणों का रिश्वत लेना, दुकानदारों का निश्चित या अधिक दाम लेना अथवा तोल में कम देना तथा चीजों में मिलावट करना इत्यादि स्तेय हैं। इस प्रकार किसी वस्तु को प्राप्त करने का मूल कारण लोभ, राग है।

किसी वस्तु में राग होना ही स्तेय समझना है। इसका त्यागना अस्तेय है। अस्तेय सत्य का ही रूपांतर है। इस समय सारे राष्ट्रों में जो बडे आंदोलन चल रहे हैं वे अस्तेय वृत्ति के यथार्थ रूप से पालन करने से शांत हो सकते है।

४. सुख और दु:ख -

यह जीवात्मा के नैमित्तिक लक्षण है। दोनों एक ही घटना के दो बाजू हैं। इच्छा की पूर्ति होने पर सुख मिलता है और पूर्ति न होने पर दु:ख मिलता है जिसका परिणाम लोभ और मोह में निर्माण होता है। लोभ का शोभ नहीं, लोभ करने से यह अंत में साथ नहीं देता। सिकन्दर ने सारे संसार पर विजय पायी, पर अंत में दोनों हाथ खाली कफन के बाहर लेकर गया। महमद गज़नवी लोभ के कारण मृत्यु समय में हर एक वस्तु को देख देख कर रोता था कि कोई भी साथ नहीं दे रहा है।

एक राजा ने किसी महात्मा से प्रश्न किया कि बाबा, कभी हमें भी याद करते हो? उत्तर मिला कि 'हां - जब ईश्वर को भूल जाता हूँ।'

इस कारण प्रभु ने इस लोभ-मोह को दूर करने के लिए संतोष की दवा हमें बता दी। फल में संतोष है प्रयत्न में नहीं। प्रयत्न में मनुष्य दैववादी विनाशवादी हो जाता है। समाधान में ही सुख है - सुख में साधन नहीं। 'ठेवले अनंते तैसेचि रहावे - चित्ती असु द्यावे समाधान'.... मनुष्य कर्म करने में स्वतंत्र है, फल भोगने में परतंत्र है। इसलिए राजी हूँ उसी में जिसमें तेरी रजा है।

संतोष कहते हैं - सामर्थ्यानुसार उचित प्रयत्न के पश्चात् जो फल मिले अथवा जिस अवस्था में रहना हो, उसमें प्रसन्न चित्त बने रहना और सब प्रकार की तृष्णा का छोड देना संतोष है। चित्त की प्रसन्नता का नाम संतोष है, न कि तम के अंधकार में चित्त का अलसिखता तथा परमादरूपी अवरण के अवस्था का।

इस लोभ-मोह को दूर भगाने के लिए ब्रह्मचर्य का व्रत है। हम बावली तैयार करते हैं। उसमें कूडा-कचरा न गिरे इस कारण अतराफ से दीवार बनाते हैं। तब भी उसमें कचरा हवा से, बच्चों की शरारत से गिरते ही रहता है। हर साल वह गंदगी निकालनी पडती है। बावली में यदि पानी ज्यादा हो तो कचरा नीचे बैठ जाता है। कम रहने पर ऊपर आ जाता है और पानी गंदा हो जाता है। इस कारण वावली में पानी अधिक चाहिए। ब्रह्मचर्य की शक्ति से सहनशीलता बढ़ती है। जिसमें ताकत है। (शाक-आबझरवर) बडे चाहिए। " लाभा-लाभौ जयाजयैः" सुख और दुःख को वह सहन कर सकता है। इसीलिए ब्रह्मचर्य का पालन आवश्यक है। ब्रह्मचर्य कहते है - जितेन्द्रिय रहना अर्थात् सब इन्द्रियों के निरोध पूर्वक - उपस्थेन्द्रिय के संयम का नाम ब्रह्मचर्य है। अन्न के खींचने के लिए जो प्राणों की आभ्यंतर क्रिया होती है उसी का नाम भूख है, वह वृक्षों, पशु-पक्षी आदि के समान वृक्ष प्राणों के अनुकूल ही अन्न को खींचते हैं। यही कारण है कि विशेष वृक्ष उन विशेष स्थानों में जहां उनके अनुकूल पृथ्वी, जल आदि में परमाणु नहीं होते हैं, नहीं उगते हैं। पशु आदि भी प्राणों के अनुकूल ही अन्न को खींचते हैं। यदि मनुष्य के कुसंग से इस स्वाभाविक बुद्धि को न खो बैठे हो किंतु मनुष्य नाना प्रकार की वासनाओं से भ्रमित होकर इस विवेक बुद्धि को खो देता है । किस समय प्राणों को किस-किस

विशेष अन्न की आवश्यकता है। कभी कभी प्राणों में भी कई विशेष कारणों के अधीन होकर बाहरे अन्न की ओर आकर्षित होने की अभ्यांतर क्रिया होती है। यही काम विषय वासना के पीछे जाना है। इसको वशी-भूत करना ही ब्रह्मचर्य है।

५. द्वेष-अहंकार

जीवात्मा में फल की प्राप्ति न होने पर उनमें द्वेष की भावना निर्माण होती है जिससे उसमें अहंकार व मत्सर बढ जाता है। इसको दूर करने के लिए ईश्वर प्रणिधान का उपदेश दिया गया है। ईश्वर भक्ति-विशेष अर्थात फल सहित सर्व कर्मों को उसके समर्पण करना ईश्वर-प्रणिधान है। सब नियमों में ईश्वर प्रणिधान मुख्य है, तथा सब नियमों को ईश्वर-समर्पण रूप से करना श्रेयस्कर है। ब्रह्मचर्य, अहिंसा, सत्य, अस्तेय का सेवन करे और जितेन्द्रिय शुद्धमनयोगी, स्वाध्याय शोच, संतोष, तप इनका परब्रह्म में अर्पण करें। इसके लिए यम में अपरिग्रह का पालन है। इस व्रत का यथार्थ से पालन न होने के कारण ही धन संपत्ति आदि का ठीक-ठीक विभाग नहीं है। किसी के पास सैकडों मकान खाली पडे हैं तो किसी के पास रात में सोने के लिए छोटी सी झोपडी भी नहीं है। किसी के पास खण्डियों अनाज भरा हुआ है, कोई भूखा मर रहा है इत्यादि इत्यादि। थोडे से व्यक्तियों के यहां अपनी आवश्यकताओं से अधिक संपत्ति तथा सामग्री रख कर उसको अपने तथा दूसरों के निमित्त यमों का पूरा ध्यान रखते हुए आवश्यक रूप से व्यय करने में भी समाज की इतनी हानि नहीं है जितनीं कि कंजूसी से संग्रह करने और उसको बिना काम लाये बंद रखने से होती है, क्योंकि धन संपत्ति आदि सामग्री जब व्यय अर्थात् काम में लाई जाती, तब उसका अंश किसी न किसी रूप से सारे समाज में बढ जाता है।

यदि हर एक मनुष्य के पास केवल उसी के आवश्यकताओं के अनुसार ही सारी वस्तुएं रहें, तो कोई मनुष्य निर्धन और बेघर नहीं रहेगा।

मनुष्य के उन्नति के संविधान (शारीरिक, मानसिक और सामाजिक) हमने ऊपर स्पष्टीकरण करने का प्रयत्न किया जिसमें जीवात्मा के लक्षणों को उसमें होने विकृतों को ध्यान में रखते हुए सर्व समाज से संबंध रखनेवाले अहिंसा-सत्य-अस्तेय-ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह धर्मरूपी यमों का वर्णन किया गया है तथा वैयक्तिक

धर्मरूपी यमों का, शौच्य, संतोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान अर्थात् नियमों का पालन बताया गया है, यही विधाता का विधान है।



सच्ची नम्रता का यह अर्थ है कि केवल मानव सेवा की दिशा में ही अत्यन्त कठोर और सतत प्रयत्न किया जाय। ईश्वर एक क्षण का भी विश्राम न लेकर निरंतर काम करता रहता है। अगर हम उसकी सेवा करना या उसमें मिल जाना चाहते हैं तो हमारा कार्य भी उसी की तरह अथक और निरंतर होना चाहिए।

— महात्मा गांधी

अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्
दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ।।

मन, वाणी और शरीर से किसी प्रकार भी किसीको कष्ट न देना तथा यथार्थ और प्रिय भाषण, अपना अपकार करनेवालेपर भी क्रोधका न होना, कर्मोंमें कर्तापन के अभिमानका त्याग एवं अन्त:करणकी उपरामता अर्थात् चित्तकी चञ्चलता का अभाव और किसी की भी निन्दादि न करना तथा सब भूतप्राणियोंमें हेतुरहित दया, इन्द्रियोंका विषयों के साथ संयोग होनेपर भी आसक्ति का न होना और कोमलता तथा लोक और शास्त्रसे विरुद्ध आचरण में लज्जा और व्यर्थ चेष्टाओं का अभाव ।।

(भगवद्गीता - अध्याय १६, श्लोक २)

चरित्र बल

- श्री आनन्दमुनी, प्रधान, महाराष्ट्र आर्य प्र. सभा.

धनबल, ज्ञानबल और चरित्रबल इन तीनों में चरित्रबल श्रेष्ठ है। वृक्ष की जड़ें जितनी गहराई में जाती है उतना ही वृक्ष मजबूत होता है, परंतु वर्तमान समाज धनबल को ही अत्यधिक महत्त्व देता है। समाज की अवधारणा के अनुसार, समाजरूपी वृक्ष की जड़ें हम वृद्ध जन हैं, तो टहनियाँ है युवक वर्ग। चारित्र्य की कुछ सीमाएँ हैं। प्रभु रामचंद्र ने किसी ग्रंथ की सर्जना नहीं की, किसी तरह के तत्वज्ञान की अभिव्यक्ति भी नहीं की, परंतु उनका सारा जीवन ही तत्वज्ञान का ग्रंथ है। ज्ञान यह जीवन के कृतित्व पर ही अवलंबित है। एक विद्यार्थी मॅट्रिक की परीक्षा देता है, तब उसे उत्तीर्ण होने के लिए, सब विषयों में उत्तीर्ण होना अत्यावश्यक हो जाता है। एक विषय में १०० अंक मिले, अन्य विषययों मे वह अनुत्तीर्ण है तो इससे काम नहीं चलेगा - वह अनुतीर्ण ही घोषित किया जाएगा। गृहस्थियों पर अधिक उत्तरदायित्व है। वह है मातृप्रेम, पितृप्रेम और बंधू प्रेम का उत्तरदायित्व। हमारा पडोंसियों के साथ कैसा व्यवहार हो, सेवकों के प्रति, पत्नी के प्रति कैसा व्यवहार हो, अपने पुत्र-पुत्रियों के प्रति कैसा बर्ताव हों - यह जीवन की परीक्षा ही है। भगवान रामचन्द्रने सब विषयो में १००% अंक प्राप्त किये थे। वे मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान रामचन्द्र कहलाये। हर मनुष्य का कर्तव्य है कि अपने जीवन में हमने १००% अंक प्राप्त किये हैं या नहीं? यह भी देखना चाहिए कि अपना चरित्र शुद्ध है क्या? शुद्ध चरित्र की पूर्णता ही श्रेष्ठ मानव है। मैने ऐसे गृहस्थ को देखा है, घर के बाहर, समाज में विचरण करते समय, उसकी भूमिका एक संत की होती है और घर पर लौटने पर अपनी पत्नी के साथ के बर्ताव में उसकी पशुता, बर्बरता जाग पड़ती है। सामान्यत: ऐसा दृश्य समाज में देखने को मिलता है। इसका यह अर्थ हुआ कि एक विषय में सौ अंक और अन्य विषय में अनुत्तीर्ण अर्थात जीवन परीक्षा में अनुत्तीर्ण ही होना है। जीवन के चारित्र्य में घट ही घट है, जोड़ना नहीं है। जब तक आप में जोड़ने की कला नहीं है, वहाँ चरित्र नहीं है। एक आदमी अपने गले में रुद्राक्ष की माला धारण करता है, हाथ में जप की माला है, माथे पर तिलक है पर भीतर से अशुद्ध है। वह चरित्रवान कैसे हो सकता है

शासकीय सेवामें वह अधिक तनख्वाह भी पाता है। भ्रष्टाचार भी करता है। वह चरित्रवान नहीं है। ऐसे आदमी को राष्ट्र का शत्रु घोषित करना चाहिए।

स्वामी दयानद ने अपने ग्रथ आर्योद्देश्यरत्नमाला में यह मनुष्योंकी (राक्षस और देव) सुर-असुर वृत्तियों को दर्शाया है। हम किस वर्ग के हकदार है यह हमें गंभीरतासे देखना है। हमे यह तय करना पड़ेगा कि हम सुर बने या असुर। चरित्रका हनन कर राक्षस बनना है या चरित्र की पूजाकर देवत्व को प्राप्त करना है। ऊपर के वेद मंत्र का भावार्थ है। हे अग्नि-प्रभु मुझे दुःश्चरिचंता से बचाकर श्रेष्ठ मार्ग पर ले आ। मैं चरित्रवान बनूँ, बुद्धि नाशक पदार्थो का सेवन न करू, जुआ न खेलूँ, व्यभिचार न करूँ।

शील की व्याख्या शास्त्रकारो ने की है।

अद्रोहः सर्वभुतेषु कर्मणा मनसा गिरा।

अनुग्रहश्च ज्ञानस्य शीलतला विधुर वृदः।।

मन, वाणी, कर्म से शुद्ध कर, ध्यान की उपासना करना ही शील है।

शील ही चरित्र है। जिस व्यक्ति के पास विद्या, तप, शील नही, तो वह पशु है।

मनुष्य का कर्तव्य है कि चरित्र की पूजा करते हुए देवत्व को धारण करने का प्रयास करे। नर से नारायण बने।

(महाराष्ट्र का प्रथम आर्य महासम्मेलन, वाजेगाव, नान्देड, १९८२ स्मरणिका में प्रकाशित लेख का हिन्दी अनुवाद)

यतो यतो निश्चरति मनश्चञ्चलमस्थिरम् ।
ततस्ततो नियम्यैतदात्मन्येव वशं नयेत् ।।

जिसका मन वशमें नहीं हुआ हो उसको चाहिये कि, यह स्थिर न रहनेवाला और चञ्चल मन जिस-जिस कारण से सांसारिक पदार्थोंमें विचरता है, उस-उससे रोककर बारम्बार परमात्मा में ही निरोध करे ।।

(भगवद्गीता - अध्याय ६, श्लोक २६)

परिशिष्ट - ३

श्री शेषरावजी के प्रिय भजन

आज दे दो बलिदान देश के लिये जवानो,
है आन अपनी निभाना ।
रखो मन में अभिमान देश के लिये जवानो,
है आन अपनी निभाना ।।

तुम हो वीरों के लाल, शत्रुओं के हो काल ।
पर हुआ क्या है हाल, करो कुछ तो खियाल ।
क्यों बनें हो निष्प्राण, देश के लिये जवानो ।। है आन..

धमकियों से कोई, अब डराना चाहे ।
हो गए हो खड़े तो, गिराना चाहे ।
तुम हो शक्ति महान, देश के लिये जवानो ।। है आन....

किन्तु साहस कभी भी नहीं हारना ।
पग धरो आगे धरो धरम धारना ।
जानो सुख-दुःख समान, देश के लिये जवानो ।। है आन...

कोई मौजें करें, कोई दुःख पा रहा ।
और न कोई किसी का, सहारा रहा ।
तजो खोटी यह बान, देश के लिये जवानो ।। है आन...

स्वार्थी बन के हानि, न करो देश की ।
संस्कृति पूर्वजों की, धरम वेष की ।
'प्रेम' की अब लो मान, देश के लिये जवानो ।। है आन...

कवि - पं. प्रेमचंदजी 'प्रेम'

अकेला

यह मत कहो कि जग में कर सक्ता क्या अकेला
लाखों में काम करता है सूरमा अकेला।
आकाश में करोड़ों तारे हैं टिमटिमाते,
अन्धकार जग का हरता है चन्द्रमा अकेला।।

लाखों ही जन्तुओं पर बिठला के धाक अपनी,
स्वाधीन, सिंह बन में है घूमता अकेला,
होते हैं ओखली में अनगिनत धान के कण,
लेकिन सभी को मूसल दल डालता अकेला।।

लोहे की पटरियों पर होते अनेक डिब्बे,
लेकिन सभी को इंजन है खींचता अकेला।।

लंकापुरी जलाके असुरों का मद मिटाके,
हनुमान राम-दल में फिर आ गया अकेला।।

जापान में सजा के आज़ाद हिन्द सेना,
जौहर ''सुभाष नेता'' बतला गया अकेला।।

था कुल जगत् विरोधी तुझ पर ऋषि दयानन्द,
ध्वज आर्य संस्कृति का फहरा गया अकेला।।



प्रभु से दिल लगाना आता है।

प्रभु से दिल लगाना आसां है,
प्रीत निभाना मुश्किल है ।

कहना-सुनना आसां है,
करके दिखाना मुश्किल है ।।

यहाँ कुछ दिल रूठ भी जाते हैं,
और कुछ दिल टूट भी जाते हैं ।

रूठे को मनाना आसां है,
टूटे को बनाना मुश्किल है ।।

यह रास्ता है नाजुकतर बहुत,
और फिसल जाने का डर है बहुत ।

एक बार अगर यह फिसल गया,
पांव जमाना मुश्किल है ।।

डोर प्रभु के हाथ में है,
सुख से मंजिल तय कर ले ।

प्रभु बिन दास इस मारग में,
एक कदम बढ़ाना मुश्किल है ।।



आदत बुरी संभाल ले

आदत बुरी संभाल ले बस हो गया भजन ।
मन की तरंग मार ले बस हो गया भजन ।।

तू कौन है आया कहाँ से जायेगा कहाँ ।
इतना ही बस समझ ले तू - बस हो गया भजन ।।

दुनियाँ तुझे बुरा कहे तू शेर बनकर सुन ।
वाणी का स्वर सुधार ले बस हो गया भजन ।।

है दोष दृष्टि से सदा दुनियां को देखता ।
समता का अंजन मांज ले, बस हो गया भजन ।।

सौ बार जन्म लेगें

सौ बार जन्म लेंगे सौ बार फना होंगे
अहसान दयानंद के फिर भी न
अदा होंगे
गुजरात की धरती से सूरज की
किरण फूटी - अज्ञान
अंधेरे से मानव की
[illegible] टूटी
गलत [illegible] हुआ - आर्य [illegible]
समाप्त होंगे ॥२॥
निराकार की पूजा को - सिखलाया [illegible],
पाषाण का [illegible] - [illegible]
इनको गवारा था
मुंह मोड़ लिया उनसे [illegible]
होंगे ॥३॥

दिए [illegible] से
सेनानी दिये हमको
और स्वामी श्रद्धानंद से
बलिदानी दिये हमको
सुख उनको शासन के - अब [illegible]
[illegible] ॥४॥
[illegible] किले उनके पाषाण से और
ऊपर
राम [illegible] बने हनुमंत और
विभीषण के [illegible]
[illegible] होंगे [illegible] होंगे
॥ सौ बार ॥ ॥५॥

शेषराव जी का प्रिय भजन - उन्ही के हस्थाक्षरोंमें

परिशिष्ट-४

समकालीनों के शब्दों और स्मृतियों में श्री शेषरावजी

श्री शेषरावजी के जीवन को पूर्ण रूपेण शब्दबद्ध करने की दृष्टि से समकालीनों, युवा पीढी तथा सम्बन्धियों के संस्मरण जुटाने आवश्यक थे। इस प्रयास में शेषरावजी सम्बन्धित कई संस्मरण प्राप्त हुए। इन संस्मरणों में पुनरावृत्ति होने की पूरी संभावना थी, पुनरावृत्ति हुई भी, फिर भी पुनरावृति को टालने का भरसक प्रयास किया गया है।

संस्मरणों की अनुक्रमणिका भी आवश्यक लगी, वह इस तरह है -

लेखक-संपादक।

पृष्ठ क्रमांक

संस्मरणों की अनुक्रमणिका :

पृष्ठ क्रमांक

परिशिष्ट - ४

(१) समकालीनों के शब्दों और स्मृतियों में श्री शेषरावजी

(१) वह सचमुच नर व्याघ्र था।

जिस व्यक्ति ने बाघ को डण्डे से मारकर 'बाघमारे' की उपाधि पायी थी, वह सचमुच 'नरव्याघ्र' था। शेषरावजी के साथ 'बाघमारे' इसलिए जुड़ गया था। क्या अद्भुत शरीर सम्पदा उन्होंने पायी थी। उनकी बड़ी-बड़ी मूँछें, जिमनाष्टिक और व्यायाम से सधा हुआ शरीर, ऊंचा डील डौल, दूर से लगता था कि जंगल के राजा की तरह कोई मनुष्यों का राजा चला आ रहा है। .... हृदय इतना कोमल और स्वभाव इतना मिलनसार कि जब तक साथ हो, लगातार किसी न किसी बात पर हँसते रहो। हँसाने की कला में निपुणता और निश्चल हँसी - दोनो की प्रभु की देन है

(क्षितीशकुमार 'निज़ाम की जेल में' पृ. ६०)

---

(२) श्री शेषरावजी एक जिन्दा शहीद

अनेक ऐसे आर्यसमाजी कार्यकर्ता हैं, जिन्होंने निज़ामी शासन के विरोध में अपने जीवन को दाँव पर लगाया और घोर यातनाएँ सहीं। अपने सुखों को तिलांजलि देकर महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों की रक्षा व उनके प्रचार का संकल्प लेकर, इन लोगोंने जो कार्य किये हैं, उन्हें शब्दों की सीमा में बांधा नहीं जा सकता। सचमुच उन्हें जिन्दा शहीद कहना चाहिए - उनमें शेषराव वाघमारेजी एक हैं।

(प. नरेन्द्रजी - 'हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष' पृ. ४४)

श्री शेषरावजी का निलंगा के जनजीवन में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। उनका त्याग और समाज सेवा का कार्य इतिहास के पन्नों में अपना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

(प. नरेन्द्रजी - 'हैदराबाद के आर्यों की साधना और संघर्ष' पृ. ९०)

---

(३) श्री शेषरावजी एक नम्रतापूर्ण व्यक्तित्व

श्री शेषरावजी वाघमारे से मिलने के अवसर मुझे सार्वदेशिक सभा के अधिवेशनों में मिले। उनके वीरतापूर्ण व्यक्तित्व तथा आर्यसमाज के प्रति उनकी निष्ठा, धर्म प्रेम, लगन तथा समर्पण भाव से मैं काफी प्रभावित रहा।

(डॉ. भवानीलालजी भारतीय - पत्र दि. १०/३/२००८)

(४) श्री शेषरावजी हमारे हनुमान

जहाँ राम होगा, वहाँ लक्ष्मण भी होगा। दोनों को लेकर, कहो तो भी रामायण पूरा नहीं होगा। रामायण का तीसरा महत्वपूर्ण पात्र है - हनुमान। अगर हनुमान नहीं होता तो सीताजी नहीं मिलती - रामायण अधूरा ही रह जाता। हनुमान के कारण सीता मिली - रामायण पूर्ण हुआ।

आर्य जगत् में राम - पं. बन्सीलालजी हैं, लक्ष्मण है पं. श्यामलालजी और हनुमान हैं - श्री शेषरावजी वाघमारे.

- पं. विनायकराव विद्यालंकार - लातूर - सप्तम् आर्य - महासम्मेलन (२२ एप्रिल से २४ एप्रिल १९४९) अध्यक्ष थे श्री खुशालचन्द्रजी (म. आनन्द स्वामी) विनायकरावजी के भाषण का प्रारंभिक अंश -

नोट : उस समय पं. बन्सीलालजी, पं. श्यामलालजी जीवित नहीं थे -

(५) श्री शेषरावजी का दबदबा

श्री शेषरावजी वाघमारे - निलंगा नामक स्थान के प्रसिद्ध वकील थे। शरीर से बहुत ही हृष्ट-पुष्ट थे। अपनी जवानी के दिनों में अनेको दण्ड-बैठक लगाया करते थे। ..... न जाने कितने ही - रज़ाकारों के अराजक तथा विध्वंसकारी शक्तियों के साथ टकराव होता था, परंतु हरबार हीं, इन विध्वंसकारी शक्तियों को मुँह की खानी पड़ती थी। .... देशभक्त व्यक्तियों के मुकदमें बिना फीस लिए पैरवी किया करते थे। निलंगा तथा परिसर में इतना दबदबा था कि अराष्ट्रीय, अराजकीय तथा विघटनकारी शक्तियाँ, इनके (शेषराव) भय से

मनमानी करने में अपने आपको विवश पाती थी। इनको उस क्षेत्र के हनुमान कहा जा सकता है।

- आचार्य सत्यप्रिय शास्त्री ''भारतीय स्वातंत्र्य संग्राम में आर्यसमाज का योगदान' पृ. २६९

(६) श्रेष्ठ आनन्दमुनि

आर्यसमाज के सिद्धान्तों और वेदिक धर्म की मान्यताओं के प्रबल प्रचारक, निर्भीक वक्ता और आर्यसमाज के लिए समर्पित जीवनदानी - श्रेष्ठ आनन्द मुनि थे। आर्यसमाज विशेषकर आर्य प्रतिनिधि सभा - महाराष्ट्र के इतिहास में उनका नाम सुवर्ण अक्षरों में लिखने योग्य है -

- राम गोपाल शालवाले

'वैदिक गर्जना' आनन्द मुनि स्मृति अकं. पृ. २३

(७) श्रीमान शेषरावजी वाघमारे के जीवन की प्रेरणा देनेवाली घटना

१९६८-६९ की बात है, सार्वदेशीक आर्य प्रतिनिधि दिल्ली का सम्मेलन नुमाईश मैदान हैदराबाद में मनाया गया, सारे देश से सभी आर्य और अन्य लोग भी देखने उमड़ पड़े। आर्यसमाज निलंगा से अपने मित्रों के साथ मान्यवर श्री शेषरावजी भी पहुँचे, यह विशिष्ठ व्यक्तियों में जाने जाते थे. हैदराबाद राज्य में इन्होंने कष्ट उठाकर पंडित नरेन्द्रजी का साथ निभाया था।

एक सप्ताह का यह सम्मेलन था, भारतीय विद्वानों में कोई नहीं बचा था। जो नहीं गये हों । एक दिन प्रात:काल यज्ञ के पश्चात् मेरे भजन थे, एक घण्टे का कार्यक्रम था। जब १५ मिनट शेष रह गये कि लोग कहते हैं कि आर्यसमाज में युवक नहीं आते, ये न जाने क्या कारण है?

मैने कहा नौजवान आना तो चाहते हैं, मगर जो बूढ़े लोग अधिकारी वर्ग उन्हे आने नहीं देता, बस मेरा इतना कहना था कि मंडप में सन्नाटा छा गया, तब

श्री शेषरावजी खडे हो गये और बोले हमें दिखाओं तो सही दो चार युवक। मैंने उसी समय आवाज़ दी, श्री श्यामरावजी, आचार्य इन्द्रदेवजी जहां हों, वो मंच पर आयें*

वे मेरी आवाज़ सुन कर मंच पर आ गये। मैंने इन दोनों का परिचय दिया और बड़े खुश हुए। मैंने पं. नरेन्द्रजी, सभा प्रधान से अपने समय में से १५ मिनट देने की आज्ञा ली, और ये बोलने लग गये। श्यामरावजी अच्छा बोले, बहुत प्रभाव रहा, तभी मान्यवर शेषरावजी एडवोकेट ऐलान करते हैं कि मै इन्हें २० बीघा ज़मीन अपनी ज़मीन में से देता हू और बहुत से नौजवान आएँ, उसके बाद मेरे को पता नहीं, २० बिघा का क्या हुआ?

मान्यवर श्री बाघमारेजी १९७२ में गुंजोटी महाराष्ट्र जि. उस्मानाबाद के आर्य महासम्मेलन के अध्यक्ष चुने गये, आर्य जगत् के सन्यासी विद्वान बुलाए गये, जिनमें आनन्दस्वामी, स्वामी दीक्षानन्दजी, पं. ओम्प्रकाश शास्त्री खतौलीवाले श्री लाला रामगोपाल शालवाले, और मैं भी इन सबके होते हुए, प्रधान बाघमारेजी तीनों दिन के पहिले से नियत थे। श्री श्यामरावजी (अग्निवेशजी) को भी बुलाया गया था, कई हजार की उपस्थिति थी। महाराष्ट्र के सभी आंचलों से लोग पहुंचे थे, एक दो के भाषण होने के बाद श्यामराव का भाषण हुआ, जो आपत्तिजनक था, जैसा आज भी वह बोलते हैं। वातावरण बदल गया। वातावरण को संभालने में शेषराव को कष्ट भी हुआ।

मैंने श्री शेषरावजी को आर्यसमाज की टीस लिए देखा, निलंगा आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव में भी देखा, आर्यसमाज के प्रति उनके दिल में कितना दर्द था। वह निज़ाम के वक्त में नही घबराये तो अब तो देश स्वतंत्र था, रज़ाकारी आन्दोलन में रजवी के अत्याचारों का जो मुकाबला किया, वह क्या छुपा हुआ है, पं. नरेन्द्रजी के कन्धे से कन्धा मिलाकर चले। गुलबर्गा काण्ड क्या किसी से छिपा हुआ है। सब लोग जानते है, उस में आपभी घायल हुए और रक्त रंजित हुए। हैदराबाद रियासत आर्यो के लिए एक युद्ध का क्षेत्र था। बड़ी से बड़ी मुसीबतें उठाते हुए भी ओ३म् का झंडा झुकने नहीं दिया, ये श्री बाघमारेजी जैसे

* यही दो युवक बाद में सन्यास-ग्रहण कर स्वामी अग्निवेश तथा स्वामी इन्द्रवेश कहलाये।

जिन्दा शहीदो का काम था, मेरे जीवन में वह कई बार यदा कदा आर्यसमाज के सम्मेलनों में मिलते रहते थे। एक बार मुझे उन्होंने अपने निलंगा आर्य समाज के वार्षिकोउत्सव पर बुलाया, मैंने कहा कि बहुत अच्छा तबला मास्टर होना चाहिए, वैसा ही हुआ, फिर क्या मैंने भी अपने संगीत से निलंगा की जनता को मंत्रमुग्ध कर दिया, बाघमारेजी ने सुनकर कहा 'आज आनन्द आ गया,' अत्यंत खुशी दिल थे। कभी निराशा उनके दिल पर नहीं आती थी। बस इतना ही पर्याप्त है।

- ओमप्रकाश वर्मा भजनोपदेशक, यमुनानगर

---

८) वह शेषराव मर गया : दीनानगर में यज्ञशाला के समीप भीमकाय महात्मा आनंद मुनिजी (शेषरावजी) खड़े थे। मैंने कहा - मेरे पास आपका वह ऐतिहासिक चित्र है, जो शोलापुर के सत्याग्रह के दिनों में स्वामी स्वतंत्रानन्दजी महाराज के साथ खींचा गया है। आप झट से बोले 'वह शेषराव मर गया' - 'तड़प झड़प कहानियां'। (पृ.) १०१, राजेन्द्रजी जिज्ञासु

श्री शेषरावजी को पकड़ने से गडबड़ मचेगी : हैदराबाद का निज़ाम वहाँ के मुसलमान राज्य को एक स्वतंत्र मुस्लिम राज्य बनाने के लिए वहाँ के हिन्दूओं को अमानवीय यातनाएँ दे रहा था। ऐसे समय श्रीशेषरावजी अपने साथियों सहित घर बार छोड़कर सीमावर्ती क्षेत्र से रज़ाकारों से लोहा ले रहे थे। .... उन्होंने तुलजापुर के समीप अकेले ही तीन घंटे तक रज़ाकारों की गोलियों का उत्तर गोलियों से दिया। अपने शौर्य का परिचय दिया। ...... निज़ाम सरकार ने शेषराव को बंदी बनाना चाहा, परंतु निलंगा के सब इन्स्पेक्टरने एक गुप्त पत्र भेजकर सूचित किया शेषरावजी को बन्दी बनाया गया तो बहुत गडबडी मचेगी'

प्रा. राजेन्द्रजी जिज्ञासु- 'तडप झड़प' कहानियाँ पृ. १८८-१८९

---

(९) मेरी जिंन्दगी को नया मोड़ मिला।

''मेरी जिन्दगी को नया मोड़ मिला - इसका सारा श्रेय पं. शेषराव को

जाता है। इन्हीं के कारण मैं अपनी जिन्दगी में बहुत कुछ कर सका, अन्यथा मैं जहां का तहाँ रह जाता।.... सायगांव से निलंगा, निलंगा से हैदराबाद - भेजने का सारा श्रेय शेषराव वाघमारे को है -

स्वतंत्रता सेनानी, यशवंतराव सायगांवकर 'हैदराबाद मुक्ति आन्दोलन के कुछ अध्याय' पृ. ३११-३१२

---

(१०) श्री शेषरावजी एक अग्रणी शूर वीर योद्धा।

श्री शेषराव वाघमारे स्वतंत्रता संग्राम के एक अग्रणी शूरवीर योद्धा थे। नवयुवकों का संघटन कर निज़ाम शासन के विरोध में सशस्त्र क्रांति की चिनगारी प्रज्वलित करने वाले सेनापति थे। नेताजी सुभाषचन्द्र बोस, सरदार वल्लभभाई पटेल आदि से समय समय पर सलाह कर क्रान्ति करनेवाले जाज्वल्य नेतृत्व। देशभक्ति से ओतप्रोत, आर्य सिद्धान्तों के कृतिशील - एक व्यक्तित्व, समाज सुधारक, शरीर से हृष्ट-पुष्ट, चरित्र संपन्न व्यक्तित्व, निलंगा के लाडले पिताजी - श्रद्धेय शेषरावजी वाघमारे -

'महाराष्ट्र महाविद्यालय - निलंगा - संस्मरणिका पृ. १०

---

(११) कुछ अविस्मरणीय संस्मरण

१. साक्षात्कार : ऊँचा लम्बा चौड़ा डील-डौलवाला प्रभावशाली प्रधान देखकर मन प्रसन्न हो गया। परिचय के समय जब नाम भी "बाघमारे" बताया गया तो जानो मैं तो खुशी से उछल ही पड़ा। निश्चित हो गया कि सच में उन्होंने एक काठी से अवश्य ही बाघ का वध किया। यह घटना उस समय की है जब मैं आर्यसमाज देवलाली के प्रधान की हैसियत से महाराष्ट्र प्रतिनिधि सभा की पहली साधारण सभा का सदस्य बनकर वाजेगांव आश्रम, नान्देड में पहुँचा था।

चुनाव का समय होने पर उन्होंने जो उद्‌बोधन किया वह तो और भी चार चाँद लगाने वाला था। "चुनाव मतों को गिनकर नहीं अपितु "सर्वसम्मति" से

होना चाहिए'' महर्षि के इस सुन्दर आदेश का शत-प्रतिशत पालन करते रहे श्री शेषरावजी बाघमारे। ऐसा पहला वाक्य बोलकर उन्होंने कहा कि आर्यसमाज का पद ग्रहण करना फूलों से सजा वह कांटे का ताज है, जिसे हिम्मत वाला ही पहन सकता है। इसलिए पहले तो निष्ठावान आर्यो को स्वयं अपना नाम सेवार्थ प्रस्तुत करना चाहिए। फिर पदों हेतु उनकी सर्वसम्मति प्राप्त की जायेगी। इस प्रेरणा भरे उद्बोधन का इतना असर हुआ कि मैंने उनके अंतर्गत कार्य करने हेतु अपना नाम स्वयं प्रस्तुत किया। जब तक वे प्रधान रहे, मैं उनकी कार्यकारिणी का सदस्य रहकर किसी न किसी पद पर बना ही रहा।

२. **प्रेम की मूर्ति** : एक धोती पहने, उसी का आधा हिस्सा ओढ़े, श्री बाघमारे जी आश्रम की भव्य यज्ञशाला पर बैठे शोभायमान हो रहे थे। यज्ञ समाप्ति पर उन्होंने प्रेम की मूर्ति के समान आँखें बंद कर हृदय से जो गीत सुनाया वह इस प्रकार है :-

आदत बुरी सम्हाल ले, बस हो गया भजन
मन की तरंग मार ले बस हो गया भजन.... ।। आदत बुरी...

तूं कौन है आया कहां से जायेगा कहां
इतना ही गर विचार ले बस हो गया भजन.... ।। आदत बुरी...

दुनिया तुझे बुरा कहे तूं शेर बन के सुन
वाणी का स्वर सुधार ले बस हो गया भजन....।। आदत बुरी...

निर्दोष दृष्टि से सदा दुनियां को देख ले
समता का अंजन डार ले बस हो गया भजन....।। आदत बुरी...

गाड़ी समझ के जिन्दगी तू खा पी और जी
मँजिल है 'ओम्' धार ले बस हो गया भजन....।।आदत बुरी...

हृदय से निकला, स्वयं साक्षात्कार किया उनके मुख से सुनकर इस भजन का आनन्द आता था। इस पहली प्रतिनिधि सभा की मीटिंग के बाद भी कई बार

उनका यह प्रिय भजन, इसके शब्द, उनके आँखे बन्द किये हाव-भाव एवं उनके ही मुखारबिन्द से सुनकर एक प्रेरणा, एक स्फूर्ति प्राप्त होती थी। इसी प्रेरणा ने मुझे ''संध्या योग प्रकाश'' पुस्तक लिखने में बहुत सहायता की और वैदिक संध्या की यौगिक विधि के साक्षात्कार करने में सहायक सिद्ध हुई। मन ही मन उनको और उनकी अपने हृदय में स्थापित ''प्रेम की मूर्ति'' को कोटिशः धन्यवाद देता रहता हूँ।

३. शोभा यात्रा : उदयपुर सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दी की शोभायात्रा में राजस्थान के जहाज पर सवार श्री बाघमारेजी शोभायमान हो रहे थे। मैं चलचित्र की फोटोग्राफी कर रहा था। तेज धूप एवं बिना पालकी के सवार श्री बाघमारे जी को असह्य कष्ट के बाद बीच में ही उतरना पड़ा। मैं उनके उतरने की फोटो खींचता उनके पास पहुँचा और कहा कि आसमान मैं उड़ने की अपेक्षा जमीन पर चलकर सेवा करना ही श्रेयस्कर होता है। इस पर उन्होंने कहा कि सच में राजस्थान की इस तेज धूप में राजस्थान के इस मटकते जहाज पर बैठकर मटकते मटकते तो ऊपर का ही द्वार दिखाई पड़ने लगा था अब और अधिक मटकना एवं भटकना छोड़कर जमीन पर ही रहकर कुछ बेहतर सेवा प्रदान कर सकूँगा। अब आसमान में इस जहाज पर उड़ने से तो तौबा करता हूँ।

४. संस्कार : एक विशेष संस्कार पर मुझे श्री शेषरावजी के घर पर जाने का अवसर प्राप्त हुआ। ५०-६० लोगों का एकत्र परिवार, चहल-पहल, यज्ञ की तैयारी, सभी विधिवत चल रहा था। यज्ञ आरम्भ होते ही आश्चर्य हुआ कि परिवार के सभी छोटे बड़े सदस्य हवन के मंत्रों का यथावत् उच्चारण कर रहे थे और बिना लाउडस्पीकर के आवाज गाँव में गूँज रही थी जिसे सुनकर गांववाले भी आ गये और बहुत ही सुंदर एवं प्रभावशाली ढंग से संस्कार संपन्न हुआ। महाराष्ट्र में जहां आर्यसमाज का बहुत कम प्रचार-प्रसार है, वहां ऐसा संस्कारित परिवार देखकर अति आनन्द हुआ। इस प्रकार अंतिम समय तक जनता जनार्दन का वैदिक मार्गदर्शन करते रहे। दोनों भाइयों एवं उनके परिवार की याद तो हमेशां हम दिल में संजोये रहेंगे।

अंत में इतना अवश्य कहूँगा कि यह मेरा सौभाग्य रहा कि ऐसे श्रेष्ठ आर्य परिवार से परिवार समान घुलमिल कर रहने का अवसर ईश-कृपाने मुझे प्रदान कराया।

शुभाकांक्षी
* भगवन्त कपूर - प्रकाश भवन, पंजाबी कोलोनी,
नासिकरोड ४२२ १०१

(१२) सेवाभावी, सदाचारी आनन्द मुनि

शेषरावजी ने आर्यसमाज का प्रचार प्रथम अपने घर से प्रारंभ किया, तत्पश्चात् समाज में। शेषरावजी के माता-पिता की धारणा थी आर्यसमाज जाति-पाति को न माननेवाली एक भ्रष्ट नास्तिक संस्था है, किन्तु शेषरावजी ने अपने नित्यप्रति के आचरण से, घर पर संध्या, हवन, भजन कर माता पिता को दर्शाया कि केवल आर्यसमाज ही सच्चे ईश्वर की वास्तविकता को दर्शानेवाली आस्तिक संस्था है। उन्होंने अपना सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में लगाया। ऐसे थे निष्ठावान, सेवाभावी, सदाचारी आनन्द मुनि

पांडुरंग राव तेरकर - पुलिस अधीक्षक - ''आर्य नेता आनन्द-मुनि'' वैदिक गर्जना - आनन्द मुनि स्मृति अंक

(१३) श्री शेषरावजी एक विशाल हृदयी व्यक्तित्व

''महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा - स्थापित हुई। पदाधिकारियों के चुनाव के लिए - आर्यसमाज के प्रतिनिधियों की बैठक बुलाई गयी। बैठक में सभी प्रतिनिधियों ने श्री शेषरावजी बाघमारे का नाम प्रधानपद के लिए अपनी सम्मति दर्शायी। विरोध करने का प्रश्न ही नहीं था और किसी ने सोचा भी नहीं था कि शेषरावजी का विरोध भी होगा - केवल घोषणा ही करनी थी। उस समय मैं खड़ा हुआ, शेषरावजी का विरोध करने के लिए नहीं, अपितु - अपने विचार व्यक्त करने के लिए। मैंने कहा सभा का प्रधान कोई वानप्रस्थी या सन्यासी ही होना चाहिए। (तब तक शेषरावजी ने वानप्रस्थाश्रम को स्वीकारा नहीं था)

* दुर्भाग्यवश दो माह पूर्व श्री कपूरजी का दुःख निधन हो गया है।

प्रतिनिधियों को मेरे विचार अखरे - प्रत्यक्ष - अप्रत्यक्ष एक तरह से यह श्री शेषरावजी का विरोध ही था। शेषरावजी ने बड़े ही विशाल हृदय से मेरे विचारों को स्वीकारा और जोर देकर समर्थन भी किया। शेषरावजी का हृदय इतना विशाल था कि - तत् पश्चात् के साथ में मेरा सम्मान ही करते रहे, कभी मेरे प्रति हृदय में मलिनता नहीं आने दी।

ब्रह्ममुनि (डॉ. सुग्रीव काळे) द्वारा सुनाया एक प्रसंग

---

(१४) आश्रम व्यवस्था निभाने में अग्रणी

कायर, कमजोर और भीरू हिन्दू जाति में जागृति निर्माण करनेवाले, वीरत्व की भावना पैदा करनेवाले, 'दक्षिण का शेर' नाम से शेषरावजी प्रसिद्ध हुए। ऋषि दयानन्द के मंतव्यों को जीवन में क्रियात्मक रूप देते हुए - अपने परिवार में अन्तर्जातीय विवाह करनेवाले - ब्राह्मण परिवार फिर आर्यसमाजी - परिवार के पहले व्यक्ति थे। आश्रम व्यवस्था को निभाने में भी अग्रणी रहे -

कैप्टन - देवरत्नजी, निलंगा - महाराष्ट्र आर्य महासम्मेलन, उद्घाटन भाषण एक अंश (१९८६)

---

(१५) भारत माता के दुलारे श्री शेषरावजी

मेरे और शेषरावजी के सम्बन्धों में क्या कहूँ ! लड्डू जिधर से भी खाये - सिवाय मिठास के और क्या मिलेगा! कोई एक खूबी है तो बताई जाए - वे गुणों के भण्डार रहे हैं।

पं. शेषराव थे - नम्र, जैसे को तैसे
पाखंडियों को देते उत्तर करारे थे।

हतभागी अपनोंने किया विष का प्रयोग,
मृत्यु मुख से बचे, क्यों कि वे ईश्वर के प्यारे थे।
यवन-म्लेच्छ के कैक हमले हुए
शूर-वीरों जैसे लड़े - खलदल भगाये थे।

पं. प्रेमचन्दजी 'प्रेम', पत्र दि. ६/४/२००८

---

(१६) श्री शेषरावजी कुशल संघटक

"स्वामी दयानन्द सरस्वती, वीर सावरकर, महात्मा फुले व तत्सम समाज सुधारकों के शेषरावजी भक्त थे, उनके मार्ग के पथिक थे। शुद्ध चरित्र, प्रतिभाशाली बुद्धिमत्ता, प्रभावी वक्तृत्व, और ध्येयप्राप्ति के लिए अपना सर्वस्व अर्पित करनेवाले शेषरावजी थे। कुशल संघटक, ओजस्वी जीवन के कारण शेषरावजी आर्य जगत् में एक विशेष स्थान रखते हैं"

प्रा. देवदत्त तुंगार - मराठवाड़ा - आर्य सम्मेलन, गुंजोटी
स्मरणिका - 'शेषरावजी के जीवन का परिचय' कुछ अंश

---

(१७) जीवन की बातीं बनाकर जले

"महाराष्ट्र में आर्यसमाज के कार्यों में आनन्द मुनिजी का सर्वोत्तम स्थान रहा है। .... उन्होंने मान-सम्मान, सुख-दुःख से ऊपर उठकर अपना तन-मन-धन अर्पण करके अपने आपको यज्ञीय कर्म में आहुत किया है। चाहे वह आर्य सत्याग्रह हों, चाहे हिन्दी सत्याग्रह हो, चाहे गोरक्षा आन्दोलन हो, सफलता पूर्वक महाराष्ट्र का उन्होंने नेतृत्व किया है। उन्होंने वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा और प्रचार प्रसार के लिए घर बार भी छोड़ा। कभी अपने लिए नहीं सोचा, न परिवार के लिए, वे सदा आर्यसमाज के कार्यों के लिए, अपने जीवन की बाती बनाकर जले।

प्रा. सत्यकाम पाठक
'वैदिक गर्जना' सम्पादकीय, 'आनन्दमुनि-स्मृति अंक.

---

(१८) श्री शेषरावजी एक संवेदनशील व्यक्तित्व

गुरूकुल - होशंगाबाद - मध्य प्रदेश के वार्षिकोत्सव पर आनन्द मुनि विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उत्सव के कार्यकाल में अवकाश के समय सांय-प्रातः आनन्द मुनि नर्मदा किनारे भ्रमण किया करते थे। भ्रमण के समय उन्होंने पाया कि एक व्यक्ति मछली पकड़ने के लिए अपना जाल नदी में बिछाए हुए था। आनन्द मुनि ने उस व्यक्ति से पूछा - दिन में कितनी मछलियाँ

पकड़ते हो? ''थोडी सी पकड़ पाता हूँ, बेचता हूँ, थोड़ा पैसा मिलता है, रोजी रोटी पूरा करता हूँ।' फिर आनन्दमुनिजी का प्रश्न था - इस थोडे से पैसों लिए मछली जैसे प्राणी की हत्या, हत्या का भीषण पाप?। आनन्द मुनि ने अपने पास के सौ रुपये का नोट उस व्यक्ति को देते हुए, कहा कल से मछली की हत्या नहीं होनी चाहिए। इस पैसों से कुछ कमाई करो, नेकी - भलाई का काम करो, पुण्य कमाओं।'' उस व्यक्तिने - उनके समुख ही शपथ ली - 'हत्या नहीं करूँगा, भला ही करूँगा, पुण्य कमाऊगाँ।'

''ब्रह्मचारी ज्ञानेन्द्रजी - हौशंगाबाद के संस्मरण

---

(१९) श्री शेषरावजी एक मधु मिलन का आल्हाद

''आर्यसमाज के उत्सवो - सम्मेलनों, मेलं, शिबिर में पिताजी (शेषरावजी) का आगमन मानो वसंत ऋतुराज का आगमन हो। उनकी उपस्थिति, उनका व्याख्यान, आति मनोहारी, आनन्द का क्षण होता था। इष्ट मित्रों के साथ उनका वार्तालाप, मधु मिलन का आल्हाद होता था''

श्री इन्द्रजीत गिरी के एक अप्रकाशित लेख का अंश

---

(२०) श्री शेषरावजी - नवयुवकों के प्रेरणास्त्रोत :

जब मैंने होश संभाला तब से ही मैं शेषरावजी के व्यक्तित्व के अलग अलग पहलुओं से परिचित होने लगा। केवल लाठी से बाघ को मारने का ढाढ़स, उनकी वीरता, निज़ाम के विरोध में सशस्त्र संघर्ष, आर्यसमाज के प्रचारक आदि बातें सुनने को मिलती रहीं। १९३६ से १९६३ तक के उनके कार्य से मैं भलीभाति परिचित हुआ। १९५२ के चुनाव में वे विजयी हुए थे। मेरे ग्राम पानचिंचोली में विधायक शेषरावजी का स्वागत समारोह आयोजित किया गया। ग्राम की सीमा से, १०१ सजेधजे बैलों को (बैलगाडी) रथ से जोड़ा गया। ऐसे रथपर संवार हो, उनकी शोभा यात्रा निकाली गयी थी। साथ में पं. नरेन्द्रजी भी विराजित थे। पं. नरेन्द्रजी भी हैदराबाद से चुनाव में विजयी हुए थे। शेषरावजी की भव्यमूर्ति, साथ में वामनमूर्ति पं. नरेन्द्रजी दोनों जनता के आकर्षण केन्द्र थे। उन दोनों को पुष्पमालाएँ अर्पित की जा रही थी। मैंने भी

अपने पिताजी के कंधे पर बैठ - पुष्पमाला अर्पित की थी और अपने आपको गौरवान्वित समझ था। आगे चलकर, वे हम युवकों के प्रेरक बने रहे।

किसी कार्यवश हम निलंगा जाया करते थे। हमारे शासकीय कार्य सम्पन्न कराने में शेषरावजी की एक चिठ्ठी या उनका एक शब्द काफी होता था।

१९६९ में मैंने B.E. की उपाधि प्राप्त कर ली। 'सय्यद अम्बुलगा' ग्राम में एक हुतात्मा का 'स्मृतिदिन' आयोजित किया गया था। अपने भाई-अरूण के साथ मैं भी वहाँ उपस्थित था। पं. नरेन्द्रजी, शेषरावजी प्रमुख अतिथि थे। व्याख्यानों में 'शंका समाधान' के साथ राजनीति का विषय भी चर्चित था। मैंने मराठी में शेषरावजी से पूछा - 'आर्यसमाजाने 'राजकारणा' मध्ये पड़ावे काय?' वे हँसते हँसते बोले 'राजकारणा मध्ये 'पडू' नये। मराठी का उनका 'पडू' शब्द कई अर्थोवाला था। 'निभा लेना', 'जमीनदोस्त' 'हार जाना' और 'जीत जाना' भी। बहु अर्थो के शब्दों का प्रयोग उनकी वाकचातुर्य को दर्शाता है।

शेषरावजीने अपने वकील और राजनीतिक सहयोगी श्री संग्राम माकणीकर के भाई का विवाह वैदिक पद्धति से स्वयं अपने पौराहित्य में सम्पन्न किया और एकत्रित समुदाय के सम्मुख संस्कार के महत्व को अभिव्यक्त करते हुए 'वैदिक विवाह' पद्धति का विवेचन भी किया।

विदर्भ क्षेत्र में धर्मान्तर का कार्य जोरोंपर चल रहा था, कई हिन्दुओं को मुसलमान मजहब की दीक्षा दी जा रही थी। यह ज्ञात होते ही, श्री शेषरावजी और श्री हरिश्चन्द्रजी गुरुजी ने धुलिया आदि क्षेत्र का दौरा किया, कुछ दिन डेरा लगाए रहे और धर्मान्तर कार्य की रोकथाम की। धर्मान्तरित व्यक्तियों को पुनः हिन्दू बनाया। उस समय मैं - विदर्भ के क्षेत्र में सेवारत था। मेरे घर पर भी वे पहुँचे। मैंने उन दो महानुभावों का आगत स्वागत किया। भोजन में 'खीर' भी परोसी गयी। शेषरावजी कहने लगे कि ऐसी खीर मैंने अब तक खायी नहीं। पता नहीं 'खीर' का स्वाद कैसा था! शेषरावजी भोजन प्रिय थे ही, भोजन बनानेवाली गृहिणी की तारीफ भी किया करते थे।

शेषरावजी की ही प्रेरणा पाकर मेरे पिताजी नरसिंगराबजी ऋषि दयानन्द के भक्त बने, वैदिक सिद्धान्तों के अनुगामी बने और परिवार में पुत्रों का विवाह जाति

पाति के बंधन को तोड़कर संपन्न किया। अंत तक वे आर्यसमाज के प्रहरी ही रहे।

डॉ. वसंतकुमार न. मदनसुरे - अकोला

(२१) हैदराबाद संग्राम के अग्रदूत (महात्मा आनंद मुनिजी)

घटे अगर तो फकत मुश्तेखाक है इन्सां।

बढे तो वूसअते कौनेन में समा न सके।।

अर्थात मनुष्य अपने को घटा दे तो केवल मिट्टी की एक मुठ्ठी बराबर है। यदि बढा ले तो इहलोक और परलोक में भी समा न सकें । श्रद्धेय मुनीजी ने बिगडे हुए इन्सानों को सीख देने का काम किया। उस्मान अली खां जैसे मूर्खों की संख्या बढ़ रही थी। लोगों पर अत्याचार ढाये जा रहे थे। मूर्खता में कई व्यक्ति गधे के समान होते हैं। बस्तियाँ उजाड़नेवाले मनुष्य उल्लूओं से भी भयंकर होते हैं। कडवी और तीखी बातें करनेवाले तितैयों से भी अधिक पीडा देते हैं। व्यसनाधीन व्यक्ति दूसरों को व्यसनों का शिकार बनाते हैं। ऐसे व्यक्ति साँपो से भी अधिक भयानक होते हैं। निर्बलों को सतानेवाले व्यक्ति, भेडिये के समान होते हैं। ऐसे मूर्ख एवं दुराचारी निज़ाम को भगाने का काम शेषरावजी इस वीर सपूत ने किया।

आखिर उनकी मेहनत रंग लायी और अंततोगत्वा हैदराबाद मुक्त हो गया। सभी देशवासी स्वतंत्र रूप से जीने लगे।

वृक्ष जिस प्रकार अपने फूलों-फलों और छाया द्वारा रोगियों, अनाश्रितों की सेवा करते हुए अपने कर्मफल (प्रारब्ध) की पूर्ति और मोक्ष की प्राप्ति के लिए दीर्घ काल तक खडे रहकर साधना में लीन रहते हैं। इसी प्रकार महात्मा आनंदमुनी जैसे संत आसक्तियों तथा ममता के बंधनों से मुक्त होकर अपने अन्तकरण में राष्ट्रभक्ति और परमात्मा का ध्यान करते हुए मोक्ष को प्राप्त करते हैं। भूमि की शुद्धि हेतु यज्ञ करनेवाले, विद्या का दान देनेवाले, स्त्रियों का सम्मान करनेवाले महात्माओं का जीवन सब आर्यों के लिए प्रेरणादायक है। शरीर त्याग आत्मा का वस्त्र परिवर्तन है। शोक करना व्यर्थ है। संसार के गूढ रहस्यों को जानकर अपने जीवन को सुखी बनाने का प्रयास करना चाहिए। पूज्य पिताजी की मृत्यु मूत्राशय

की बीमारी से स्वाभाविक रीत्या हुई। उनका जीवन समस्त आर्यजाति के लिए प्रेरणादायी सिद्ध होगा। ऐसी महान विभूति के चरणों में मेरा शतशः प्रणाम।

विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी।
मरो परन्तु यों मरो कि याद जो करे सभी।।

"जब हम आए जगत में जग हँसा हम रोए।
ऐसी करनी कर चलो, हम हँसे जग रोए।

- सुधाकर शास्त्री महोपदेशक (म.आर्य प्रतिनिधि सभा, परळी)

---

(२२) सामाजिक समता के उन्नायक - श्री शेषरावजी वाघमारे

जब वैदिक गर्जना में पढ़ा कि पू. पिताजी पर पुस्तक लिखी जा रही है, तब मेरे मानसपटल पर एक-एक कर अनेक संस्मरण अंकित होते गए। कुछेक संस्मरण मैं यहाँ प्रस्तुत कर रहा हूँ।

मेरी आयु इस समय ७० वर्ष की है, मेरा जन्मस्थान निंबाला - जो निलंगा के समीप ही है। उस समय निज़ाम रियासत में सामाजिक समता स्थापित करनेवाली अगर कोई संस्था थी तो वह संस्था थी 'आर्यसमाज'। आर्यसमाज - आन्दोलन के माध्यम से हमारे क्षेत्र, निलंगा तहसील में सामाजिक समता के बीज बोने में श्री शेषरावजी बाघमारे अग्रसर रहे। महार, मांगों को समाज में कोई स्थान नहीं था। निज़ाम शासन की गुलामी, समाज की गुलामी को सहते हुए, गांव के बाहर कुत्तों और बिल्लियों जैसी बदतर जिन्दगी जीना हमारे नसीब में था। मनुष्य ने ही मनुष्यों को गुलाम बनाया था। शेषरावजी दलितों के सुधार के बड़े पक्षपाती थे। दलित भी मनुष्य हैं, उन्हे अछूत समझकर उनसे नाता तोड़ना अन्याय है। मनुष्य समाज का अभिन्न अंग है, उसे भी स्वाभाविक जीवन जीने का जन्मसिद्ध अधिकार है। ऐसी शेषरावजी की धारणा थी। इस सामाजिक समता का संदेश पहुँचाने का सारा श्रेय शेषरावजी तथा उनके साथी श्री गणपतराव निंबालकर को जाता है।, जिनके प्रयास के फलस्वरूप मेरे जैसे हजारों दलित युवकों को नयी दृष्टि मिली, नयी दिशा, नवजीवन मिला और हम समाज के अभिन्न अंग बन गए।

आर्यसमाज के उत्सव, सम्मेलन और कार्यक्रमों के अवसर पर आर्यसमाज के लंगर लगा करते थे। इसमें ब्राह्मण, मराठा, लिंगायत सभी होते थे, ऐसे समय भोजन परोसने का काम - दलित युवकों को सौंपा जाता था, हम भोजन परोसते भी थे। किसी के विरोध होने का कोई कारण नहीं था, क्यों कि वह आर्यसमाज का लंगर था और था 'सामाजिक समता' का एक आदर्श।

शेषरावजी से प्रेरित हो मैं हैदराबाद मुक्ति संग्राम में कूद पड़ा। करीब चालीस वर्ष पूर्व नान्देड में 'पिछडी जाति शिक्षक संगठन' की स्थापना कर, शिक्षकों को समाज में सम्मान का स्थान प्राप्त करवाया। उस्मानशाही मील में 'दलितों को भी कामगार होने का अधिकार है।' इस संघर्ष में सफलता प्राप्त कर, कई दलित 'उस्मानशाही मिल' में शामिल हुए। इस समता के कार्य में डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, कर्मवीर दादासाहेब गायकवाड़ की प्रेरणा से 'पंचनामा' यह साप्ताहिक पत्रिका भी मैने प्रकाशित की, जिसके माध्यम से मैने समाज की पीडा, अभिव्यक्त की है', आज भी कर रहा हूँ।

मेरे व्यक्तित्व निर्माण का सारा श्रेय - श्री शेषरावजी तथा आर्यसमाज के आन्दोलन को है। मुझे वह दिन भी स्मरण हैं, जब निज़ाम की आसिफशाही समाप्त हुई, हैदराबाद भारतवर्ष का अभिन्न अंग बन गया, तब श्री शेषरावजी का 'न भूतो - न भविष्यति' ऐसा भव्य स्वागत निलंगा में किया गया, स्वागत समारोह के जलूस में टोकरियों से पैसे उछाले - वह जल्लोष - ध्वनि मेरे कानों में अभी तक गूँज रही है।

निज़ाम की नींद हराम करनेवाले ऐसे थे शेषरावजी बाघमारे - दक्खन के शेर!

लक्ष्मणराव गायकवाड़, स्वतंत्रता सेनानी - संपादक 'पंचनामा' नांदेड

(२३) असामान्य कर्तृत्व का महापुरुष

व्यक्तियों का समूह समाज है। समाज में सामान्य व्यक्ति भी होते हैं, कुछ असामान्य भी। कुछ कर्महीन - आलसी, कुछ व्यक्ति कर्मशील होते हैं, जिनका कर्तृत्व शिखर पर पहुँचा हुआ होता है। युवक चरित्रवान हो, आदर्शवान हों,

समाज प्रगतिशील हो, वह उन्नति की दिशा में अग्रसर हो - ऐसे सामाजिक कार्यो में अपने जीवन को आहुत करनेवालें कुछ एक कर्तृत्ववान व्यक्ति हैं, ऐसे ही असामान्य कर्तृत्व के महापुरुष श्री शेषरावजी के साक्षात्कार के लिए आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर, मैं उनके निवासस्थान, निलंगा पहुँचा।

उनके घर में प्रवेश करते ही, उस घर का इतिहास स्मरण हो आया। किसी समय, यह घर क्रान्तिकारी पड़ावों, घटनाओं का गवाह रहा हैं, इतिहास के पृष्ठों पर कर्तृत्व की छाप अंकित हुई है। इस घर ने कई संघर्ष किए है, कई संकटों को झेला है, पर झुका नहीं, रुका नहीं, टूटा नहीं। अब घर थक गया है, इन्हीं विचारों में डूबे, मैं घर में प्रवेश कर गया।

किसी चिंता में मग्न थे शेषरावजी। वैसे - हमेशा हँसती, हँसाती यह मूर्ति, पता नहीं, इन्हें क्या हुआ है, जो निश्चल हो, शून्य में ताकते -चिन्ता में लीन हैं - मैं भी द्रवित हो उठा। हमारी भनक पडते ही, वे स्थिर हुए, स्वागत करते हुए पूछताछ की - कहाँ से आए? किस उद्देश्य से? मैंने धीरे से कहा - 'साक्षात्कार' के लिए'। 'अब क्या रखा है, साक्षात्कार में'। फिर भी अपने आपको संभालते हुए - उनका अगला शब्द था - पहले भोजन, फिर साक्षात्कार।

साक्षात्कार शुरू हुआ -

प्रश्न : अपने जीवन का प्रारंभ, सामाजिक स्थितियाँ?

उत्तर : ब्राह्मण पौराणिक परिवार में जन्म, पला भी। जब बढ़ता गया 'आर्यसमाज के वैचारिक क्रान्ति की नयी दिशा मिली। मनुष्य, मनुष्यों में भेदभाव क्यों और कैसे? वैदिक वर्ण को न समझते हुए - जाति वर्ण में फंस गया है, आज का समाज। इससे मुक्त होना चाहिए, अन्यथा समाज की प्रगति न होगी - न समाज आदर्शपूर्ण होगा। इसकी पूर्ति के लिए मेरा संघर्ष शुरू हुआ। दूसरा उद्देश्य था निज़ाम की नृशंसता का विरोध और स्वतंत्रता प्राप्ति।

उनकी वाणी का प्रवाह सतत चलता रहा। हम उस प्रवाह में डुबकियाँ लगाते रहे। ३०, ३५ वर्ष पूर्व के इतिहास के पन्ने फड़फड़ाते - एक के बाद एक उलटते गए और सारा कर्तृत्व भरा इतिहास - आँखों में समाता गया और मेरी कलम से कागज पर उतरता गया।

'आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द का अविर्भाव, आर्यसमाज की स्थापना, वैदिक विचार, उसका प्रसार, प्रचार, आदर्श समाज के निर्माण के लिए 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के लिए 'मनुर्भव' के लिए....' ऐसे ओजभरे शब्द व्यक्त होते गए, ओज - तेज भरा चेहरा भी दीख पडता था।

अगला प्रश्न : कुछ परिवार के सम्बन्ध में, सामाजिक परिवर्तन की दिशा?

उत्तर : स्वतंत्रता प्राप्ति के संघर्ष में वैदिक वैचारिक मंथन भी चलता रहा। इसके फलस्वरूप प्रथम प्रारंभ अपने परिवार से ही परिवर्तन का प्रारंभ - बाद में समाज-परिवर्तन दिशा की ओर। स्वजातीय-ब्राह्मण - सनातनियों के प्रति संघर्ष - भोजन में विष प्रयोग, अन्य हमले भी हुए - झेले हँसते हँसते - यह चमत्कार है - वैदिक विचारों का, आर्यसमाज का। प्रथम - अन्तरंग में परिवर्तन, परिवार परिवर्तन, फिर सामाजिक परिवर्तन -

बीच में ही - उनकी पत्नी - श्रीमती सुमित्रा का प्रवेश - उनकी ओर इशारा करते - कह उठे - इस स्त्री ने बहुत कुछ सहन किया है। ब्राह्मण परिवार की यह स्त्री - मैं ब्राह्मणो से बाहर - इस मानसिक संघर्ष में फँसी मेरी पत्नी। डबल रोल करते करते थक जाती थी - पता नहीं कहाँ से यह ऊर्जा प्राप्त करती रही - मेरा साथ निभाती रही - मेरे विचारों की अनुगामिनी। पुरुष बाहर रहता है, भले ही वह संघर्ष करता हो, पर स्त्री - घर में भी होती है, बाहर भी होती है। दोनों जगह- इस स्त्री ने बखूबी अपनी भूमिका निभाई है -

फिर से अपने पूर्ववत्: चिन्तन की धारा को प्रवाहित करते हैं।

प्रश्न : स्वातंत्रोत्तर - परिस्थितियाँ?

उत्तर : वाणी का प्रवाह बदल गया। कुछ मायूसी उदासी को ली हुई उनकी वाणी। वर्तमान की काँग्रेस - वह म. गांधीजी की काँग्रेस नहीं, वे काँग्रेसी व्यक्ति, कार्यकर्ता नहीं - अब नये - नये व्यक्ति, पर वह आदर्श नहीं, वह व्यक्तित्व-कर्तृत्व नहीं - व्यक्तित्व हीन काँग्रेस, ध्येयहीन काँग्रेस और उसके नेता? एक समय ऐसा रहा, आर्यसमाज और काँग्रेस दोनो कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते रहे - सफलता भी पायी - वह जोश न काँग्रेस में है न ही आर्य समाजियों में।

उनके विचारों में सत्य और असत्य का प्रकटीकरण था और अदम्य विश्वास था "वे दिन फिर से आएंगे"

प्रश्न : वर्तमान सामाजिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ कैसे बदली जाएँ - कुछ उपाय?

उत्तर : कुछ अधिक गंभीर बने - पिताजी कहते गए - परिस्थितियों के परिवर्तन की बात करते हो? अरे तुम्हारी नयी पीढ़ी क्या कर रही है? युवक वह है, जिसमें नया संचरण चाहिए, जोश चाहिए, कुछ करने की हिम्मत चाहिए - पर आज की पीढ़ी? क्या कहूँ - पता नहीं, वह कहाँ जा रही है - भटकी हुई नौका की तरह दिशाहीन । फिर से एक बार क्रान्ति की चिनगारी सुलगनी चाहिए, ज्वाला निकलनी चाहिए, उसमें तपना चाहिए, तभी उसमें निखार आयेगा। नयी पीढ़ी को अब सोचना नहीं चाहिए, कुछ कर दिखाना चाहिए।

समय बहुत हो रहा था - पर वाणी में कहीं रुकावट नही। कहीं न कहीं मुझे रुकना चाहिए था, रूका पर उनके हर शब्दों को अपनी झोली में डाल, उसे ठीक तरह से गांठ बाँध, साक्षात्कार समाप्त किया।

श्री शेषरावजी वाघमारे के इस साक्षात्कार में, अनेक घटनाओं के कथन मैने सुने। कई अनुभव - कुछ रंगीले, बहुत कुछ यथार्थ लिए हुए। उन सब को शब्दांकित करना कठित सा लग रहा है क्योंकि सुनानेवाला व्यक्ति और लिखनेवाला व्यक्ति - तत्कालीन घटनाओं - अनुभवों से काफी दूर है, व्यक्त करनेवाला - स्वयं भोगी है। यह साक्षात्कार उनके सम्पूर्ण कार्यकाल की अभिव्यक्ति है, ऐसा मेरा दावा नहीं है। उनसे सम्पूर्ण कर्तृत्व का अंकन एक स्वतंत्र ग्रंथ की रचना ही होगी

'साक्षात्कार - श्री जयप्रकाश माने, ब्लिट्झ -प्रतिनिधि'

- आर्यसमाज शताब्दि - के अवसर पर 'स्मृति पुत्र स्मरणिका - १९७५, (संपादिका: श्रीमती शारदा तुंगार और प्रकाशिका श्रीमती त्रिवेणी लोखंडे (रेणापुर) में प्रकाशित मराठी - साक्षात्कार का हिन्दी भावानुवाद।

(२) सम्बन्धियों के शब्दों और स्मृतियों में श्री शेषरावजी

(२४) धन्योधन्य : श्रीमदानन्दमुनिराट्

वृत्तं - शा.वि.

स्वातन्त्र्याध्वरदीक्षितेन सततं राष्ट्रार्थमुक्तायुषा
हत्याघातपरे निजामनृपते राज्ये नृशंसात्मके।
कारावासकराल भीषणतमा: पीडा विसोढा मुदा
सोऽयं वीरवरो बभूव धृतिमान् श्रीशेषरावो महान् ।।१।।

राष्ट्र के स्वातंत्र्ययज्ञ में सदैव दीक्षित और राष्ट्र के लिए सर्वस्व समर्पित करनेवाले, जिन्होंने निजाम के हत्या और घातयुक्त और अत्यंत नृशंस राज्य में कारावास की कराल और भीषणतम पीडायें सहर्ष सहन की। ऐसे श्री शेषरावजी बडे वीर और धीर महापुरुष थे ।।१।।

जात: सन्नपि साम्प्रदायिक महाप्रख्यात विप्रान्वये
तेज्वस्व्यार्यसमाजनामक महासंस्था शुभालोचनै:।
आकृष्ट: प्रसभं बभूवसुभगो लोहो यथा चुम्बकै:
तस्मादूर्ध्वमहो तदर्पितमभून्नस्याखिलं जीवितम् ।।२।।

एक प्रसिद्ध साम्प्रदायिक ब्राह्मणकुल में पैदा होकर भी तेजस्वी आर्यसमाज नामक संस्था के शुभविचारों से वे ऐसे आकृष्ट हुए जैसे लोहचुम्बक से लोहा आकृष्ट हो जाता है। उसके बाद तो उनका जीवन ही उसके लिए अर्पित हो गया ।।२।।

मिथ्याजातिभिदामपास्य कृतकां राष्ट्रैक्यसन्धित्सुना
स्वस्यापत्यविवाहमङ्गलविधीन् संपाद्य जात्यन्तरे।
क्रान्तिर्येन गृहात्कृता मतिमता सामाजिकी पावनी
स्मर्य: स्याद् भुवि कर्मवीरपरम: स क्रान्तिवीराग्रणी: ।।३।।

राष्ट्र की एकता को सिद्ध करने के इच्छुक जिन्होंने झूठे और कृत्रिम जाति भेदों को दूर कर अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह दूसरी जातियों में कर के पवित्र

सामाजिक क्रान्तिका सूत्रपात अपने घर से ही किया वे क्रान्तिकारियों के अग्रणी श्रेष्ठ कर्मवीर सदैव याद किये जायेंगे ।।३।।

वृत्तं - शिखरिणी

विधिज्ञोऽ पि श्रेष्ठः प्रचुरधनदां वृत्तिमजहात्
विषेहे राष्ट्रार्थं कठिनतरकारागृहरुजः।
तदीयोच्चैः कार्यैं दलितपतितोद्धारपरमं
भवेवनं देशे कनकमयवेर्णैदिलिखितम् ।।

एक ऊंचे दर्जे के वकील होते हुए भी विपुल धन देनेवाली वकालत को छोड दिया और देश के लिए कठिन से कठिन कारागृह की यातनाएँ सहीं। दलित और पतितों के उद्धार का उनका महान कार्य निश्चय ही देश के इतिहास में सुवर्णाक्षरों से लिखा जायेगा।।७।।

तदीयं व्याख्यानं सरसरमणीयं सुललितं
लसन्नर्मालापैः प्रहसनविनोदादिभरितम्।
जनाः श्रावं श्रावं मुदितहृदयान्ताः समभवन्
ह्यतिष्ठन् निःस्तब्धा भुजग इव मंत्रेण विहताः ।।८।।

उनके रसभरित रमणीय और सुललित तथा नर्मविनोद और हँसी मजाक से भरपूर भाषण को सुन सुन कर लोग बहुत हर्षित होते थे और मंत्र से सांप की भांति बिल्कुल निश्चल और शान्त बैठे रहते थे।।८।।

परोद्बोधे केचित् परमकुशलाः शून्यतहृदया -
स्तथा केचित् अन्ये प्रवचनपराः व्याजपरमाः।
परन्त्वाचाराग्रयः परममहितानन्दमुनिराट्
परिष्कारान् सर्वान् स्वगृहपरिवारादकुरुत ।।९।।

दूसरों को उपदेश देने में कुछ लोग बडे कुशल होते हैं किन्तु स्वयं कृतिशून्य होते हैं। उसी प्रकार कुछ भाषण देने में बड़े चतुर होते हैं पर स्वयं बड़े ढोंगी होते हैं। किन्तु आचार में श्रेष्ठ परममहनीय आनन्दमुनि ने सारे सुधार अपने घर से ही शुरू किये।।९।।

विचाराचाराभ्यां निरतिशयपूतो नरवरः
स्तुतिर्वा निन्दावा विचलयति यं नात्मसरणेः।
अनासक्तः कर्मी सततजनसेवैकनियमः
स्थितप्रज्ञो नेता न खलु सुलभस्तेन सदृशः ।।१०।।

विचार और आचार दोनों में अत्यंत पवित्र श्रेष्ठ मानव, जिसको स्तुति या निन्दा अपने मार्ग से विचलित नहीं करती, निष्काम कर्मयोगी और सदा जन सेवा में निमग्न ऐसा स्थितप्रज्ञ नेता आनन्दमुनि के समान मिलना बहुत कठिन है।।१०।।

दिवं याते तस्मिन् धरणिगगने शोकविधुरे
जनाः शोकाक्रान्ताः स्वजन इव तेषामुपरतः।
महापूरोत्पीडा इव समभवन् शोकसरितः
ध्रुवं दुःखार्तानां खलु सुखयिताऽनन्दमुनिराट् ।।११।।

उनके स्वर्ग सिधारने पर धरती और आकाश दोनों मानो शोकाकुल हो गये। लोग शोक से इतने संतप्त थे कि मानो उनका ही कोई प्रियजन चला गया हो। शोकरूपी नदियों मे मानो महापूर आ गया था। निश्चय ही आनन्दमुनि राज दुःखितों और पीडितों को सुखी और प्रसन्न करनेवाले थे।

-हरिश्चन्द्र रेणापुरकर,
गुलबर्गा दि. ८-११-२००८
(श्री शेषरावजी के ज्येष्ठ दामाद)

(२५) महात्मा आनंदमुनिजी वानप्रस्थ - (पूज्य श्री शेषरावजी वाघमारे) स्मृतियों के झरोखे से

संस्कृत के कवि श्री भर्तृहरि ने एक श्लोक में महात्माओं के लक्षणों का वर्णन किया है। अपने 'नीतिशतकम्' काव्य-ग्रंथ में वे कहते हैं –

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम् ।।

पू. शेषरावजी वाघमारे एक ऐसे ही महात्मा थे। भर्तृहरि द्वारा वर्णित सभी विशेषताओं का मूर्तिमंत प्रतीक थे।

जीवन के दीर्घ काल तक मुझे उनके सहवास, मार्गदर्शन एवं सान्निध्य का लाभ प्राप्त हुआ। वे मेरे श्वसुर थे, उससे भी बढ़कर वैदिक धर्म एवं आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में वे मेरे लिए एक प्रेरक दीपस्तंभ थे। वैसे तो मेरी स्मृति में उनकी अनेक घटनाएँ, स्थान, समय, प्रसंग के साथ संग्रहीत हैं, तथापि एक लेख में कुछ विशेष उल्लेखनीय स्मृतियों का उल्लेख करना ही संभव हो सकेगा।

उन दिनों पं. शेषरावजी किसी काम से उस्मानाबाद आये हुए थे। उस समय मेरे पू. पिता महात्मा उत्तम मुनिजी वानप्रस्थ मेरे घर पर ही ठहरे हुए थे। आर्य जगत् में यह समाचार कई दिनों से प्रसृत था कि पं. शेषराव जी निकट भविष्य में ही गृहस्थाश्रम छोड़कर वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करनेवाले हैं। उस दिन प्रातःकाल पं. शेषरावजी ने अपनी पुत्री से कहा 'दाढी बनानी है, गरम पानी ले आ' उनका आदेश सुनकर पू. उत्तममुनिजी ने कहा 'शेषरावजी, अब कितने दिन दाढी करेंगे? छोडिये और तुरंत आज ही बन जाईये वानप्रस्थी' उत्तममुनिजी की बात सुनते ही वे बोले 'ठीक है, आज ही मैं वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करूँगा' और सचमुच अगले ही दिन आर्यसमाज धाराशिव (उस्मानाबाद) में उन्होंने पू. उत्तम मुनिजी से वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ली। अपने पुत्रों से, स्नेहीजनों से किसी से भी चर्चा या विचार-विनिमय किये बिना एक ही दिन में इस व्रताभ्यासी महापुरुष ने गृहत्याग किया, पीतवस्त्र धारण किये और आश्रम-निवास के लिए चल पड़ा। उनके वानप्रस्थ-दीक्षा के संस्कार का पौरोहित्य मैंने ही किया था। आगे दैवदुर्विलास ऐसा हुआ कि उनके निधन के पश्चात् उनका अंत्येष्टि संस्कार भी मुझे ही करना पड़ा। आज याद आता है हजारों आर्यजनों एवं स्नेहीजनों का वह विराट जनसागर, जो निलंगा में उस महापुरुष को, वीरश्रेष्ठ को, महात्मा को और आर्य नेता को अंतिम श्रद्धांजली देने के लिए उपस्थित था। अनेक लोगोंने देखा था कि उस दिन आकाश में सूर्य के चारों ओर एक तेजोमय चक्र बन गया था। पता नहीं यह प्रकृति द्वारा उस दिव्यात्मा के प्रति नमन था, या क्या था! जो भी हो, ऐसा दिव्य सफल जीवन अवश्य ही दुर्मिल है, अनुपमेय हैं, सबके लिए वंदनीय और अनुकरणीय है।

निधन से कुछ दिन पूर्व वे गंभीर रूप से बीमार हो गये थे। लातूर के सारडा अस्पताल में इलाज हो रहा था। एक दिन अपनी पत्नी श्रीमती सुमित्रादेवी जी से

कहने लगे 'अब यह वस्त्र बदलने हैं' पत्नी ने समझा, कपडे मैले हो गये हैं, सो बदलने के लिए कह रहे हैं, इसलिए वे नये कपडों की ओर बढ़ीं। तभी पत्नी को टोकते हुए मृत्युंजय महापुरुष ने कहा 'अरी, वे कपडे नहीं' और अपनी त्वचा को हाथ लगाकर बोले 'ये कपडे, पंचतत्त्वों का यह चोला बदलना है' मृत्यु से कितना घबराते हैं लोग, पर स्वेच्छा से, आनंद से मृत्यु का आलिंगन करना, यही तो मृत्युंजयी होना कहलाता है।

इन्हीं दिनों की बात है। लातूर की एक आर्य महिला श्रीमती ईश्वराबाई सावंत उनके स्वास्थ्य का समाचार जानने के लिए अस्पताल में आई थीं। यह पूछने पर कि 'अब स्वास्थ्य कैसा है?' आनंदमुनिजी ने कहा 'अब दीपक की ज्योत धीमी-धीमी हो रही है' आगामी अंतकाल को कदम-कदम बढ़ाते हुए, चुपके से आते हुए उन्होंने जान लिया था, परंतु वेदना, पश्चाताप, कराहें कुछ नहीं, शान्तिं एवं संतोष के भावों से भरा मुखमंडल था। जिस महापुरुष ने जीवन भर महर्षि दयानन्द के अंत समय की घटना पढ़ी, सुनी और गुनी थी, वह आनेवाली मृत्यु की आहट से भला विचलित क्यों होता? ईश्वर की इच्छा जानकर आनंदमुनिजी ने मृत्यु का सहर्ष स्वागत किया था।

पं. शेषरावजीने जीवन में अनेक सामान्यजनों को सहारा दिया, कईयों को पढ़ाया-लिखाया, अनेकों के जीवन सुसंस्कार संपन्न बनाये। ऐसी ही एक घटना लिंबराज कोळी की है। बॅण्ड-बाजा बजाना उसका व्यवसाय था। कुशल वाद्य-वादक था, तथापि कुसंग के कारण व्यसनों में लिप्त हो गया। मद्य पीकर गाँव-गली में झूमते, गाली बकते वह कभी-कभी देखा जाता था। ऐसे ही एक बार वह नशे में झूमता हुआ, मुख से अभद्रवचन बोलता हुआ शेषरावजी की गली से गुजर रहा था। जब वह शेषरावजी के घर के पास आया, तो स्वयं ही कहने लगा 'यह शेषराव वाघमारे का घर है। यहाँ अध्यात्म की बातें होती हैं। यहाँ गाली नहीं देनी चाहिए'' और जैसे ही वह शेषरावजी के घर से आगे बढ़ा, उसकी गाली -बौछार फिर शुरू हो गई। किसी के व्यक्तित्व का प्रभाव कितनी गहराई तक जाता है, यह घटना उसका उत्तम उदाहरण है। मद्य से उन्मत्त उस व्यक्ति के मन पर मद्य की अपेक्षा शेषरावजी के संस्कारित व्यक्तित्व क़ा प्रभाव अधिक प्रबल था। यह शेषरावजी के व्यक्तित्व की ही विजय है।

वास्तव में पं. शेषरावजी की वीरता, अन्याय-विरोध वृत्ति का यह अनुचित तथा अयथार्थ वर्णन है और गलतफहमी पर आधारित है, तथापि एक सामाजिक कार्यकर्ता को कितने संघर्षों से, निंदा-अपमान से गुजरना पड़ता है, इसका यह उत्तम उदाहरण है।

प्रकृतिने पं. शेषरावजी को हट्टा-कट्टा गरांडील शरीर दिया था और आपने व्यायाम, कुश्ती, शस्त्र-संचालन आदिके द्वारा शरीर को और भी पुष्ट एवं बलशाली बनाया था। उनके ६ फुट ऊँचे तथा १०१ कि. भारवाले डीलडौल के कारण वे हजारों की भीड में भी अलग दिखाई दे जाते थे। किन्तु एक बार अपनी इस बलवान देह का रहस्य उन्होंने थोडा भिन्न रीतिसे बतलाया। जब किसी ने उनके उत्तम स्वास्थ्य एवं प्रभावशाली शरीर के विषय में पूछा, तो उन्होंने जो उत्तर दिया, उसमें एक नैतिक, मानवीय उत्थान की भावना दिखाई देती है। उन्होंने कहा – 'मेरे स्वास्थ्य का रहस्य सुनिये - रोज १ सेर काजू, १ सेर बादाम, १ सेर घी और दस सेर दूध लाता हूँ।'' सुननेवाले ने समझा कि वे यह सारे पौष्टिक पदार्थ खाते होंगे। परंतु आगे पं. शेषरावजीने जो कहा, वही समाज के, सबके कल्याण-मंगल का मार्ग है। शेषरावजी ने कहा 'इतने सारे पदार्थ लाकर पास-पडौसवाले मित्रों, गरीबों में बाँट देता हूँ। यही मेरे स्वास्थ्य का रहस्य है।'' परसेवा, परोपकार, परसंतोष यह गुण ही मनुष्य के उत्तम शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के मूल कारण है। परोपकारी कभी रोगी या दुखी नहीं होता, यह सत्य शेषरावजी ने कितनी कुशलता से प्रकट कर दिया, यह द्रष्टव्य है।

कर्मयोगी, ध्येयवादी शेषरावजी ने जीवन में माया-मोह को या लाभ-प्रयोजनों को अपने मार्ग में नहीं आने दिया। वर्षों तक कारावास भोगा, परिवार, घर-बार से दूर रहे, किन्तु पत्नी, पुत्रादि के मोह ने उन्हें व्यथित नहीं किया। एक बार की घटना है कि किसी न्यायालयीन प्रकरण के कारण उन्हें हैदराबाद की जेल से निलंगा कोर्ट में लाया गया था। तब उनकी धर्मपत्नी को तथा बहनें आदि को स्वभावत: इच्छा हुई कि इतनी पास आ गये हैं सो न्यायालयीन कक्ष में जाकर उनसे मिलें। उन्हें आया देखते ही कर्मयोगी, ध्येयनिष्ठ शेषरावजी कह उठे ''क्यों आये हो तुम सब यहाँ? जाओ, वापस जाओ।'' अपने निश्चित ध्येय में, स्वतंत्रता के मार्ग में माया-मोह को बाधा बनना उस कर्मयोगी को स्वीकार्य नहीं था।

वैदिक-धर्म प्रचार में, आर्यसमाज के वार्षिकोत्सवों मे मैं अनेको बार उनके साथ था। एक कार्यकर्ता के रूप में उनकी सलाह सुनना या देना मेरा कर्तव्य था। ऐसे दो-तीन अवसर आये, जब उनसे मेरा मतभेद हुआ और उत्तेजनावश उन्होंने मुझे कुछ कटु-कठोर शब्द कहे। किन्तु उनकी महानता तथा उदारता तब प्रकट हुई, जब उन्होंने श्वसुर होते हुए भी मुझ जामाता से, जो आयु में उनसे वर्षों छोटा था, क्षमायाचना की। मैंने भी उनकी महानता को नमन करते हुए उनके चरणों में प्रणाम किया। ऐसे अवसर ही व्यक्ति की कसौटी हुआ करते हैं। ऐसे ही एक दूसरे अवसर पर भी पू. आनंदमुनि जी की यह विनम्रता एवं सहनशीलता प्रकट हुई थी। वे तब आर्य संमेलन के आयोजक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष तथा वानप्रस्थ थे। किसी कार्यकर्ता की भूल के कारण भोजन-भंडार में काम करनेवाली सभी कर्मचारी स्त्रियाँ गुस्से में आकर काम छोड़कर जाने लगीं। तभी इस महामना महात्मा ने कार्यकर्ता की भूल के लिए उनसे सविनय क्षमायाचना की और बात बिगड़ने से बच गई। ऐसे ही महात्माओं के लिए कवि भर्तृहरि ने कहा था 'अभ्युदये क्षमा'।

ऐसे महात्मा पू. आनंदमुनिजी की स्मृति को शतशः प्रणाम।।

दि.१७/१०/२००८

प्राचार्य वेदकुमार वेदालंकार
(श्री शेषरावजी के द्वितीय दामाद)

(२६) मेरे पूज्य पिताजी

(श्री शेषरावजी वाघमारे - श्री आनंदमुनिजी वानप्रस्थ)

सचमुच मैं स्वयं को धन्य मानती हूँ कि पू. शेषरावजी वाघमारे समान पिता एवं श्रीमती सुमित्रादेवी शेषराव के जैसी माता मुझे प्राप्त हुई। इस वंश में और इन पुण्यात्माओं की कोख से मेरा जन्म हुआ, अवश्य ही यह मेरे पूर्वजन्म के पुण्यों का परिणाम है। इसी परिवार के सुसंस्कृत वातावरण तथा आर्य-संस्कारों के बीच मेरा लालन-पालन हुआ। पति भी आर्य, गुरुकुल कांगडी के स्नातक, हिंदी के प्राध्यापक, हिंदी-साहित्यिक मिले, यह परम सौभाग्य हुआ।

आज स्मरण हो आता है- पू. पिताश्री शेषरावजी वाघमारे का स्नेह, अनुशासन, सुसंस्कार के प्रति आग्रह तथा वैदिक धर्म के प्रति उनकी अपार निष्ठा। उन्होंने हम भाई-बहनों को स्नेह दिया, हमारे जीवन में अनुशासन उत्पन्न किया और परम पवित्र आर्य संस्कार दिये। अपने बचपन की ४-५ वर्ष की आयु तक तो उनका कोई रूप या कोई घटना मुझे याद नहीं आती है। हाँ, ९-१० वर्ष की आयु में बहुत कुछ समझ आने लगा था। यद्यपि उनका अनुशासन कठोर था, फिर भी हम भाई-बहन उनसे भयभीत नहीं रहते थे। वे हमें पिता का प्यार देते थे, तो साथ ही हमारे आचरण पर भी नज़र रखते थे। उन्होंने मुझे कभी ताडना नहीं की, फिर भी उनके प्रति मेरे मन में एक आदरयुक्त भय था। जो काम या बात उन्हें पसंद नहीं, वह नहीं करनी चाहिए, इतना अवश्य मैं जानती थी।

इसलिए मेरे पिताजी की बैठक हमेशा आदमियों से भरी रहती थी। इसके अतिरिक्त उत्तर भारत से आये आर्यसमाजी उपदेशक और भजनोपदेशक भी हमारे ही घर आकर ठहरते थे। तब हमारे बाल-मन को अपने पिताश्री के बड़प्पन पर बहुत गर्व का अनुभव होता था। पिताजी से पंडितों की हुई चर्चा हम सुनते थे, तो कुछ समझ आता था, कुछ नहीं आता था। मेरी स्मृति के अनुसार उस समय आर्य जगत् के धुरंधर विद्वान पं. रामचंद्र देहलवी, पं. बुद्धदेवजी विद्यालंकार, आचार्य भगवानदेव, पं. महेंद्रप्रताप, आदि भी हमारे घर आये थे। हमें उनकी सेवा करने में बहुत आनंद आता था। पिताजी हम भाई-बहनों को वार्षिकोत्सव या सत्संग में भी ले जाते थे। संतानों पर आर्य-संस्कार बिंबित हों, इस विषय में वे बहुत जागरूक थे।

एक बार उन्होंने रविवारीय सत्संग में मुझे मेज पर बिठा दिया और ऊँचा मंत्रोच्चार करते हुए संध्या करने को कहा। याद है कि मैं संध्या पूर्ण कर पायी, तो पिताजी की शाबाशी मिली थी। प्रतिदिन संध्या-हवन सम्मिलित रूप से करना और कराना उनका कठोर नियम था। हर एक को अपना काम छोड़कर सम्मिलित संध्या-सत्संग में उपस्थित होना पडता था। संध्या के बाद भजनों का क्रम आता था। सौभाग्य से वाघमारे परिवार में सभीने मधुर कंठस्वर पाया है। अत: एक के बाद एक भजनों का सिलसिला शुरू होता था, तो भोजन का समय सब भूल जाते थे। पिताजी ने वैदिक शिक्षा पाने के लिए मुझे और बड़ी बहन सत्यवती (बहिणबाई)

को कन्या गुरुकुल बडौदा भेजा था। वहाँ हम दोनों लगभग दो वर्ष तक पढ़ती रहीं। वैदिक शिक्षा से शिक्षित रहीं।

पिताजी के स्वभाव में जो कुछ असाधारण गुण थे, उनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। वे अनुशासनप्रिय थे, कभी कभी कठोर भी होते थे। घर के सभी लोग उनके कहे अनुसार चलते थे। फिर भी अनेक बार हमसे कोई नियम भंग हुआ, तो उन्होंने दंड दिया हो, या डाँटा-फटकारा हो ऐसा कभी नहीं हुआ। हमें, विशेषत: मुझे, रेडियो पर गाने सुनना पसंद था। पिताजी से छिपकर चोरी-चोरी सुनना पडता था। घर में पिताजी को छोड़कर सभी को चाय पीना पसंद था, परंतु उनसे छिपकर ही पीना पड़ता था। किन्तु अंतत: हमारी चोरी पकडी गई, तो भी पिताजीने गुस्सा नहीं किया। एक बार मैं पिताजी के पास बैठी थी, तो माताजी ने रसोई में पुकारकर बुलाया। मैं उठने में हिचकिचाई, तो पिताजी बोले ''जा, जा, चाय पी के आ''। एक बार मैंने चाय बनाई और पीने ही वाली थी कि पिताजी अचानक वहाँ आ गये। मैंने हडबडाहट में काँच का ग्लास ढँककर रख दिया। पिताजी वहाँ भोजन करने लगे। तभी मैंने ग्लास छिपाने के लिए दूसरी जगह रखने के लिए जैसे ही उठाया, तो काँच के ग्लास की तली फूट गई और सारी चाय फर्श पर पिताजी के पास तक जा पहुँची। मैं डरी कि अब डाँट पडेगी, परंतु पिताजी का स्वभाव विनोदी था। बोले 'अरे अरे, कितनी अच्छी बनी थी चाय! चल, फिर बना ले।''

एक दिन वे लातूर मेरे घर आये थे। उस दिन मेरे पति श्री वेद्कुमारजी को एक बिच्छू ने काट लिया। पिताजी ने कहा 'ठहरो, मुझे बिच्छू उतारने का मंत्र आता है।' तब 'इनके' हाथ पर और भुजा पर चूल्हे की राख मलकर कुछ मंत्र बुडाबुडाकर कहे। बिच्छू का ज़हर चढ़ा नहीं, यह सचाई है। फिर विनोद करते हुए पिताजी बोले 'अब ४ सेर दूध मँगाओ। सेर रोगी को दो, ३ सेर वैद्यजी को पिलाओ।' हँसी के मारे सबका बुरा हाल हुआ। इस हँसी में रोगी की आवाज़ सबसे ऊँची थी।

अपने विनोदपूर्ण स्वभाव के कारण वे किसी बात का उत्तर भी विनोद द्वारा ही दिया करते थे। उनके चार दामाद है - प्राचार्य हरिश्चन्द्रजी रेणापूरकर, प्राचार्य वेद्कुमार वेदालंकार, प्राचार्य चंद्रकांत गर्जे तथा प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी। संयोगवश सभी इकहरे, दुबले-पतले शरीरवाले। एक दीवाली के अवसर पर सभी दामाद निलंगा आये थे। पिताजी की बड़ी बहन ताई ने दामादों को देखकर पिताजी से पूछा

'शेषरावजी, आप इतने स्वस्थ, हट्टे-कट्टें है, और आपके सारे दामाद ऐसे क्यों?' पिताजी बोले 'क्या करूँ ताई, हम तो इन्हें खूब खिला-पिलाकर मोटा बनाना चाहते हैं, मगर यहाँ आते ही ये सब कहने लगते हैं - दाल बहुत गाढ़ी है, पतली करो, दूध गाढा है - पानी डालो' अब मैं क्या करूँ?' उनकी अंतिम बीमारी में उन्हें हस्पताल में साँस के लिए नाक में नली लगाई गई थी। बापूकाका ने देखकर कहा - 'देखो, तात्या की नाक में नली लगा दी है डॉक्टरों ने' उस भीषण दशा में भी पिताजी बोले 'चल बापू, पाँच रुपये निकाल, तो नाक से बीन बजाकर दिखाता हूँ।'

उन्होंने भरा-पूरा घर छोडा, वानप्रस्थी बन गये, वैदिक धर्म, आर्यसमाज और राष्ट्र की सेवा की और एक दिन संसार से विदा हुए। उनके जीवन से, त्यागवृत्ति से ही मुझे यह प्रेरणा मिली कि मैं भी वानप्रस्थाश्रम ग्रहण करूँ। इसीलिए मार्च २००७ में मैने अपने पतिदेव के साथ ही वानप्रस्थाश्रम की दीक्षा ली। अभी जीवन के ७२ वर्ष पूर्ण किये हैं। वैदिक व्यवस्था के अनुसार 'जीवेम शरदः शतम्' यही लक्ष्य होना चाहिए, तथापि इच्छा है कि पू. पिताजीने एवं श्रद्धामयी प्रिय माताजीने जो सत्पथ दिखलाया है, प्रभु करे उसी पर मैं सपरिवार आजीवन चलती जाऊँ। पू. पिताजी का यह संदेश सदा याद रहे -

।। आदत बुरी सुधार ले, बस हो गया भजन ।।

।।ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

वृत्त निवेदन - **सौ. प्रतिभा वेदकुमार वेदालंकार**

शब्दांकन - प्रा. वेदकुमार वेदालंकार

(२७) विषैले सांप से अधिक विषैला - मनुष्य

''शेषरावजी मेरे मामा। मामाजी मैंने उन्हें कभी कहा नहीं - उन्हें 'पिताजी' ही कहता रहा। एक प्रसंग मेरे बचपन का है। बचपन में हम बच्चे निलंगा जाते थे। पिताजी हमें तैरने के लिए कुएँ की ओर ले जाते थे। वे तैरने में माहिर थे। एक समय वे कुएँ के ऊपर से कुएँ में कूद पड़े। गहरे पानी से निकलकर, पानी के ऊपर आये, तो उनके हाथ पर एक छोटा सा सात-आठ इंच का सांप था। पिताजी ने हाथ झटका - सांप वैसे ही उनके हाथ से चिपक बैठा। जोर से झटकने से सांप

पानी में जा पडा। हाथ में दर्द होने लगा। सांप ने उन्हें काटा था। मुझ से उन्होंने कहा भी, धीरेन्द्र - सांप ने काँटा है। देखते हैं क्या? साँप मरा हुआ - समीप ही था। मेरे मुख से सहज रूप में शब्द निकल पड़े - साँप मर गया! आपका विष उसे चढ गया क्या? वैसे बडे मामाजी से ऐसी कटु प्रतीत होनेवाली बात कहना, मेरी गुस्ताखी थी, परन्तु मैं मामाजी का विनोदप्रिय स्वभाव जानता था और वे भी छोटों की मजाक से कही गई किसी बात को बुरा नहीं मानते थे। इसीलिए मेरे कटु वचन को उन्होंने एक दार्शनिक आध्यात्मिक शब्दों में बदल दिया। वे बोले ''धीरेन्द्र'' तू ठीक कहता है - मनुष्य प्राणी अधिक विषैला है - सांप से भी कहीं अधिक। हम मनुष्य प्राणी - सांप के लिए विषैले हैं। 'विषं विषस्य चिकित्सा'। विष की चिकित्सा विष से ही की जाती है। ऐसा चिकित्साशास्त्र कहता है। कांटे से कांटा निकलता है।'' मेरे चुभते हुए शब्दों में से भी सच्चे अर्थ की अभिव्यक्ति करना यह उनकी खूबी रही।

डॉ. धीरेन्द्र येळणूरकर - नांदेड

(संभवत: डॉ. धीरेन्द्रने यह संस्मरण - १९८७-८८ में लिखा हो. उन्ही के हस्ताक्षर में लिखित संस्मरण प्राप्त हुआ - (मराठी संस्मरण का हिन्दी अनुवाद)

(२८) ऐस थे मेरे पिताजी

१) इ. सन १९७२ का एक प्रसंग है। पिताजी की किडनी में कुछ दोष था। वे अंबाजोगाई (जि. बीड़) के शासकीय अस्पताल में दाखिल हुए थे। अस्पताल के तज्ञ डॉक्टर डावळे तथा अन्य डॉक्टरोंने विचार विमर्ष कर पिताजी की किडनी निकालने का निर्णय लिया किन्तु बुखार के कारण यह शल्य क्रिया दो दिन के लिए टल गयी। इस बीच मुम्बई के ख्याति प्राप्त मुत्र रोग तज्ञ डॉ. टिळक, डॉ. डावळे से मिलने अस्पताल में पधारे। डॉ. टिळक से पिताजी की किडनी सम्बधी चर्चा की गयी। डॉ. टिळक का कहना था, पिताजी की किडनी निकाली जाती तो टेबल पर ही पिताजी की मृत्यु हो जाती। किडनी में दोष नही था, पौरुष ग्रन्थी में कुछ दोष था। ईश्वर की कृपा थी। डॉ. टिळक ईश्वर के रुप में ही अस्पताल पधारे और उन्ही की कृपासे पिताजी को जीवन दान मिला। संभवत: ईश्वर पिताजी से समाज का अधिक कार्य करवाना चाहता हों।

२) उमरगा हाडगा, तहसील निलंगा में १५ एकड (जमीन) खेती थी। खेत की मालकीन थी, गोविंदाचार्य की बहन, ३ नका निवास हैदराबाद में था। यह जमीन किसी कारण पिताजी के नाम से कर दी गयी थी। वास्तव में उमरगा-हाडगा के निवासी यशवंता दिवे ने यह जमीन खरीदी थी। वही जमीन का असली मलिक था। जमीन को लकर तीस पैंतीस वर्ष तक कोर्ट में मुकदमा चलता रहा। कागज पर पिताजी जमीन के मालिक थे और अन्ततक यशवंता दिवे का नाम नौकर के रुप में कागज में दर्ज था। पिताजी की नियत कभी नही बदली, वे चाहते तो जमीन हडप कर सकते थे। वे सचाई से परिचित थे, खेत की सारी उपज यशवंता दिवे के यहाँ हर वर्ष पहुँचाते रहे। पिताजी ने अपने जीवन काल में ही, यशवंता को उसे अपनी जमीन मिलने के सम्बध पें कानूनी व्यवस्था कर दी थी। पिताजी का देहावसान हुआ और यशवंता को उसे अपनी जमीन मिली। पिताजी जीवन के अन्ततक सच्चाई का साथ देते रहे।

३) पिताजी का एक शौक व्यायाम रहा है। वे दौड़ के साथ तैरना यह सर्वोत्कृष्ट व्यायाम मानते रहे। वे सबसे आग्रह करते कि दौड़ लगाओं, जॉगिंग करो और खूब तैरो तो शरीर चुस्त रहेगा - स्वस्थ बना रहेगा। सब लोग आश्यर्य करते कि पिताजी १००-१०५ किलो वजन के होते हुए भी कैसे दौड़ लगाते हैं। कुएँ के ऊपर से कुएं में कूद पड़ते हैं, घटों तैरते हैं। पिताजी स्वयं तैरते थे, अन्यों बच्चों मित्रों के लिए कुएँ में कूद पड़ते और तैरने का प्रशिक्षण भी देते रहते। खेल का क्षेत्र उनसे कभी नहीं छूटा। वे बेसबॉल, फुटबॉल, व्हॉली बॉल के अच्छे खिलाडी भी रहे। इन खेलों की टीम हुआ करती थी। पिताजी के कॅप्टनशिप में जिला बीदर, गुलबर्गा के विभागीय स्तरपर इन टीमों ने सफलता प्राप्त की थी। मेरे पिताजी एक अच्छे खिलाडी रहे।

४) मेरी चाची श्रीमती सिन्धू जी प्रसूत हुई थी। हमारे घर पर डाका पड़ा। प्रसूती के कमरे से डाकुओंने रहा-सहा सोना-चांदी लूट तो लिया, माताजी, भाई को जबरदस्त चोंट भी पहुँचायी। भाग निकल नें में वे सफल हुए थे। 'बाधमारे' के घर पर डाका पड़ सकता है? सब लोग विस्मय में पड़े रहे, पर पिताजी इस घटना से तनिक भी दु:खी नहीं हुए। उसी दिन परिवार के सभी सदस्यों के साथ 'यज्ञ कर्म' सम्पन्न कर सभी ने 'पुरण पोळी' (मिष्ठान पदार्थ)

का भोजन किया। 'ईश्वर-इच्छा बलवान है' यह पिताजी की भावना रही।

५) पिताजी बार्शी के विस्तापितों के कॅप में, पुरुषोंकी तरह महिलाओं को भी लाठी, तलवार, भाला, बरछी, बन्दूक चलाने के प्रशिक्षण को महत्व देते रहे, ताकि - सुरक्षा के लिए दूसरी महिला-सेना तैयार रहें।

६) बच्चे घर में मटर गश्ती, शोरशराबा, गलतियाँ करने पर पिताजी के डाँटने का ढंग कुछ न्यारा ही रहा। किसी को डाँटने, धमकाने, शिक्षा प्रताड़ना करने का बजाए, वे गुणी, ज्ञानी, महाज्ञानी, महापुरुष आदि शब्दों का प्रयोग करते रहे, ताकि बच्चे इन गुणों को धारण करें।

७) पिताजी के स्वास्थ का रहस्य भोजन में नही था, वे तो दिन में एक ही बार भोजन करते थे, रात्रि के समय, वे उनका प्रिय पेय 'कलकत्ता' (लौंग; दालचीनी, काली मिर्च, आदि मिश्रण से बना हुआ पेय) ही लिया करने थे। वे अपने मित्रों से विनोद करते हुए कहते 'मेरे जैसा स्वास्थ्य बनाना है तो ''देशी घी में, बदाम, काजू, मनूका डालकर हलवा बनाओं और खूब खावो, मित्रों को भी खिलाओं''। यह केवल मज़ाक के लिए होता था, पिताजी इन चीजों से दूर ही रहते थे।

८) पिताजी जब कोर्ट में जाते थे, अपने बगलमें फाईलों को दबाए रखते थे, और हाथों में छोटी थैली हुआ करती थी, जिसमें कभी 'धपाटे' (महाराष्ट्रीय भोजन पदार्थ), तो कभी इडली चटनी, बेसन के लड्डू हुआ करते थे। मध्याह्न के समय ज्युनियर, सीनीयर वकलों को बाँटनकर स्वयं भी इन पदार्थों को चखते थे - और सारा वातावरण विनोद ही से भरा रहा करता था।

९) पिताजी - मित्र कौन? शत्रू कौन? केवल बातचीत से ही इस बात का पता करते थे। समाज के कमजोर वर्ग की रक्षा के लिए वे सदैव तैयार रहतें थे। अज्ञान, अन्याय और अभाव के विरुद्ध वे सदैव लड़ते रहे।

१०) सदैव हँसते रहना और दूसरों को हँसाना सफल स्वास्थ्य जीवन की चाबी है, जीवन को मधुर बनाना है। यह उनके जीवन का सिद्धान्त रहा है। उनके हँसने, हँसाने के स्वभाव के कारण, शत्रु भी उनका मित्र बन जाता था। श्री रामरावजी

हलगरकर, पिताजी के समीप के मित्र थे। चुनाव में 'वृक्ष' चिन्ह से पिताजी के विरोध मे उन्होंने चुनाव लड़ा, पर वे हार गये। मित्र के विरोध में चुनाव लड़ने पर वे काफी दु:खी हुए। वे पिताजी के सम्मुख आने में कतराते रहे, मुँह दिखाना तो दूर की बात है। पिताजी स्वयं उनके घर गये, और कहा 'भाई! मुझे मिलना तो दूर रहा - मुँह तक दिखाते नहीं हो।' तुम्हारा चिन्ह था वृक्ष। वृक्षको अंग्रेजी में ट्री (Tree) कहते हैं। मराठी में उसे 'टिरी' कहते हैं। यह 'टिSSSSरी' दिखाने की चीज होती है? मित्र का भी इस विनोद से खुल गये और उन्होंने पिताजी से गले लगया। ऐसे थे मेरे पिताजी विनोद के बादशहा।

११) निलंगा और परिसर तथा अन्य स्थानों के स्कूल कॉलेजों में पिताजी के व्याख्यान भी देते थे। इन व्याख्यानों में विद्यार्थियों के प्रश्न-उत्तर भी हुआ करते थे। ऐसे एक व्याख्यान में एक लडके ने पुछा 'पुरुषो को दाढ़ी-मूँछ होती है'। वैसे स्त्रियों को क्यों नही होती?' पिताजी बीरबल जैसे हाजिर जवाबी थे। अगर स्त्रियों को दाढ़ी-मूँछ होती तो उनके शिशू अपनी माताजी के गोद में बैठकर दूध पान कैसे करते? यह प्रश्न का प्रश्न में ही उत्तर था।

- मेरे पिताजी के एक नही, अगणित संस्मरण हैं - कहीं न कहीं कलम को रोकना ही पड़ेगा। यहाँ उसे 'विश्राम' दे रहा हूँ।

- विजय शेषराव वाघमारे - निलंगा
फोन: २३८४-२४२५२
मो. ०९४२०४३७७५६

(२९) श्री शेषरावजी - निस्पृह और समर्पित जीवन

they can also serve, who leave behind - यह पंक्तियाँ दर्शाती है, किसी पद पर न रहते हुए भी, अलग रहते हुए विरक्त होकर भी समाज सेवा की जा सकती है। सेवा के लिए किसी पद पर आसीन होना आवश्यक नहीं। कोई व्यक्ति अपने पद के कारण ही श्रेष्ठ कहलाता है, ऐसी बात नही हैं, अपितु सेवा में जुट जाने से वह श्रेष्ठ कहलाता है। ऐसे कई व्यक्ति विगत काल में हुए हैं, आज भी

हैं, सेवा कार्य से ही जुड़े रहे हैं, जुड़े हुए हैं उनमें एक महात्मा हैं, आनन्द मुनिजी। उन्होंने अपने जीवन में किसी पद की इच्छा व्यक्त नहीं की, न ही पद को पाने का कोई प्रयास कभी किया।

१६ एप्रिल १९७८ का प्रसंग है। 'श्यामलाल स्मारक शिक्षा संस्था - उदगीर की सभा आयोजित की गयी थी। सभा ने सर्वसंमति से श्री शेषरावजी को संस्था का अध्यक्ष मनोनीत करने का निर्णय लिया, पर शेषरावजी इस पद के लिए बिलकुल तैयार नहीं थे। उन्होंने संस्था के अध्यक्ष पद के लिए श्री दिगंबररावजी पत्तेवार का नाम सुझाया - जब कि श्री पत्तेवारजी शेषरावजी को ही अध्यक्ष बनाना चाहते थे। शेषरावजी का मंतव्य था 'श्री दिगंबररावजी पत्तेवार - संस्था के जन्म से संस्था से जुड़े हुए हैं - अपनी हड्डियाँ चन्दन की तरह घिसकर, उन्होंने संस्था का नाम बढ़ाया है - समय दिया है, धन भी दिया है, और तन भी दिया है। श्री पत्तेवारजी अध्यक्ष बने। पद की लालसा न करनेवाले ऐसे थे शेषरावजी ।

शेषरावजी विधायक रहे, आर्य प्रतिनिधि सभा-हैदराबाद, के मंत्री, उपाध्यक्ष, अध्यक्ष भी रहे, काँग्रेस से भी जुड़े रहे - पर निस्पृह रहे - किसी भी तरह की प्राप्ति से अपने आपको अलग ही रखे रहे।

'वानप्रस्थाश्रम' में प्रवेश करने का बाद का एक प्रसंग है। इस अवसर पर निलंगा में 'सत्कार समारोह' का आयोजन किया गया था। इस समारोह में - निलंगा परिसर और अन्य स्थानों से जनसागर उमड़ पड़ा था। जनसागर के संमुख भाषण करते समय उन्होंने कहा था - ''आज मैं, मेरे मृत्यु के बाद के प्रसंग की कल्पना कर रहा हूँ। वह प्रसंग, दृश्य मै देख नहीं पाऊँगा। पर आज निश्चित रूप से कहता हूँ - उस समय भी ऐसा ही जनसागर उमड़ पडेगा।'' यह कल्पना से भरी उनकी वाणी उनके मृत्यु के बाद सत्य सिद्ध हुई। आनन्दमुनि के प्रति उनके अंत मे, भावभीनी श्रद्धा जालि आर्पित करने के लिए बिदा देने के लिए जन सागर उमड़ पड़ा था। यह था एक संमर्पित, निस्पृह व्यक्तित्व के प्रति शानदार अभिवादन।

प्रा. अर्जुन राव सोमवंशी
(श्री शेषरावजी के कनिष्ठ दामाद)

(३०) वे मेरे लिए पिताजी ही थे

६०, ६५ वर्ष पूर्व अर्थात् मेरे बचपन का एक प्रसंग है। मुझे निलंगा की प्राथमिक पाठशाला में प्रवेश दिया गया। पाठशाला का प्रथम दिन। कक्षा में गुरुजी विद्यार्थियों की उपस्थिति लेते समय जब विजय कुमार शेषराव वाघमारे नाम को पुकारा तब विजयने 'Yes sir' कहकर अपनी उपस्थिति दर्शायी। मुझे लगा - मेरे नाम की भी घोषणा होगी - नाम पुकारा गया - सुरेश केशवराव डुमणे। मैं 'सुरेश' - यहाँ तक ठीक था। केशव राव डुमणे कैसे? गुरुजी ने शायद गलती की। मैंने कहा 'सुरेश शेषराव वाघमारे' पर गुरुजी वही सुरेश केशवराव डुमणे कहते गये। कक्षा से बाहर निकलकर मैं हेडमास्टर से मिलने, उनके कार्यालय में पहुँचा, वही नाम रटता रहा -सुरेश शेषराव वाघमारे - डुमणे नहीं। हेडमास्टरने अनसुनी की और कार्यालय से बाहर कर दिया। मैं अपमानित हो - सीधे कोर्ट पहुँचा - पिताजी से मिलने। पाठशाला की बातें दुहरायीं आग्रहपूर्वक कहने लगा - मैं आपका पुत्र हूँ - आप मेरे पिताजी - फिर यह सुरेश केशवराव डुमणे क्यों? केशवराव कहाँ से आ टपके। पिताजी समझाते रहे - पर मेरी हठधर्मिता थमती ही नहीं थी। उन्हे कष्ट भी हो रहा था। मुझे घर ले गये। माताजी से कहा - यह कुछ पूछ रहा है, इसे समझाओ। माताजी मुझे थपथपाते - बड़ी देर तक कुछ कहती रही, समझाती रही, तब वास्तविकता का पता चला। पिताजी पिताजी न होकर - जीजाजी थे, माताजी बहन थी। मेरे जन्म लेने के कुछ दिन बाद ही - मेरे पिताजी केशवराव डुमणे गुजर गये और कुछ दिनों के बाद माँ भी चल बसी। मैं छोटा था, घर में बहुत सी धन संपत्ति थी। परिवार की नजरें संपत्ति पर अधिक थी, मुझ पर नहीं। मेरा कुछ बुरा न हो, यह सोच छोटी सी उम्र में ही, अपना घर अपने गांव (कर्नाटक में, आलंद के नजदीक - खजौरी) से निलंगा लाया गया। बहन के परिवार में पलता गया - बढ़ता गया। मेरी बहन मेरे लिए माताजी बनी रही, जीजाजी - शेषरावजी पिताजी बने रहे। मुझे मेरा बचपन खूब याद आता है। बड़े लाड प्यार से पलता गया, बढ़ता गया, भाई-बहनों में भाई ही रहा - वाघमारे परिवार का एक अभिन्न सदस्य। बढ़ता गया, उच्च शिक्षा भी पायी। प्रथम बंगलोर के H.A.L. में पदाधिकारी बना, बाद में, हैदराबाद में H.A.L. का अधिकारी - ब्याह हुआ, बच्चे हुए। मेरे बच्चों की शादियाँ हुई। उन्हे भी बच्चे हुए। हम नाना

नानी हुए। H.A.L. से सेवा निवृत्त हुआ। समय आगे बढ़ता बढ़ता गया। पिताजी नहीं रहे। वाघमारे परिवार से वही अटूट नाता - ६०-६५ वर्षों से बना रहा - मैं अपने पिताजी का पुत्र रहा - अभी भी हूँ।

सुरेश केशवराव डुमणे (H.A.L. सेवा निवृत्त)
युको बँक कालोनी, मसाब टँक - हैदराबाद

(३१) श्री शेषरावजी मेरे श्वसूर नहीं, मेरे पिताजी

पंढरपुर तीर्थ क्षेत्र में एक सनातनी परिवार में मेरा जन्म हुआ। सनातनी संस्कार में पली-वहीं से शिक्षा प्राप्त की - B.A. हुई। योग्य समय पर मेरे विवाह की बात चली। निलंगा के कोई डॉक्टर युवक चाकूर में मेडिकल आफिसर हैं और वाघमारे परिवार से सम्बन्धित हैं। 'वाघमारे' एक विशिष्ट जाति से जुड़ा हुआ उपनाम है, मैं इतना ही जानती थी। यह मालूम हुआ कि बाघ मारने के कारण वाघमारे उपनाम पड़ा। वाघमारे परिवार के व्यक्ति मुझे देखने के लिए आये। उनमें युवक के पिता भी थे - पता चला वे शेषरावजी हैं। प्रश्न पूछे गये - मैं उन प्रश्नों के उत्तर भी देती गयी। मेरी बातों में सनातनियों का भाव आना स्वाभाविक था। चर्चा चली 'सुन्दरता और संस्कार' की। सुन्दरता के विषय में निर्णय उन्हें लेना था, पर सत्य यह था कि मै संस्कारित नहीं थी। अर्थात् उनके अनुसार वैदिक संस्कार मुझ में नहीं थे। उन में ही बात यह भी चली कि किसी में संस्कार नहीं है, तो उसे संस्कारित किया जा सकता है, पर वह सुन्दर नहीं है, तो उसमें सुन्दरता नहीं लायी जा सकती। सुन्दरता जन्म से होती है, संस्कार जन्म के बाद के होते हैं। संस्कार नहीं है तो संस्कारित किया जा सकता है। चर्चा चली और खूब चली। शायद सौंदर्य की दृष्टि से मैं उनकी कसौटी पर खरी उतरी हूँ क्योंकि उन्होंने मुझे पसंद किया। वैदिक पद्धति से विवाह भी हुआ। निलंगा के वाघमारे परिवार की बहू बनी। शेषरावजी मेरे श्वसूर - पर श्वसूर की अपेक्षा पिताजी अधिक। वैदिक सिद्धांतों को एक एक कर मेरे सामने रखते गये। सत्यार्थ प्रकाश, आनंद स्वामीजी के कुछ ग्रंथ, आदि मैं पढ़ती गयी। वैदिक सम्पत्ति भी मैंने पढ़ी। धीरे धीरे संध्या हवन के मंत्र मुखोद्‌गत हुए, उसके अर्थ को भी जानने लगी। पिताजी आर्य सिद्धांतों की चर्चा करते थे, मूर्तिपूजा, ईश्वर का अस्तित्व, वर्णाश्रम व्यवस्था - संस्कार

आदि कई विषयों की जानकारी मुझे देते रहते थे - मेरे सनातनी संस्कार छूटते गये - मैं नये संस्कारों में संस्कारित होती गयी। नित्यप्रति संध्या-हवन से जुड़ गयी - और आज तक उसी से जुड़ी हुई हूँ - वाघमारे परिवार को व्यक्तित्व की सुन्दरता मिली - संस्कारित बहू भी मिली।

संस्मरण लिखते समय, मेरे पिताजी के कई प्रसंग है, कई घटनाएँ है, जो मेरे मस्तिष्क में एक एक कर उभरकर आ रही हैं, स्थान को देखते हुए केवल और एक संस्मरण को यहाँ प्रस्तुत कर रही हूँ। जब शासकीय सेवा के कारण से उस्मानाबाद में थे, पिताजी हमेशा की तरह हमसे मिलने उस्मानाबाद आयें। उस समय - प्रा. वेद्कुमारजी तथा उनके पिताजी उत्तम मुनि (डॉ. डी.आर.दास) भी उस्मानाबाद में ही थे। पिताजी उनके घर से हमारे यहाँ आये - कहने लगे "मैं गृहस्थाश्रम छोड़कर वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर रहा हूँ" मेरी आँखों में अश्रू आये। समझाते हुए वे कहने लगे, तू आश्रम व्यवस्था को भूल गयी। मैं तेरे लिए, परिवार के लिए, पिताजी रहा हूँ - अब कल से मैं वानप्रस्थी बनकर सबको आनन्द बाटता रहूँगा - और सचमुच दूसरे दिन वे वानप्रस्थाश्रम में दीक्षित होकर - महात्मा आनन्दमुनि हुए।

— श्रीमती वासंती शरदचन्द्र वाघमारे - पुणें
(शेषरावजी की पुत्रवधू; स्व. डॉ. शरदचंद्र की पत्नी)

---

(३२) पू. पिताजी, मेरे श्रद्धास्थान

पू. पिताजी के देहावसान को पूरे पच्चीस वर्ष हुए है। इस अवसर पर निलंगा - आर्यसमाज ने पिताजी के स्मरणार्थ २५वी पुण्यतिथि - समारोह का आयोजन किया है। लगता ही नहीं है कि पिताजी हमारे बीच में नहीं है। उनकी अनेक स्मृतियाँ मेरे मानसपटल पर अंकित हो रही हैं और वे एक एक उभर रही हैं। उनकी सभी स्मृतियों को शब्दबद्ध कर सकूँ, यह कठिन कार्य है। फिर भी कुछेक स्मृतियों को शब्दबद्ध करने का प्रयास कर रही हूँ।

हैदराबाद मुक्ति संग्राम के वीर अग्रणी, सामाजिक विषमता के प्रखर विरोधी, समाज में प्रचलित अंधविश्वासों पर कठोर आघात करनेवाले, वैदिक सिद्धांतो

का अहर्निश प्रसार-प्रचार करनेवाले महर्षि स्वामी दयानन्द के भक्त, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ता, नवयुवकों को चरित्र की महत्ता दर्शानेवाले, एक आदर्श नवपीढ़ी के निर्माता - न जाने ऐसे अनेक कर्तृत्वों से जुड़ा हुआ पिताजी का अनोखा व्यक्तित्व रहा है।

एक सनातनी ब्राह्मण परिवार में उनका जन्म हुआ। सनातनी संस्कार में ही उनका पालन पोषण हुआ। उस समय की प्रचलित प्रथानुसार बचपन मे ही उनका विवाह हुआ। उसके बाद, उन्होंने वकालत की परीक्षा दी और वे वकील बने। प्रारंभ में वकालत भी की, किन्तु परिवार में चली आती हुई - वकील परम्परा से वे जुड़े नहीं रहे। वे आर्यसमाज के प्रचार से प्रभावित हुए और निलंगा में आर्यसमाज की स्थापना सन् १९३० में की। तब से अंत तक आर्यसमाज के सजग प्रहरी के रुपमे कार्यरत रहे। कई ऐसे नेता होते हैं, जो अन्यों को उपदेश देते है, पर स्वयं चलते नहीं है। मेरे पिताजी ऐसे नहीं थे, वे उपदेशों, विचारों को अपने जीवन में उतारते रहे। वाघमारे परिवार में स्वयं अंतर्जातीय विवाह को प्रचलित किया, इतना ही नहीं, कन्याओं का उपनयन संस्कार भी सम्पन्न किया। वैदिक सिद्धांतों का आदर्श, उन्होंने उस समय के समाज के सम्मुख रखा, जिसकी कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था। समाज के कई व्यक्ति - पू. पिताजी का आदर्श ग्रहण कर सच्चे आर्यसमाजी बने। इस दृष्टि से पिताजी एक सामाजिक योद्धा रहे।

ईश्वर जहाँ भी होगा - वह होगा ही, किन्तु मैं मानती हूँ, ईश्वर कही बसा हुआ है तो वह महापुरुष में ही। मेरे पिताजी एक ऐसे महापुरुष थे, जिनमें ईश्वर के दर्शन कर सकते हैं। वे मेरे पिताजी थे, हम सबके पिताजी थे, वे समस्त निलंगावासियों के पिताजी थे, वस्तुतः वे निलंगा वासियों के, आर्य जगत् के प्राण थे।

समयानुसार वैदिक प्रथा के अनुसार उन्होंने वानप्रस्थाश्रम - का स्वीकार किया और घरबार छोड़कर, भूखे रहकर, अथक भटकते रहे - आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार के लिए।

पिताजी के छोटे भाई, श्री नरसिंहराव (बापूसाहब वाघमारे), जिनकी मैं पुत्री हूँ, मैंने उन्हे सदा 'चाचा' कह कर ही सम्बोधित किया। वे भी पिताजी की तरह कर्मशील, सदाचारी व्यक्ति थे। आज भी लोग उन दोनों को राम-लक्ष्मण की

उपमा देते है और आदर्श भाईयों का स्मरण करते है। इतना ही नहीं- वाघमारे परिवार - एक आदर्श परिवार के रुप में ख्यातिप्राप्त रहा। पिताजी सदैव आर्यसमाज से जुड़े रहे तो बापूसाहब शासकीय पुलिस सेवा में रत रहते हुए, भी वैदिक विचारों से जुड़े रहे। अपनी प्रामाणिकता, तथा कर्तव्यपरायणता के कारण ही, पुलिस सहायक निरीक्षक पद से पुलिस अधीक्षक पद तक पहुँचे और राष्ट्रपति सुवर्णपदक से पुरस्कृत हुए। शासकीय सेवा से निवृत हो, अन्त तक आर्यसमाज के कार्य में ही जुड़े रहे।

आज भी वाघमारे परिवार के पुत्र-पुत्रियों में उन दो भाईयों के दिये हुए संस्कार हैं। यह संस्कार एक वैचारिक सम्पति है - जिन्हे सम्भाले, हम सभी अपनी अपनी गृहस्थी को आदर्शवत् बनाने में, उसे सुरक्षित रखने में लीन हैं। हमारा श्रद्धास्थान है, पू. पिताजी और बापूसाहब। उनकी स्मृति को शत शत प्रणाम।

श्रीमती माधुरी रत्नाकर राव कुलकर्णी, बीड
श्री ना. मा. तथा बापूसाहब वाघमारे की पुत्री

---

(३३) मेरे मन के विशाल आकाश में यादों के अनेक पंछी

पू. पिताजी के स्मृति रौप्य महोत्सव के अवसर पर, मेरे मन के विशाल आकाश में अनेक पंछी उड़ाने भर रहे हैं। पंछी, उड़ा भर रहे थे, पर मेरे शब्दों के जाल में फँस नही पा रहे थे। मेरे जीजाजी डॉ. गर्जे के अनेक सन्देश जब आये, तब कभी ये कुछ पंछी शब्दों के जाल में फँस गये। कैसे? ऐसे फँसे।

'राजा भरत, उठो - जागो' पिताजी के इन शब्दों को सुनते ही, मैं हड़बड़ाकर बिस्तर से उठ बैठता और तुरन्त तैयार हो, पिताजी के साथ प्रातः भ्रमण के लिए निकल पड़ता था। प्रातः पांच, साढे पांच बजे जागता और भ्रमण के लिए निकल पड़ना - मेरे पिताजी का नित्य नियम था। मेरे ५वीं कक्षा से १०वीं कक्षा तक अर्थात् ५ वर्ष के बालकाल का मेरा प्रातः भ्रमण भविष्य जीवन में, शारीरिक और बौद्धिक शक्ति का श्रोत बना रहा।

१०वीं कक्षा के बाद, अगली पढ़ाई के लिए, मैं 'बापू काका' के यहाँ पहुँचा। यहाँ चौबीसों घंटे अनुशासन ही अनुशासन। चाचा के हाथ में डण्डा न होते हुए भी शब्दों की मार खानी पड़ती थी। बापू चाचा पुलिस के अधिकारी थे, अनुशासन उनके जीवन का अभिन्न अंग रहा है। पिताजी के हाथ में डण्डा होता था पर डण्डों की मार कभी नहीं पड़ी, पड़ी पर डण्डे से नही, बिना डण्डी की उनकी मार खुशियाँ बिखर देती थी। हम छोटे बच्चे आपस में लड़ते थे, कोई किसी की छेड़खानी करता, तो कोई किसी को पीटता- ऐसे समय पिताजी घर आते, तो सभी बच्चे उनके पास पहुँचते थे और एक दूसरे की शिकायत करते थे। पिताजी कहते -मारना हो तो पीठ पर, सिर पर मत मारो, पीठ के नीचे नरम नरम 'टिरी' (मराठी शब्द) है ना - उस पर मारों। 'टिरी टिरी' शब्द सुनते ही, हम हँस पड़ते और दौड़ पड़ते बाहर, फिर से मटरगस्ती करने के लिए।

दो भाई, आदर्श भाई-भाई। प्रवृति से भिन्न-रास्ते अलग अलग - पर उद्देश्य एक।

पिताजी सायंकाल हम बच्चों को लेकर सन्ध्या किया करते थे। 'सन्ध्या' सभी के लिए अनिवार्य थी। यदि कोई - घर पर रहते, सन्ध्या में सम्मिलित न होता - तो पिताजी मौन धारण करते थे। उनकी चुप्पी ही हमारे लिए उनका दण्ड विधान था।

प्रातः भ्रमण में, पिताजी ने पूछा 'मनुष्य की सही पहचान क्या है? मैं अबोध बुद्धिवाला - उत्तर देने में असमर्थ था। पिताजी ने कहा 'मनुष्य की सही पहचान, स्मशान भूमि' में होती है। स्मशान में, लोग एकत्रित होते है - मृतक को बिदाई देने के लिए। आपस में कहते हैं 'बहुत ही बुरा आदमी था, देर ही सही चला तो गया' यह स्मशान भूमि का पहिला चित्र। 'बहुत ही नेक, ईमानदार आदमी था, दुःख इस बात का है, वह जल्दी चला गया' - यह स्मशान भूमि का दूसरा चित्र। ये सामान्य बातें नहीं, यह मौलिक चिन्तन है, जिसमें सच्चा जीवन छिपा हुआ है।

पिताजी कहते - बेटा खूब धन कमाओं - पर नेकी से, सच्चाई से, किसी को दुःखा कर नहीं - खूब पढ़ो, ज्ञान-धन कमाओं और बाँटों - बाँटते ही रहो - कभी घटेगा नही, बढ़ता ही जायेगा - बढ़ता ही जायेगा। चोर इस ज्ञान-धन की चोरी कर नहीं पायेगा।

हम, अपने जीवन के आधे से अधिक मार्ग तय कर चुके हैं - थोड़ा बहुत जीवन शेष है - पता नही - ईश्वर ही जाने! 'क्या शुभ किया, क्या अशुभ' 'क्या अच्छा किया, क्या बुरा,' 'क्या कमाया, क्या खोया' स्मशान भूमि में एकत्रित लोग ही बतायेंगे।

- भरत शेषराव वाघमारे - भोपाल

---

(३४) पू. पिताजी (श्री शेषरावजी वाघमारे) एक अनमोल रत्न

पू. पिताजी अनमोल रत्न को कठोर काल ने हमसे छीन लिया है। आयु के ७२ वर्ष में ही पिताजी हमे छत्र हीन कर, सदैव के लिए अनन्त में लीन हुए। यह हमारे तथा सब के लिए असहनीय घटना रही है।

मैं जब पू. गोविन्दलाल जी बाहेती की पुत्र वधु बनकर बाहेती परिवार में सम्मिलित हुई, तब से पू. पिताजी मेरे आदर्श बने रहे। पू. पिताजी तथा पू. गोविन्दलाल जी बाहेती के बीच का नाता एक परिवारीय नाता था। कोई ऐसा सप्ताह न बीता, जब कि वाघमारे तथा बाहेती परिवार इकट्ठा नहीं हुआ हो। भोजन करना मात्र निमित्त रहा करता था, पर वास्तविकता यह थी कि पारिवारिक सौहार्द बढ़ता रहे। परिवारीय इकट्ठेपन से धर्म, अध्यात्म, वेदों की महत्ता, ईश्वर आदि कई विषयों से सम्बन्धित चर्चाएं चलती रहती थीं। ये चर्चाए बाहेती परिवार के लिए बौद्धिक खाद्य ही रहा करती थी।

पू. पिताजी की पारिवारिक चर्चाएँ अनेक परिवारों को एकत्रित करने का कारण बना। पू. पिताजी का परिवार अनेक मित्रों, स्नेहीजनों, अभिन्न साथियों का परिवार रहा है। श्री गोविन्द लालजी बाहेती, श्रीरामलालजी बाहेती, श्री. मदनलालजी अट्टल, श्री. बळीरामजी पाटील, श्री गोविन्दजी नाईक, श्री. तमण्णाजी आर्य, श्री. नागप्पा जी धर्मशेटे, ऐसे अनेक परिवारों के नाम लिये जा सकते हैं। हैदराबाद मुक्ति संग्राम के इतिहास में - पू. पिताजी का इन

मित्र परिवारों का योगदान इतिहास का एक पृष्ठ बना है। इन मित्र परिवारों का संघर्षमय जीवन, अगली पीढी का प्रेरणा श्रोत बनकर रह गया है।

पू. पिताजी की एक विशेषता यह भी थी कि निलंगा आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग, आर्य समाज के वार्षिकोत्सव, विशेष अवसर पर आयोजित आर्य सम्मेलनों में अपने परिवारजनों के साथ, मित्र पिरवार को साथ लिए, सम्मिलित होने थे। इस लिए कि आर्य विद्वानों के प्रवचन व्याख्यानों आदि को हम सुन सके, कुछ आदर्श ग्रहण कर सकें।

पू. पिताजी के ऐसे अनेक संस्मरण है, मन करता हैं, उन्हें दुहराते ही रहूँ, पर सीमा के बन्धन के अधीन रहते हुए, इतना ही कहती हूँ- कि पू. पिताजी चन्दन के समान थे स्वयं अपने आपको को घिसाते हुए अन्यों को सुगंध बाटते रहे, आनन्दित और प्रफुलित करते रहे। व अजर हैं! अमर हैं!

उनकी स्मृतियों को शत: शत: नमन ।

- (श्रीमती शकुंतला भारतलाल बाहेती)
निलंगा

---

(३५) पू. दादाजी (पिताजी श्री शेषरावजी वाघमारे) के कुछ संस्मरण

मेरे पू. दादाजी, जिन्हे हम सब लोग परिवारीय सदस्य पिताजी कहते थे। पू. पिताजी का जब देहावसान हुआ, उस समय मेरी आयु १७ वर्ष की थी। आयु के दसवे वर्ष में, मैं पढ़ाई के लिए बापू साहब (जिन्हे हम काका कहते थे) के यहाँ पहुँचा था। दीपावली तथा ग्रीष्माकाश में कुछ दिनों के लिए मैं निलंगा जाया करता था। अल्प अवकाल में मुझे पिताजी का सानिध्य प्राप्त हुआ था। अल्पकाल की समीपता मेरे भविष्य जीवन की दिशा निश्चित करने में सहायक सिद्ध हुई। छुट्टियों में पू. पिताजी का भरा पूरा परिवार मानों कुम्भ मेला लगा हुआ है. ऐसा मुझे प्रतीत होता था। अवकाश के समय कभी मर्यादा पुरुषोत्तम

भगवान रामचन्द्र जी की महत्ता व्यक्त करते थे, तो कभी योगेश्वर श्रीकृष्ण के जीवन के विभिन्न पहलुओं से भरे व्यक्तित्व को हमारे सम्मुख रखते। पांडवों के युद्ध के मतितार्थ सरल शब्दों में व्यक्त करते थे, कभी महर्षि दयानन्द की गौरव गाथा को विश्लेषित करते थे। बाघ के शिकार की घटना तथा हैदराबाद मुक्ति संग्राम की शौर्यगाथा सुनाते हुए वे हमे अपने प्रारंभिक जीवन से परिचित भी करवाते थे। महनीय चरित्रों को उद्घाटित कर हम बालकों में चारित्र्य का निर्माण हो, हम बालक भी सुसंस्कारित हो, आदर्श हों, ऐसा वे चाहते थे।

पू. पिताजी का प्रात:कालीन भ्रमण, व्यायाम नित्य संध्या, यज्ञकर्म, ईश्वर भजनों में लीन होना उनका समाजोन्मुख कार्य, हमारे बालपन पर अंकित हुए ये सारे संस्मरण पुनश्च जीवित होते हैं। पू. पिताजी की लाठी, जिन्हे वे अपने साथ सदैव रखेत`थे, वह मेरे संस्मरण का एक अभिन्न अंग बनी रही है। यह लाठी किसी को धमकाने के लिए नहीं थी, बल्कि वह असहाय व्यक्तियों को आधार देने के लिए थी। पू. पिताजी का समग्र जीवन, अनेक व्यक्तियों के लिए, नयी पीढ़ी के लिए सन्देशमय रहा है, प्रेरणा श्रोत रहा है।

मुझे अच्छी तरह से स्मरण है फरवरी १९८४ का दूसरा सप्ताह, पिताजी ने मेरी माताजी, अपने पुत्र वधू श्रीमती सुमति वाघमारे से कहा कि बहू मैं उदगीर अहमद्पुर जा रहा हँ, लौटूँगा तो पिटल (महाराष्ट्रीयन भोजन पदार्थ) तथा भाकरी (रोटी) तैयार रखना, मैं भोजन करुगा। पू. पिताजी उदगीर गये पर निलंगा लौटे ही नही, लौटे पर चिरन्तन निद्रा में।

पू. पिताजी तथा बापू काका के संस्कारों से मैं अपने आपको थोड़ा बहुत योग्य बना सका। वर्तमान में निलंगा आर्य समाज के मंत्री पद पर हूँ। पू. पिताजी तथा बापू काका के चरण चिन्हों चलकर, ओ३म, की पताका लिए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में लगा रहूँ, मेरा यह प्रयास अवश्यमेव रहेगा-

ओम् प्रकाश विजयकुमार वाघमारे
मंत्री, निलंगा, आर्य समाज

(३६) श्री शेषराव हमारे सदर

आज मेरी उम्र ९० साल की है। मुझे याद है आज भी निज़ाम के जमाने में गाया हुआ गीत।

विश्व भगवा ओ३म झेंडा ऊँचा रहे हमारा।
इस झेंडे के नीचे आओं, गले लगाओं।
तन मन धन से रक्षण करेंगे और करेंगे झेंडा ऊँचा।
शेषराव हमारे सदर थे।
उन्होंने निलंगा में आर्यसमाज की स्थापना की थी।

एक ओर सनातनियों के विरोध में शास्त्रार्थ शस्त्र चलाया था, तो दूसरी ओर निजाम को शस्त्र से ललकारा था। बार्शी के नजदीक चिंचोली में हमारा कॅम्प था। इस कॅम्प के शेषराव वाघमारे, गोविंद नाईक, रामचंद्र मंत्री, चंद्रशेखर वाजपेयी और फुलचंद गांधी की सलाह से हमने भूम, परांडा, अपसिंगा में रज़ाकारों की टोलीयोंका मुकाबला कर, उनके हौसले पस्त किए थे। हम १७ सितम्बर १९४८ को आजाद हुए, भारत देश के नागरीक बने।

श्री शेषराव वाघमारे की २५वीं पुण्यतिथि पर उन्हें अभिवादन।

- राम लक्ष्मण भंडे, स्वतंत्रता सेनानी - निलंगा

(३७) श्री शेषरावजी वाघमारे - एक महात्मा

सत्य का प्रकाश ले वीरत्व की माला पहिन
अज्ञान अन्याय से लड़ा वो धर्मात्मा।
अथाह साहस की साथ लिये पतवार
कर दिया कुचाली का खात्मा।।
आर्यों की शान थे शेषराव माघमारे
तन से थे भव्य, मन से महात्मा।।
वैदिक उद्यान को हराभरा करे किया
ऐसे नित ही सपूत परमात्मा।।

- पं. सुरेन्द्र पाल आर्य
गीतकार, वैदिक प्रचारक, नागपूर

परिशिष्ट - ५

आदरणीय श्री आनंद मुनीजी वानप्रस्थ

(भूतपूर्व पंडित शेषरावजी वाघमारे, निलंगा)

सन्मान पत्र

सन्मान्य मुनिवर

भारत शरण सम्मेलन बसवकल्याण की ओर से मुनिवर की सेवा में यह मानपत्र समर्पित करते हुए हर्ष एवं गौरव का अनुभव करते हैं।

नरश्रेष्ठ कर्मयोगी,

आपका सारा जीवन श्रेष्ठ कर्म एवं सदाचार की कहानी है। निलंगा भूतपूर्व बीदर तथा वर्तमान धाराशिव जिला उस्मानाबाद में प्रसिद्ध विधिज्ञ श्री माधवराव हसलगणकर के घर भाग्यवती मातोश्री बकुलाबाई की कोख से जन्म पाकर अपने कार्य एवं कर्तव्य सिद्धि को ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाया। शिक्षा समाप्ति के साथ आपने सत्य न्याय का पक्ष लेकर महात्मा के सत्यप्रेम का परिचय दिया।

वीराग्रणी मुनिवर,

युवावस्था में आपने निशस्त्र होते हुए भी केवल लाठी बरछे द्वारा दो (बाघों) शेरों का शिकार किया और समाज ने आपको 'वाघमारे' का नाम प्रदानकर गौरव किया। यह नाम आपका कमाया हुआ नाम है, परमपरागत नहीं । आपने वीरों का आदर्श सदा निभाया। अत्याचारी और अन्यायी शासन के दबाव में न आकर जेल, और जंगल में आप निर्भय बने रहे। आपके सेनापतित्व में सैंकडों युवकों ने वीरता की प्रेरणा प्राप्त की, अन्याय के प्रतिकार में आप अपने घरबार और संसार को नष्ट करने से भी पीछें नहीं हटे।

समाज सेवक मुनि

अखंड मानव जातिको मानवता की शृंखला में गुंथित करने के लिए आपने समाज सेवा का असिधाराव्रत लिया और तन्मयता, निस्पृहता तथा निर्भयता से

समाज का मार्गदर्शन किया। आर्यसमाज का १९४० का धार्मिक सत्याग्रह स्वाधीनताका १९४२का स्वतंत्रता संघर्ष तथा हैदराबाद का १९४८ का मुक्ति संग्राम आदि अवसरोंपर आपने सत्याग्रह करके समाज के स्थैर्य के लिये कई वर्षों तक कारावास सहन किया। आपकी सेवा और त्याग का समाज ने यथोचित गौरव किया और आपको १९५२ में हैदराबाद तथा महाराष्ट्र विधानसभा के लिये प्रतिनिधित्व प्राप्त करा दिया और आर्य प्रतिनिधि सभा के अनेक पदों कों आप विभूषित कर सके और इन्हीं पदों पर रहकर आपने वर्षो तक समाज की सेवा निःस्पृहतासे की। धर्म, समाज, राजनीति, शिक्षा, कृषि आदि अनेक क्षेत्रों में आपने सेवा का आदर्श प्रतिपादन कर दिखाया है

क्रांतिवीर

रुढि परंपरा एवं अंधश्रद्धासे जकडे समाज को बदलने के लिये आपने न केवल क्रांति का उपदेश दिया अपितु अपने जीवन द्वारा क्रांति का बिगुल बजाया। जाति पाति के बंधनों को तोडकर आपने अपनी बहन, पुत्र एवं पुत्रियों को अंतर्जातीय विवाह बद्ध किया और नवयुवकों को प्रेरणा देकर समानता का पाठ दिया। जात पात, प्रांत-प्रांत अस्पृश्यता, दहेज आदि कुरीतियों का जड़ों को समाज से उखाडने में यश प्राप्त किया। यह आप की क्रांतिकरिता का ही परिणाम था। इसलिए समाज ने आपके प्रति आदर व्यक्त करके हैदराबाद में विजया दशमीं के अवसर पर तथा भारत की राजधानी दिल्ली में आर्यसमाज स्थापना शताब्दी के अवसर पर आपको सुशोभित हाथी पर बिराजमान कर शोभा यात्रा निकाली और आपको मानपत्र समर्पित किया।

महामानव मुनिवर,

जीवनभर सहजीवन के लिये संघर्ष, समानता एवं जातिभेद उच्चाटन के लिये सामाजिक विरोध एवं कटुता को सहन करतें हुए भी आज आप सर्वप्रिय बने रहे यही आपके यशस्वी जीवन का रहस्य है। आपके निष्कलंक चरित्र और स्वार्थहीन सेवा आपके सच्चे प्रेम और हित भावना से शत्रु भी सदा प्रभावित रहे हैं। यही आपके तेजस्वी जीवन का परमोच्च बिंदु है, और आपको श्रेष्ठ मानव सिद्ध करता है।

मुनीश्वर,

आज भारत शरण सम्मेलन आपकी इन महान सफलताओं को गौरव एवं आनंद से स्मरण करता है, आपके द्वारा की गई मानवता की सेवा के प्रति हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करता हैं। परमात्मा से प्रार्थना है कि आप चिरायु हो, स्वस्थ एवं बलशाली बने ं रहे तथा भूतकालके समान भविष्य में भी मानवता की सेवा करते रहें।

(स्थान बसवकल्याण २९-५-७९)

भवदीय भारत शरण सम्मेलन

'महात्मा आनन्दमुनि वानप्रस्थी को 'भारत शरण सम्मेलन' बसव कल्याण जि. बीदर, कर्नाटक द्वारा प्रदान किया गया - सन्मान पत्र)। श्री गुरुनाथ राव तुंगावकर (भालकी) ने उपलब्ध कराया।

।। प्रजा के स्वाधीन राजवर्ग रहें ।।

राष्ट्रमेव विश्याहन्ति तस्माद्राष्ट्री विशं घातुकः ।।

विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति तस्माद्राष्ट्री विशमत्ति न पुष्टं पशुं मन्यत इति ।।१।।

शत० कां० १३। (प्रपा०) २। ब्रा० ३। (कं० ७-८)।।

जो प्रजा से स्वतन्त्र स्वाधीन राजवर्ग रहै तो (राष्ट्रमेव विश्याहन्ति) राज्य में प्रवेश करके प्रजा का नाश किया करें। जिसलिये अकेला राजा स्वाधीन वा उन्मत्त होके (राष्ट्री विशं धातुकः) प्रजा का नाशक होता है। अर्थात् विशमेव राष्ट्रायाद्यां करोति) वह राजा प्रजा को खाये जाता (अत्यन्त पीड़ित करता) है इसलिये किसी एक को राज्य में स्वाधीन न करना चाहिये। जैसे सिंह वा मांसाहारी हृष्ट-पुष्ट पशु को मार कर खा लेते हैं, वैसे (राष्ट्री विशमत्ति) स्वतन्त्र राजा प्रजा का नाश करता है।

क्रमांक २८५.



महाराष्ट्र शासन



सन्मान पत्र

श्री. शेषराव माधवराव वाघमारे रा० निलंगा यांना त्यांनी भारतीय स्वातंत्र्य संग्रामांत केलेल्या कामगिरीच्या गौरवार्थ हे सन्मानपत्र देण्यांत येत आहे.

वसंत नाईक

सचिवालय
मुंबई
दिनांक

मुख्य मंत्री
महाराष्ट्र राज्य

परिशिष्ट ६

इस परिशिष्ट में उन ग्रन्थों, पत्रिकाओं आदि का समावेश किया गया है. जिनसे श्री शेषरावजी वाघमारे के विषय में सामग्री प्राप्त की है। साथ संदर्भित पृष्ठों का उल्लेख है।

शेषरावजी कहाँ-कहाँ (ग्रन्थ पत्र पत्रिकाएँ)

१) निज़ाम की जेल में - क्षितीशकुमार पृ. ६०, ६१, ७३.
२) हैदराबाद में आर्यसमाज का संघर्ष - पं. नरेन्द्रजी - पृ. १५, ३१, ३७.
३) हैदराबाद में आर्यों की साधना और संघर्ष - पं. नरेन्द्रजी - पृ. ६६, ९०, १०८, १४१, १४२, १७३, १७५.
४) तत्व मनीषी श्री गणपतराव शास्त्री - खंडेराव कुलकर्णी - पृ. प्रस्तावना पृ. ११.
५) मी पाहिलेला हैदराबाद - मुक्ति संग्राम : ल.वि. चाकूरकर - पृ. ५, ११, २६, ३३, ३४, ५४, ६०, ६१, ६३, ६८, ६९, ७१, ७४, ७६.
६) हैदराबाद (निज़ाम) राज्य मुक्ति संग्रामातील - चित्त थरारक आठवणी - ॲड. लक्ष्मण कापसे - पृ. ४९, ८३
७) हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम - वसंत पोतदार - पृ. ३२, ३३, ४१, १८३
८) तडपवाले - तडपती जिनकी कहानियाँ - प्रा. राजेन्द्रजी 'जिज्ञासू'' पृ. १००, १०१, १०२ १५२, १८८, १८९.
९) हैदराबाद स्वातंत्र्य संग्राम आणि मराठवाड़ा : अनन्त भालेराव पृ. १४७
१०) स्वातंत्र्य सैनिक चरित्रकोश - मराठवाड़ा विभाग - पृ. १७, ३५६, ३६६, ४०३
११) स्वातंत्र्य संग्राम आणि मी - चन्द्रशेखर वायपेयी - प. ८३, ८४
१२) हैदराबाद मुक्ति संग्राम का इतिहास - डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडे - पृ. २२२, २५९, ३२१, ३४९, ३६१, ३६३, ४००, ४२३, ४४४.

१३) हैदराबाद मुक्ति संग्राम के कुछ अध्याय : यशवंतराव सायगांवकर - पृ. ९९, १३८, १३९, १७१, १९७, २००, २८५, ३११, ३१२, ३६६, ३७२, ३७३, ४४३, ४४४.

१४) मराठवाड्यातील आर्यसमाजाची चळवळ : नामदेव ज्ञान कदम (M.Phil उपाधि के लिए सादर प्रबंध-१९८८) - पृ. ४४, ४५, ४७, ४८, ८९, ९८, १०४, १०६, १६८, १७७, १८९.

१५) हैदराबाद में आर्य सत्याग्रह - संपादक - ओमानंद सरस्वती, (हरियाणा साहित्य संस्थान-गुरुकुल झझर - रोहतक अप्रैल-१९८०) पृ. ५१७

१६) हैदराबाद मुक्ति संग्राम - एक उपेक्षित संघर्ष गाथा - पृ. ११३, १४६, १९१.

१७) मराठवाड्यातील सीमावर्ती कँप्स - प्रमुख कार्यकर्ते - पृ. ८०

१८) हैदराबाद मुक्ति संग्राम - स्वातंत्र्य सैनिकाच्या मौखिक गोष्टी सं. डॉ. प्रभाकर देव, नान्देड - पृ. ३७१ - ३७३.

पत्रिकाएँ आदि

१९) 'विवृति' रजत जयंती विशेषांक - जनवरी १९५७ - पृ. ९, २१, ८८, ९२

२०) आर्य सत्याग्रह - हैदराबाद राज्य - मुक्ति संग्राम - अर्धशताब्दी महोत्सव स्मरणिका - आर्यसमाज सोलापुर (द्वारा प्रकाशित) - पृ. ३, ४.

२१) हैदराबाद - सत्याग्रह अंक - 'साप्ताहिक आर्य संदेश - १६ आगष्ट १९८९.

२२) विनायकराव अभिनन्दन ग्रंथ - सं.पं. नरेन्द्रजी - पृ. १४२, १४५.

२३) 'आर्य भानुः' साप्ताहिक पत्रिका - ११ एप्रिल, १९४९ - सप्तम आर्य सम्मेलन - लातूर

२४) महाराष्ट्र महाविद्यालय -निलंगा स्मरणिका - (१९८१) पृ. १०, १९

२५) वैदिक गर्जना दिसम्बर २००० अंक - पृ. १४, १६, १८

२६) 'मराठवाड़ा' - स्वातंत्र्य सुवर्ण महोत्सव - विशेषांक - १७ सितंबर - १९९८ - पृ. ५६, ५९, ६१.

२७) स्वातंत्र्याचे सुवर्णपान - 'लोकमत' विशेषांक - पृ. ९

२८) स्वातंत्र्य दिन सुवर्ण - महोत्सव विशेषांक - लातूर - १५ अगस्त १९९४.

२९) हैदराबाद मुक्ति संग्राम - 'आर्य जीवन' विशेषांक - ३० सप्टे. १९९८ - पृ. ५, ६.

३०) सोलापुर - आर्य महासम्मेलन - कार्य विवरण - १९३८. प्रकाशक सार्वदेशिक सभा - दिल्ली

३१) अमृत पुत्र स्मरणिका - पृ. ३ से ८.

- डॉ. चंद्रकांत गर्जे





परिशिष्ट - ७

उन व्यक्तियों के नामों की सूची, जिनसे भेंट की तथा श्री शेषराव जी के विषय में जानकारी प्राप्त की।

व्यक्तियों की साक्षात्कार-सूची

१) श्री बलिराम पाटील - निलंगा

२) श्रीमती रुक्मिणी मारोतराव पोफळे - मदनसुरी (स्वतंत्रता सेनानी की पत्नी)

३) श्री मदनलालजी अट्टल - निलंगा - आयु ९०

४) ॲडव्होकेट श्री अनंतराव सबनीस - निलंगा

५) श्री वासुदेव - बाप्पाचार्य पिम्पळे - निलंगा

६) श्री रामचंद्र धोंडिबा शिंदे - अम्बुलगा

७) पं. प्रियदत्तजी शास्त्री - हैदराबाद

८) श्री बाबूलालजी, आर्य प्रतिनिधि सभा - हैदराबाद कार्यालय प्रमुख

९) श्री प्रशान्तकुमारजी - हैदराबाद

१०) प्रा. हरिश्चन्द्रजी रेणापुरकर - गुलबर्गा
श्रीमती सत्यवती ह. रेणापुरकर

११) श्री एम.पी. गणेशराव - आर्यसमाज, सुलतान बाजार - हैदराबाद

१२) प्रा. वेद्कुमारजी वेदालंकार
श्रीमती - प्रतिभा वेदालंकार

१३) श्रीमती माया जगदीश पाटील - सोलापुर

१४) डॉ. चन्द्रशेखर लोखंडे - लातूर

१५) ब्रह्ममुनि (डॉ. सुग्रीव काळे) परली वैजनाथ

१६) पं. नरदेवजी स्नेही - औरंगाबाद

१७) पं. ज्ञानेन्द्रजी शर्मा - औरंगाबाद

१८) बन्सीलालजी गोदानी - सोलापुर

१९) ॲडव्होकेट दिगंबरराव कृष्णराव जिंतूरकर - आयु ८८
स्वतंत्रता सेनानी, उस्मानाबाद

२०) ॲडव्होकेट मनोहरराव देशपांडे धुतेकर - लातूर

२१) श्रीमती देशबंधु स्वतंत्रता सेनानी की पत्नी - औराद आयु ८६

२२) श्री प्रहलाद दादा निलंगा - आयु ८०-निलंगा

२३) श्री भीमराव बापूराव देशमुख - आयु ८५ - निलंगा स्वतंत्रता सेनानी

२४) श्री हिरामण अंबादास डोईजोडे - (हिन्दी सत्याग्रही)-औराद शहाजनी

२५) श्री माधवराव नाईक (निलंगा) लातूर - आयु ८५

२६) श्री चन्द्रशेखर वाजपेयी, लातूर - स्वतंत्र सेनानी, क्रान्तिकारी - लातूर

२७) प्रा. नामदेव कदम - तासगांव (सांगली)

२८) श्री सु.ग. जोशी - इतिहास संशोधन मंडल - लातूर.

उपर्युक्त सभी व्यक्ति, लेखक, ग्रंथ प्रकाशक, पत्रिका, संस्था आदि से प्राप्त सहयोग के प्रति लेखक एवं श्री. शेषरावजी स्मृति रौप्य महोत्सव समिति आभार प्रकट करती है.





परिशिष्ट - ८

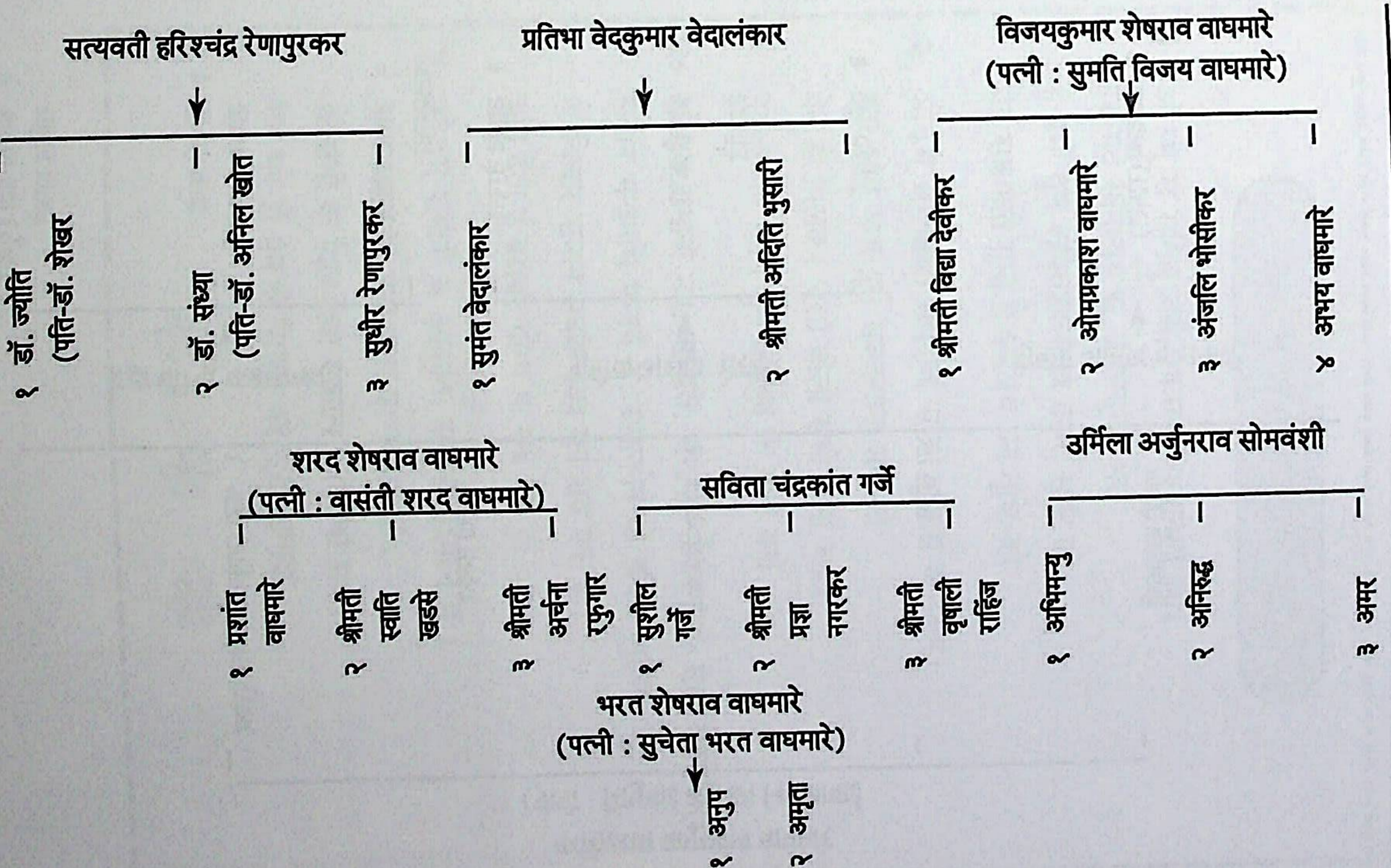
वाघमारे-वंशावली

भवानीपंत
|
राघोपंत
|
नरसिंहराव (आजोबा) उपाख्य बापूराव
|
माधवरा (पत्नी : बकुळाबाई)

१ राजबाई आटोळकर
२ कमलाबाई मुगळीकर
३ शेषराव वाघमारे (पत्नी : सुमित्राबाई)
४ विठाबाई
५ नरसिंहराव उर्फ बापूसाहेब पत्नी श्रीमती सिंधू
६ काशीबाई होळीकर
७ वेणुबाई डुमणे
८ रामचन्द्रराव वकील (पत्नी : जानकाबाई)
९ सरलाबाई यळणूरकर
१० साळूबाई पिंपळे
११ भारतबाई धोंडदेव

शेषराव वाघमारे यांची अपत्ये:

१ सत्यवती रेणापुरकर
२ प्रतिभा वेदालंकार
३ एड्. विजयकुमार वाघमारे
४ शरच्चंद्र वाघमारे
५ सविता गर्जे
६ उर्मिला सोमवंशी
७ भरत वाघमारे
८ दशरथ वाघमारे


सत्यवती हरिश्चंद्र रेणापुरकर
१ डॉ. ज्योति (पति-डॉ. शेखर)
२ डॉ. संध्या (पति-डॉ. अनिल खोत)
३ सुधीर रेणापुरकर
प्रतिभा वेदकुमार वेदालंकार
१ सुमंत वेदालंकार
२ श्रीमती अदिति भुसारी
विजयकुमार शेषराव वाघमारे
(पत्नी : सुमति विजय वाघमारे)
१ श्रीमती विद्या देवीकर
२ ओमप्रकाश वाघमारे
३ अंजलि भोसीकर
४ अभय वाघमारे
शरद शेषराव वाघमारे
(पत्नी : वासंती शरद वाघमारे)
१ प्रशांत वाघमारे
२ श्रीमती स्वाति खडसे
३ श्रीमती अर्चना रघुमार
सविता चंद्रकांत गर्जे
१ सुशील गर्जे
२ श्रीमती प्रज्ञा नगारकर
३ श्रीमती वृषाली राहिंज
उर्मिला अर्जुनराव सोमवंशी
१ अभिमन्यु
२ अनिरुद्ध
३ अमर
भरत शेषराव वाघमारे
(पत्नी : सुचेता भरत वाघमारे)
१ अनुप
२ अमृता

नरसिंहराव बापूसाहेब वाघमारे
(पत्नी : सिंधुबाई उपाख्य निर्मलाबाई

१ श्रद्धा (शकुंतला) येळ्णूरकर
२ सुनीता तेरकर
३ सुषमा कुलकर्णी
४ रश्मि
५ माधुरी कुलकर्णी

श्रद्धा धीरेन्द्र यळणूरकर

१ श्रीमती प्रज्ञा (पूजा) सचिन ग्रामले
२ श्रीमती प्राची शंकर कुलकर्णी
३ प्रसन्ना (पथिक) येळ्णूरकर

सुनीता अशोक तेरकर

१ आनंद तेरकर
२ श्रीमती ऋचा देशपांडे
३ श्रुति तेरकर

सुषमा आमोद कुलकर्णी

१ आदित्य (रोमेल)

ऋग्वेद का संगठन सूक्त

१ ओ३म् सं समिद्यु वसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्य आ।
इडस्पदे समिध्यये स नो असून्या भर
हे प्रभो तुम शक्तिशाली हो बनाते सृष्टि को।
वेद सब गाते तुम्हें हैं कीजिये धन वृष्टि को

२ ओ३म् संगच्छध्वं सवंदध्वं सं वो मनासि जानताम्।
देवा भागं यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते
प्रेम से मिलकर चलो बोलो सभी ज्ञानी बनो।
पूर्वजों की भांति तुम कर्त्तव्य के मानी बनो

३ ओ३म् समानो मंत्रः समितिः समानी, समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः समाननेन वो हविषा जुहोमि
हों विचार समान सबके चित्र मन सब एक हों।
ज्ञान देता हूं बराबर योग्य पा सब नेक हों

४ ओ३म् समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सु सहासति
हों सभी के दिल तथा संकल्प अविरोधी सदा।
मन भरे हों प्रेम से जिससे बढ़े सुख सम्पदा

वैदिक प्रार्थना

हे सर्वाधार, सर्वान्तर्यामिन् परमेश्वर! तुम अनंत काल से अपने उपकारों की वर्षा किये जाते हो। प्राणिमात्र की सम्पूर्ण कामनाओं को तुम्हीं प्रतिक्षण पूर्ण करते हो। हमारे लिए जो कुछ शुभ है तथा हितकर है उसे तुम बिना मांगे ही स्वयं हमारी झोली में डालते जाते हो। तुम्हारे आंचल में अविचल शान्ति तथा आनन्द का वास है। तुम्हारी चरण-शरण की शीतल छाया में परम तृप्ति है, शाश्वत सुख की उपलब्धि है तथा सब अभिलषित पदार्थों की प्राप्ति है।

हे जगत्पिता परमेश्वर! हम में सच्ची श्रद्धा तथा विश्वास हो। हम तुम्हारी अमृतमयी गोद में बैठने के अधिकारी बनें। अन्त:करण को मलिन बनाने वाली स्वार्थ तथा संकीर्णता की सब क्षुद्र भावनाओं से हम ऊँचे उठें। काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेष इत्यादि कुटिल भावनाओं तथा सब मलिन वासनाओं को हम दूर करें। अपने हृदय की आसुरी प्रवृत्तियों के साथ युद्ध में विजय पाने के लिए हे प्रभो! हम तुम्हें पुकारते हैं और तुम्हारा आँचल पकड़ते हैं।

हे परम पावन प्रभो! हम में सात्विक प्रवृत्तियां जागरित हों। क्षमा सरलता, स्थिरता, निर्भयता, अहङ्कारशून्यता इत्यादि शुभ भावनाएँ हमारी सम्पत्ति हों। हमारा शरीर स्वस्थ तथा परिपुष्ट हो, मन सूक्ष्म तथा उन्नत हो, आत्मा पवित्र तथा सुन्दर हो, तुम्हारे संस्पर्श से हमारी सारी शक्तियाँ विकसित हों। हृदय दया तथा सहानुभूति से भरा हो। हमारी वाणी में मिठास हो तथा दृष्टि में प्यार हो। विद्या और ज्ञान से हम परिपूर्ण हों। हमारा व्यक्तित्व महान् तथा विशाल हो।

हे प्रभो! अपने आशीर्वादों की वर्षा करो। दीनातिदीनों के मध्य में विचरने वाले तुम्हारे चरणारविन्दों में हमारा जीवन अर्पित हो इसे अपनी सेवा में लेकर हमें कृतार्थ करें।

ओ३म् शान्तिः! शान्तिः!! शान्तिः!!!

आर्य समाज के नियम

१ सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है।

२ ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरुप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सवारधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है।

३ वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढाना और सुनना-सुनाना आर्यों का परम धर्म है।

४ सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

५ सब काम धर्मानुसार अर्थात सत्य और असत्य को विचार कर करने चाहिए।

६ संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात शारिरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।

७ सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बर्तना चाहिए।

८ अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

९ प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट न रहना चाहिए, किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

१० सब मनुष्यों को सामाजिक सर्वहितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतन्त्र रहें।

शान्तिपाठ मंन्त्र

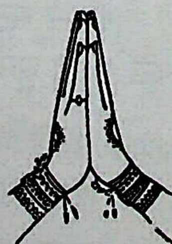
द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वँशान्तिः शान्तिरेव शान्तिः, सा मा शान्तिरेधि।
ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः शान्तिः।

१) शान्ति कीजिए प्रभू त्रिभूवन में,
जल में थल में और गगन में,
अन्तरिक्ष में, अग्नि पवन में,
औषधि वनस्पति वन उपवन में,
सकल विश्व में जड़ चेतन में। शान्ति कीजिए.....

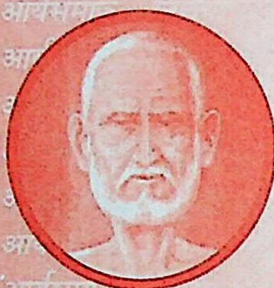
२) ब्राह्मण के उपदेश वचन में,
क्षत्रिय के द्वारा हो रण में,
और शूद्र के हो चरणन में। शान्ति कीजिए.....

३) शान्ति राष्ट्र निर्माण सृजन में,
नगरग्राम में और भवन में,
जीव मात्र के तन में,
और जगति के हो कण कण में। शान्ति कीजिए.....



हमारे प्रेरणास्रोत



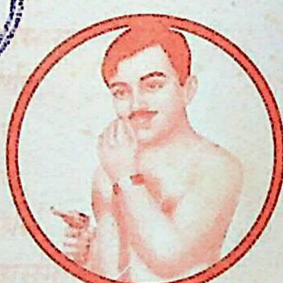
प्रज्ञाचक्षु विरजानन्दजी



भगतसिंह



महर्षि स्वामी दयानन्द



चन्द्रशेखर आज़ाद



श्यामजी कृष्ण वर्मा



रामप्रसाद बिस्मिल



धर्मवीर स्वामी श्रद्धानन्द



भाई बन्सीलालजी



भाई श्यामलालजी



विनायकराव विद्यालंकार



पं. नरेंद्रजी



शेषरावजी वाघमारे



पं. प्रियदत्तजी शास्त्री, हैदराबाद

'एक विशेष ऋण निर्देशन'

परिचय :

जन्म : १५ जनवरी १९५१

स्थान : गुंजोटी - जि. उस्मानाबाद

शिक्षा : P.U.C., विद्यावाचस्पति (दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिस्सार), विद्याभास्कर, ज्वालापुर (हरिद्वार)

प्रेरणाश्रोत : पं. नरेन्द्रजी और श्री शेषरावजी वाघमारे

कार्य : पौरहित्य कार्य, उस्मानाबाद, हिस्सार, पानीपत, संचालक; आर्यवीर दल-आन्ध्रप्रदेश (इ.स. २००० से).

लेखन कार्य : चरित्र निर्माण, संपादकः पं. नरेन्द्रजी का जीवन चरित्र 'धूप-छाँव'

पत्नी : श्रीमती इन्दूमति (कलाकार-श्री प्रकाश आर्य की पुत्री)

सम्प्रति : वेद प्रचारक, हैदराबाद (आं.प्र.)

'श्री. शेषरावजी वाघमारे-जीवन गाथा' लेखन कार्य के लिए मैं जब सामग्री जुटाने में लगा रहा, तब ज्ञात हुआ कि पं. प्रियदत्तजी शास्त्री, श्री. शेषरावजी की जीवनी लिखने के प्रयास में हैं। मैंने उनसे हैदराबाद में प्रत्यक्ष सम्पर्क स्थापित किया और चर्चा की। मेरे लेखन प्रयास को देखते हुए उन्होंने श्री. शेषरावजी के दुर्लभ चित्र, पुरानी आर्य पत्रिकाएँ, निलंगा आर्य समाज भवन के विध्वंस सम्बन्धित, (१९३५), पत्र व्यवहार, पुलिस, कलेक्टर, नागरिकों के बयान आदि ऐतिहासिक दस्तावेज बिना किसी ननुनच किये सौंप दिये। उन्ही के इस सहयोग से मेरा लेखन कार्य पूर्ण हो सका, अन्यथा श्री. शेषरावजी की शौर्य गाथा अधूरी रह जाती। पं. प्रियदत्तजी के प्रति 'यह विशेष ऋण निर्देशन'

 लेखकः डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे





लेखक : डॉ. चन्द्रकान्त गर्जे